MADANI PANJSURAH (HINDI)

मश्हूर कुरआनी सूरतों, दुरूदों, रूहानी व तिब्बी इलाजों
और खुश्बूदार म-दनी फूलों का दिलचस्प म-दनी गुलदस्ता

म-दनी पंजसूरह

इस का हर घर में होना ज़रूरी है।

सूरए मुज़्ज़म्मिल

सूरए रहमान

सूरए यासीन

दुआएं और वज़ाइफ़

दुरूदे पाक

सूरए मुल्क

शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

مكتبة المدينه

(دعوت اسلامی)

SC1286

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !

(अल मुस्तत़रफ़, जि.1, स.40, दारुल फ़िक्र बैरूत)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428

“म–दनी पन्ज सूरह”

येह किताब (**“म–दनी पन्ज सूरह”**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा’वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र–ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है।

मजलिसे तराजिम (दा’वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक–त–बतुल मदीना से शाएअ़ करवाई है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई–मेईल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा’वते इस्लामी)

मक–त–बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा,

अह़मद आबाद–1, गुजरात, फ़ोन : 079-25391168

MO. 9377111292, (FOR SMS ONLY)

e-mail : maktabahind@gmail.com

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

मशहूर क़ुरआनी सूरतों, दुरूदों, रूहानी व तिब्बी इलाजों और ख़ुश्बूदार म-दनी फूलों का दिल चस्प म-दनी गुलदस्ता

म-दनी पन्ज सूरह

मुअल्लिफ़ :

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी

ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना

अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

नाशिर :

मक-त-बतुल मदीना अह़मद आबाद

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِالْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

नाम किताब : **म–दनी पन्ज सूरह**

मुअल्लिफ़ : शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र–ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

सिने त़बाअ़त : मार्च सि. 2009 ई. / रबीउ़न्नूर सि.1430 हि.

नाशिर : मक–त–बतुल मदीना सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने ख़ास बाज़ार तीन दरवाज़ा अह़मद आबाद–1 गुजरात इन्डिया

मक–त–बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

मुम्बई : 19,20 मुह़म्मद अ़ली बिल्डिंग, मुह़म्मद अ़ली रोड, फ़ोन : 022-23454429

देहली : मटिया मह़ल, उर्दू मार्केट, जामेअ़ मस्जिद फ़ोन : 011-23284560

कानपूर : मख़्दूम सिम्नानी मस्जिद, दीप्ती पांडव का चौराहा, नज़्द गुर्बत पार्क,यूपी, फ़ोन : 09415982471

नागपुर : (C/0) जामिअ़तुल मदीना,मुह़म्मद अ़ली सराय रोड, कमाल शाहबाबा दरगाह के पास मोमिनपुरा फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फलाहे़ दारैन मस्जिद. नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह,

तम्बीह : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
कुछ इस किताब के बारे में		सू-रतुल मुज़्ज़म्मिल	115
किताब पढ़ने की 19 निय्यतें		सूरए काफ़िरून के 3 फ़ज़ाइल	119
फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह शरीफ़		सू-रतुल इख़्लास के 7 फ़ज़ाइल	121
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	सूरए फ़लक़ और नास के 5 फ़ज़ाइल	125
बिस्मिल्लाह शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	सू-रतुल ब-क़रह की आख़िरी आयात के चार फ़ज़ाइल	128
अधूरा काम	2	सू-रतुल ह़श्र की आख़िरी आयात	131
"बिस्मिल्लाह शरीफ़" के 13 म-दनी फूल	3	आ-यतुल कुरसी के 5 फ़ज़ाइल	132
बिस्मिल्लाह शरीफ़ के 8 अवराद	7	**फ़ैज़ाने ज़िक्रुल्लाह**	
(1) घर की ह़िफ़ाज़त के लिये	7	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	135
(2) दर्दे सर का इ़लाज	7	ईमाने मुफ़स्सल	135
(3) नक्सीर फूटने का इ़लाज	8	ईमाने मुजमल	136
(4) जिन्नात से सामान की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा	8	अव्वल कलिमा त़य्यिब	136
(5) दुश्मनी ख़त्म करने का वज़ीफ़ा	8	दूसरा कलिमा शहादत	136
(6) मरज़ से शिफ़ा का वज़ीफ़ा	9	तीसरा कलिमा तम्जीद	137
(7) चोर और अचानक मौत से ह़िफ़ाज़त	9	चौथा कलिमा तौह़ीद	137
(8) आफ़तें दूर होने का आसान विर्द	9	पांचवां कलिमा इस्तिग़फ़ार	138
फ़ैज़ाने तिलावत		छटा कलिमा रद्दे कुफ़्र	138
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	11	इस्तिग़फ़ार करने के 5 फ़ज़ाइल	139
सू-रतुल ह़श्र की आख़िरी आयात की फ़ज़ीलत	11	(1) दिलों के ज़ंग की सफ़ाई	139
सूरए ब-क़रह की आख़िरी आयात पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल	12	(2) परेशानियों और तंगियों से नजात	140
आ-यतुल कुरसी के 4 फ़ज़ाइल	14	(3) ख़ुश करने वाला आ'माल नामा	140
आ-यतुल कुरसी की पांच ब-र-कतें	15	(4) ख़ुश ख़बरी !	140
आयते करीमा की फ़ज़ीलत	16	सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार पढ़ने वाले के लिये जन्नत की बिशारत	141
सोते वक़्त पढ़े जाने वाले 5 वज़ाइफ़	16		
सूरए फ़ातिह़ा के 4 फ़ज़ाइल	19	कलिमए त़य्यिबा के 4 फ़ज़ाइल	142
सूरए यासीन शरीफ़ के 16 फ़ज़ाइल	21	(1) ख़ुश नसीब कौन	142
सूरए कह्फ़ के 4 फ़ज़ाइल	37	(2) अफ़्ज़ल ज़िक्र व दुआ़	142
सूरए फ़त्ह़ के 3 फ़ज़ाइल	64	(3) आस्मानों के दरवाज़े खुल जाते हैं	143
सू-रतुद्दुख़ान के चार फ़ज़ाइल	76	(4) तज्दीदे ईमान	143
सूरए मुल्क के 9 फ़ज़ाइल	82	"سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ" के फ़ज़ाइल	143
सूरए रह़मान के 4 फ़ज़ाइल	91	(1) गुनाह मिटा दिये जाते हैं	143
सूरए वाक़िआ़ के फ़ज़ाइल	100	(2) सोने का पहाड़ स-दक़ा करने का सवाब	144
सू-रतुस्सज्दह	108	(3) जन्नत में खजूर का दरख़्त	144

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
"लाहौल शरीफ़" पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल	145	ग्यारह हज़ार दुरूद का सवाब	172
(1) जन्नत का दरवाज़ा	145	चौदह हज़ार दुरूदे पाक का सवाब	173
(2) निनानवे बीमारियों के लिये दवा	145	एक लाख दुरूदे पाक का सवाब	173
(3) ने'मत की हि़फ़ाज़त का नुस्ख़ा	146	हर क़िस्म की परेशानी से नजात के लिये	173
बेदार होते वक़्त के 3 अवराद	146	आबे कौसर से भरा प्याला	174
सुब्ह़ व शाम के 5 अज़्कार	148	दुरूदे ताज के 8 म-दनी फूल	174
कलिमए तौह़ीद के 3 फ़ज़ाइल	150	दुरूदे ताज	175
ईमान पर ख़ातिमा के चार अवराद	152	दुरूदे तुनज्जीना के बारे में ईमान	176
गुनाहों की बख़्शिश	153	अफ़रोज़ हि़कायत	178
चार करोड़ नेकियां कमाएं	153	शिफ़ाए अमराज़	180
शैत़ान से बचने का अ़मल	153	दुरूदे माही के बारे में मछली की हि़कायत	180
ग़ीबत से बचने का म-दनी नुस्ख़ा	154	**फ़ैज़ाने दुआ़**	
पांच म-दनी फूल	155	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	182
जादू और बलाओं से हि़फ़ाज़त के लिये शश क़ुफ़्ल	155	दुआ़ की अहम्मिय्यत	182
नमाज़ के बा'द पढ़े जाने वाले अवराद	157	दुआ़ दाफ़ेए बला है	183
मिन्टों में चार ख़त्मे क़ुरआन का सवाब	161	इ़बादात में दुआ़ का मक़ाम	183
शैत़ान से मह़फ़ूज़ रहने का अ़मल	161	दुआ़ के तीन फ़ाएदे	183
फ़ैज़ाने दुरूद		5 म-दनी फूल	184
दुरूद शरीफ़ के 7 फ़ज़ाइल		न जाने कौन सा गुनाह हो गया है ?	185
दुरूद शरीफ़ के 30 म-दनी फूल	162	नमाज़ न पढ़ना गोया ख़त़ा ही नहीं !	186
दीदारे सरकार صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के त़लबगार के लिये तोह़फ़ा	165	जिस दोस्त की बात न मानी	187
बख़्शिश व मग़्फ़िरत	167	क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर का एक सबब	188
माल में ख़ैरो ब-र-कत	168	जल्दी मचाने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती	189
क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा मज़्बूत़ हो	168	अफ़सरों के पास तो धक्के खाते हो मगर......	190
शबे जुमुआ़ का दुरूद	169	दुआ़ की क़बूलिय्यत में ताख़ीर तो करम है	193
तमाम गुनाह मुआ़फ़	169	म-दनी क़ाफ़िले में इर्क़ुन्निसा का इलाज हो गया	195
रह़मत के सत्तर दरवाज़े	170	दुआ़ मांगने के 17 म-दनी फूल	196
एक हज़ार दिन की नेकियां	170	15 क़ुरआनी दुआ़एं	199
छ लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब	170	दीन व दुन्या की भलाइयों वाली 49 दुआ़एं	203
क़ुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	171	दुआ़ए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	203
दुरूदे र-ज़विय्या	171	सोते वक़्त की दुआ़	203
दीन व दुन्या की ने'मतें ह़ासिल कीजिये	171	नींद से बेदार होने के बा'द की दुआ़	203
दुरूदे शफ़ाअ़त	172	बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले की दुआ़	204
दुन्या व आख़िरत की सुरख़ुरूई	172	बैतुल ख़ला से बाहर आने के बा'द की दुआ़	204

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
घर में दाखि़ल होते वक़्त की दुआ़	204	ज़हरीले जानवरों से महफ़ूज़ रहने की दुआ़	220
घर से निकलते वक़्त की दुआ़	205	किसी क़ौम से ख़त़रे के वक़्त की दुआ़	220
खाना खाने से पहले की दुआ़	205	सख़्त ख़त़रे के वक़्त की दुआ़	221
खाना खाने के बा'द की दुआ़	206	ज़बान की लुक्नत की दुआ़	221
दूध पीने के बा'द की दुआ़	206	कुफ़्र व फ़क़्र से पनाह की दुआ़	222
आईना देखते वक़्त की दुआ़	206	इयादत करते वक़्त की दो दुआ़एं	222
किसी मुसल्मान को मुस्कराता देख कर पढ़ने की दुआ़	207	मुसीबत के वक़्त की दुआ़	222
		ता'ज़िय्यत करते वक़्त की दुआ़	223
शुक्रिया अदा करने की दुआ़	207	कफ़न पर लिखने की दुआ़एं	223
अदाए क़र्ज़ की दुआ़	207	दुआ़ बराए रोशनिये चश्म	224
गुस्सा आने के वक़्त की दुआ़	208	फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द की दुआ़एं	225
इ़ल्म में इज़ाफ़े की दुआ़	208	**फ़ैज़ाने अवराद**	
शिआ़रे कुफ़्फ़ार को देखे या आवाज़ सुने तो येह दुआ़ पढ़े	208	रह़मतों की बरसात	226
		बुज़ुर्गों से मन्क़ूल 38 म–दनी वज़ाइफ़	228
मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ़	209	डरावने ख़्वाबों से नजात	228
मुर्ग़ की बांग सुन कर पढ़ने की दुआ़	210	जानवर के काटे का अ़मल	228
बारिश की ज़ियादती के वक़्त की दुआ़	210	बराए दफ़्ए़ बवासीर ख़ूनी व बादी	228
आंधी के वक़्त की दुआ़	211	फ़ालिज व लक़्वा	229
सितारा टूटता देखते वक़्त की दुआ़	211	बराए क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा	229
बाज़ार में दाखि़ल होते वक़्त की दुआ़	212	ज़ेह्न खोलने के लिये	229
बाज़ार में नुक़्सान न हो बल्कि फ़ाएदा हो	212	कोढ़ या पीलिया	230
शबे क़द्र की दुआ़	213	वुस्अ़ते रिज़्क़	230
इफ़्त़ार के वक़्त की दुआ़	214	तलाशे मआ़श	231
आबे ज़मज़म पीते वक़्त की दुआ़	214	कभी मोह़ताज न हो	231
नया लिबास पहनते वक़्त की दो दुआ़एं	215	चोरी से मह़फ़ूज़ रहे	232
तेल लगाते वक़्त की दुआ़	215	गुमशुदा शै के मिलने का अ़मल	232
लड़के के अ़क़ीक़े की दुआ़	216	बराए क़ज़ाए ह़ाजात	232
लड़की के अ़क़ीक़े की दुआ़	217	हर ह़ाजत व मुराद पूरी होगी	232
सुवारी पर इत़्मीनान से बैठ जाने पर दुआ़	217	बर्फ़ बारी रोकने के लिये	233
जब कोई शगुन दिल में खटके उस वक़्त की दुआ़	218	ग़ाइब या भागे हुए शख़्स को बुलाने के लिये	233
		ज़हर का असर न हो	233
नज़रे बद लगने पर पढ़े	219	बुख़ार से शिफ़ा	234
जल जाने पर पढ़ने की दुआ़	219	ज़ालिम और शैत़ान के शर से पनाह के लिये	234

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुआ़ए सय्यिदुना अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ	236	तहज्जुद गुज़ारों की 8 ह़िकायात	271
सुब्ह़ व शाम की ता'रीफ़	237	सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते	271
कु़व्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये	237	नमाज़े इश्राक़	277
बीनाई की ह़िफ़ाज़त के लिये	238	नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत	278
ज़बान में लुक्नत	238	सलातुत्तस्बीह़	278
पेट के दर्द के लिये	238	इस्तिख़ारा	280
तिल्ली बढ़ जाना	238	सलातुल अव्वाबीन की फ़ज़ीलत	282
नाफ़ उतर जाना	239	तह़िय्यतुल वुज़ू	283
बुख़ार	240	सलातुल अस्रार	284
फोड़ा फुन्सी	240	सलातुल ह़ाजात	285
पागल कुत्ते का काट लेना	241	गहन की नमाज़	289
बांझ पन	241	नमाज़े तौबा	290
पैदाइश का दर्द	242	इशा के बा'द दो नफ़्ल का सवाब	291
हैज़ा	242	ज़ोहर के आख़िरी दो नफ़्ल के भी क्या कहने	292
कै़, दर्द, दर्दे शिकम के लिये	242	**फै़ज़ाने रोज़ा**	
दर्दे आ'ज़ा के लिये	243	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	293
एह़तिलाम से ह़िफ़ाज़त	243	नफ़्ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद	293
आंखें कभी न दुखें	243	नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 11 रिवायात	294
घर में म-दनी माह़ोल बनाने का नुस्ख़ा	244	जन्नत का अनोखा दरख़्त	294
शूगर का इलाज	244	40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी	294
क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा	245	दोज़ख़ से 50 साल मसाफ़त दूरी	295
99 अस्माउल ह़ुस्ना और इन के फ़ज़ाइल	246	ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब	295
ख़त्मे क़ादिरिय्यह	260	जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी	295
क़सीदए ग़ौसिया	263	एक रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत	296
फ़ज़ाइले क़सीदए ग़ौसिया मु-तबर्रका	265	बेह्तरीन अ़मल	296
ख़त्मे ख़्वाजगान	266	रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे	297
फै़ज़ाने नवाफ़िल		सोने के दस्तर ख़्वान	297
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	268	हड्डियां तस्बीह़ करती हैं	297
अल्लाह का प्यारा बनने का नुस्ख़ा	268	रोज़े की ह़ालत में मरने की फ़ज़ीलत	298
सलातुल्लैल	269	नेक काम के दौरान मौत की सआ़दत	298
तहज्जुद और रात में नमाज़ पढ़ने का सवाब	269	कालू चाचा की ईमान अफ़्रोज़ वफ़ात	299
तहज्जुद गुज़ार के लिये जन्नत के आ़लीशान बालाख़ाने	270	हर माह तीन रोजे रखने का सवाब	301
		अय्यामे बीज़ के रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 8 रिवायात	302

इलाज़ व अ़-मलिय्यात के दलाइल व शराइत़

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नज़रे बद, डंक और फोड़े फुन्सियों की सूरत में दम करवाने की इजाज़त दी।

(صَحِیح مُسلِم ص١٢٠٦ حدیث٢١٩٦)

मुह़क़्क़िक़े अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी** علیہ رَحْمَۃُ اللّٰہِ القَوی **अशि'अ़तुल्लम्आ़त** (फ़ारसी) जिल्द 3 सफ़ह़ा 645 पर इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : "याद रहे कि तमाम बीमारियों और तक्लीफ़ों में दम करना **जाइज़** है, सिर्फ़ इन तीन के साथ मख़्सूस नहीं, ख़ास त़ौर पर इन के जिक्र की वजह येह है कि दूसरी बीमारियों की निस्बत इन तीन में दम ज़ियादा मुनासिब और मुफ़ीद है।"

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा अफ़्रीक़ा सफ़ह़ा 168 पर फ़रमाते हैं : जाइज़ ता'वीज़ कि कुरआने करीम या अस्माए इलाहिय्यह या दीगर अज़्कार व दा'वात (या'नी दुआ़ओं) से हो उस में अस्लन ह़रज नहीं बल्कि मुस्तह़ब है। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ اَنْ يَّنْفَعَ اَخَاهُ فَلْيَنْفَعْهُ" या'नी तुम में से जो शख़्स अपने मुसल्मान भाई को नफ़्अ़ पहुंचा सके पहुंचाए।"

(صَحِیح مُسلِم ص ١٢٠٨ حدیث ٢١٩٩)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिन्नात और इन्सानों

उन्वान	सफ़ह़ा	उन्वान	सफ़ह़ा
घर से निकलते वक़्त की दुआ़	205	किसी क़ौम से ख़त़रे के वक़्त की दुआ़	220
खाना खाने से पहले की दुआ़	205	सख़्त ख़त़रे के वक़्त की दुआ़	221
खाना खाने के बा'द की दुआ़	206	ज़बान की लुक्नत की दुआ़	221
दूध पीने के बा'द की दुआ़	206	कुफ़्र व फ़क़्र से पनाह की दुआ़	222
आईना देखते वक़्त की दुआ़	206	इ़यादत करते वक़्त की दो दुआ़एं	222
किसी मुसल्मान को मुस्कराता देख कर पढ़ने की दुआ़	207	मुसीबत के वक़्त की दुआ़	222
		ता'ज़िय्यत करते वक़्त की दुआ़	223
शुक्रिया अदा करने की दुआ़	207	कफ़न पर लिखने की दुआ़एं	223
अदाए क़र्ज़ की दुआ़	207	दुआ़ बराए रोशनिये चश्म	224
ग़ुस्सा आने के वक़्त की दुआ़	208	फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द की दुआ़एं	225
इ़ल्म में इज़ाफ़े की दुआ़	208	अ़हद नामा	226
शिआ़रे कुफ़्फ़ार को देखे या आवाज़ सुने तो येह दुआ़ पढ़े	208	**फ़ैज़ाने अवराद**	
		रह़मतों की बरसात	228
मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ़	209	बुज़ुर्गों से मन्क़ूल 38 म–दनी वज़ाइफ़	228
मुर्ग़ की बांग सुन कर पढ़ने की दुआ़	210	डरावने ख़्वाबों से नजात	228
बारिश की ज़ियादती के वक़्त की दुआ़	210	जानवर के काटे का अ़मल	228
आंधी के वक़्त की दुआ़	211	बराए दफ़्ए़ बवासीर ख़ूनी व बादी	229
सितारा टूटता देखते वक़्त की दुआ़	211	फ़ालिज व लक़्वा	229
बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त की दुआ़	212	बराए क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा	229
बाज़ार में नुक़्सान न हो बल्कि फ़ाएदा हो	212	ज़ेह्न खोलने के लिये	230
शबे क़द्र की दुआ़	213	कोढ़ या पीलिया	230
इफ़्त़ार के वक़्त की दुआ़	214	वुस्अ़ते रिज़्क़	231
आबे ज़मज़म पीते वक़्त की दुआ़	214	तलाशे मआ़श	231
नया लिबास पहनते वक़्त की दो दुआ़एं	215	कभी मोह़ताज न हो	231
तेल लगाते वक़्त की दुआ़	215	चोरी से मह़फ़ूज़ रहे	231
लड़के के अ़क़ीक़े की दुआ़	216	गुमशुदा शै के मिलने का अ़मल	232
लड़की के अ़क़ीक़े की दुआ़	217	बराए क़ज़ाए ह़ाजात	232
सुवारी पर इत़्मीनान से बैठ जाने पर दुआ़	217	हर ह़ाजत व मुराद पूरी होगी	232
जब कोई शगुन दिल में खटके उस वक़्त की दुआ़	218	बर्फ़ बारी रोकने के लिये	233
		ग़ाइब या भागे हुए शख़्स को बुलाने के लिये	233
नज़रे बद लगने पर पढ़े	219	ज़हर का असर न हो	233
जल जाने पर पढ़ने की दुआ़	219	बुख़ार से शिफ़ा	234
ज़हरीले जानवरों से मह़फ़ूज़ रहने की दुआ़	220	ज़ालिम और शैत़ान के शर से पनाह के लिये	234

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुआ़ए सय्यिदुना अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ	236	तहज्जुद गुज़ारों की 8 ह़िकायात	271
सुब्ह़ व शाम की ता'रीफ़	237	सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते	271
क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये	237	नमाज़े इश्राक़	277
बीनाई की ह़िफ़ाज़त के लिये	238	नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत	278
ज़बान में लुक्नत	238	सलातुत्तस्बीह़	278
पेट के दर्द के लिये	238	इस्तिख़ारा	280
तिल्ली बढ़ जाना	238	सलातुल अव्वाबीन की फ़ज़ीलत	282
नाफ़ उतर जाना	239	तह़िय्यतुल वुज़ू	283
बुख़ार	240	सलातुल अस्रार	284
फोड़ा फुन्सी	240	सलातुल ह़ाजात	285
पागल कुत्ते का काट लेना	241	गहन की नमाज़	289
बांझ पन	241	नमाज़े तौबा	290
अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया हो तो !	242	इ़शा के बा'द दो नफ़्ल का सवाब	291
हैज़ा	242	ज़ोहर के आख़िरी दो नफ़्ल के भी क्या कहने	292
क़ै, दर्द, दर्दे शिकम के लिये	242	**फ़ैज़ाने रोज़ा**	
दर्दे आ'ज़ा के लिये	243	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	293
एह़तिलाम से ह़िफ़ाज़त	243	नफ़्ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद	293
आंखें कभी न दुखें	243	नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 11 रिवायात	294
घर में म-दनी माह़ोल बनाने का नुस्ख़ा	244	जन्नत का अनोखा दरख़्त	294
शूगर के मरज़ से शिफ़ा	244	40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी	294
क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा	245	दोज़ख़ से 50 साल की मसाफ़त दूरी	295
99 अस्माउल ह़ुस्ना और इन के फ़ज़ाइल	246	ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब	295
ख़त्मे क़ादिरिय्यह	260	जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी	295
क़सीदए ग़ौसिया	263	एक रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत	296
फ़ज़ाइले क़सीदए ग़ौसिया मु-तबर्रका	265	बेहतरीन अ़मल	296
ख़त्मे ख़्वाजगान	266	रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे	297
फ़ैज़ाने नवाफ़िल		सोने के दस्तर ख़्वान	297
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	268	हड्डियां तस्बीह़ करती हैं	297
अल्लाह का प्यारा बनने का नुस्ख़ा	268	रोज़े की ह़ालत में मरने की फ़ज़ीलत	298
सलातुल्लैल	269	नेक काम के दौरान मौत की सआ़दत	298
तहज्जुद और रात में नमाज़ पढ़ने का सवाब	269	कालू चाचा की ईमान अफ़्रोज़ वफ़ात	299
तहज्जुद गुज़ार के लिये जन्नत के आ़लीशान बालाख़ाने	270	हर माह तीन रोज़े रखने का सवाब	301
		अय्यामे बीज़ के रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 8 रिवायात	302

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
घर से निकलते वक़्त की दुआ़	205	किसी क़ौम से ख़त़रे के वक़्त की दुआ़	220
खाना खाने से पहले की दुआ़	205	सख़्त ख़त़रे के वक़्त की दुआ़	221
खाना खाने के बा'द की दुआ़	206	ज़बान की लुक्नत की दुआ़	221
दूध पीने के बा'द की दुआ़	206	कुफ़्र व फ़क़्र से पनाह की दुआ़	222
आईना देखते वक़्त की दुआ़	206	इ़यादत करते वक़्त की दो दुआ़एं	222
किसी मुसल्मान को मुस्कराता देख कर पढ़ने की दुआ़	207	मुसीबत के वक़्त की दुआ़	222
		ता'ज़िय्यत करते वक़्त की दुआ़	223
शुक्रिया अदा करने की दुआ़	207	कफ़न पर लिखने की दुआ़एं	223
अदाए क़र्ज़ की दुआ़	207	दुआ़ बराए रोशनिये चश्म	224
ग़ुस्सा आने के वक़्त की दुआ़	208	फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द की दुआ़एं	225
इ़ल्म में इज़ाफ़े की दुआ़	208	अ़हद नामा	226
शिआ़रे कुफ़्फ़ार को देखे या आवाज़ सुने तो येह दुआ़ पढ़े	208	**फ़ैज़ाने अवराद**	
		रह़मतों की बरसात	228
मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ़	209	बुज़ुर्गों से मन्क़ूल 38 म–दनी वज़ाइफ़	228
मुर्ग़ की बांग सुन कर पढ़ने की दुआ़	210	डरावने ख़्वाबों से नजात	228
बारिश की ज़ियादती के वक़्त की दुआ़	210	जानवर के काटे का अ़मल	228
आंधी के वक़्त की दुआ़	211	बराए दफ़्ए़ बवासीर ख़ूनी व बादी	229
सितारा टूटता देखते वक़्त की दुआ़	211	फ़ालिज व लक़्वा	229
बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त की दुआ़	212	बराए क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा	229
बाज़ार में नुक़्सान न हो बल्कि फ़ाएदा हो	212	ज़ेह्न खोलने के लिये	230
शबे क़द्र की दुआ़	213	कोढ़ या पीलिया	230
इफ़्त़ार के वक़्त की दुआ़	214	वुस्अ़ते रिज़्क़	231
आबे ज़मज़म पीते वक़्त की दुआ़	214	तलाशे मआ़श	231
नया लिबास पहनते वक़्त की दो दुआ़एं	215	कभी मोह़ताज न हो	231
तेल लगाते वक़्त की दुआ़	215	चोरी से मह़फ़ूज़ रहे	231
लड़के के अ़क़ीक़े की दुआ़	216	गुमशुदा शै के मिलने का अ़मल	232
लड़की के अ़क़ीक़े की दुआ़	217	बराए क़ज़ाए ह़ाजात	232
सुवारी पर इत़्मीनान से बैठ जाने पर दुआ़	217	हर ह़ाजत व मुराद पूरी होगी	232
जब कोई शगुन दिल में खटके उस वक़्त की दुआ़	218	बर्फ़ बारी रोकने के लिये	233
		ग़ाइब या भागे हुए शख़्स को बुलाने के लिये	233
नज़रे बद लगने पर पढ़े	219	ज़हर का असर न हो	233
जल जाने पर पढ़ने की दुआ़	219	बुख़ार से शिफ़ा	234
ज़हरीले जानवरों से मह़फ़ूज़ रहने की दुआ़	220	ज़ालिम और शैत़ान के शर से पनाह के लिये	234

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुआ़ए सय्यिदुना अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ	236	तहज्जुद गुज़ारों की 8 ह़िकायात	271
सुब्ह़ व शाम की ता'रीफ़	237	सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते	271
क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये	237	नमाज़े इश्राक़	277
बीनाई की ह़िफ़ाज़त के लिये	238	नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत	278
ज़बान में लुक्नत	238	सलातुत्तस्बीह़	278
पेट के दर्द के लिये	238	इस्तिख़ारा	280
तिल्ली बढ़ जाना	238	सलातुल अव्वाबीन की फ़ज़ीलत	282
नाफ़ उतर जाना	239	तह़िय्यतुल वुज़ू	283
बुख़ार	240	सलातुल अस्रार	284
फोड़ा फुन्सी	240	सलातुल ह़ाजात	285
पागल कुत्ते का काट लेना	241	गहन की नमाज़	289
बांझ पन	241	नमाज़े तौबा	290
अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया हो तो !	242	इ़शा के बा'द दो नफ़्ल का सवाब	291
हैज़ा	242	ज़ोहर के आख़िरी दो नफ़्ल के भी क्या कहने	292
क़ै, दर्द, दर्दे शिकम के लिये	242	**फ़ैज़ाने रोज़ा**	
दर्दे आ'ज़ा के लिये	243	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	293
एह़तिलाम से ह़िफ़ाज़त	243	नफ़्ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद	293
आंखें कभी न दुखें	243	नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 11 रिवायात	294
घर में म-दनी माह़ोल बनाने का नुस्ख़ा	244	जन्नत का अनोखा दरख़्त	294
शूगर के मरज़ से शिफ़ा	244	40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी	294
क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा	245	दोज़ख़ से 50 साल की मसाफ़त दूरी	295
99 अस्माउल ह़ुस्ना और इन के फ़ज़ाइल	246	ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब	295
ख़त्मे क़ादिरिय्यह	260	जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी	295
क़सीदए ग़ौसिया	263	एक रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत	296
फ़ज़ाइले क़सीदए ग़ौसिया मु-तबर्रका	265	बेहतरीन अ़मल	296
ख़त्मे ख़्वाजगान	266	रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे	297
फ़ैज़ाने नवाफ़िल		सोने के दस्तर ख़्वान	297
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	268	हड्डियां तस्बीह़ करती हैं	297
अल्लाह का प्यारा बनने का नुस्ख़ा	268	रोज़े की ह़ालत में मरने की फ़ज़ीलत	298
सलातुल्लैल	269	नेक काम के दौरान मौत की सआ़दत	298
तहज्जुद और रात में नमाज़ पढ़ने का सवाब	269	कालू चाचा की ईमान अफ़रोज़ वफ़ात	299
तहज्जुद गुज़ार के लिये जन्नत के आ़लीशान बालाख़ाने	270	हर माह तीन रोज़े रखने का सवाब	301
		अय्यामे बीज़ के रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 8 रिवायात	302

की नज़र से पनाह मांगा करते थे ह़त्ता कि सूरए फ़लक़ व नास नाज़िल हुईं, फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को ले लिया और इन के मा सिवा (या'नी इलावा) को छोड़ दिया।

(سُنَنُ التِّرمِذِی ج٤ ص١٣ حدیث ٢٠٦٥)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : ''या'नी सूरए फ़लक़ और नास नाज़िल होने से पहले हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिन्नो इन्स की नज़र से बचने के लिये मुख़्तलिफ़ दुआ़एं पढ़ा करते थे म-सलन اَعُوْذُ بِاللہِ مِنَ الْجَانِّ वग़ैरा, फिर (सूरए फ़लक़ व नास नाज़िल होने के बा'द) दीगर दुआ़ओं की कसरत छोड़ दी (और) ज़ियादा तर **सूरए फ़लक़** व नास ही से अ़मल फ़रमाया।'' (مراٰۃ المناجیح، ج٦، ص٢٤٥)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ किताबे मुस्तत़ाब ''म-दनी पन्ज सूरह'' मशहूर क़ुरआनी सूरतों, दुरूदों, रूह़ानी त़िब्बी इ़लाजों और ख़ुश्बूदार म-दनी फूलों का दिल चस्प म-दनी गुलदस्ता है, इस का हर घर में होना ज़रूरी है। क़ुरआनी आयात का तरजमा कन्ज़ुल ईमान से लिया गया है। इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़ें बल्कि अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ दूसरों को भी तोह़फ़े में पेश करें या हदिय्यतन ले कर पढ़ने का मश्वरा दें। नीज़ मसाजिद व मज़ाराते औलिया और आ़म दारुल मुत़ा-लओं वग़ैरा में भी रखिये ताकि नमाज़ी, ज़ाइरीन और आ़म्मतुल मुस्लिमीन इस्तिफ़ादा कर सकें। याद रखिये कि अवरादो वज़ाइफ़ की तासीर के लिये कम अज़ कम 3 शराइत़ का पाया जाना ज़रूरी है चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ رب العزت फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 23 के सफ़ह़ा 558 पर फ़रमाते हैं : ''वज़ाइफ़ व आ'माल के असर करने में तीन

शराइत़ ज़रूरी हैं :

(1) **हुस्ने ए'तिक़ाद,** दिल में दग़दग़ा (या'नी ख़दशा) न हो कि देखिये असर होता है या नहीं ? बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम पर पूरा भरोसा हो कि ज़रूर इजाबत (या'नी क़बूल) फ़रमाएगा। ह़दीस में है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اُدْعُوا اللهَ وَاَنْتُمْ مُوْقِنُوْنَ بِالْاِجَابَةِ या'नी **अल्लाह** तआ़ला से इस ह़ाल पर दुआ़ करो कि तुम्हें इजाबत (या'नी क़बूलिय्यत) का यक़ीन हो।

(سُنَنُ التِّرْمِذِی ج٥ ص٢٩٢ حديث ٣٤٩٠)

(2) **सब्रो तह़म्मुल**, दिन गुज़रें तो घबराएं नहीं कि इतने दिन पढ़ते गुज़रे अभी कुछ असर न हुवा ! यूं इजाबत (या'नी क़बूलिय्यत) बन्द कर दी जाती है बल्कि लिपटा रहे और लौ लगाए रहे कि अब **अल्लाह व रसूल** (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अपना फ़ज़्ल करते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿۵۹﴾

(پ١٠،التوبة:٥٩)

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और क्या अच्छा होता अगर वोह इस पर राज़ी होते जो **अल्लाह** व रसूल ने उन को दिया और कहते हमें **अल्लाह** काफ़ी है, अब देता है हमें **अल्लाह** अपने फ़ज़्ल से और **अल्लाह** का रसूल, **अल्लाह** ही की त़रफ़ रग़बत है।

ह़दीस में है : يُسْتَجَابُ لِاَحَدِكُمْ مَالَمْ يَعْجَلْ فَيَقُوْلُ قَدْ دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَبْ या'नी तुम्हारी दुआ़एं क़बूल होती हैं जब तक जल्दी न करो कि मैं ने दुआ़ की और अब तक क़बूल न हुई।

(सह़ीह़ मुस्लिम, स. 1463, ह़दीस : 2735)

(3) मेरे (या'नी आ'ला ह़ज़रत عليه رحمة رب العزت) यहां की जुम्ला इजाज़ात व वज़ाइफ़ व आ'माल व ता'वीज़ात में शर्त़ है कि नमाज़े पन्जगाना बा जमाअ़त मस्जिद में अदा करने की कामिल पाबन्दी रहे । وبالله التوفيق"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस किताब के मुअल्लिफ़ और इस का मुत़ा–लआ़ करने वालों को इस का ख़ूब नफ़्अ़ पहुंचाए । **अल्लाहु** शकूर عَزَّوَجَلَّ सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ की इस नाचीज़ सअ़्य को मश्कूर फ़रमाए और इख़्लास की ला ज़वाल दौलत से मालामाल करे ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो   कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

दुआ़ए अ़त्त़ार : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **!** जो इस किताब को अपने अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये नीज़ दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ शादी ग़मी की तक़रीबात व इज्तिमाआ़त वग़ैरा में तक़्सीम करवाए, मह़ल्ले में घर घर पहुंचाए उस का और उस के तुफ़ैल मेरा भी दोनों जहां में बेड़ा पार कर दे ।

امين بجاه النبي الامين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

त़ालिबे ग़मे मदीना
व
बक़ीअ़
व
मग़्फ़िरत

25 शव्वालुल मुकर्रम 1429 हि., 25–10–2008

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ؕ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ؕ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ؕ

''म-दनी पन्ज सूरह पढ़ा करें'' के 19 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 19 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** '' نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''

(अल मो'जमुल कबीर लित्त़-बरानी, अल ह़दीस : 5942, जि. 6, स. 185 बैरूत)

दो म-दनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) (5) रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा। (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा। (8) क़ुरआनी आयात और (9) अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा। (10) जहां जहां ''**अल्लाह**'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (11) जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (12) (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा। (13) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) ''याद दाश्त'' वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (14) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (15) इस ह़दीसे पाक ''تَهَادَوْا تَحَابُّوْا एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।'' (मुअत्त़ा इमामे मालिक, जि. 2, स. 407, अल ह़दीस : 1731) पर अ़मल की निय्यत से

(एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़्फ़तन दूंगा। (16) जिन को दूंगा ह़त्तल इम्कान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने दिन (म-सलन 40 दिन) के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये (17) कम अज़ कम एक अ़दद म-दनी पन्ज सूरह किसी मस्जिद या मज़ार शरीफ़ पर मुसल्मानों के पढ़ने के लिये रखूंगा (सिर्फ़ उसी मस्जिद व मज़ार पर रखिये जहां पहले से मौजूद न हो) (18) इस किताब के मुत़ा-लए़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा। (19) किताबत वग़ैरा में शर-ई़ ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। (ज़बानी कहना या कहलवाना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

इमामा और साइन्स

जदीद साइन्सी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ मुस्तक़िल त़ौर पर इमामा शरीफ़ सजाने वाला ख़ुश नसीब मुसल्मान फ़ालिज और ख़ून की वजह से जनम लेने वाली बा'ज़ बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहता है क्यूं कि इमामा शरीफ़ सजाने की ब-र-कत से दिमाग़ की त़रफ़ जाने वाली ख़ून की बड़ी बड़ी नालियों में ख़ून का दबाव सिर्फ़ ज़रूरत की ह़द तक रहता है और ग़ैर ज़रूरी ख़ून दिमाग़ तक नहीं पहुंच पाता! लिहाज़ा अमरीका में फ़ालिज के इलाज के लिये इमामा नुमा "मास्क" (MASK) बनाया गया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह शरीफ़

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है : जिस ने मुझ पर सो100 मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत **शु-हदा** के साथ रखेगा।

(مجمع الزوائد ج ۱۰ ص ۲۵۳ حدیث ۱۷۲۹۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नबियों के सुल्तान, सरवरे ज़ी शान, सरदारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ (की फ़ज़ीलत) के बारे में इस्तिफ़्सार किया, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नामों में से एक नाम है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के **इस्मे आ'ज़म** और इस के दरमियान ऐसा ही कुर्ब है जैसे आंख की सियाही (पुतली) और सफ़ेदी के दरमियान।"

(مستدرک للحاکم ج۲ص ۲۵۰ حدیث ۲۰۷۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "इस्मे आ'ज़म" की बहुत ब-र-कतें हैं, इस्मे आ'ज़म के साथ जो दुआ़ की जाए वोह क़बूल हो जाती है। सरकारे **आ'ला हज़रत** رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे माजिद हज़रत **रईसुल मु-तकल्लिमीन** मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, "बा'ज़ उ़-लमा ने بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم को इस्मे आ'ज़म कहा। सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है, "**बिस्मिल्लाह** ज़बाने आ़रिफ़ (आ़रिफ़ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पहचानने वाला) से ऐसी है जैसे **कलामे ख़ालिक़** عَزَّوَجَلَّ से "**कुन**"। (या'नी "हो जा।")

(اَحسنُ الوِعاء ص ٦٦)

अधूरा काम

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे **मदीनए मुनव्वरह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो भी **अहम** काम بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم के साथ शुरूअ़ नहीं किया जाता वोह अधूरा रह जाता है।"

(الدُّرُّالْمَنْثُور ج۱ ص۲٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने नेक और जाइज़ कामों

में ब-र-कत दाख़िल करने के लिये हमें पहले بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ज़रूर पढ़ लेना चाहिये । खाने खिलाने, पीने पिलाने, रखने उठाने, धोने पकाने, पढ़ने पढ़ाने, चलने (गाड़ी वगै़रा) चलाने, उठने उठाने, बैठने बिठाने, बत्ती जलाने, पंखा चलाने, दस्तर ख़्वान बिछाने बढ़ाने, बिछौना लपेटने बिछाने, दुकान खोलने बढ़ाने, ताला खोलने लगाने, तेल डालने इ़त्र लगाने, बयान करने ना'त शरीफ़ सुनाने, जूता पहनने इ़मामा सजाने, दरवाज़ा खोलने बन्द फ़रमाने, **अल ग़रज़** हर जाइज़ काम के शुरूअ़ में (जब कि कोई मानेए़ शर-ई़ न हो) بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ने की आ़दत बना कर इस की ब-र-कतें लूटना ऐन सआ़दत है ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"बिस्मिल्लाह की ब-र-कत" के तेरह हु़रूफ़ की निस्बत से "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" के 13 म-दनी फूल

﴾1﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन अ़ली बूनी علیہ رحمۃ اللہ الغنی शम्सुल मआ़रिफ़ (मुतर्जम) के सफ़ह़ा 37 पर लिखते हैं : जो बिला नाग़ा **सात दिन** तक "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" 786 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ उस की हर ह़ाजत पूरी हो । अब वोह ह़ाजत ख़्वाह किसी भलाई के पाने की हो या बुराई दूर होने की या कारोबार चलने की ।

(شمس المعارف مترجم،ص۳۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

《2》 **जो** किसी ज़ालिम के सामने "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" 50 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े उस ज़ालिम के दिल में पढ़ने वाले की हैबत पैदा हो और उस के शर से बचा रहे।

(ऐज़न, स. 37)

《3》 **जो** शख़्स तुलूए आफ़्ताब के वक़्त सूरज की त़रफ़ रुख़ कर के بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ 300 बार और दुरूद शरीफ़ 300 बार पढ़े **अल्लाह** عزّوجلّ उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा। और (रोज़ाना पढ़ने से) اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عزّوجلّ एक साल के अन्दर अन्दर अमीरो कबीर हो जाएगा। (ऐज़न, स. 37)

《4》 **कुन्द** ज़ेहन अगर "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" 786 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले तो اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عزّوجلّ उस का ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ हो जाए और जो बात सुने याद रहे।

(ऐज़न, स. 37)

《5》 **अगर** क़ह़त़ साली हो तो "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" 61 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ें, (फिर दुआ़ करें) اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عزّوجلّ बारिश होगी। (ऐज़न, स. 37)

《6,7》 بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ काग़ज़ पर 35 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) लिख कर घर में लटका दें اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عزّوجلّ शैत़ान का गुज़र न हो और ख़ूब ब-र-कत हो। अगर दुकान में लटकाएं तो اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عزّوجلّ कारोबार ख़ूब चमके। (ऐज़न, स. 38)

(8) यकुम मुह़र्रमुल ह़राम को "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" 130

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआला उस पर सौ रह़मतें भेजता है।

बार लिख कर (या लिखवा कर) जो कोई अपने पास रखे (या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े, रेग्ज़ीन या चमड़े में सिलवा कर पहन ले) اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उम्र भर उस को या उस के घर में किसी को कोई बुराई न पहुंचे। (ऐज़न, स. 38)

मस्अला : सोने या चांदी या किसी भी धात की डिबिया में ता'वीज़ पहनना मर्द को जाइज़ नहीं। इसी त़रह़ किसी भी धात की ज़न्जीर ख़्वाह उस में ता'वीज़ हो या न हो मर्द को पहनना ना जाइज़ व गुनाह है। इसी त़रह़ सोने, चांदी और स्टील वग़ैरा किसी भी धात की तख़्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हुवा हो या न लिखा हुवा हो अगर्चे **अल्लाह** का मुबारक नाम या कलिमए त़य्यिबा वग़ैरा खुदाई किया हुवा हो उस का पहनना मर्द के लिये ना जाइज़ है। औरत सोने चांदी की डिबिया में ता'वीज़ पहन सकती है।

﴾9﴿ **जिस** औरत के बच्चे ज़िन्दा न रहते हों वोह "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ" 61 बार लिख कर (या लिखवा कर) अपने पास रखे (चाहे तो मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग कर के कपड़े, रेग्ज़ीन या चमड़े में सी कर गले में पहन ले या बाज़ू में बांध ले।) اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बच्चे ज़िन्दा रहेंगे। (ऐज़न स. 38)

﴾10﴿ घर का दरवाज़ा बन्द करते वक़्त याद कर के "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ" पढ़ लीजिये शैत़ान (सरकश जिन्नात) घर में दाख़िल न हो सकेंगे। (ماخوذاز صحیح البخاری ج۳ ص۵۹۱ حدیث۵۶۲۳)

﴾11﴿ रात को खाने पीने के बरतन बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर ढक

दीजिये, अगर ढकने के लिये कोई चीज़ न हो तो "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" कह कर बरतन के मुंह पर तिन्का वग़ैरा रख दीजिये। (ऐज़न)

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है, साल में एक रात ऐसी आती है कि उस में **वबा** उतरती है जो बरतन छुपा हुवा नहीं है या मश्क का मुंह बंधा हुवा नहीं है अगर वहां से वोह वबा गुज़रती है तो उस में उतर जाती है। (صحیح مسلم ص۱۱۱۵ حدیث ۲۰۱٤)

﴾12﴿ सोने से क़ब्ल "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" पढ़ कर तीन बार बिस्तर झाड़ लीजिये, اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मूज़िय्यात (या'नी ईज़ा देने वाली चीज़ों) से पनाह ह़ासिल होगी।

﴾13﴿ कारोबार में जाइज़ लैन दैन के वक़्त या'नी जब किसी से लें तो "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" पढ़ें और जब किसी को दें तो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ कहें اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ूब ब-र-कत होगी।

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ हमें "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" की ब-र-कतों से मालामाल फ़रमा और हर नेक व जाइज़ काम की इब्तिदा में "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। **اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین** صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

“का'बतुल्लाह” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से बिस्मिल्लाह शरीफ़ के 8 अवराद

(1) घर की हि़फ़ाज़त के लिये

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं, “जिस ने अपने घर के बाहरी दरवाज़े (MAIN GATE) पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिख लिया वोह (सिर्फ़ दुन्या में) हलाकत से बे ख़ौफ़ हो गया ख़्वाह काफ़िर ही क्यूं न हो, तो भला उस मुसल्मान का क्या आ़लम होगा जो ज़िन्दगी भर अपने **दिल** के आबगीने पर इस को लिखे हुए होता है।” (تفسیرِ کبیر جلد اول ص ۱۵۲)

(2) दर्दे सर का इलाज

क़ैसरे रूम ने **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़त़ लिखा कि मुझे **दाइमी दर्दे सर** की शिकायत है अगर आप के पास इस की दवा हो तो भेज दीजिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस को एक टोपी भेज दी, क़ैसरे रूम उस टोपी को पहनता तो उस का **दर्दे सर** काफ़ूर हो जाता और जब सर से उतारता तो **दर्दे सर** फिर लौट आता। उसे बड़ा **तअ़ज्जुब** हुवा। आख़िरे कार उस ने उस टोपी को उधेड़ा तो उस में से एक काग़ज़ बर आमद हुवा जिस पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिखा था।

(تفسیر کبیر جلد اول ص۱۵۵)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है।

(3) नक्सीर फूटने का इलाज

अगर किसी की नक्सीर फूट जाए और ख़ून बहने लगे तो शहादत कद्धी उंगली से पेशानी पर से بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखना शुरूअ़ कर के नाक के आख़िर पर ख़त्म करे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ून बन्द हो जाएगा।

(4) जिन्नात से सामान की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "इन्सान के साज़ो सामान और मल्बूसात को जिन्नात इस्ति'माल करते हैं। लिहाज़ा तुम में से जब कोई शख़्स कपड़ा (पहनने के लिये) उठाए या (उतार कर) रखे तो "बिस्मिल्लाह शरीफ़" पढ़ लिया करे। इस के लिये **अल्लाह** तआ़ला का नाम मोहर है।" (या'नी बिस्मिल्लाह पढ़ने से जिन्नात इन कपड़ों को इस्ते'माल नहीं करेंगे।)

(كِتَابُ الْعَظَمَة ،الحديث ١١٢٣، ص٤٢٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी त़रह़ हर चीज़ रखते उठाते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ने की आ़दत बनानी चाहिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शरीर जिन्नात की दस्त बुर्द से ह़िफ़ाज़त ह़ासिल होगी।

(5) दुश्मनी ख़त्म करने का वज़ीफ़ा

अगर पानी पर 786 मर्तबा بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ कर **मुख़ालिफ़** (या'नी दुश्मन) को पिला दें तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह मुख़ा-लफ़त छोड़ देगा और मह़ब्बत करने लगेगा और अगर मुवाफ़िक़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे ।

(या'नी दोस्त) को पिला दें तो महब्बत बढ़ जाएगी ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 578)

(6) मरज़ से शिफ़ा का वज़ीफ़ा

जिस दर्द या मरज़ पर तीन रोज़ तक सो मर्तबा بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط हुज़ूरे दिल से पढ़ कर दम किया जाए اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उस से आराम हो जाएगा । (जन्नती ज़ेवर, स. 579)

(7) चोर और अचानक मौत से हिफ़ाज़त

अगर रात को सोते वक़्त 21 मर्तबा بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط पढ़ लें तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ माल व अस्बाब चोरी से **महफ़ूज़** रहेंगे और मर्गे ना गहानी (या'नी अचानक मौत) से भी **हिफ़ाज़त** होगी ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 579)

(8) आफ़्तें दूर होने का आसान विर्द

मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना **अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि सुल्ताने **मक्कए मुकर्रमा**, ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "ऐ अली ! (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) मैं तुम्हें ऐसे कलिमात न बता दूं जिन्हें तुम **मुसीबत** के वक़्त पढ़ लो ।" अर्ज़ किया, "ज़रूर इर्शाद फ़रमाइये ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरी

जान कुरबान ! तमाम अच्छाइयां मैंने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही से सीखी हैं"। इर्शाद फ़रमाया, "जब तुम किसी मुश्किल में फंस जाओ तो इस तरह पढ़ो :-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से जिन बलाओं को चाहेगा दूर फ़रमा देगा। (عَمَلُ الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ لا بن سُنّى ص ١٢٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी **बीमारी**, क़र्ज़दारी, मुक़द्दमे बाज़ी, **दुश्मन** की त़रफ़ से ईज़ा रसानी, बे रोज़गारी या कोई सी भी आफ़ते ना गहानी आन पड़े, कोई चीज़ **गुम** हो जाए, किसी की बात सुन कर **सदमा** पहुंचे, कोई मारे, दिल **दुख** जाए, **ठोकर** लगे, गाड़ी ख़राब हो जाए, **ट्राफ़िक** जाम हो जाए, कारोबार में **नुक़्सान** हो जाए, **चोरी** हो जाए, अल ग़रज़ छोटी या बड़ी कोई सी भी परेशानी हो

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

पढ़ते रहने की आ़दत बना लीजिये। निय्यत साफ़ होगी तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मन्ज़िल आसान होगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

फ़ैज़ाने तिलावत

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "दुआ़ आस्मान व ज़मीन के दरमियान मुअ़ल्लक़ रहती है उस में से कुछ भी ऊपर नहीं चढ़ता, जब तक तू अपने नबी पर **दुरूद** न भेजे ।" (سُنَنُ التِّرْمِذِی ج۲ص ۲۹ حدیث۴۸۶)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा (कि) दुरूद दुआ़ की क़बूलिय्यत बल्कि बारगाहे इलाही में पेश होने का ज़रीआ़ है । (مراٰۃ المناجیح ج۲،ص۱۰۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सू-रतुल ह़श्र की आख़िरी आयात पढ़ने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स सुब्ह़ के वक़्त तीन बार اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم कहे और **सूरए ह़श्र** की आख़िरी तीन आयात पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते मुक़र्रर कर देता है जो शाम तक उस के लिये **दुआ़ए रह़मत** करते हैं और अगर उस दिन मरे तो **शहीद** होगा

और शाम को पढ़े तो सुब्ह़ तक येही फ़ज़ीलत है।

(سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج٤ ص٤٢٣ حدیث٢٩٣١)

सू-रतुल ह़श्र की आख़िरी तीन आयात

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۲۲﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ یُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۴﴾

(پ۲۸،حشر ۲۲۔۲۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

“करम” के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से सू-रतुल ब-क़रह की आख़िरी आयात पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल

(1) **ह़ज़रते** सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन व आस्मान को पैदा करने से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी फिर उस में से **सूरए ब-क़रह की आख़िरी दो आयतें** नाज़िल फ़रमाई। जिस घर में तीन रातें इन **दो**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم जब तुम मुर्सलीन عَلَیْہِمُ السَّلام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

आयतों को पढ़ा जाएगा शैतान उस घर के क़रीब न आएगा।

(سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج٤ ص٤٠٤ حدیث٢٨٩١)

(2) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सूरए ब-क़रह के ख़ातिमा की दो आयतें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उस ख़ज़ाने में से हैं जो अ़र्श के नीचे है **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे येह दोनों **आयतें** दीं इन्हें सीखो और अपनी औ़रतों को सिखाओ कि वोह रह़मत हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नज़्दीकी और दुआ़ हैं। (دارمی ج٢ص٥٤٢ حدیث٣٣٩٠)

(3) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स **सूरए ब-क़रह** की **आख़िरी दो आयतें** रात में पढ़ेगा वोह उसे किफ़ायत करेंगी।

(صَحِیحُ البُخارِیّ ج٣ ص٤٠٥ حدیث٥٠٠٩)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सूरए ब-क़रह की दो आयतें किफ़ायत करने से मुराद येह है कि येह **दो आयतें** उस के उस रात के क़ियाम (रात की इ़बादत) के क़ाइम मक़ाम हो जाएंगी या उस रात उसे शैत़ान से मह़फ़ूज़ रखेंगी। एक क़ौल येह भी है कि उस रात में नाज़िल होने वाली आफ़त से बचाएंगी। واللّٰہ تعالٰی اعلم

(فَتحُ البارِی ج٩ ص٤٨)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कि़यामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

"कु़रआन" के चार हुरूफ़ की निस्बत से आ-यतुल कुरसी के 4 फ़ज़ाइल

(1) **ह़दीस** शरीफ़ में है कि येह आयत कु़रआने मजीद की आयतों में बहुत ही **अ़-ज़मत** वाली आयत है। (اَلدُّرُّالْمَنْثُوْر ج۲ ص۶)

(2) **ह़ज़रते** सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **हुस्ने अख़्लाक़** के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अबू मुन्ज़िर ! क्या तुम्हें मा'लूम है कि कु़रआने पाक की जो आयतें तुम्हें याद हैं उन में कौन सी आयत **अ़ज़ीम** है ? मैं ने अ़र्ज़ किया : اَللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ फिर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया : ऐ अबू मुन्ज़िर ! तुम्हें इ़ल्म मुबारक हो।

(صَحِیح مُسلِم ص۴۰۵ حدیث ۸۱۰)

(3) **मुस्तदरक** की एक रिवायत में है कि "सूरए ब-क़रह" में एक आयत है जो कु़रआने पाक की तमाम आयतों की सरदार है, वोह आयत जिस घर में पढ़ी जाए उस घर से शैत़ान निकल जाता है और वोह **आ-यतुल कुरसी** है।

(مُستَدرَك لِلحَاكِم ج۲ ص۶۴۷ حدیث ۳۰۸۰)

(4) **अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अ़ली** كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मिम्बर पर फ़रमाते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

हुए सुना जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द **आ-यतुल कुरसी** पढ़े उसे जन्नत में दाखिल होने से मौत के सिवा कोई चीज़ नहीं रोकती और जो कोई रात को सोते वक़्त इसे पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे, उस के घर को और आस पास के घरों को **महफ़ूज़** फ़रमा देगा।

(شُعَبُ الْاِيْمَان ج۲ ص۴۵۸ حديث ۲۳۹۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ-यतुल कुरसी की पांच ब-र-कतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द आ-यतुल कुरसी पढ़ेगा उस को ह़स्बे ज़ैल ब-र-कतें नसीब होंगी

《1》 वोह मरने के बा'द जन्नत में जाएगा। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

《2》 वोह शैतान और **जिन्न** की तमाम शरारतों से मह़फ़ूज़ रहेगा। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

《3》 अगर मोह़ताज होगा तो चन्द दिनों में उस की मोह़ताजी और ग़रीबी दूर हो जाएगी।

《4》 जो शख़्स सुब्ह़ व शाम और बिस्तर पर लेटते वक़्त **आ-यतुल कुरसी** और इस के बा'द की दो आयतें خٰلِدُوْن तक पढ़ा करेगा वोह चोरी, ग़र्क़ आबी (पानी में डूबने) और जलने से मह़फ़ूज़ रहेगा। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

《5》 अगर सारे मकान में किसी ऊंची जगह पर लिख कर इस का कत्बा आवेज़ां कर दिया जाए तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उस घर में कभी फ़ाक़ा न होगा बल्कि रोज़ी में ब-र-कत और इज़ाफ़ा होगा और उस मकान

में कभी चोर न आ सकेगा। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ (जन्नती ज़ेवर, स. 589)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आयते करीमा की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हज़रते ज़ुन्नून (या'नी हज़रते यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام) ने **मछली** के पेट में येह कलिमात कहे : لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَکَ ۖ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कोई मा'बूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझ को बेशक मुझ से बे जा हुवा) (پ۱۷،انبیاء:۸۷) लिहाज़ा जो मुसल्मान इन कलिमात के साथ किसी मक़्सद के लिये दुआ मांगे **अल्लाह** तआला उस की **दुआ क़बूल** फ़रमाता है।

(سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج۵ ص۳۰۲ حدیث۳۵۱۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"मुस्तफ़ा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से सोते वक़्त पढ़े जाने वाले 5 वज़ाइफ़

(1) **हज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम अपना पहलू

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है ।

बिस्तर पर रख कर सूरए फ़ातिह़ा और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) पढ़ लोगे तो मौत के इलावा हर चीज़ से **अमान** में आ जाओगे ।

(مَجمَعُ الزَّوَائِد ج١٠ ص١٦٥ حديث١٧٠٣٠)

(2) **ह़ज़रते** सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सोने से पहले **मुसब्बिह़ात** पढ़ा करते थे और फ़रमाया करते कि इन में एक ऐसी आयत है जो हज़ार आयतों से **बेहतर** है । (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج٤ ص٤٠٨ حديث ٥٠٥٧)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : येह (या'नी **मुसब्बिह़ात**) सूरतें कुल सात हैं **सूरए असरा, सूरए ह़दीद, सूरए ह़श्र, सूरए सफ़, सूरए जुमुआ, सूरए तग़ाबुन और सूरए आ'ला**, ज़ाहिर है कि सरकार (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पूरी सूरतें न पढ़ते होंगे कि येह तो बहुत ज़ियादा हैं बल्कि इन की चीदा चीदा आयात तिलावत फ़रमाते होंगे ।

(مرآۃ المناجیح، ج٣، ص٢٤٧)

(3) **ह़ज़रते** सय्यिदुना नौफ़िल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, **नूरे मुजस्सम**, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ पूरी पढ़ कर सोया करो क्यूं कि येह शिर्क से **बराअत** है ।

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج٤ ص٤٠٧ حديث٥٠٥٥)

(4) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रह्मतें भेजता है।

जो अपने बिस्तर पर आते वक़्त तीन मर्तबा येह पढ़ ले : اَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيْمَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَ اَتُوْبُ اِلَيْهِ (तरजमा : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश चाहता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह ज़िन्दा और क़ाइम रखने वाला है और मैं उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं।) अल्लाह तआला उस के गुनाह **बख़्श** देता है अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों, अगर्चे दरख़्तो के पत्तो के बराबर हों, अगर्चे टीलों की रेत के ज़र्रात के बराबर हों, अगर्चे दुन्या के अय्याम के बराबर हों।

(سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج٥ ص٢٥٥ حديث٣٤٠٨)

(5) नीचे दी हुई **सूरए कह्फ़** की आख़िरी चार आयतें या'नी اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا से ख़त्म सूरत तक रात में या सुब्ह़ जिस वक़्त जागने की निय्यत से पढ़ें आंख खुलेगी (اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۙ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾

(پ١٥ الكهف:١٠٧تا١١٠)

(سُنَنُ الدَّارِمِیّ ج٢ص٥٤٦ حديث٣٤٠٦،الوظيفة الكريمة ص٢٩)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلّم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

"रहमत" के चार हुरूफ़ की निस्बत से सूरए फ़ातिहा के 4 फ़ज़ाइल

(1) **हुज़ूरे** पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सूरए फ़ातिहा **हर मरज़ की दवा** है। (سُنَنُ الدَّارمی حدیث ۳۳۷۰ ج۲ ص۵۳۸)

(2) **मुस्नदे** दारिमी में है कि 100 मर्तबा सूरए फ़ातिहा पढ़ कर जो **दुआ** मांगी जाए उस को **अल्लाह** तआला क़बूल फ़रमाता है। (जन्नती ज़ेवर, स. 587)

(3) **बुज़ुर्गों** ने फ़रमाया है कि फ़ज्र की सुन्नतों और फ़र्ज़ के दरमियान में 41 बार सूरए फ़ातिहा पढ़ कर मरीज़ पर दम करने से **आराम** हो जाता है और आंख का दर्द बहुत जल्द अच्छा हो जाता है और अगर इतना पढ़ कर अपना थूक आंखों में लगा दिया जाए तो बहुत **मुफ़ीद** है। (ऐज़न, स. 587)

(4) **सात** दिनों तक रोज़ाना ग्यारह हज़ार मर्तबा सिर्फ़ इतना पढ़िये اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَاِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ ؕ अव्वल आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़िये **बीमारियों** और **बलाओं** को दूर करने के लिये बहुत ही मुजर्रब अमल है। (जन्नती ज़ेवर, स. 588)

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ

सूरए फ़ातिहा मक्की है

وَهِيَ سَبْعُ اٰيَاتٍ

और इस में सात आयतें हैं। एक रुकूअ़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾

सब खूबियां अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का बहुत मेहरबान रह़मत वाला

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٣﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ

रोजे़ जज़ा का मालिक हम तुझी को पूजें और तुझी से

نَسْتَعِيْنُ ﴿٤﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿٥﴾ صِرَاطَ

मदद चाहें हम को सीधा रास्ता चला रास्ता

الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ

उन का जिन पर तूने एह़सान किया न उन का जिन पर ग़ज़ब हुवा

عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾

और न बहके हुओं का

"यासीन शरीफ़ की ब-रकात" के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से सूरए यासीन शरीफ़ के 16 फ़ज़ाइल

(1) **हज़रते** सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सूरए यासीन **क़ुरआन का दिल** है जो इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और आख़िरत की बेहतरी के लिये पढ़ेगा उस की **मग़्फ़िरत** कर दी जाएगी।

(اَلْمُسْنَدُ لِلْاِمَام اَحْمَد بن حَنْبَل، حدیث۲۰۳۲۲ ج۷ ص۲۸۶ ملتقطاً)

(2) **हज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक हर चीज़ का एक **दिल** है और क़ुरआन का **दिल** सूरए यासीन है और जो एक मर्तबा सूरए यासीन पढ़ेगा उस के लिये दस मर्तबा क़ुरआन पढ़ने का **सवाब** लिखा जाएगा। (سُنَنُ التِّرْمِذِیّ حدیث۲۸۹۶ ج۴ص۴۰۶)

(3) **हज़रते** सय्यिदुना हस्सान बिन अतिय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि, सरदारे **मक्कए मुकर्रमा**, सरकारे **मदीनए मुनव्वरह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तौरात में सूरए यासीन का नाम मुइम्मह है, क्यूं कि येह अपनी तिलावत करने वाले को दुन्या और आख़िरत की हर **भलाई** अता करती है, और दुन्या व आख़िरत की बलाएं इस से **दूर** करती है। और दुन्या व आख़िरत की होलनाकियों से **नजात** बख़्शती है। और इस का नाम **मुदाफ़ि-अतुल क़ादियह** भी है, क्यूं कि येह अपनी तिलावत करने वाले से हर बुराई को दूर कर देती है और इस की हर हाजत पूरी करती है, जिस शख़्स ने इस की तिलावत की येह उस के लिये **बीस हज** के बराबर है, और जिस ने इस को लिखा फिर इसे पिया

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे ।

तो उस के पेट में **हज़ार दवाएं, हज़ार नूर, हज़ार यक़ीन, हज़ार ब-र-कतें** और **हज़ार रहमतें** दाख़िल होंगी और इस से हर **धोका** और हर **बीमारी** दूर हो जाएगी । (اَلدُّرُّالْمَنْثُوْر، ج٧،ص ٣٧)

(4) **हज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी **ख़्वाहिश** है कि सूरए यासीन मेरी उम्मत के हर इन्सान के दिल में हो । (ऐज़न, स. 38)

(5) **हज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम, रसूले मुह़तशम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स हमेशा हर रात यासीन की तिलावत करता रहा फिर मर गया तो वोह **शहीद** मरेगा । (ऐज़न, स. 38)

(6) **हज़रते** सय्यिदुना अ़ता बिन अबू रबाह़ ताबेई رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स दिन की इब्तिदा में सूरए यासीन की तिलावत करेगा, उस की तमाम **ह़ाजात** पूरी कर दी जाएंगी ।

(ऐज़न, स. 38)

(7) **हज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : जो शख़्स ब वक़्ते सुब्ह़ सूरए यासीन की तिलावत करे उस दिन की **आसानी** उसे शाम तक अ़ता की गई, और जिस शख़्स ने रात की इब्तिदा में इस की तिलावत की उसे सुब्ह़ तक उस रात की **आसानी** दी गई ।

(ऐज़न, स. 38)

(8) **हज़रते** सय्यिदुना **मा'क़िल** बिन यसार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि बेशक हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सूरए यासीन क़ुरआन का दिल है, जो शख़्स इस सूरए

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर कस्रत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।

मुबा-रका की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के लिये तिलावत करेगा, उस के पहले के गुनाह **बख़्श** दिये जाएंगे, तो तुम इस की तिलावत अपने मरने वालों के पास करो। (ऐज़न, स. 38)

(9) **हज़रते** सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस मरने वाले के पास सूरए यासीन तिलावत की जाती है, **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला उस पर (उस की रूह़ क़ब्ज़ करने में) **नरमी** फ़रमाता है। (ऐज़न, स. 38)

(10) **हज़रते** सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, वोह फ़रमाते हैं : जिस ने सूरए यासीन की तिलावत की उस की **मग़्फ़िरत** हो जाएगी, और जिस ने खाने के वक़्त उस के कम होने की ह़ालत में तिलावत की तो वोह उसे **किफ़ायत** करेगा, और जिस ने किसी मरने वाले के पास इस की तिलावत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (उस पर) मौत के वक़्त नरमी फ़रमाएगा, और जिस ने किसी औ़रत के पास उस के बच्चे की विलादत की तंगी पर सूरए यासीन की तिलावत की उस पर **आसानी** होगी, और जिस ने इस की तिलावत की गोया कि उस ने **ग्यारह मर्तबा** क़ुरआने पाक की तिलावत की, और हर चीज़ के लिये दिल है, और क़ुरआन का दिल **सूरए यासीन** है। (ऐज़न, स. 39)

(11) **हज़रते** सय्यिदुना अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है फ़रमाते हैं : जो शख़्स अपने दिल में **सख़्ती** पाए तो वोह एक पियाले में ज़ा'फ़रान से يٰسٓ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ लिखे फिर उसे पी जाए। (اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का दिल नर्म होगा)

(ऐज़न, स. 39)

(12) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है ।

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने हर जुमुआ़ को अपने वालिदैन, दोनों या एक की क़ब्र की **ज़ियारत** की और उन के पास यासीन की तिलावत की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर ह़र्फ़ के बदले उस की **बख़्शिश व मग़्फ़िरत** फ़रमा देता है । (اَلدُّرُّالْمَنْثُور، ج۷،ص ۴۰)

(13) **ह़ज़रते** सय्यिदुना सफ़्वान बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मशाइख़े किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم फ़रमाते हैं कि जब आप क़रीबुल मर्ग शख़्स के पास सूरए यासीन की तिलावत करेंगे तो उस से **मौत की सख़्ती** को हलका किया जाएगा । (ऐज़न, स. 39)

(14) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने शबे जुमुआ़ सूरए यासीन की तिलावत की उस की **मग़्फ़िरत** कर दी जाएगी ।

(اَلتَّرْغِیب وَالتَّرْھِیب حدیث:۴،ج۱،ص۲۹۸)

(15) **ह़ज़रते** सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ुरआने ह़कीम में एक सूरत है जिसे **अल्लाह** तआ़ला के हां अ़ज़ीम कहा जाता है, उस के पढ़ने वाले को **अल्लाह** तआ़ला के हां शरीफ़ कहा जाता है, उस को पढ़ने वाला क़ियामत के रोज़ रबीआ़ और मुज़िर क़बाइल से ज़ाइद अफ़राद की **शफ़ाअ़त** करेगा, वोह सूरए यासीन है । (اَلدُّرُّالْمَنْثُور، ج۷، ص ۴۰)

(16) **शैख़ुल** ह़दीस मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

علیہ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی ने "जन्नती ज़ेवर" सफ़हा 594 पर सूरए यासीन पढ़ने की बहुत सी ब-र-कतें शुमार की हैं :

《1》 भूका आदमी इस को पढ़े तो **आसूदा** किया जाए। 《2》 प्यासा पढ़े तो **सैराब किया** जाए। 《3》 नंगा पढ़े तो **लिबास** मिले। 《4》 मर्द बे औरत वाला पढ़े तो जल्द उस की **शादी** हो जाए। 《5》 औरत बे शोहर वाली पढ़े तो जल्द **शादी** हो जाए। 《6》 बीमार पढ़े तो **शिफ़ा** पाए। 《7》 क़ैदी पढ़े तो **रिहा** हो जाए। 《8》 मुसाफ़िर पढ़े तो सफ़र में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से **मदद** हो। 《9》 ग़मगीन पढ़े तो उस का **रन्जो ग़म** दूर हो जाए। 《10》 जिस की कोई चीज़ गुम हो गई हो वोह पढ़े तो जो खोया है वोह **मिल** जाए। सूरए यासीन की एक आयत سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِیْمٍ ﴿۵۸﴾ (आयत : 58) को एक हज़ार चार सो उन्हत्तर बार पढ़ो, اِنْ شَآءَ اللہ تعالٰی जिस मक़्सद से पढ़ोगे मुराद पूरी होगी, ख़्वाजा दैरबी लिखते हैं : येह मुजर्रब है। और سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِیْمٍ ﴿۵۸﴾ (आयत : 58) को पांच जगह एक काग़ज़ पर लिख कर ता'वीज़ बांधो तो **हवादिसात** और चोर वग़ैरा से हिफ़ाज़त रहेगी, जो शख़्स सुब्ह को सूरए यासीन पढ़ेगा उस का पूरा दिन **अच्छा** गुज़रेगा और जो शख़्स रात में इस को पढ़ेगा उस की पूरी रात **अच्छी** गुज़रेगी। ह़दीस शरीफ़ में है कि यासीन क़ुरआन का दिल है। (जन्नती ज़ेवर, स. 594)

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

یٰسٓ ﴿۱﴾ وَ الْقُرْاٰنِ الْحَكِیْمِ ﴿۲﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۳﴾

हिक्मत वाले क़ुरआन की क़सम बेशक तुम

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤﴾ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٥﴾

सीधी राह पर भेजे गए हो इ़ज़्ज़त वाले मेहरबान का उतारा हुवा

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٦﴾

ताकि तुम उस क़ौम को डर सुनाओ जिस के बाप दादा न डराए गए तो वोह बे ख़बर हैं

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰۤى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٧﴾

बेशक उन में अक्सर पर बात साबित हो चुकी है तो वोह ईमान न लाएंगे

اِنَّا جَعَلْنَا فِيْۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ

हम ने उन की गरदनों में तौक़ कर दिये हैं कि वोह ठोड़ियों तक हैं तो येह

فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ

ऊपर को मुं उठाए रह गए और हम ने उन के आगे दीवार बना दी और

سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ

उन के पीछे एक दीवार और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो

لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٩﴾ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ

उन्हें कुछ नहीं सूझता और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न डराओ

تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠﴾ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ

वोह ईमान लाने के नहीं तुम तो उसी को डर सुनाते हो जो नसीह़त

وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ

पर चले और रह़मान से बे देखे डरे तो उसे बख़्शिश और इ़ज़्ज़त के

كَرِيْمٍ ﴿۱۱﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا

सवाब की बिशारत दो बेशक हम मुर्दों को जिलाएंगे और हम लिख रहे हैं जो

وَاٰثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْۤ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۲﴾ ع

उन्हों ने आगे भेजा और जो निशानियां पीछे छोड़ गए और हर चीज़ हम ने गिन रखी है एक बताने वाली किताब में

وقف لازم وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۱۳﴾

और उन से निशानियां बयान करो उस शहर वालों की जब उन के पास फ़रिस्तादे आए

اِذْ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا

जब हम ने उन की त़रफ़ दो भेजे फिर उन्हों ने उन को झुटलाया तो हम ने तीसरे से ज़ोर दिया

بِثَالِثٍ فَقَالُوْۤا اِنَّاۤ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿۱۴﴾ قَالُوْا مَاۤ اَنْتُمْ

अब उन सब ने कहा कि बेशक हम तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं बोले तुम तो नहीं

اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَاۤ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ

मगर हम जैसे आदमी और रह़मान ने कुछ नहीं उतारा तुम निरे

اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿۱۵﴾ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّاۤ اِلَيْكُمْ

झूटे हो । वोह बोले हमारा रब जानता है कि बेशक ज़रूर हम तुम्हारी

لْمُرْسَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۷﴾ قَالُوْٓا

तरफ़ भेजे गए हैं और हमारे ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना बोले

اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ

हम तुम्हें मन्हूस समझते हैं बेशक तुम अगर बाज़ न आए तो ज़रूर हम तुम्हें संगसार

وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸﴾ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ؕ

करेंगे और बेशक हमारे हाथों तुम पर दुख की मार पड़ेगी उन्हों ने फ़रमाया तुम्हारी नुहूसत तो

اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَجَآءَ مِنْ

तुम्हारे साथ है क्या इस पर बिदकते हो कि तुम समझाए गए बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो और शहर के परले

اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۰﴾

किनारे से एक मर्द दौड़ता आया बोला ऐ मेरी क़ौम भेजे हुओं की पैरवी करो

اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۲۱﴾

ऐसों की पैरवी करो जो तुम से कुछ नेग नहीं मांगते और वोह राह पर हैं ।

وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۲﴾

और मुझे क्या है कि उस की बन्दगी न करूं जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम्हें पलटना है

ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ

क्या अल्लाह के सिवा और ख़ुदा ठहराऊं कि अगर रहमान मेरा कुछ बुरा चाहे तो उन की

بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ﴿۲۳﴾

सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और न वोह मुझे बचा सकें

اِنِّىْۤ اِذًا لَّفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۴﴾ اِنِّىْۤ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ﴿۲۵﴾

बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूं मुक़र्रर मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो मेरी सुनो

قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِىْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ بِمَا غَفَرَ

उस से फ़रमाया गया कि जन्नत में दाख़िल हो कहा किसी तरह मेरी क़ौम जानती जैसी मेरे

لِىْ رَبِّىْ وَجَعَلَنِىْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿۲۷﴾ وَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ

रब ने मेरी मग़्फ़िरत की और मुझे इ़ज़्ज़त वालों में किया और हम ने इस के बा'द

مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿۲۸﴾

उस की क़ौम पर आस्मान से कोई लश्कर न उतारा और न हमें वहां कोई लश्कर उतारना था

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿۲۹﴾ يٰحَسْرَةً

वोह तो बस एक ही चीख़ थी जभी वोह बुझ कर रह गए और कहा गया

عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ

कि हाए अफ़्सोस उन बन्दों पर जब उन के पास कोई रसूल आता है तो उस से

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۰﴾ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ

ठठ्ठा ही करते हैं क्या उन्हों ने न देखा हम ने उन से पहले कितनी संगतें

أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾ وَإِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا

हलाक फ़रमाई कि वोह अब उन की त़रफ़ पलटने वाले नहीं और जितने भी हैं सब के सब हमारे

مُحْضَرُونَ ﴿٣٢﴾ وَآيَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا

हुज़ूर ह़ाज़िर लाए जाएंगे और उन के लिये एक निशानी मुर्दा ज़मीन है हम ने उसे ज़िन्दा किया और

مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّنْ نَّخِيلٍ

फिर उस से अनाज निकाला तो उस में से खाते हैं और हम ने उस में बाग़ बनाए खजूरों

وَأَعْنَابٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ﴿٣٤﴾ لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ وَمَا

और अंगूरों के और हम ने उस में कुछ चश्मे बहाए कि उस के फलों में से

عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٥﴾ سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ

खाएं और येह उन के हाथ के बनाए नहीं तो क्या ह़क़ न मानेंगे पाकी है उसे जिस ने सब जोड़े

كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾

बनाए उन चीज़ों से जिन्हें ज़मीन उगाती है और ख़ुद उन से और उन चीज़ों से जिन की उन्हें ख़बर नहीं ।

وَآيَةٌ لَّهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُّظْلِمُونَ ﴿٣٧﴾

और उन के लिये एक निशानी रात है हम उस पर से दिन खींच लेते हैं जभी वोह अंधेरे में हैं

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ

और सूरज चलता है अपने एक ठहराओ के लिये येह हुक्म है ज़बर दस्त इल्म

الْعَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ

वाले का और चांद के लिये हम ने मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं यहां तक कि फिर हो गया जैसे खजूर

الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا

की पुरानी डाल सूरज को नहीं पहुंचता कि चांद को पकड़ ले और न रात दिन पर

الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ

सब्क़त ले जाए और हर एक एक घेरे में पैर रहा है और उन के लिये

اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ

एक निशानी येह है कि उन्हें उन के बुज़ुर्गों की पीठ में हम ने भरी कश्ती में सुवार किया और उन के लिये वैसी ही

مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ

कश्तियां बना दीं जिन पर सुवार होते हैं और हम चाहें तो उन्हें डबो दें तो न कोई उन की फ़रियाद को पहुंचने

وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾ وَ

वाला हो और न वोह बचाए जाएं मगर हमारी त़रफ़ की रह़मत और एक वक़्त तक बरतने देना और

اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ

जब उन से फ़रमाया जाता है डरो तुम उस से जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे आने वाला है इस उम्मीद पर

تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا

कि तुम पर मेहर हो तो मुंह फैर लेते हैं और जब कभी उन के रब की निशानियों से कोई निशानी उन के पास

عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿۴۶﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ

आती है तो उस से मुंह ही फैर लेते हैं और जब उन से फ़रमाया जाए अल्लाह के दिये में से कुछ उस की

قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ

राह में ख़र्च करो तो काफ़िर मुसल्मानों के लिये कहते हैं कि क्या हम उसे खिलाएं जिसे अल्लाह चाहता

اَطْعَمَهٗۤ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۴۷﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا

तो खिला देता तुम तो नहीं मगर खुली गुमराही में और कहते हैं कब आएगा

الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۴۸﴾ مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً

येह वा'दा अगर तुम सच्चे हो राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की, कि

تَاْخُذُهُمْ وَ هُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿۴۹﴾ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّ لَاۤ

उन्हें आ लेगी जब वोह दुन्या के झगड़े में फंसे होंगे तो न वसिय्यत कर सकेंगे और न अपने घर

اِلٰۤى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ

पलट कर जाएं और फूंका जाएगा सूर जभी वोह क़ब्रों से

الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿۵۱﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا

अपने रब की त़रफ़ दौड़ते चलेंगे कहेंगे हाए हमारी ख़राबी किस ने

مِنْ مَّرْقَدِنَا ٜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَ صَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۵۲﴾

हमें सोते से जगा दिया येह है वोह जिस का रह़मान ने वा'दा दिया था और रसूलों ने ह़क़ फ़रमाया

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿۵۳﴾

वोह तो न होगी मगर एक चिंघाड़ जभी वोह सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर हो जाएंगे

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ

तो आज किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और तुम्हें बदला न मिलेगा मगर अपने

تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۴﴾ إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿۵۵﴾

किये का बेशक जन्नत वाले आज दिल के बहलावों में चैन करते हैं

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿۵۶﴾ لَهُمْ فِيْهَا

वोह और उन की बीबियां सायों में हैं तख़्तों पर तकिया लगाए उन के लिये

فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿۵۷﴾ سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿۵۸﴾

उस में मेवा है और उन के लिये है उस में जो मांगें उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुवा

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۵۹﴾ أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ

और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो ऐ औलादे आदम क्या मैं ने तुम से अ़हद

اٰدَمَ أَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ إِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۶۰﴾ وَّ

न लिया था कि शैत़ान को न पूजना बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है और

أَنِ اعْبُدُوْنِيْ ۚ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۶۱﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ

मेरी बन्दगी करना येह सीधी राह है और बेशक उस ने तुम में

جِبِلًّا كَثِيْرًا ؕ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۲﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِیْ

से बहुत सी ख़ल्क़त को बहका दिया तो क्या तुम्हें अ़क़्ल न थी येह है वोह जहन्नम जिस का तुम

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۶۳﴾ اِصْلَوْهَا الْیَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۶۴﴾

से वा'दा था आज इसी में जाओ बदला अपने कुफ़्र का

اَلْیَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى اَفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَاۤ اَیْدِیْهِمْ وَ تَشْهَدُ

आज हम इन के मूंहों पर मोहर कर देंगे और इन के हाथ हम से बात करेंगे

اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَ لَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰۤى

और इन के पाउं इन के किये की गवाही देंगे और अगर हम चाहते तो उन की आंखें मिटा देते

اَعْیُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى یُبْصِرُوْنَ ﴿۶۶﴾ وَ لَوْ نَشَآءُ

फिर लपक कर रस्ते की त़रफ़ जाते तो उन्हें कुछ न सूझता और अगर हम चाहते

لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِیًّا وَّ لَا یَرْجِعُوْنَ ﴿۶۷﴾

तो उन के घर बैठे उन की सूरतें बदल देते न आगे बढ़ सकते न पीछे लौटते

وَ مَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِی الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَ مَا

और जिसे हम बड़ी उ़म्र का करें उसे पैदाइश में उल्टा फेरें तो क्या समझते नहीं और हम

عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَ مَا یَنْۢبَغِیْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّ قُرْاٰنٌ

ने उन को शे'र कहना न सिखाया और न वोह उन की शान के लाइक़ है वोह तो नहीं मगर नसीहत और

مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾

रोशन कुरआन   कि उसे डराए जो ज़िन्दा हो और काफ़िरों पर बात साबित हो जाए

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ

और क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने अपने हाथ के बनाए हुए चौपाए उन के लिये पैदा

لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾ وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا

किये तो येह उन के मालिक हैं और उन्हें उन के लिये नर्म कर दिया तो किसी पर सुवार होते हैं और किसी

يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾

को खाते हैं और उन के लिये उन में कई तरह के नफ़्अ और पीने की चीज़ें हैं तो क्या शुक्र न करेंगे

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾

और उन्हों ने अल्लाह के सिवा और ख़ुदा ठहरा लिये कि शायद उन की मदद हो

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾

वोह उन की मदद नहीं कर सकते और वोह उन के लश्कर सब गरिफ़्तार हाज़िर आएंगे

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾ وقف لازم

तो तुम उन की बात का ग़म न करो बेशक हम जानते हैं जो वोह छुपाते हैं और ज़ाहिर करते हैं

اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ

और क्या आदमी ने न देखा कि हम ने उसे पानी की बूंद से बनाया जभी वोह सरीह़ झगड़ालू

مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ

है और हमारे लिये कहावत कहता है और अपनी पैदाइश भूल गया बोला ऐसा कौन है

يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ

कि हड्डियों को ज़िन्दा करे जब वोह बिल्कुल गल गईं तुम फ़रमाओ उन्हें वोह ज़िन्दा करेगा जिस ने

اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُۨ ﴿٧٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ

पहली बार उन्हें बनाया और उसे हर पैदाइश का इ़ल्म है जिस ने तुम्हारे लिये हरे

مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

पेड़ में से आग पैदा की जभी तुम उस से सुलगाते हो

اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى

और क्या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए इन जैसे और नहीं बना सकता

اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؔ بَلٰى ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ

क्यूं नहीं और वोही है बड़ा पैदा करने वाला सब कुछ जानता उस का

اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ

काम तो येही है कि जब किसी चीज़ को चाहे तो उस से फ़रमाए हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है तो पाकी है उसे

بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ ع

जिस के हाथ हर चीज़ का क़ब्ज़ा है और उसी की त़रफ़ फैरे जाओगे

“रहमत” के चार हुरूफ़ की निस्बत से सूरए कहफ़ के 4 फ़ज़ाइल

(1) **हज़रते** सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स **सूरए कहफ़** की तिलावत कर रहा था, उन के घर में एक जानवर बंधा हुवा था अचानक वोह जानवर बिदकने लगा। उस शख़्स ने देखा कि एक बादल ने उस को ढांपा हुवा है उस शख़्स ने हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस वाक़िए का ज़िक्र किया, तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ फुलां ! तिलावत किया करो, कि येह सकीना है जो तिलावते क़ुरआन करते वक़्त नाज़िल होता है। (صَحِیح مُسلِم حدیث ۷۹۵ ص ۳۹۹)

(2) **हज़रते** सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस जुहनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो सूरए कहफ़ की अव्वल और आख़िर से तिलावत करेगा उस के सर ता पा **नूर ही नूर होगा**, और जो इस की मुकम्मल तिलावत करेगा, उस के लिये आस्मान और ज़मीन के दरमियान **नूर** होगा।

(اَلْمُسنَدُ لِلْاِمَام اَحْمَد بن حَنْبَل حدیث معاذ بن انس الحدیث ۱۵۶۲۶ ج۵ ص ۳۱۱)

(3) **हज़रते** सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “जो जुमुआ के दिन सूरए कहफ़ पढ़े उस के लिये दो जुमुओं के दरमियान एक **नूर** रोशन कर दिया जाता है।” एक रिवायत में है : “जो शबे जुमुआ को पढ़े उस के और बैतुल अ़तीक़ (या’नी का’बतुल्लाह शरीफ़) के दरमियान एक **नूर** रोशन कर दिया जाता है।” (شُعَبُ الْاِیْمَان حدیث ۲۴۴۴ ج۲ ص ۴۷۴)

(4) **हज़रते** सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो सूरए कह्फ़ की **पहली दस आयतें** याद करेगा दज्जाल से **महफ़ूज़** रहेगा और एक रिवायत में है, जो सूरए कह्फ़ की **आख़िरी दस आयतें** याद करेगा दज्जाल से **महफ़ूज़** रहेगा। (صَحِیح مُسلِم، الحدیث:۸۰۹، ص۴۰۴)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡۤ اَنۡزَلَ عَلٰی عَبۡدِہِ الۡکِتٰبَ وَلَمۡ

सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उस में

یَجۡعَلۡ لَّہٗ عِوَجًا ؕ﴿ۜ۱﴾ قَیِّمًا لِّیُنۡذِرَ بَاۡسًا شَدِیۡدًا

अस्लन कजी न रखी अ़द्ल वाली किताब कि अल्लाह के सख़्त अ़ज़ाब से

مِّنۡ لَّدُنۡہُ وَ یُبَشِّرَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ الَّذِیۡنَ یَعۡمَلُوۡنَ

डराए और ईमान वालों को जो नेक काम करें बिशारत दे कि

الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَہُمۡ اَجۡرًا حَسَنًا ۙ﴿۲﴾ مّٰکِثِیۡنَ فِیۡہِ اَبَدًا ۙ﴿۳﴾

उन के लिये अच्छा सवाब है जिस में हमेशा रहेंगे

وَّ یُنۡذِرَ الَّذِیۡنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰہُ وَلَدًا ٭﴿۴﴾ مَا لَہُمۡ بِہٖ

और उन को डराए जो कहते हैं कि अल्लाह ने अपना कोई बच्चा बनाया इस बारे में

مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآىِٕهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ

न वोह कुछ इ़ल्म रखते हैं न उन के बाप दादा कितना बड़ा बोल है कि उन के मुंह

اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۵ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ

से निकलता है निरा झूट कह रहे हैं तो कहीं तुम अपनी जान

نَّفْسَكَ عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ

पर खेल जाओगे उन के पीछे अगर वोह इस बात पर ईमान न लाएं

اَسَفًا ۶ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ

ग़म से बेशक हम ने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ इस पर है कि उन्हें

اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۷ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا

आज़माएं उन में किस के काम बेहतर हैं और बेशक जो कुछ इस पर है एक दिन हम उसे

صَعِيْدًا جُرُزًا ۸ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ

पट पर मैदान कर छोड़ेंगे क्या तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खोह और जंगल के

وَالرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۹ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ

किनारे वाले हमारी एक अ़जीब निशानी थे जब उन जवानों ने

اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً

ग़ार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रह़मत दे

وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾ فَضَرَبْنَا عَلٰۤى اٰذَانِهِمْ فِى

और हमारे काम में हमारे लिये राहयाबी के सामान कर तो हम ने उस ग़ार में उन के कानों पर

الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ﴿١١﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَىُّ الْحِزْبَيْنِ

ग़िनती के कई बरस थपका फिर हम ने उन्हें जगाया कि देखें दो गुरौहों

اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْۤا اَمَدًا ﴿١٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ

में कौन उन के ठहरने की मुद्दत ज़ियादा ठीक बताता है हम उन का ठीक ठीक हाल तुम्हें

بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَ زِدْنٰهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾ وَّ

सुनाएं वोह कुछ जवान थे कि अपने रब पर ईमान लाए और हम ने उन को हिदायत बढ़ाई और

رَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ

हम ने उन के दिलों की ढारस बंधाई जब खड़े हो कर बोले कि हमारा रब वोह है जो आस्मान

وَ الْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا

और ज़मीन का रब है हम उस के सिवा किसी मा'बूद को न पूजेंगे ऐसा हो तो हम ने ज़रूर

شَطَطًا ﴿١٤﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ

हद से गुज़री हुई बात कही येह जो हमारी क़ौम है उस ने अल्लाह के सिवा ख़ुदा बना रखे

لَوْ لَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

हैं क्यूं नहीं लाते इन पर कोई रोशन सनद तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝۱۵ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ

जो अल्लाह पर झूट बांधे और जब तुम उन से और जो कुछ वोह अल्लाह

اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ

के सिवा पूजते हैं सब से अलग हो जाओ तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिये अपनी रह़मत

وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ۝۱۶ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا

फैला देगा और तुम्हारे काम में आसानी के सामान बना देगा और ऐ मह़बूब तुम सूरज को देखोगे

طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ

कि जब निकलता है तो उन के ग़ार से दहनी त़रफ़ बच जाता है और जब डूबता

تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ

है तो उन्हें बाईं त़रफ़ कतरा जाता है ह़ालां कि वोह उस ग़ार के खुले मैदान में हैं येह

اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ

अल्लाह की निशानियों से है जिसे अल्लाह राह दे तो वोही राह पर है और जिसे गुमराह करे

فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ۝۱۷ ع وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ

तो हरगिज़ उस का कोई ह़िमायती राह दिखाने वाला न पाओगे और तुम उन्हें जागता समझो और वोह सोते

رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ

हैं और हम उन की दाहिनी बाईं करवटें बदलते हैं

وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ ۚ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ

और उन का कुत्ता अपनी कलाइयां फैलाए हुए है ग़ार की चौखट पर ऐ सुनने वाले अगर तू

لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾ وَكَذَٰلِكَ

उन्हें झांक कर देखे तो उन से पीठ फैर कर भागे और उन से हैबत में भर जाए और यूंही हम ने

بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ ۚ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۖ

उन को जगाया कि आपस में एक दूसरे से अह्वाल पूछें उन में एक कहने वाला बोला

قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۚ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا

तुम यहां कितनी देर रहे। कुछ बोले कि एक दिन रहे या दिन से कम दूसरे बोले तुम्हारा

لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هَٰذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ

रब ख़ूब जानता है जितना तुम ठहरे तो अपने में एक को येह चांदी ले कर शहर में भेजो

فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَىٰ طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ

फिर वोह ग़ौर करे कि वहां कौन सा खाना ज़ियादा सुथरा है कि तुम्हारे लिये इस में से खाने

وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ﴿١٩﴾ إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا

को लाए और चाहिये कि नरमी करे और हरगिज़ किसी को तुम्हारी इत्तिलाअ़ न दे बेशक अगर वोह तुम्हें जान लेंगे

عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا

तो तुम्हें पथराओ करेंगे या अपने दीन में फैर लेंगे और ऐसा हुवा तो तुम्हारा कभी भला न

إِذًا أَبَدًا ﴿٢٠﴾ وَكَذٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوٓا أَنَّ وَعْدَ

होगा और इसी तरह हम ने उन की इत्तिलाअ़ कर दी कि लोग जान लें कि

اللّٰهِ حَقٌّ وَّأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا ۚ إِذْ يَتَنَازَعُونَ

अल्लाह का वा'दा सच्चा है और क़ियामत में कुछ शुबा नहीं जब वोह लोग उन के मुआ-मले में

بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ؕ رَّبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ ؕ

बाहम झगड़ने लगे तो बोले इन के ग़ार पर कोई इमारत बनाओ इन का रब इन्हें ख़ूब

قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلٰىٓ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

जानता है वोह बोले जो इस काम में ग़ालिब रहे थे क़सम है कि हम तो उन पर मस्जिद बनाएंगे

سَيَقُولُونَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ

अब कहेंगे कि वोह तीन है चौथा उन का कुत्ता और कुछ कहेंगे पांच हैं छटा उन का कुत्ता

سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ

बे देखे अलाव तुक्का बात और कुछ कहेंगे सात हैं

وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ رَّبِّيْٓ أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا

और आठवां उन का कुत्ता तुम फ़रमाओ मेरा रब इन की गिनती ख़ूब जानता है उन्हें

قَلِيلٌ ۟ ۥ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّلَا تَسْتَفْتِ

नहीं जानते मगर थोड़े तो उन के बारे में बह़स न करो मगर इतनी ही बह़स जो ज़ाहिर हो चुकी और

فِیْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿۲۲﴾ وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ
उन के बारे में किसी किताबी से कुछ न पूछो और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल येह

ذٰلِكَ غَدًا ﴿۲۳﴾ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ ٘ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا
कर दूंगा मगर येह कि अल्लाह चाहे और अपने रब की याद कर जब तू

نَسِیْتَ وَقُلْ عَسٰۤی اَنْ یَّهْدِیَنِ رَبِّیْ لِاَقْرَبَ مِنْ
भूल जाए और यूं कह कि क़रीब है कि मेरा रब मुझे उस से नज़्दीक तर

هٰذَا رَشَدًا ﴿۲۴﴾ وَلَبِثُوْا فِیْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِیْنَ
रास्ती की राह दिखाए और वोह अपने ग़ार में तीन सो बरस

وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿۲۵﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَیْبُ
ठहरे नव ऊपर तुम फ़रमाओ अल्लाह ख़ूब जानता है वोह जितना ठहरे

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ
उसी के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन के सब ग़ैब वोह क्या ही देखता और क्या

دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ ٘ وَّلَا یُشْرِكُ فِیْ حُكْمِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾
ही सुनता है उस के सिवा उन का कोई वाली नहीं और वोह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता

وَاتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ؕ لَا مُبَدِّلَ
और तिलावत करो जो तुम्हारे रब की किताब तुम्हें वह्य हुई उस की बातों

لِكَلِمٰتِهٖ ۚقف وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَاصْبِرْ

का कोई बदलने वाला नहीं और हरगिज़ तुम उस के सिवा पनाह न पाओगे और अपनी जान

نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ

उन से मानूस रखो जो सुब्ह़ व शाम अपने रब को पुकारते हैं उस की

الْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ

रिज़ा चाहते और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें क्या

تُرِیْدُ زِیْنَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا

तुम दुन्या की ज़िन्दगी का सिंगार चाहोगे और उस का कहा न मानो जिस का

قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾

दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वोह अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उस का काम ह़द से गुज़र गया

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚقف فَمَنْ شَآءَ فَلْیُؤْمِنْ وَّمَنْ

और फ़रमा दो कि ह़क़ तुम्हारे रब की त़रफ़ से है तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे

شَآءَ فَلْیَكْفُرْ ۙ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِیْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ

कुफ़्र करे बेशक हम ने ज़ालिमों के लिये वोह आग तय्यार कर रखी है जिस की

سُرَادِقُهَا ؕ وَاِنْ یَّسْتَغِیْثُوْا یُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ

दीवारें उन्हें घेर लेंगी और अगर पानी के लिये फ़रियाद करें तो उन की फ़रियाद रसी होगी

يَشْوِي الْوُجُوْهَ ؕ بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۲۹﴾

उस पानी से कि चर्ख़ दिये हुए धात की त़रह़ है कि उन के मुंह भून देगा क्या ही बुरा पीना

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ

और दोज़ख़ क्या ही बुरी ठहरने की जगह बेशक जो ईमान लाए और नेक काम किये हम उन के

اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿۳۰﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ

नेग ज़ाएअ़ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों उन के लिये बसने के बाग़ हैं उन के

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ

नीचे नदियां बहें वोह उस में सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और

مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ

सब्ज़ कपड़े करैब और क़नादीज़ के पहनेंगे वहां तख़्तों पर

وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ؕ نِعْمَ

तकिया लगाए क्या ही अच्छा सवाब और

الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۳۱﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا

जन्नत क्या ही अच्छी आराम की जगह और उन के सामने दो मर्दों

رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ

का ह़ाल बयान करो कि उन में एक को हम ने अंगूरों के दो बाग़

مِنْ اَعْنَابٍ وَّ حَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّ

दिये और उन को खजूरों से ढांप लिया और

جَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿۳۲﴾ كِلْتَا

उन के बीच बीच में खेती रखी दोनों

الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ

बाग़ अपने फल लाए और उस में कुछ

مِّنْهُ شَيْـًٔا وَّ فَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿۳۳﴾

कमी न दी और दोनों के बीच में हम ने नहर बहाई

وَّ كَانَ لَهٗ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ

और वोह फल रखता था तो अपने साथी से बोला

وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّ

और वोह उस से रद्दो बदल करता था मैं तुझ से माल में

اَعَزُّ نَفَرًا ﴿۳۴﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ

ज़ियादा हूं और आदमियों का ज़ियादा ज़ोर रखता हूं

ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ

अपने बाग़ में गया और अपनी जान पर ज़ुल्म करता हुवा बोला मुझे गुमान नहीं

هٰذِهٖۤ اَبَدًا ﴿۳۵﴾ وَّ مَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّ لَئِنْ

कि येह कभी फ़ना हो और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत क़ाइम हो और अगर मैं

رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّیْ لَاَجِدَنَّ خَیْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿۳۶﴾ قَالَ

अपने रब की त़रफ़ फिर कर भी तो ज़रूर इस बाग़ से बेहतर पलटने की जगह पाऊंगा उस के

لَهٗ صَاحِبُهٗ وَ هُوَ یُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِیْ خَلَقَكَ

साथी ने उस से उलट फैर करते हुए जवाब दिया क्या तू उस के साथ

مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿۳۷﴾ لٰكِنَّا۠

कुफ़्र करता है जिस ने तुझे मिट्टी से बनाया फिर निथरे पानी की बूंद से फिर तुझे ठीक मर्द किया लेकिन मैं तो

هُوَ اللّٰهُ رَبِّیْ وَ لَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّیْۤ اَحَدًا ﴿۳۸﴾ وَ لَوْ لَاۤ اِذْ دَخَلْتَ

येही कहता हूं कि वोह अल्लाह ही मेरा रब है और मैं किसी को अपने रब का शरीक नहीं करता हूं और क्यूं न हुवा

جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ

कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे अल्लाह हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर अल्लाह की मदद का

اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّ وَلَدًا ﴿۳۹﴾ فَعَسٰى رَبِّیْۤ اَنْ یُّؤْتِیَنِ

अगर तू मुझे अपने से माल व औलाद में कम देखता था तो क़रीब है कि मेरा रब मुझे तेरे

خَیْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَ یُرْسِلَ عَلَیْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ

बाग़ से अच्छा कर दे और तेरे बाग़ पर आस्मान से बिज्लियां उतारे तो वोह पट पर मैदान

فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ

हो कर रह जाए या उस का पानी ज़मीन में धंस जाए

تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ

फिर तू उसे हरगिज़ तलाश न कर सके और उस के फल घेर लिये गए तो अपने हाथ

كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا

मलता रह गया उस लागत पर जो उस बाग़ में ख़र्च की थी और वोह अपनी टेटों

وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ

पर गिरा हुवा था और कह रहा है ऐ काश मैं ने अपने रब का किसी को शरीक न किया होता और उस

فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ ط

के पास कोई जमाअ़त न थी कि अल्लाह के सामने उस की मदद करती न वोह बदला लेने के क़ाबिल था

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ط هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ

यहां खुलता है कि इख़्तियार सच्चे अल्लाह का है उस का सवाब सब से बेहतर और उसे मानने का अन्जाम

عُقْبًا ﴿٤٤﴾ ع وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ

सब से भला और उन के सामने ज़िन्दगानिये दुन्या की कहावत बयान करो जैसे एक पानी हम ने

اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ

आस्मान से उतारा तो उस के सबब ज़मीन का सब्ज़ा घना हो कर

فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

निकला कि सूखी घास हो गया जिसे हवाएं उड़ाएं और अल्लाह हर चीज़ पर

شَیْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿۴۵﴾ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِیْنَةُ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ

क़ाबू वाला है माल और बेटे येह जीती दुन्या का सिंगार है

وَالْبٰقِیٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَیْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَیْرٌ اَمَلًا ﴿۴۶﴾

और बाक़ी रहने वाली अच्छी बातें उन का सवाब तुम्हारे रब के यहां बेहतर और वोह

وَیَوْمَ نُسَیِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ

उम्मीद में सब से भली और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे और तुम ज़मीन को साफ़ खुली हुई देखोगे

فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿۴۷﴾ وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ

और हम उन्हें उठाएंगे तो उन में से किसी को छोड़ न देंगे और सब तुम्हारे रब के हुज़ूर परा बांधे पेश

جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍۭ ؗ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ

होंगे बेशक तुम हमारे पास वैसे ही आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार बनाया था बल्कि तुम्हारा गुमान

نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿۴۸﴾ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِیْنَ

था कि हम हरगिज़ तुम्हारे लिये कोई वा'दे का वक़्त न रखेंगे और नामए आ'माल रखा जाएगा तो तुम

مُشْفِقِیْنَ مِمَّا فِیْهِ وَیَقُوْلُوْنَ یٰوَیْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ

मुजरिमों को देखोगे कि उस के लिखे से डरते होंगे और कहेंगे हाए

لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا

ख़राबी हमारी इस नविश्ते को क्या हुवा न इस ने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा जिसे घेर न लिया हो

عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿۴۹﴾ وَاِذْ قُلْنَا

और अपना सब किया उन्हों ने सामने पाया और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करता और याद करो जब

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ

हम ने फ़िरिश्तों को फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो सब ने सज्दा किया सिवा इब्लीस कि क़ौमे जिन्न से

مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ

था तो अपने रब के हुक्म से निकल गया भला क्या उसे और उस की औलाद को मेरे सिवा दोस्त

وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ

बनाते हो और वोह तुम्हारे दुश्मन हैं ज़ालिमों को क्या ही

لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿۵۰﴾ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ

बुरा बदल मिला न मैं ने आस्मानों और ज़मीन के बनाते वक़्त उन्हें

وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ

सामने बिठा लिया था न ख़ुद उन के बनाते वक़्त और न मेरी शान कि गुमराह करने वालों को

عَضُدًا ﴿۵۱﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ

बाज़ू बनाऊं और जिस दिन फ़रमाएगा कि पुकारो मेरे शरीकों को जो तुम गुमान करते थे

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾

तो उन्हें पुकारेंगे वोह उन्हें जवाब न देंगे और हम उन के दरमियान एक हलाकत का मैदान कर देंगे

وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ

और मुजरिम दोज़ख़ को देखेंगे तो यक़ीन करेंगे कि उन्हें इस में गिरना है और

يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ؑ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ

इस से फिरने की कोई जगह न पाएंगे और बेशक हम ने लोगों के लिये इस क़ुरआन में

لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَیْءٍ

हर क़िस्म की मिस्ल त़रह़ त़रह़ बयान फ़रमाई और आदमी हर चीज़ से बढ़ कर

جَدَلًا ﴿٥٤﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ

झगड़ालू है और आदमियों को किस चीज़ ने इस से रोका कि ईमान लाते जब

الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ

हिदायत उन के पास आई और अपने रब से मुआफ़ी मांगते मगर येह कि उन पर अगलों का

الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ

दस्तूर आए या उन पर क़िस्म क़िस्म का अ़ज़ाब आए और हम रसूलों को

الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ

नहीं भेजते मगर ख़ुशी और डर सुनाने वाले और जो काफ़िर हैं वोह बात़िल के साथ

كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ

झगड़ते हैं कि उस से ह़क़ को हटा दें और उन्हों ने मेरी आयतों की और जो डर उन्हें सुनाए

وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿۵۶﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ

गए थे उन की हंसी बना ली और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिसे उस के

فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى

रब की आयतें याद दिलाई जाएं तो वोह उन से मुंह फेर ले और उस के हाथ जो आगे

قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ

भेज चुके उसे भूल जाए हम ने उन के दिलों पर गि़लाफ़ कर दिये हैं कि क़ुरआन न समझें

تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿۵۷﴾ وَرَبُّكَ

और उन के कानों में गिरानी और अगर तुम उन्हें हिदायत की त़रफ़ बुलाओ तो जब भी हरगिज़ कभी राह न पाएंगे और

الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ

तुम्हारा रब बख़्शने वाला मह्र वाला है अगर वोह उन्हें उन के किये पर पकड़ता तो जल्द उन पर

الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ

अ़ज़ाब भेजता बल्कि उन के लिये एक वा'दे का वक़्त है जिस के सामने कोई पनाह न

مَوْئِلًا ﴿۵۸﴾ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا

पाएंगे और येह बस्तियां हम ने तबाह कर दीं जब उन्हों ने ज़ुल्म किया और हम ने उन की

لِمَهۡلِكِهِمۡ مَّوۡعِدًا ﴿٥٩﴾ وَاِذۡ قَالَ مُوۡسٰى لِفَتٰىهُ لَاۤ اَبۡرَحُ حَتّٰۤى

बरबादी का एक वा'दा रखा था और याद करो जब मूसा ने अपने ख़ादिम से कहा मैं बाज़ न रहूंगा

اَبۡلُغَ مَجۡمَعَ الۡبَحۡرَيۡنِ اَوۡ اَمۡضِىَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا

जब तक वहां न पहुंचूं जहां दो समुन्दर मिले हैं या क़रनों चला जाऊं फिर

مَجۡمَعَ بَيۡنِهِمَا نَسِيَا حُوۡتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيۡلَهٗ فِى

जब वोह दोनों उन दरियाओं के मिलने की जगह पहुंचे अपनी मछली भूल गए और उस ने समुन्दर में

الۡبَحۡرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ز

अपनी राह ली सुरंग बनाती फिर जब वहां से गुज़र गए मूसा ने ख़ादिम से कहा हमारा सुब्ह का खाना

لَقَدۡ لَقِيۡنَا مِنۡ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾ قَالَ اَرَءَيۡتَ

लाओ बेशक हमें अपने इस सफ़र में बड़ी मशक़्क़त का सामना हुवा बोला भला देखिये तो

اِذۡ اَوَيۡنَاۤ اِلَى الصَّخۡرَةِ فَاِنِّىۡ نَسِيۡتُ الۡحُوۡتَ ز وَمَاۤ

जब हम ने उस चट्टान के पास जगह ली थी तो बेशक मैं मछली को भूल गया और मुझे शैतान

اَنۡسٰنِيۡهُ اِلَّا الشَّيۡطٰنُ اَنۡ اَذۡكُرَهٗ ج وَاتَّخَذَ

ही ने भुला दिया कि मैं उस का मज़्कूर करूं और उस ने तो समुन्दर में अपनी

سَبِيۡلَهٗ فِى الۡبَحۡرِ صلے عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا

राह ली अचम्बा है मूसा ने कहा येही तो

نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰۤى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۙ ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا

हम चाहते थे तो पीछे पलटे अपने क़दमों के निशान देखते तो हमारे बन्दों

مِّنْ عِبَادِنَاۤ اٰتَیْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَ عَلَّمْنٰهُ

में से एक बन्दा पाया जिसे हम ने अपने पास से रह़मत दी और उसे अपना

مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ

इल्मे लदुन्नी अ़ता किया उस से मूसा ने कहा क्या मैं तुम्हारे साथ रहूं

عَلٰۤى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ

इस शर्त़ पर कि तुम मुझे सिखा दोगे नेक बात जो तुम्हें ता'लीम हुई कहा आप मेरे साथ

لَنْ تَسْتَطِیْعَ مَعِیَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَ كَیْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ

हरगिज़ न ठहर सकेंगे और उस बात पर क्यूं कर सब्र करेंगे जिसे आप

تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾ قَالَ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا

का इ़ल्म मुह़ीत़ नहीं कहा अ़न्क़रीब अल्लाह चाहे तो तुम मुझे साबिर पाओगे और मैं

وَّ لَاۤ اَعْصِیْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِیْ فَلَا

तुम्हारे किसी हुक्म का ख़िलाफ़ न करूंगा कहा तो अगर आप मेरे साथ रहते हैं तो मुझ से

تَسْـَٔلْنِیْ عَنْ شَیْءٍ حَتّٰۤى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ ع

किसी बात को न पूछना जब तक मैं ख़ुद उस का ज़िक्र न करूं

فَانْطَلَقَا ٙ حَتّٰۤی اِذَا رَكِبَا فِی السَّفِیْنَةِ خَرَقَهَا ؕ قَالَ

अब दोनों चले यहां तक कि जब कश्ती में सुवार हुए उस बन्दे ने उसे चीर डाला मूसा

اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَیْـًٔا اِمْرًا ﴿۷۱﴾

ने कहा क्या तुम ने इसे इस लिये चीरा कि इस के सुवारों को डुबा दो बेशक येह तुम ने बुरी बात की

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِیْعَ مَعِیَ صَبْرًا ﴿۷۲﴾

कहा मैं न कहता था कि आप मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे

قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِیْ بِمَا نَسِیْتُ وَ لَا تُرْهِقْنِیْ

कहा मुझ से मेरी भूल पर गरिफ़्त न करो और मुझ पर मेरे काम

مِنْ اَمْرِیْ عُسْرًا ﴿۷۳﴾ فَانْطَلَقَا ٙ حَتّٰۤی اِذَا لَقِیَا

में मुश्किल न डालो फिर दोनों चले यहां तक कि जब एक लड़का

غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِیَّةًۢ بِغَیْرِ

मिला उस बन्दे ने उसे क़त्ल कर दिया मूसा ने कहा क्या तुम ने एक सुथरी जान बे किसी

نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَیْـًٔا نُّكْرًا ﴿۷۴﴾

जान के बदले क़त्ल कर दी बेशक तुम ने बहुत बुरी बात की

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِیْعَ مَعِیَ

कहा मैं ने आप से न कहा था कि आप हरगिज़ मेरे साथ न ठहर

صَبْرًا ﴿٧٥﴾ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَیْءٍۭ بَعْدَهَا فَلَا

सकेंगे कहा इस के बा'द मैं तुम से कुछ पूछूं तो फिर मेरे साथ न रहना

تُصٰحِبْنِیْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّیْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ۫

बेशक मेरी त़रफ़ से तुम्हारा उ़ज़्र पुरा हो चुका फिर दोनों चले

حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَیَاۤ اَهْلَ قَرْیَةِ ِۨ اسْتَطْعَمَاۤ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ

यहां तक कि जब एक गाउं वालों के पास आए उन दहक़ानों से खाना मांगा

یُّضَیِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِیْهَا جِدَارًا یُّرِیْدُ اَنْ یَّنْقَضَّ

तो उन्हों ने उन्हें दा'वत देनी क़बूल न की फिर दोनों ने उस गाउं में एक दीवार पाई कि

فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَیْهِ اَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ

गिरा चाहती है उस बन्दे ने उसे सीधा कर दिया मूसा ने कहा तुम चाहते तो इस पर कुछ मज़दूरी ले लेते कहा येह

هٰذَا فِرَاقُ بَیْنِیْ وَ بَیْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِیْلِ مَا لَمْ

मेरी और आप की जुदाई है अब मैं आप को उन बातों का फैर बताऊंगा जिन पर आप से

تَسْتَطِعْ عَّلَیْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾ اَمَّا السَّفِیْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِیْنَ

सब्र न हो सका वोह जो कश्ती थी वोह कुछ मोह़ताजों की थी कि दरिया में

یَعْمَلُوْنَ فِی الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِیْبَهَا وَ كَانَ وَرَآءَهُمْ

काम करते थे तो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं और उन के पीछे एक बादशाह

مَلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ﴿۷۹﴾ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ

था कि हर साबित कश्ती ज़बर दस्ती छीन लेता और वोह जो लड़का था

اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَاۤ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا

उस के मां बाप मुसल्मान थे तो हमें डर हुवा कि वोह उन को सरकशी और कुफ़्र

وَّكُفْرًا ﴿۸۰﴾ فَاَرَدْنَاۤ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً

पर चढ़ा दे तो हम ने चाहा कि उन दोनों का रब उस से बेहतर सुथरा और उस से

وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿۸۱﴾ وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ

ज़ियादा मेहरबानी में क़रीब अ़ता करे रही वोह दीवार वोह शहर के दो यतीम लड़कों की थी

فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا

और उस के नीचे उन का ख़ज़ाना था और उन का बाप नेक आदमी था तो आप के रब

صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَاۤ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا

ने चाहा कि वोह दोनों अपनी जवानी को पहुंचें और अपना ख़ज़ाना निकालें

كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ؕ

आप के रब की रह़मत से और येह कुछ मैं ने अपने हुक्म से न किया येह फैर है

ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿۸۲﴾ ع وَيَسْـَٔلُوْنَكَ

उन बातों का जिस पर आप से सब्र न हो सका और तुम से

عَنْ ذِی الْقَرْنَیْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَیْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ؕ﴿۸۳﴾

जुल क़रनैन को पूछते हैं तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें इस का मज़्कूर पढ़ कर सुनाता हूं

اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِی الْاَرْضِ وَ اٰتَیْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَیْءٍ سَبَبًا ۙ﴿۸۴﴾

बेशक हम ने उसे ज़मीन में क़ाबू दिया और हर चीज़ का एक सामान अ़ता फ़रमाया

فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿۸۵﴾ حَتّٰۤی اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا

तो वोह एक सामान के पीछे चला यहां तक कि जब सूरज डूबने की जगह पहुंचा उसे

تَغْرُبُ فِیْ عَیْنٍ حَمِئَةٍ وَّ وَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ۬ قُلْنَا

एक सियाह कीचड़ के चश्मे में डूबता पाया और वहां एक क़ौम मिली हम ने

یٰذَا الْقَرْنَیْنِ اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَ اِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِیْهِمْ حُسْنًا ﴿۸۶﴾

फ़रमाया ऐ जुल क़रनैन या तो तू उन्हें सज़ा दे या उन के साथ भलाई इख़्तियार करे

قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ یُرَدُّ اِلٰی رَبِّهٖ

अ़र्ज़ की, कि वोह जिस ने ज़ुल्म किया उसे तो हम अ़न्क़रीब सज़ा देंगे फिर अपने रब की त़रफ़

فَیُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿۸۷﴾ وَ اَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا

फैरा जाएगा वोह उसे बुरी मार देगा और जो ईमान लाया और नेक काम किया तो उस

فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰی ۚ وَ سَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا یُسْرًا ؕ﴿۸۸﴾

का बदला भलाई है और अ़न्क़रीब हम उसे आसान काम कहेंगे

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا

फ़िर एक सामान के पीछे चला यहां तक कि जब सूरज निकलने की जगह पहुंचा उसे ऐसी क़ौम

تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾

पर निकलता पाया जिन के लिये हम ने सूरज से कोई आड़ नहीं रखी

كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾

बात येही है और जो कुछ उस के पास था सब को हमारा इ़ल्म मुह़ीत़ है फिर एक सामान के

حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ

पीछे चला यहां तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुंचा उन से इधर कुछ ऐसे लोग

لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ

पाए कि कोई बात समझते मा'लूम न होते थे उन्हों ने कहा ऐ जु़ल क़रनैन बेशक

يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ

याजूज व माजूज ज़मीन में फ़साद मचाते हैं तो क्या हम आप के लिये कुछ माल मुक़र्रर कर दें

لَكَ خَرْجًا عَلٰۤى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا

इस पर कि आप हम में और उन में एक दीवार बना दें कहा वोह जिस पर

مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ

मुझे मेरे रब ने क़ाबू दिया है बेहतर है तो मेरी मदद त़ाक़त से करो मैं तुम में

وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۙ﴿۹۵﴾ اٰتُوْنِیْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰۤی اِذَا سَاوٰی بَيْنَ

और उन में एक मज़्बूत आड़ बना दूं मेरे पास लोहे के तख़्ते लाओ यहां तक कि वोह जब

الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ حَتّٰۤی اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ

दीवार दोनों पहाड़ों के कनारों से बराबर कर दी कहा धोंको यहां तक कि जब उसे आग कर दिया

اٰتُوْنِیْۤ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ؕ﴿۹۶﴾ فَمَا اسْطَاعُوْۤا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ

कहा लाओ मैं इस पर गला हुवा तांबा उंडेल दूं तो याजूज व माजूज इस पर न चढ़ सके

وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿۹۷﴾ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّیْ ۚ

और न इस में सूराख़ कर सके कहा येह मेरे रब की रह़मत है फिर जब

فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّیْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّیْ

मेरे रब का वा'दा आएगा इसे पाश पाश कर देगा और मेरे रब का वा'दा

حَقًّا ؕ﴿۹۸﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِیْ بَعْضٍ وَّ

सच्चा है और उस दिन हम उन्हें छोड़ देंगे कि उन का एक गुरौह दूसरे पर

نُفِخَ فِی الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ۙ﴿۹۹﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ

रेला देगा और सूर फूंका जाएगा तो हम उन सब को इकठ्ठा कर लाएंगे और हम उस दिन

يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا ۙ﴿۱۰۰﴾ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ

जहन्नम काफ़िरों के सामने लाएंगे वोह जिन की आंखों पर मेरी याद से पर्दा

فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ ع

पड़ा था और ह़क़ बात सुन न सकते थे

اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ

तो क्या काफ़िर येह समझे हैं कि मेरे बन्दों को मेरे सिवा ह़िमायती बना लेंगे बेशक हम ने

دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ؕ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾

काफ़िरों की मेहमानी को जहन्नम तय्यार कर रखी है

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ ؕ اَلَّذِيْنَ

तुम फ़रमाओ क्या हम तुम्हें बता दें कि सब से बढ़ कर नाक़िस अ़मल किन के हैं उन

ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ

के जिन की सारी कोशिश दुन्या की ज़िन्दगी में गुम गई और वोह इस ख़याल में हैं

اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ

कि हम अच्छा काम कर रहे हैं येह लोग हैं जिन्हों ने अपने रब की आयतें

رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ

और उस का मिलना न माना तो उन का किया धरा सब अकारत है तो हम उन के लिये क़ियामत

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا

के दिन कोई तोल न क़ाइम करेंगे येह उन का बदला है जहन्नम इस पर कि उन्हों ने कुफ़्र किया और

وَّاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿۱۰۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

मेरी आयतों और मेरे रसूलों की हंसी बनाई बेशक जो ईमान लाए

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ

और अच्छे काम किये फ़िरदौस के बाग़

الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿۱۰۷﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ

उन की मेहमानी है वोह हमेशा उन में रहेंगे उन से

عَنْهَا حِوَلًا ﴿۱۰۸﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ

जगह बदलना न चाहेंगे तुम फ़रमा दो अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही

رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ

हो तो ज़रूर समुन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी अगर्चे हम

وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا

वैसा ही और उस की मदद को ले आएं तुम फ़रमाओ ज़ाहिर सूरते ब-शरी में

بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ

तो मैं तुम जैसा हूं मुझे वह्य आती है कि तुम्हारा मा'बूद एक ही मा'बूद है तो जिसे

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا

अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे

وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे

“फ़त्ह” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सूरए फ़त्ह के 3 फ़ज़ाइल

(1) **हुदैबिया** से वापसी में मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरह के रास्ते में इस सूरत का नुज़ूल हुवा। जब येह सूरत नाज़िल हुई तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आज रात मुझ पर एक ऐसी सूरत नाज़िल हुई जो मुझे दुन्या की हर चीज़ से ज़ियादा **प्यारी** है।

(صَحِيحُ الْبُخَارِیّ کتاب التفسیر الحدیث۴۸۳۳ ج۳ ص۳۲۸)

(2) जिस वक़्त र-मज़ान शरीफ़ का चांद देखा जाए तो सूरए फ़त्ह़ को तीन बार पढ़ने से तमाम साल रिज़्क़ में **फ़राख़ी** होती है। कश्ती में सुवार होते वक़्त पढ़ने से **ग़र्क़** होने से मामून रहता है। जिदाल और क़िताल के वक़्त लिख कर पास रखने से **ह़िफ़ाज़त** होती है।

(जन्नती ज़ेवर, स. 596)

(3) दुश्मनों पर **फ़त्ह़** पाने के लिये इस को 21 मर्तबा पढ़िये अगर र-मज़ान का चांद देख कर उस के सामने पढ़ा जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی साल भर **अम्न** रहेगा। (जन्नती ज़ेवर, स. 596)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ﴿۱﴾ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ

बेशक हम ने तुम्हारे लिये रोशन फ़त्ह़ फ़रमा दी ताकि अल्लाह तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों

مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ

के और तुम्हारे पिछलों के और अपनी ने'मतें तुम पर तमाम कर दे और तुम्हें सीधी राह

صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۲﴾ وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿۳﴾

दिखा दे और अल्लाह तुम्हारी ज़बर दस्त मदद फ़रमाए

هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ

वोही है जिस ने ईमान वालों के दिलों में इत्मीनान उतारा

لِيَزْدَادُوْۤا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْؕ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ

ताकि उन्हें यक़ीन पर यक़ीन बढ़े और अल्लाह ही की मिल्क हैं तमाम लश्कर आस्मानों

وَالْاَرْضِؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۴﴾ لِّيُدْخِلَ

और ज़मीन के और अल्लाह इल्मो हिक्मत वाला है ताकि ईमान वाले

الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

मर्दों और ईमान वाली औरतों को बाग़ों में ले जाए जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْؕ وَكَانَ

रहें और उन की बुराइयां उन से उतार दे और येह अल्लाह के यहां

ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿۵﴾ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ

बड़ी काम्याबी है और अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों

وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ

और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशिरक मर्दों और मुशिरक औरतों को जो अल्लाह पर बुरा

بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ

गुमान रखते हैं उन्हीं पर है बुरी गरदिश और अल्लाह

اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ

ने उन पर ग़ज़ब फ़रमाया और उन्हें ला'नत की और उन के लिये जहन्नम तय्यार फ़रमाया और वोह क्या ही

مَصِيْرًا ۝٦ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ

बुरा अन्जाम है और अल्लाह ही की मिल्क हैं आस्मानों और ज़मीन के सब लश्कर और अल्लाह

اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝٧ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا

इज़्ज़त व हिक्मत वाला है बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर व नाज़िर और ख़ुशी और

وَّنَذِيْرًا ۝٨ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَ

डर सुनाता ताकि ऐ लोगो तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'ज़ीम व तौक़ीर

تُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝٩ اِنَّ الَّذِيْنَ

करो और सुब्ह़ व शाम अल्लाह की पाकी बोलो वोह जो तुम्हारी बैअ़त

يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ

करते हैं वोह तो अल्लाह ही से बैअ़त करते हैं उन के हाथों पर अल्लाह का हाथ है

أَيْدِيهِمْ ۚ فَمَن نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۖ

तो जिस ने अ़हद तोड़ा उस ने अपने बड़े अ़हद को तोड़ा और जिस ने पूरा किया

وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهُ اللَّهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا

वोह अ़हद जो उस ने अल्लाह से किया था तो बहुत जल्द अल्लाह उसे बड़ा सवाब

عَظِيمًا ﴿١٠﴾ سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ

देगा अब तुम से कहेंगे जो गंवार पीछे रह गए थे कि हमें

شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُولُونَ

हमारे माल और हमारे घर वालों ने जाने से मश्गूल रखा अब हुज़ूर हमारी

بِأَلْسِنَتِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ

मग़्फ़िरत चाहें अपनी ज़बानों से वोह बात कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं तुम फ़रमाओ तो

لَكُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ

अल्लाह के सामने कैसे तुम्हारा कुछ इख़्तियार है अगर वोह तुम्हारा बुरा चाहे या तुम्हारी भलाई

بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١١﴾ بَلْ

का इरादा फ़रमाए बल्कि अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है बल्कि तुम तो

ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَنقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ

येह समझे हुए थे कि रसूल और मुसल्मान हरगिज़ घरों को वापस न आएंगे और इसी को अपने दिलों

اِلٰٓى اَهۡلِيۡهِمۡ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِىۡ قُلُوۡبِكُمۡ وَظَنَنۡتُمۡ

में भला समझे हुए थे और तुम ने बुरा गुमान किया

ظَنَّ السَّوۡءِ ۖۚ وَكُنۡتُمۡ قَوۡمًا ۢ بُوۡرًا ﴿۱۲﴾ وَمَنۡ لَّمۡ يُؤۡمِنۡ

और तुम हलाक होने वाले लोग थे और जो ईमान न लाए

بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ فَاِنَّاۤ اَعۡتَدۡنَا لِلۡكٰفِرِيۡنَ سَعِيۡرًا ﴿۱۳﴾

अल्लाह और उस के रसूल पर तो बेशक हम ने काफ़िरों के लिये भड़कती आग तय्यार कर रखी है

وَلِلّٰهِ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ يَغۡفِرُ لِمَنۡ يَّشَآءُ

और अल्लाह ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत जिसे चाहे बख़्शे

وَيُعَذِّبُ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا ﴿۱۴﴾

और जिसे चाहे अ़ज़ाब करे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

سَيَقُوۡلُ الۡمُخَلَّفُوۡنَ اِذَا انْطَلَقۡتُمۡ اِلٰى مَغَانِمَ

अब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले जब तुम ग़नीमतें लेने चलो तो

لِتَاۡخُذُوۡهَا ذَرُوۡنَا نَـتَّبِعۡكُمۡ ۚ يُرِيۡدُوۡنَ اَنۡ

हमें भी अपने पीछे आने दो वोह चाहते हैं अल्लाह का कलाम

يُّبَدِّلُوۡا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّنۡ تَتَّبِعُوۡنَا كَذٰلِكُمۡ قَالَ

बदल दें तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम हमारे साथ न आओ अल्लाह ने पहले

اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۭ بَلْ

से यूंही फ़रमा दिया है तो अब कहेंगे बल्कि तुम हम से जलते हो बल्कि वोह बात

كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵﴾ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ

न समझते थे मगर थोड़ी उन पीछे रह गए हुए गंवारों से

الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ

फ़रमाओ अन्क़रीब तुम एक सख़्त लड़ाई वाली क़ौम की त़रफ़ बुलाए जाओगे कि उन से

تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ

लड़ो या वोह मुसल्मान हो जाएं फिर अगर तुम फ़रमान मानोगे अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब

اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ

देगा और अगर फिर जाओगे जैसे पहले फिर गए तो तुम्हें

يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶﴾ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ

दर्दनाक अ़ज़ाब देगा अन्धे पर तंगी नहीं और न

وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۭ وَمَنْ

लंगड़े पर मुज़ा-यक़ा और न बीमार पर मुवा-ख़ज़ा और जो अल्लाह

يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

और उस के रसूल का हुक्म माने अल्लाह उसे बाग़ों में ले जाएगा

الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۷﴾ لَقَدْ

जिन के नीचे नहरें रवां हैं और जो फिर जाएगा उसे दर्दनाक अ़ज़ाब फ़रमाएगा बेशक

رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ

अल्लाह राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वोह उस पेड़ के नीचे तुम्हारी

الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ

बैअ़त करते थे तो अल्लाह ने जाना जो उन के दिलों में है तो उन पर इत़्मीनान

وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿۱۸﴾ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا

उतारा और उन्हें जल्द आने वाली फ़त्ह़ का इन्आ़म दिया और बहुत सी ग़नीमतें जिन को लें और अल्लाह

وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۹﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ

इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है और अल्लाह ने तुम से वा'दा किया है

كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ

बहुत सी ग़नीमतों का कि तुम लोगे तो तुम्हें येह जल्द अ़त़ा फ़रमा दी और लोगों के

النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ

हाथ तुम से रोक दिये और इस लिये कि ईमान वालों के लिये निशानी

صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۲۰﴾ وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ

हो और तुम्हें सीधी राह दिखावे और एक और जो तुम्हारे बल की न थी वोह अल्लाह

أَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَوْ

के क़ब्ज़े में है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है और अगर

قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ

काफ़िर तुम से लड़ें तो ज़रूर तुम्हारे मुक़ाबले से पीठ फैर देंगे फिर कोई हिमायती न

وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚۖ

पाएंगे न मददगार अल्लाह का दस्तूर है कि पहले से चला आता है और हरगिज़ तुम अल्लाह

وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾ وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ

का दस्तूर बदलता न पाओगे और वोही है जिस ने उन के हाथ

عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ

तुम से रोक दिये और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिये वादिये मक्का में बा'द इस के

عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٢٤﴾ هُمُ الَّذِيْنَ

कि तुम्हें उन पर क़ाबू दे दिया था और अल्लाह तुम्हारे काम देखता है वोह हैं

كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ

जिन्हों ने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे ह़राम से रोका और क़ुरबानी के जानवर रुके पड़े

مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ

अपनी जगह पहुंचने से और अगर येह न होता कुछ मुसलमान मर्द

وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ

और कुछ मुसल्मान औरतें जिन की तुम्हें ख़बर नहीं कहीं तुम उन्हें रौंद डालो तो तुम्हें उन की त़रफ़ से

مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ

अन्जानी में कोई मक्रूह पहुंचे तो हम तुम्हें उन की क़िताल की इजाज़त देते उन का येह बचाव इस लिये है कि अल्लाह अपनी

يَّشَآءُۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا

रह़मत में दाख़िल करे जिसे चाहे अगर वोह जुदा हो जाते तो हम ज़रूर इन में के काफ़िरों को दर्दनाक

اَلِيْمًا ﴿۲۵﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ

अ़ज़ाब देते जब कि काफ़िरों ने अपने दिलों में अड़ रखी वोही ज़मानए जाहिलिय्यत की अड़ तो अल्लाह ने

حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ

अपना इत़्मीनान अपने रसूल और ईमान वालों

وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْۤا

पर उतारा और परहेज़ गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया और वोह इस

اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَاؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ﴿۲۶﴾ ع

के ज़ियादा सज़ावार और इस के अहल थे और अल्लाह सब कुछ जानता है

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّۚ لَتَدْخُلُنَّ

बेशक अल्लाह ने सच कर दिया अपने रसूल का सच्चा ख़्वाब बेशक तुम ज़रूर

الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ مُحَلِّقِينَ

मस्जिदे हराम में दाखिल होगे अगर अल्लाह चाहे अम्न व अमान से अपने

رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ ۖ فَعَلِمَ مَا لَمْ

सरों के बाल मुंडाते या तरशवाते बे ख़ौफ़ तो उस ने जाना जो तुम्हें मा'लूम

تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَٰلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿٢٧﴾ هُوَ

नहीं तो इस से पहले एक नज़्दीक आने वाली फ़त्ह़ रखी वोही

الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ

है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि इसे

عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿٢٨﴾ مُحَمَّدٌ

सब दीनों पर ग़ालिब करे और अल्लाह काफ़ी है गवाह मुहम्मद अल्लाह

رَسُولُ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ

के रसूल हैं और इन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं

رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ ۖ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا

और आपस में नर्म दिल तो उन्हें देखेगा रुकूअ़ करते सज्दे में

مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ۖ سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِنْ

गिरते अल्लाह का फ़ज़्लो रिज़ा चाहते उन की अ़लामत उन के चेहरों में है

أَثَرِ السُّجُوۡدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمۡ فِى التَّوۡرٰىةِ ۖۚ وَمَثَلُهُمۡ

सज्दों के निशान से येह उन की सिफ़त तौरेत में है और उन की सिफ़त

فِى الۡاِنۡجِيۡلِ ۚ كَزَرۡعٍ اَخۡرَجَ شَطۡـئَـهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسۡتَغۡلَظَ

इन्जील में जैसे एक खेती उस ने अपना पठ्ठा निकाला फिर उसे ताक़त दी फिर

فَاسۡتَوٰى عَلٰى سُوۡقِهٖ يُعۡجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَـغِيۡظَ بِهِمُ

दबीज़ हुई फिर अपनी साक़ फिर सीधी खड़ी हुई किसानों को भली लगती है ताकि उन से

الۡكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

काफ़िरों के दिल जलें अल्लाह ने वा'दा किया उन से जो इन में ईमान और अच्छे कामों वाले हैं

مِنۡهُمۡ مَّغۡفِرَةً وَّاَجۡرًا عَظِيۡمًا ﴿۲۹﴾

बख़्शिश और बड़े सवाब का

दिल में नूरे ईमान पाने का एक सबब

ह़दीसे पाक में है, "जिस शख़्स ने **गुस्सा** ज़ब्त कर लिया बा वुजूद इस के कि वोह गुस्सा नाफ़िज़ करने पर कुदरत रखता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को सुकून व ईमान से भर देगा।

(الجامع الصغير للسيوطی ص ۵٤۱ حديث ۸۹۹۷)

हिकायत

किसी शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को गाली दी। उन्हों ने फ़रमाया : "अगर बरोज़े क़ियामत मेरे गुनाहों का पल्ला भारी है तो जो कुछ तुम ने कहा मैं उस से भी बदतर हूं और अगर मेरा वोह पल्ला हलका है तो मुझे तुम्हारी गाली की कोई परवाह नहीं।"

(اتحاف السادۃ المتقین ج۹ص۴۱۶ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

हिकायत

किसी शख़्स ने सय्यिदुना **शा'बी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ को गाली दी आप ने फ़रमाया : "अगर तू सच कहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़्फ़िरत फ़रमाए और अगर तू झूट कहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी मग़्फ़िरत फ़रमाए।"

(احیاءُ العلوم ج۳ ص ۲۱۲ دار صادر بیروت)

म-दनी फूल

ऐ काश ! रोज़ी में कसरत की **मह़ब्बत** के बदले हम नेकियों में ब-र-कत की ह़सरत करते और इस के लिये भी कोई विर्द करते।

"दुआ" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सूरए दुख़ान के 3 फ़ज़ाइल

(1) सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी रात में सूरए दुख़ान पढ़ेगा तो सुब्ह होने तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये **दुआए मग़्फ़िरत** करते रहेंगे । (سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج٤ ص٤٠٦ حدیث٢٨٩٧) (2) नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने शबे जुमुआ में **सूरए दुख़ान** पढ़ी उस की **मग़्फ़िरत** कर दी जाएगी । (سُنَنُ التِّرمِذِیّ حدیث٢٨٩٨ ج٤ ص٤٠٧) (3) रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो जुमुआ के दिन या रात में सूरए दुख़ान पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **जन्नत** में उस के लिये एक घर बनाएगा । (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر الحدیث٨٠٢٦ ج٨ ص٢٦٤)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

حٰمٓ ۚ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ ﴿٢﴾ اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ

क़सम इस रोशन किताब की बेशक हम ने इसे ब-र-कत वाली रात में

مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ

उतारा बेशक हम डर सुनाने वाले हैं इस में बांट दिया जाता है हर हिक्मत

حَكِيْمٍ ۙ ﴿٤﴾ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۚ ﴿٥﴾

वाला काम हमारे पास के हुक्म से बेशक हम भेजने वाले हैं

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۙ﴿۶﴾ رَبِّ

तुम्हारे रब की त़रफ़ से रह़मत बेशक वोही सुनता जानता है वोह जो

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿۷﴾ وقف لازم

रब है आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ उन के दरमियान है अगर तुम्हें यक़ीन हो

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۸﴾

उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं वोह जिलाए और मारे तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का रब

بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ﴿۹﴾ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ

बल्कि वोह शक में पड़े खेल रहे हैं तो तुम उस दिन के मुन्तज़िर रहो जब आस्मान एक

بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿۱۰﴾ يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۱﴾

ज़ाहिर धुवां लाएगा कि लोगों को ढांप लेगा येह है दर्दनाक अ़ज़ाब

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲﴾ اَنّٰى لَهُمُ

उस दिन कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर से अ़ज़ाब खोल दे हम ईमान लाते हैं कहां से हो

الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۙ﴿۱۳﴾ ثُمَّ تَوَلَّوْا

उन्हें नसीह़त मानना ह़ालां कि उन के पास साफ़ बयान फ़रमाने वाला रसूल तशरीफ़ ला चुका फिर उस से

عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ وقف لازم

रू गरदां हुए और बोले सिखाया हुवा दीवाना है हम कुछ दिनों को अ़ज़ाब खोले देते

قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ﴿١٥﴾ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ

हैं तुम फिर वोही करोगे जिस दिन हम सब से बड़ी पकड़ पकड़ेंगे

اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ

बेशक हम बदला लेने वाले हैं और बेशक हम ने उन से पहले फ़िरऔन की क़ौम को जांचा

وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ﴿١٧﴾ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ

और उन के पास एक मुअ़ज़्ज़ज़ रसूल तशरीफ़ लाया कि अल्लाह के बन्दों को मुझे सिपुर्द कर दो

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٨﴾ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ

बेशक मैं तुम्हारे लिये अमानत वाला रसूल हूं और अल्लाह के मुक़ाबिल सरकशी न करो मैं

اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٩﴾ وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ

तुम्हारे पास एक रोशन सनद लाता हूं और मैं पनाह लेता हूं अपने रब और

وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿٢٠﴾ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿٢١﴾

तुम्हारे रब की इस से कि तुम मुझे संगसार करो और अगर तुम मेरा यक़ीन न लाओ तो मुझ से किनारे हो जाओ

فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ

तो उस ने अपने रब से दुआ़ की, कि येह मुजरिम लोग हैं हम ने हुक्म फ़रमाया कि मेरे

لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ

बन्दों को रातों रात ले निकल ज़रूर तुम्हारा पीछा किया जाएगा और दरिया को यूंही जगह जगह से

مُّغْرَقُوْنَ ﴿۲۴﴾ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿۲۵﴾ وَّزُرُوْعٍ

खुला छोड़ दे बेशक वोह लश्कर डुबोया जाएगा कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेत

وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿۲۶﴾ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿۲۷﴾ كَذٰلِكَ

और उ़म्दा मकानात और ने'मतें जिन में फ़ारिग़ुल बाल थे हम ने यूंही

وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۲۸﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ

किया और उन का वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और

وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ

उन्हें मोहलत न दी गई और बेशक हम ने बनी इस्राईल

اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿۳۰﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ

को ज़िल्लत के अ़ज़ाब से नजात बख़्शी फ़िरऔ़न से बेशक वोह

كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى

मु-तकब्बिर ह़द से बढ़ने वालों में से था और बेशक हम ने उन्हें

عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۲﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا

दानिस्ता चुन लिया उस ज़माने वालों से और हम ने उन्हें वोह निशानियां अ़ता फ़रमाईं

مُّبِيْنٌ ﴿۳۳﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿۳۴﴾ اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا

जिन में सरीह़ इन्आ़म था बेशक येह कहते हैं वोह तो नहीं मगर हमारा

الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ﴿۳۵﴾ فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ

एक दफ़्अ़ा का मरना और हम उठाए न जाएंगे तो हमारे बाप दादा को ले आओ अगर

صٰدِقِيْنَ ﴿۳۶﴾ اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيْنَ مِنْ

तुम सच्चे हो क्या वोह बेहतर हैं या तुब्बअ़ की क़ौम और जो उन से पहले थे

قَبْلِهِمْ ؕ اَهْلَكْنٰهُمْ ۫ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۳۷﴾ وَمَا خَلَقْنَا

हम ने उन्हें हलाक कर दिया बेशक वोह मुजरिम लोग थे और हम ने न बनाए

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿۳۸﴾ مَا خَلَقْنٰهُمَآ

आस्मान और ज़मीन और जो कुछ उन के दरमियान है खेल के त़ौर पर हम ने उन्हें

اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّ يَوْمَ

न बनाया मगर ह़क़ के साथ लेकिन उन में अक्सर जानते नहीं बेशक

الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۴۰﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى

फ़ैसले का दिन उन सब की मीआ़द है जिस दिन कोई दोस्त किसी

عَنْ مَّوْلًى شَيْئًا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۱﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ

दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उन की मदद होगी मगर जिस पर अल्लाह रह़्म

اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۴۲﴾ اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿۴۳﴾

करे बेशक वोही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है बेशक थूहड़ का पेड़

طَعَامُ الْاَثِیْمِ ﴿۴۴﴾ كَالْمُهْلِ ۚۛ یَغْلِیْ فِی الْبُطُوْنِ ﴿۴۵﴾ لا

गुनाहगारों की ख़ूराक है गले हुए तांबे की त़रह़ पेटों में जोश मारे

كَغَلْیِ الْحَمِیْمِ ﴿۴۶﴾ خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰی سَوَآءِ الْجَحِیْمِ ﴿۴۷﴾ ق

जैसा खौलता पानी जोश मारे उसे पकड़ो ठीक भड़कती आग की त़रफ़ बज़ोर घसीटते ले जाओ

ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِیْمِ ﴿۴۸﴾ ذُقْ ۚۙ اِنَّكَ

फिर उस के सर के ऊपर खौलते पानी का अ़ज़ाब डालो चख हां हां

اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْكَرِیْمُ ﴿۴۹﴾ اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ ﴿۵۰﴾

तू ही बड़ा इ़ज़्ज़त वाला करम वाला है बेशक येह है वोह जिस में तुम शुबा करते थे

اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ مَقَامٍ اَمِیْنٍ ﴿۵۱﴾ لا فِیْ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ﴿۵۲﴾ ۚۙ

बेशक डर वाले अमान की जगह में हैं बाग़ों और चश्मों में

یَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِیْنَ ﴿۵۳﴾ ۚۙ

पहनेंगे करैब और क़नादीज़ आमने सामने

كَذٰلِكَ ۫ وَ زَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِیْنٍ ﴿۵۴﴾ یَدْعُوْنَ فِیْهَا

यूंही है और हम ने उन्हें बियाह दिया निहायत सियाह और रोशन बड़ी आंखों वालियों से उस में हर

بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِیْنَ ﴿۵۵﴾ لا لَا یَذُوْقُوْنَ فِیْهَا

क़िस्म का मेवा मांगेंगे अम्नो अमान से इस में पहली मौत के सिवा

الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰیۚ وَوَقٰىهُمْ عَذَابَ

फिर मौत न चखेंगे और अल्लाह ने उन्हें आग के अ़ज़ाब से

الْجَحِیْمِۙ۝ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

बचा लिया तुम्हारे रब के फ़ज़्ल से येही बड़ी काम्याबी

الْعَظِیْمُ۝ فَاِنَّمَا یَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ۝

है तो हम ने इस कुरआन को तुम्हारी ज़बान में आसान किया कि वोह समझें

فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ۝ؑ

तो तुम इन्तिज़ार करो वोह भी किसी इन्तिज़ार में हैं

"म-दनी इन्आ़म" के नव हुरूफ़ की निस्बत से सूरए मुल्क के 9 फ़ज़ाइल

(1) **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मालिके बहरो बर, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक कुरआन में तीस आयतों पर मुश्तमिल एक सूरत है जो अपने क़ारी के लिये **शफ़ाअ़त** करती रहेगी यहां तक कि उस की **मग़्फ़िरत** कर दी जाएगी और येह تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ है।"

(سُنَنُ التِّرمِذِیّ حدیث ۲۹۰۰ ج۴ ص۴۰۸)

(2) **हज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि रहमते आलम, **नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कुरआने करीम में एक सूरत है जो अपने क़ारी के बारे में झगड़ा करेगी यहां तक कि उसे जन्नत में दाख़िल करा देगी और वोह येही **सूरए मुल्क** है। (اَلدُّرُّالْمَنْثُور ج۸ ص۲۳۳)

(3) **हज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि "जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो अ़ज़ाब उस के क़दमों की जानिब से आएगा तो उस के क़दम कहेंगे तेरे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूं कि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था, फिर अ़ज़ाब उस के सीने या पेट की त़रफ़ से आएगा तो वोह कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी जानिब से कोई **रास्ता** नहीं क्यूं कि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था, फिर वोह उस के सर की त़रफ़ से आएगा तो सर कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी त़रफ़ से कोई **रास्ता** नही क्यूं कि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था।"

तो येह सूरत रोकने वाली है, अ़ज़ाबे क़ब्र से रोकती है, तौरात में इस का नाम **सूरए मुल्क** है जो इसे रात में पढ़ता है बहुत ज़ियादा और अच्छा अ़मल करता है।"

(اَلْمُسْتَدْرَك عَلَی الصَّحِیْحَیْن حدیث ۳۸۹۲ ج۳ ص۳۲۲)

(4) **हज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا फ़रमाते हैं कि एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने एक क़ब्र पर अपना ख़ैमा लगाया मगर उन्हें इ़ल्म न था कि यहां क़ब्र है लेकिन बा'द में पता चला कि

वहां किसी शख़्स की क़ब्र है जो **सूरए मुल्क** पढ़ रहा है और उस ने पूरी सूरत ख़त्म की वोह सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रह़मते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने एक क़ब्र पर ख़ैमा तान लिया मगर मुझे मा'लूम न था कि वहां क़ब्र है जब कि वहां एक ऐसे शख़्स की क़ब्र है जो रोज़ाना पूरी सू-रतुल मुल्क पढ़ता है ।" तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येही रोकने वाली है, येही **नजात** दिलाने वाली है जिस ने उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से **मह़फ़ूज़** रखा ।"

(سُنَنُ التِّرمِذِی حدیث ۲۸۹۹ ج۴ ص۴۰۷)

(5) **हुज़ूरे** अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि मेरी **ख़्वाहिश** है कि تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ हर मोमिन के दिल में हो । (کَنزُ العُمّال حدیث ۲۶۴۵ ج۱ ص۲۹۱)

(6) चांद देख कर इस को पढ़ा जाए तो महीने के तीस दिनों तक वोह **सख़्तियों** से اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ मह़फ़ूज़ रहेगा, इस लिये कि येह तीस आयतें है और तीस दिन के लिये **काफ़ी** हैं ।

(تَفسِیر رُوحُ الْمَعَانِی سورۃالملک ج۱۵ ص۴)

(7) **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक मैं कु़रआन में 30 आयात की एक सूरत पाता हूं, जो शख़्स सोते वक़्त इस (सूरत) की तिलावत करे, उस के लिये 30 **नेकियां** लिखी जाएंगी, और उस के 30 **गुनाह** मिटाए

जाएंगे, और उस के 30 **द-रजात** बुलन्द किये जाएंगे, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता उस की त़रफ़ भेजेगा, ताकि वोह उस पर अपने पर **बिछा** दे और उस की हर चीज़ से जागने तक **ह़िफ़ाज़त** करे, और येह **मुजा-दला** (या'नी झगड़ा) करने वाली है, अपने पढ़ने वाले की मग़्फ़िरत के लिये क़ब्र में **झगड़ा** करेगी, और येह تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ है ।

(اَلدُّرُّالْمَنْثُوْر، ج۸، ص۲۳۳)

(8) सरकारे **मदीनए मुनव्वरह**, सरदारे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात को आराम फ़रमाने से पहले सू-रतुल मुल्क और **السجدة ،الم تنزيل तिलावत** फ़रमाते थे ।

(تَفْسِیْر رُوْحُ الْبَیَان، سورة الملك، ج۱۰، ص۹۸)

(9) **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने एक आदमी से फ़रमाया : क्या मैं तुझे एक ह़दीस **तोह़फ़े** के त़ौर पर न दूं जिस के साथ तू ख़ुश हो जाए, उस ने अ़र्ज़ की बेशक ! तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : येह सूरह पढ़ो : تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ और येह सूरत अपने अहलो इ़याल, अपने तमाम बच्चों, अपने घर के बच्चों और अपने पड़ोसियों को सिखाओ (इस की इन्हें ता'लीम दो) क्यूं कि येह **नजात** दिलाने वाली है और क़ियामत के दिन अपने क़ारी के लिये अपने रब के पास **झगड़ने** वाली है, और येह उसे तलाश करेगी ताकि उसे जहन्नम के अ़ज़ाब से **नजात** दिलाए और इस के सबब इस का क़ारी अ़ज़ाब से भी **नजात** पा जाएगा ।

(اَلدُّرُّالْمَنْثُوْر ج۸ ص۲۳۱)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

تَبٰرَکَ الَّذِیۡ بِیَدِہِ الۡمُلۡکُ ۫ وَ ہُوَ عَلٰی کُلِّ

बड़ी ब-र-कत वाला है वोह जिस के क़ब्ज़े में सारा मुल्क और वोह हर चीज़ पर

شَیۡءٍ قَدِیۡرُۨ ۙ﴿۱﴾ الَّذِیۡ خَلَقَ الۡمَوۡتَ وَ الۡحَیٰوۃَ لِیَبۡلُوَکُمۡ

क़ादिर है वोह जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की, कि तुम्हारी जांच हो

اَیُّکُمۡ اَحۡسَنُ عَمَلًا ؕ وَ ہُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡغَفُوۡرُ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیۡ

तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है और वोही इ़ज़्ज़त वाला बख़्शिश वाला है जिस ने

خَلَقَ سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰی فِیۡ خَلۡقِ الرَّحۡمٰنِ

सात आस्मान बनाए एक के ऊपर दूसरा तो रह़मान के बनाने में क्या फ़र्क़ देखता

مِنۡ تَفٰوُتٍ ؕ فَارۡجِعِ الۡبَصَرَ ۙ ہَلۡ تَرٰی مِنۡ فُطُوۡرٍ ﴿۳﴾

है तो निगाह उठा कर देख तुझे कोई रख़्ना नज़र आता है

ثُمَّ ارۡجِعِ الۡبَصَرَ کَرَّتَیۡنِ یَنۡقَلِبۡ اِلَیۡکَ الۡبَصَرُ خَاسِئًا

फिर दोबारा निगाह उठा नज़र तेरी त़रफ़ ना काम पलट आएगी

وَّ ہُوَ حَسِیۡرٌ ﴿۴﴾ وَ لَقَدۡ زَیَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنۡیَا بِمَصَابِیۡحَ وَ جَعَلۡنٰہَا

थकी मांदी और बेशक हम ने नीचे के आस्मान को चराग़ों से आरास्ता किया

رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝٥

और उन्हें शैतानों के लिये मार किया और उन के लिये भड़कती आग का अ़ज़ाब तय्यार फ़रमाया

وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٦

और जिन्हों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और क्या ही बुरा अन्जाम

اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۝٧ لا تَكَادُ

जब उस में डाले जाएंगे उस का रेंकना सुनेंगे कि जोश मारती है मा'लूम होता

تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ

है कि शिद्दते ग़ज़ब में फट जाएगी जब कभी कोई गुरौह उस में डाला जाएगा उस के

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ۝٨ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا

दारोग़ा उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डर सुनाने वाला न आया था कहेंगे क्यूं नहीं बेशक

وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۖۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ

हमारे पास डर सुनाने वाले तशरीफ़ लाए फिर हम ने झुटलाया और कहा अल्लाह ने कुछ नहीं उतारा तुम तो नहीं मगर

كَبِيْرٍ ۝٩ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ

बड़ी गुमराही में और कहेंगे अगर हम सुनते या समझते तो दोज़ख़ वालों में न

السَّعِيْرِ ۝١٠ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١١

होते अब अपने गुनाह का इक़रार किया तो फिटकार हो दोज़ख़ियों को

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ

बेशक वोह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब

كَبِيرٌ ﴿١٢﴾ وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ

है और तुम अपनी बात आहिस्ता कहो या आवाज़ से वोह तो दिलों की

بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٣﴾ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ

जानता है क्या वोह न जाने जिस ने पैदा किया और वोही है हर

الْخَبِيرُ ﴿١٤﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا

बारीकी जानता ख़बरदार वोही है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन राम कर दी तो उस के रस्तों में

فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ ۖ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ﴿١٥﴾ أَأَمِنتُم

चलो और अल्लाह की रोज़ी में से खाओ और उसी की तरफ़ उठना है क्या तुम

مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ﴿١٦﴾

उस से निडर हो गए जिस की सल्तनत आस्मान में है कि तुम्हें ज़मीन में धंसा दे

أَمْ أَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ

जभी वोह कांपती रहे या तुम निडर हो गए उस से जिस की सल्तनत आस्मान में है कि तुम पर पथराओ भेजे तो अब

فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن

जानोगे कैसा था मेरा डराना और बेशक उन से अगलों ने झुटलाया

قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ

तो कैसा हुवा मेरा इन्कार और क्या उन्हों ने अपने ऊपर परिन्दे न

صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؔ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ

देखे पर फैलाते और समेटते उन्हें कोई नहीं रोकता सिवा रहमान के बेशक वोह सब कुछ

شَيْءٍۭ بَصِيْرٌ ﴿١٩﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ

देखता है या वोह कौन सा तुम्हारा लश्कर है कि रहमान के मुक़ाबिल तुम्हारी मदद करे

مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ﴿٢٠﴾ ۚ

काफ़िर नहीं मगर धोके में

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا

या कौन सा ऐसा है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर वोह अपनी रोज़ी रोक ले बल्कि वोह

فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ﴿٢١﴾ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖٓ اَهْدٰٓى

सरकश और नफ़रत में ढीट बने हुए हैं तो क्या वोह जो अपने मुंह के बल औंधा चले ज़ियादा राह पर

اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٢﴾ قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ

है या वोह जो सीधा चले सीधी राह पर तुम फ़रमाओ वोही

اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا

जिस ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिये कान और आंख और दिल बनाए कितना कम

مَّا تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۲۳﴾ قُلۡ هُوَ الَّذِىۡ ذَرَاَكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ

हक़ मानते हो   तुम फ़रमाओ वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें फैलाया और उसी

وَاِلَيۡهِ تُحۡشَرُوۡنَ ﴿۲۴﴾ وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هٰذَا الۡوَعۡدُ

की त़रफ़ उठाए जाओगे   और कहते हैं येह वा'दा कब आएगा

اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۲۵﴾ قُلۡ اِنَّمَا الۡعِلۡمُ عِنۡدَ اللّٰهِ

अगर तुम सच्चे हो   तुम फ़रमाओ येह इल्म तो अल्लाह के पास है

وَاِنَّمَاۤ اَنَا نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۲۶﴾ فَلَمَّا رَاَوۡهُ زُلۡفَةً سِيۡٓـَٔتۡ

और मैं तो येही साफ़ डर सुनाने वाला   फिर जब उसे पास देखेंगे

وُجُوۡهُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَقِيۡلَ هٰذَا الَّذِىۡ كُنۡتُمۡ بِهٖ

काफ़िरों के मुंह बिगड़ जाएंगे और उन से फ़रमाया जाएगा येह है जो तुम

تَدَّعُوۡنَ ﴿۲۷﴾ قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ اَهۡلَـكَنِىَ اللّٰهُ وَمَنۡ

मांगते थे   तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथ वालों

مَّعِىَ اَوۡ رَحِمَنَا فَمَنۡ يُّجِيۡرُ الۡكٰفِرِيۡنَ مِنۡ عَذَابٍ اَلِيۡمٍ ﴿۲۸﴾

को हलाक कर दे या हम पर रह़्म फ़रमाए तो वोह कौन सा है जो काफ़िरों को दुख के अ़ज़ाब से

قُلۡ هُوَ الرَّحۡمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيۡهِ تَوَكَّلۡنَا فَسَتَعۡلَمُوۡنَ

बचा लेगा   तुम फ़रमाओ वोही रह़मान है हम उस पर ईमान लाए और उसी पर भरोसा किया तो अब

مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۲۹﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ

जान जाओगे कौन खुली गुमराही में है तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुब्ह़ को तुम्हारा

مَآؤُکُمْ غَوْرًا فَمَنْ یَّاْتِیْکُمْ بِمَآءٍ مَّعِیْنٍ ﴿۳۰﴾

पानी ज़मीन में धंस जाए तो वोह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता

"रह़मान" के चार हुरूफ़ की निस्बत से सूरए रह़मान के 4 फ़ज़ाइल

(1) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम, शाफ़ेए उमम** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि "हर चीज़ के लिये **ज़ीनत** है और कुरआने पाक की ज़ीनत **सूरए रह़मान** है।" (اَلدُّرُالْمَنْثُور ج۷ ص ۶۹۰)

(2) सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **सूरए ह़दीद**, اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ, और अर्रह़मान के पढ़ने वाले को ज़मीन व आस्मान के फ़िरिश्तों में **साकिनुल फ़िरदौस** (जन्नतुल फ़िरदौस का रहने वाला) पुकारा जाता है।

(اَلدُّرُالْمَنْثُور ج۷ ص ۶۹۰)

(3) ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत

है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُم के पास तशरीफ़ लाए और **सूरए रह़मान** इब्तिदा से आखि़र तक तिलावत फ़रमाई, और सब ख़ामोश रहे। फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं तुम पर येह कैसा सुकूत देख रहा हूं, मैं ने येही सूरत जिन्नों की मुलाक़ात की रात उन पर तिलावत की तो उन्हों ने तुम से इन्तिहाई ख़ूब सूरत और ह़सीन जवाब दिया, मैं जब भी इस आयत पर पहुंचा : فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ○ तो उन्हों ने कहा : وَلَا بِشَیْءٍ مِّنْ نِعَمِکَ رَبَّنَا نُکَذِّبُ فَلَکَ الْحَمْدُ या'नी ऐ हमारे रब ! عَزَّوَجَلَّ हम तेरी ने'मतों में से किसी भी शै को नहीं झुटलाते, सब ता'रीफ़ें तेरे लिये हैं।

(اَلدُّرُّالْمَنْثُوْر ج٧ ص٦٩٠)

(4) सूरए रह़मान ग्यारह बार पढ़ने से **मक़ासिद** पूरे होते हैं, नीज़ इस सूरह को लिख कर और धो कर तुह़ाल (तिल्ली की बीमारी) के मरीज़ को पिलाना बहुत **मुफ़ीद** है। (जन्नती ज़ेवर, स. 597)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

اَلرَّحْمٰنُ ﴿۱﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿۲﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ

रह़मान ने अपने मह़बूब को कुरआन सिखाया इन्सानियत की जान मुह़म्मद को पैदा किया माका-न व मा यकून

الْبَیَانَ ۝٤ اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝٥ وَّالنَّجْمُ

का बयान उन्हें सिखाया सूरज और चांद हिसाब से है और सब्ज़े और

وَالشَّجَرُ یَسْجُدٰنِ ۝٦ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِیْزَانَ ۝٧

पेड़ सज्दा करते हैं और आस्मान को अल्लाह ने बुलन्द किया और तराज़ू रखी

اَلَّا تَطْغَوْا فِی الْمِیْزَانِ ۝٨ وَاَقِیْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ

कि तराज़ू में बे ए'तिदाली न करो और इन्साफ़ के साथ तोल क़ाइम करो

وَلَا تُخْسِرُوا الْمِیْزَانَ ۝٩ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝١٠ فِیْهَا

और वज़्न न घटाओ और ज़मीन रखी मख़्लूक़ के लिये इस

فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝١١ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ

में मेवे और ग़िलाफ़ वाली खजूरें और भुस के साथ अनाज

وَالرَّیْحَانُ ۝١٢ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝١٣ خَلَقَ

और ख़ुश्बू के फूल तो ऐ जिन्न व इन्स तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उस ने आदमी

الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝١٤ وَخَلَقَ الْجَآنَّ

को बनाया बजती मिट्टी से जैसे ठेकरी और जिन्न को पैदा फ़रमाया आग

مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۝١٥ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝١٦

के लूके से तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

दोनों पूरब का रब और दोनों पश्चिम का रब तो तुम दोनों अपने रब

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٨﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا

की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उस ने दो समुन्दर बहाए कि देखने में मा'लूम हों मिले हुए

بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾

और है उन में रोक कि एक दूसरे पर बढ़ नहीं सकता तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

उन में से मोती और मूंगा निकलता है तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٢٤﴾

झुटलाओगे और उसी की हैं वोह चलने वालियां कि दरिया में उठी हुई हैं जैसे पहाड़

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٥﴾ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है

وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٢٧﴾ فَبِاَيِّ

और बाक़ी है तुम्हारे रब की ज़ात अ-ज़मत और बुज़ुर्गी वाला तो अपने रब

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾ يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ

की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उसी के मंगता हैं जितने आस्मानों और

وَالْاَرْضِ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

ज़मीन में हैं उसे हर दिन एक काम है तो अपने रब की कौन सी

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾ سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾ فَبِاَيِّ

ने'मत झुटलाओगे जल्द सब काम निबटा कर हम तुम्हारे ह़िसाब का क़स्द फ़रमाते हैं ऐ दोनों भारी गुरोह तो

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ

अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे ऐ जिन्न व इन्सान के गुरोह अगर तुम से हो सके कि आस्मानों

اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

और ज़मीन के किनारों से निकल जाओ तो निकल जाओ

فَانْفُذُوْا لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

जहां निकल कर जाओगे उसी की सल्त़नत है तो अपने रब की कौन

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ ۵

सी ने'मत झुटलाओगे तुम पर छोड़ी जाएगी बे धुवें की आग की लपट

وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾

और बे लपट का काला धुवां तो फिर बदला न ले सकोगे तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِاَيِّ

फिर जब आस्मान फट जाएगा तो गुलाब के फूल सा हो जाएगा जैसे सुर्ख़ निरी तो अपने रब

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۸﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ

की कौन सी ने'मत झुटलाओगे तो उस दिन गुनाहगार के गुनाह की पूछ न होगी

اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿۳۹﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۰﴾ يُعْرَفُ

किसी आदमी और जिन्न से तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे मुजरिम अपने

الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ ﴿۴۱﴾

चेहरे से पहचानें जाएंगे तो माथा और पाउं पकड़ कर जहन्नम में डाले जाएंगे

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۲﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे येह है वोह जहन्नम जिसे

يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۴۳﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ

मुजरिम झुटलाते हैं फैरे करेंगे इस में और इन्तिहा के

حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿۴۴﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۵﴾ وَلِمَنْ خَافَ

जलते खौलते पानी में तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे और जो अपने रब के हुज़ूर

مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿۴۶﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۷﴾ ذَوَاتَآ

खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे बहुत सी

اَفْنَانٍ ﴿۴۸﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۹﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ

डालों वालियां तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में दो चश्मे

تَجْرِيٰنِ ﴿۵۰﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۱﴾ فِيْهِمَا مِنْ

बहते हैं तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में हर मेवा दो दो

كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿۵۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۳﴾

क़िस्म का तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا

ऐसे बिछोनों पर तकिया लगाए जिन का अस्तर क़नादीज़ का और दोनों के

الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿۵۴﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۵﴾ فِيْهِنَّ

मेवे इतने झुके हुए कि नीचे से चुन लो तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन बिछोनों

قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿۵۶﴾

पर वोह औरतें हैं कि शोहर के सिवा किसी को आंख उठा कर नहीं देखतीं उन से पहले उन्हें न छुवा किसी आदमी और न जिन्न ने

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۷﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे गोया वोह ला'ल

وَالْمَرْجَانُ ﴿۵۸﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۹﴾ هَلْ جَزَآءُ

और मूंगा हैं तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे नेकी का बदला क्या

الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿۶۰﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۱﴾

है मगर नेकी तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿۶۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۳﴾

और इन के सिवा दो जन्नतें और हैं तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿۶۴﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۵﴾

निहायत सब्ज़ी से सियाही की झलक दे रही हैं तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿۶۶﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

इन में दो चश्मे हैं छलकते हुए तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۷﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿۶۸﴾

इन में मेवे और खजूरें और अनार हैं

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۹﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿۷۰﴾

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में औ़रतें हैं आ़दत की नेक सूरत की अच्छी

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۱﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे हूरें हैं ख़ैमों में पर्दा

الْخِيَامِ ﴿۷۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۳﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ

नशीन तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन से पहले उन्हें

اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿۷۴﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۵﴾

हाथ न लगाया किसी आदमी और न जिन्न ने तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

مُتَّكِـِٕیْنَ عَلٰی رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِیٍّ حِسَانٍ ۚ﴿۷۶﴾

तकिया लगाए हुए सब्ज़ बिछोनों और मुनक़्क़श ख़ूब सूरत चांदनियों पर

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۷﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे बड़ी ब-र-कत वाला है तुम्हारे रब

ذِی الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿۷۸﴾

का नाम जो अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाला

रोज़ी का एक सबब

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौरे अक़्दस में दो भाई थे, जिन में एक तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में (इ़ल्मे दीन सीखने के लिये) आता था और दूसरा कारीगर था, (एक रोज़) कारीगर भाई ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने भाई की शिकायत की (या'नी इस ने सारा बोझ मुझ पर डाल दिया है, इस को मेरे काम काज में हाथ बटाना चाहिये) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ((لَعَلَّكَ تُرْزَقُ بِهٖ)) शायद ! "तुझे इस की ब-र-कत से रोज़ी मिल रही है।"

"سنن الترمذي"، أبواب الزهد، باب في التوكل على الله، الحديث: ٢٣٥٢، ج٤، ص١٥٤.

و "اشعة اللمعات"، كتاب الرقاق، باب التوكل و الصبر، الفصل الثالث، ج٤، ص٢٦٢.

सूरए वाक़िअ़ह के फ़ज़ाइल

(1) येह सूरत बहुत ही बा ब-र-कत है **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सूरए वाक़िअ़ह **तवंगरी** (या'नी ख़ुशह़ाली) की सूरत है लिहाज़ा इसे पढ़ो और अपनी औलाद को सिखाओ । (رُوْحُ الْمَعَانِی ج۷ ص۱۸۳)

(2) **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ म-रज़ुल मौत में मुब्तला थे ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गए और उन से फ़रमाने लगे कि अगर मैं तुम्हें ख़ज़ाने से कुछ अ़ता कर दूं तो कैसा है ? उन्हों ने फ़रमाया : मुझे इस की कोई ज़रूरत नहीं । ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : बा'द में तुम्हारी बच्चियों के काम आएगा । इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : तुम मेरी बच्चियों के मु-तअ़ल्लिक़ फ़क़्रो फ़ाक़ा से डरते हो मैं ने इन को हुक्म दिया है कि वोह हर रात सूरए वाक़िअ़ह पढ़ा करें, मैं ने **रसूलुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि जो आदमी हर रात सू-रतुल वाक़िआ़ पढ़ेगा वोह कभी **फ़क़्रो फ़ाक़ा** में मुब्तला नहीं होगा ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝٢

जब हो लेगी वोह होने वाली उस वक़्त उस के होने में किसी को इन्कार की गुन्जाइश न होगी

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾

किसी को पस्त करने वाली, किसी को बुलन्दी देने वाली जब ज़मीन कांपेगी थरथरा कर

وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ﴿٦﴾ وَّكُنْتُمْ

और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे चूरा हो कर तो हो जाएंगे जैसे रोज़न की धूप में ग़ुबार के बारीक ज़र्रे फैले

أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾ فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَآ أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾

हुए और तुम तीन क़िस्म हो जाओगे तो दहनी त़रफ़ वाले कैसे दहनी त़रफ़ वाले

وَأَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ مَآ أَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ﴿٩﴾ وَالسّٰبِقُوْنَ

और बाईं त़रफ़ वाले कैसे बाईं त़रफ़ वाले और जो सब्क़त ले

السّٰبِقُوْنَ ﴿١٠﴾ أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿١١﴾ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿١٢﴾

गए वोह तो सब्क़त ही ले गए वोही मुक़र्रबे बारगाह हैं चैन के बाग़ों में

ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْآخِرِيْنَ ﴿١٤﴾ عَلٰى سُرُرٍ

अगलों में से एक गुरौह और पिछलों में से थोड़े जड़ाउ तख़्तों पर

مَّوْضُوْنَةٍ ﴿١٥﴾ مُّتَّكِـِٔيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٦﴾ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ

होंगे उन पर तकिया लगाए हुए आमने सामने उन के गिर्द लिये फिरेंगे

وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ﴿١٧﴾ بِأَكْوَابٍ وَّأَبَارِيْقَ ۙ وَكَأْسٍ

हमेशा रहने वाले लड़के कूज़े और आफ़्ताबे और जाम आंखों के सामने

مِّنْ مَّعِينٍ ﴿١٨﴾ لَّا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ﴿١٩﴾

बहती शराब के उस से न उन्हें दर्दे सर हो न होश में फ़र्क़ आए

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢١﴾

और मेवे जो पसन्द करें और परिन्दों का गोश्त जो चाहें

وَحُورٌ عِينٌ ﴿٢٢﴾ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾ جَزَاءً بِمَا

और बड़ी आंख वालियां हूरें जैसे छुपे रखे हुए मोती सिला उन

كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ﴿٢٥﴾

के आ'माल का उस में न सुनेंगे कोई बेकार बात न गुनाहगारी

إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ

हां येह कहना होगा सलाम सलाम और दहनी त़रफ़ वाले कैसे दहनी

الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٨﴾ وَطَلْحٍ مَّنْضُودٍ ﴿٢٩﴾

त़रफ़ वाले बे कांटे की बेरियों में और केले के गुच्छों में

وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿٣٠﴾ وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣١﴾ وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾

और हमेशा के साए में और हमेशा जारी पानी में और बहुत से मेवों में

لَّا مَقْطُوعَةٍ وَّلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾ وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾ إِنَّا

जो न ख़त्म हों और न रोके जाएं और बुलन्द बिछोनों में बेशक

اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ﴿۳۵﴾ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿۳۶﴾ عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿۳۷﴾

हम ने उन औरतों को अच्छी उठान उठाया तो उन्हें बनाया कवारियां अपने शोहरों पर प्यारियां उन्हें प्यार

لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿۳۸﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۹﴾ وَثُلَّةٌ مِّنَ

दिलातियां एक उ़म्र वालियां दहनी त़रफ़ वालों के लिये अगलों में से एक गुरौह और पिछलों में

الْاٰخِرِيْنَ ﴿۴۰﴾ وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ﴿۴۱﴾

से एक गुरौह और बाईं त़रफ़ वाले और कैसे बाईं त़रफ़ वाले

فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ﴿۴۲﴾ وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿۴۳﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا

जलती हवा और खौलते पानी में और जलते धूए की छाऊं में जो न ठन्डी न इ़ज़्ज़त

كَرِيْمٍ ﴿۴۴﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿۴۵﴾ وَكَانُوْا

की बेशक वोह इस से पहले ने'मतों में थे और इस बड़े

يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿۴۶﴾ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ۵

गुनाह की हट रखते थे और कहते थे क्या जब हम

اَىِٕذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿۴۷﴾

मर जाएं और हड्डियां और मिट्टी हो जाएं तो क्या ज़रूर हम उठाए जाएंगे

اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿۴۸﴾ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿۴۹﴾

और क्या हमारे अगले बाप दादा भी तुम फ़रमाओ कि बेशक़ सब अगले और पिछले

لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۵۰﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا

ज़रूर इकठ्ठे किये जाएंगे एक जाने हुए दिन की मीआ़द पर फिर बेशक तुम ऐ

الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۙ ﴿۵۱﴾ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۙ ﴿۵۲﴾

गुमराहो झुटलाने वालो ज़रूर थूहड़ के पेड़ में से खाओगे

فَمَالِئُوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿۵۳﴾ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿۵۴﴾

फिर उस से पेट भरोगे फिर उस पर खौलता पानी पियोगे

فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿۵۵﴾ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿۵۶﴾

फिर ऐसा पियोगे जैसे सख़्त प्यासे ऊंट पियें येह उन की मेहमानी है इन्साफ़ के दिन

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿۵۷﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا

हम ने तुम्हें पैदा किया तो तुम क्यूं नहीं सच मानते तो भला देखो तो वोह मनी

تُمْنُوْنَ ﴿۵۸﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿۵۹﴾ نَحْنُ

जो गिराते हो क्या तुम इस का आदमी बनाते हो या हम बनाने वाले हैं हम ने

قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۙ ﴿۶۰﴾ عَلٰۤى اَنْ

तुम में मरना ठहराया और हम इस से हारे नहीं कि तुम जैसे

نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۱﴾ وَلَقَدْ

और बदल दें और तुम्हारी सूरतें वोह कर दें जिस की तुम्हें ख़बर नहीं और बेशक

عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَفَرَءَيْتُمْ

तुम जान चुके हो पहली उठान फिर क्यूं नहीं सोचते तो भला बताओ

مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾

तो जो बोते हो क्या तुम उस की खेती बनाते हो या हम बनाने वाले हैं

لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

हम चाहें तो उसे रौंदन कर दें फिर तुम बातें बनाते रह जाओ कि हम पर चट्टी पड़ी

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِیْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾

बल्कि हम बे नसीब रहे तो भला बताओ तो वोह पानी जो पीते हो

ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾

क्या तुम ने इसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले

لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ اَفَرَءَيْتُمُ

हम चाहें तो इसे खारी कर दें फिर क्यूं नहीं शुक्र करते तो भला बताओ तो

النَّارَ الَّتِیْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَاۤ اَمْ نَحْنُ

वोह आग जो तुम रोशन करते हो क्या तुम ने इस का पेड़ पैदा किया या हम हैं पैदा करने

الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّ مَتَاعًا لِّلْمُقْوِیْنَ ﴿٧٣﴾

वाले हम ने इसे जहन्नम का यादगार बनाया और जंगल में मुसाफ़िरों का फ़ाएदा

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾

तो ऐ महबूब तुम पाकी बोलो अपने अ-ज़मत वाले रब के नाम की तो मुझे क़सम है उन जगहों की जहां तारे

وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٧﴾

डूबते हैं और तुम समझो तो येह बड़ी क़सम है बेशक येह इ़ज़्ज़त वाला क़ुरआन है

فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾ تَنْزِيْلٌ

महफ़ूज़ नविश्ता में उसे न छूए मगर बा वुज़ू उतारा हुवा

مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ

है सारे जहान के रब का तो क्या इस बात में तुम सुस्ती करते

مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾ وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾

हो और अपना हि़स्सा येह रखते हो कि झुटलाते हो

فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾ وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾

फिर क्यूं न हो कि जब जान गले तक पहुंचे और तुम उस वक़्त देख रहे हो

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

और हम उस के ज़ियादा पास हैं तुम से मगर तुम्हें निगाह नहीं

فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ

क्यूं न हुवा अगर तुम्हें बदला मिलना नहीं कि इसे लौटा लाते

كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۸۷﴾ فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۸۸﴾

अगर तुम सच्चे हो फिर वोह मरने वाला अगर मुक़र्रबों से है

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿۸۹﴾ وَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ

तो राह़त है और फूल और चैन के बाग़ और अगर दहनी त़रफ़

مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿۹۰﴾ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿۹۱﴾

वालों से हो तो ऐ मह़बूब तुम पर सलाम है दहनी त़रफ़ वालों से

وَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۹۲﴾ فَنُزُلٌ

और अगर झुटलाने वालों गुमराहों में से हो तो उस की

مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿۹۳﴾ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿۹۴﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ

मेहमानी खौलता पानी और भड़कती आग में धंसाना येह बेशक आ'ला

حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿۹۵﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿۹۶﴾

द-रजे की यक़ीनी बात है तो ऐ मह़बूब तुम अपने अ़-ज़मत वाले रब के नाम की पाकी बोलो

सू-रतुस्सज्दह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

الٓمّٓ ﴿۱﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲﴾

किताब का उतारना बेशक परवर्द गारे आ़लम की त़रफ़ से है

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ

क्या कहते हैं उन की बनाई हुई है बल्कि वोही ह़क़ है तुम्हारे रब की त़रफ़ से

قَوْمًا مَّاۤ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ

कि तुम डराओ ऐसे लोगों को जिन के पास तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला

يَهْتَدُوْنَ ﴿۳﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ

न आया इस उम्मीद पर कि वोह राह पाएं अल्लाह है जिस ने आस्मान और

الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى

ज़मीन और जो कुछ इन के बीच में है छ दिन में बनाए फिर अ़र्श

عَلَى الْعَرْشِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا

पर इस्तिवा फ़रमाया उस से छूट कर तुम्हारा कोई ह़िमायती न सिफ़ारिशी

شَفِيْعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۴﴾ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ

तो क्या तुम ध्यान नहीं करते काम की तदबीर फ़रमाता है

السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ

आस्मान से ज़मीन तक फिर उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करेगा उस दिन कि जिस की

مِقْدَارُهٗۤ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝٥ ذٰلِكَ عٰلِمُ

मिक़्दार हज़ार बरस है तुम्हारी गिनती में येह है हर निहां

الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٦ الَّذِيْۤ

और इयां का जानने वाला इ़ज़्ज़त व रह़मत वाला वोह जिस ने जो

اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَ بَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ

चीज़ बनाई ख़ूब बनाई और पैदाइशे इन्सान की इब्तिदा मिट्टी से

طِيْنٍ ۝٧ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝٨

फ़रमाई फिर उस की नस्ल रखी एक बे क़द्र पानी के ख़ुलासे से

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَ نَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ

फिर उसे ठीक किया और उस में अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकी और तुम्हें कान

وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْـِٕدَةَ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٩ وَ قَالُوْۤا

और आंखें और दिल अ़त़ा फ़रमाए क्या ही थोड़ा ह़क़ मानते हो और बोले

ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؕ

क्या जब हम मिट्टी में मिल जाएंगे क्या फिर नए बनेंगे बल्कि वोह

بَلْ هُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝١٠ قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ

अपने रब के हुज़ूर हाज़िरी से मुन्किर हैं तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात देता

الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝١١

है मौत का फ़िरिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर है फिर अपने रब की तरफ़ वापस जाओगे

وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

और कहीं तुम देखो जब मुजरिम अपने रब के पास सर नीचे डाले होंगे

رَبَّنَاۤ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا

ऐ हमारे रब अब हम ने देखा और सुना हमें फिर भेज कि नेक काम करें हम

مُوْقِنُوْنَ ۝١٢ وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا

को यक़ीन आ गया और अगर हम चाहते हर जान को इस की हिदायत अ़ता फ़रमाते मगर

وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ

मेरी बात क़रार पा चुकी कि ज़रूर जहन्नम को भर दूंगा इन जिन्नों और

وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝١٣ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ

आदमियों सब से अब चखो बदला उस का कि तुम अपने

يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ

उस दिन की हाज़िरी भूले थे हम ने तुम्हें छोड़ दिया अब हमेशा

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا

का अ़ज़ाब चखो अपने किये का बदला हमारी आयतों पर वोही ईमान लाते हैं कि जब वोह

ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ

उन्हें याद दिलाई जाती हैं सज्दे में गिर जाते हैं अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी

لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۩ ﴿١٥﴾ السجدة تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ

बोलते है और तकब्बुर नहीं करते   उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से

يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾

और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते और हमारे दिये हुए में से कुछ ख़ैरात करते हैं

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ جَزَآءًۢ

तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन

بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ

के कामों का   तो क्या जो ईमान वाला है वोह उस जैसा हो जाएगा

فَاسِقًا ؕ لَا يَسْتَوٗنَ ﴿١٨﴾ اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

जो बे हुक्म है येह बराबर नहीं   जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन के लिये

الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۫ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوْا

बसने के बाग़ हैं उन के कामों के सिले में

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُؕ كُلَّمَاۤ

मेहमान दारी। रहे वोह जो बे हुक्म हैं उन का ठिकाना आग है जब कभी उस में

اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَاۤ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَقِيْلَ لَهُمْ

से निकलना चाहेंगे फिर उसी में फैर दिये जाएंगे और उन से फ़रमाया जाएगा

ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٠﴾

चखो उस आग का अ़ज़ाब जिसे तुम झुटलाते थे

وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ

और ज़रूर हम उन्हें चखाएंगे कुछ नज़्दीक का अ़ज़ाब उस बड़े अ़ज़ाब से

الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ

पहले जिसे देखने वाला उम्मीद करे कि अभी बाज़ आएंगे और उस से बढ़ कर

بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَاؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ

ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से नसीहत की गई फिर उस ने उन से मुंह फैर

مُنْتَقِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ؑ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا

लिया बेशक हम मुजरिमों से बदला लेने वाले हैं और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई तो तुम

تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآىٕهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى

उस के मिलने में शक न करो और हम ने उसे

لِّبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۚ﴿۲۳﴾ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ

बनी इस्राईल के लिये हिदायत किया और हम ने उन में से कुछ इमाम बनाए कि

بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ۟ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ﴿۲۴﴾

हमारे हुक्म से बताते जब कि उन्हों ने सब्र किया और वोह हमारी आयतों पर यक़ीन लाते थे

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

बेशक तुम्हारा रब उन में फ़ैसला कर देगा क़ियामत के दिन जिस बात

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۲۵﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ

में इख़्तिलाफ़ करते थे और क्या उन्हें इस पर हिदायत

اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ

न हुई कि हम ने उन से पहले कितनी संगतें हलाक कर दीं कि आज येह उन

مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۲۶﴾

के घरों में चल फिर रहे हैं बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं तो क्या सुनते नहीं

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ

और क्या नहीं देखते कि हम पानी भेजते हैं ख़ुश्क ज़मीन की त़रफ़ फिर उस से खेती

بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ اَفَلَا

निकालते हैं कि उस में से उन के चौपाए और वोह ख़ुद खाते हैं तो क्या

يُبۡصِرُوۡنَ ﴿۲۷﴾ وَ يَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هٰذَا الۡفَتۡحُ اِنۡ كُنۡتُمۡ

उन्हें सूझता नहीं और कहते हैं येह फ़ैसला कब होगा अगर तुम

صٰدِقِيۡنَ ﴿۲۸﴾ قُلۡ يَوۡمَ الۡفَتۡحِ لَا يَنۡفَعُ الَّذِيۡنَ

सच्चे हो तुम फ़रमाओ फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उन का

كَفَرُوۡۤا اِيۡمَانُهُمۡ وَلَا هُمۡ يُنۡظَرُوۡنَ ﴿۲۹﴾ فَاَعۡرِضۡ

ईमान लाना नफ़्अ़ न देगा और न उन्हें मोहलत मिले तो उन से मुंह

عَنۡهُمۡ وَانۡتَظِرۡ اِنَّهُمۡ مُّنۡتَظِرُوۡنَ ﴿۳۰﴾ ع

फैर लो और इन्तिज़ार करो बेशक उन्हें भी इन्तिज़ार करना है

अहले बैत से हुस्ने सुलूक

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए **ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

"जो मेरे **अहले बैत** में से किसी के साथ **अच्छा** सुलूक करेगा, मैं रोज़े क़ियामत इस का **सिला** उसे **अ़ता** फ़रमाऊंगा।"

(الجامع الصغير للسيوطي الحديث ۸۸۲۱ ص۵۳۳)

सूरए मुज़्ज़म्मिल

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

یٰۤاَیُّهَا الۡمُزَّمِّلُ ۙ﴿۱﴾ قُمِ الَّیۡلَ اِلَّا قَلِیۡلًا ۙ﴿۲﴾ نِّصۡفَهٗۤ اَوِ

ऐ झुरमट मारने वाले रात में क़ियाम फ़रमा सिवा कुछ रात के आधी रात या

انۡقُصۡ مِنۡهُ قَلِیۡلًا ۙ﴿۳﴾ اَوۡ زِدۡ عَلَیۡهِ وَ رَتِّلِ الۡقُرۡاٰنَ

इस से कुछ कम करो या इस पर कुछ बढ़ाओ और क़ुरआन ख़ूब ठहर ठहर

تَرۡتِیۡلًا ؕ﴿۴﴾ اِنَّا سَنُلۡقِیۡ عَلَیۡكَ قَوۡلًا ثَقِیۡلًا ﴿۵﴾ اِنَّ نَاشِئَةَ

कर पढ़ो बेशक अ़न्क़रीब हम तुम पर एक भारी बात डालेंगे बेशक रात

الَّیۡلِ هِیَ اَشَدُّ وَطۡاً وَّ اَقۡوَمُ قِیۡلًا ؕ﴿۶﴾ اِنَّ لَكَ فِی النَّهَارِ

का उठना वोह ज़ियादा दबाव डालता है और बात ख़ूब सीधी निकलती है बेशक दिन में तो तुम को

سَبۡحًا طَوِیۡلًا ؕ﴿۷﴾ وَ اذۡكُرِ اسۡمَ رَبِّكَ وَ تَبَتَّلۡ اِلَیۡهِ تَبۡتِیۡلًا ﴿۸﴾

बहुत से काम हैं और अपने रब का नाम याद करो और सब से टूट कर उसी के हो रहो

رَبُّ الۡمَشۡرِقِ وَ الۡمَغۡرِبِ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذۡهُ وَكِیۡلًا ﴿۹﴾

वोह पूरब का रब और पश्चिम का रब उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो तुम उसी को अपना कारसाज़ बनाओ

وَ اصۡبِرۡ عَلٰی مَا یَقُوۡلُوۡنَ وَ اهۡجُرۡهُمۡ هَجۡرًا جَمِیۡلًا ﴿۱۰﴾ وَ

और काफ़िरों की बातों पर सब्र फ़रमाओ और उन्हें अच्छी त़रह़ छोड़ दो और

ذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿۱۱﴾ اِنَّ

मुझ पर छोड़ो उन झुटलाने वाले मालदारों को और उन्हें थोड़ी मोहलत दो बेशक

لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿۱۲﴾ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا

हमारे पास भारी बेड़ियां हैं और भड़कती आग और गले में फंसता खाना और दर्दनाक

اَلِيْمًا ﴿۱۳﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ

अ़ज़ाब जिस दिन थरथराएंगे ज़मीन और पहाड़ और पहाड़ हो जाएंगे रैते

الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿۱۴﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا

का टीला बहता हुवा बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक रसूल भेजे

عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾ فَعَصٰى

कि तुम पर ह़ाज़िर नाज़िर हैं जैसे हम ने फ़िरऔन की त़रफ़ रसूल भेजे तो फ़िरऔन ने

فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿۱۶﴾ فَكَيْفَ

उस रसूल का हुक्म न माना तो हम ने उसे सख़्त गरिफ़्त से पकड़ा फिर कैसे बचोगे

تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ﴿۱۷﴾ ۖ السَّمَآءُ

अगर कुफ़्र करो उस दिन से जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा आस्मान उस

مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿۱۸﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ

के सदमे से फट जाएगा अल्लाह का वा'दा हो कर रहना बेशक येह नसीह़त है

فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿۱۹﴾ ع اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ

तो जो चाहे अपने रब की त़रफ़ राह ले बेशक तुम्हारा रब जानता

تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَ نِصْفَهٗ وَ ثُلُثَهٗ وَ طَآئِفَةٌ

है कि तुम क़ियाम करते हो कभी दो तिहाई रात के क़रीब कभी आधी रात कभी तिहाई और

مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَ اللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ

एक जमाअ़त तुम्हारे साथ वाली और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है उसे मा'लूम

لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ

है कि ऐ मुसल्मानो तुम से रात का शुमार न हो सकेगा तो उस ने अपनी महर से तुम पर रुजूअ़

عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَ اٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى

फ़रमाई अब क़ुरआन में से जितना तुम पर आसान हो उतना पढ़ो उसे मा'लूम है कि अ़न्क़रीब

الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَ اٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ

कुछ तुम में बीमार होंगे और कुछ ज़मीन में सफ़र करेंगे अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करने और कुछ अल्लाह

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖۗ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

की राह में लड़ते होंगे तो जितना क़ुरआन मुयस्सर हो पढ़ो और नमाज़ क़ाइम रखो

وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَ مَا تُقَدِّمُوْا

और ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो और अपने लिये जो भलाई

لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ

आगे भेजोगे उसे अल्लाह के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे और

اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۰﴾

अल्लाह से बख़्शिश मांगो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

उ़-लमा की शान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुरनूर है : जन्नती जन्नत में उ़-लमाए किराम के मोह़ताज होंगे, इस लिये कि वोह हर जुमुआ़ को **अल्लाह** तआ़ला के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा :

تَمَنَّوْا عَلَيَّ مَا شِئْتُمْ या'नी मुझ से मांगो, जो चाहो।

वोह जन्नती उ़-लमाए किराम की त़रफ़ मु-तवज्जेह होंगे कि अपने रब्बे करीम से क्या मांगें ? वोह फ़रमाएंगे : "येह मांगो वोह मांगो।" जैसे वोह लोग दुन्या में उ़-लमाए किराम के मोह़ताज थे, जन्नत में भी उन के मोह़ताज होंगे।

("اَلْفِرْدَوْسُ بِمَاْ ثُوْرِ الخطاب" حديث ۸۸۰ ج۱ ص۲۳۰
و "اَلْجَامِعُ الصَّغِيْر" للسيوطي لحديث ۲۲۳۵ ص۱۳۵)

"बरी" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सूरए काफ़िरून के 3 फ़ज़ाइल

(1) **हज़रते** सय्यिदुना फ़रवह बिन नौफ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** ! صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ऐसी चीज़ बताएं जिसे मैं बिस्तर पर जाते वक़्त पढ़ा करूं नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ पढ़ा करो, येह शिर्क से **बराअत** (या'नी आज़ादी) है। (سُنَنُ التِّرْمِذِی حدیث ۳٤۱٤ ج ٥ ص ۲٥۷)

(2) **हज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : "ऐ फ़ुलां ! क्या तुम ने शादी कर ली है ?" तो उस ने अर्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** ! صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुदा की क़सम ! नहीं की, मेरे पास शादी करने के लिये कुछ नहीं।" फ़रमाया : "क्या तुम्हें قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ याद नहीं ?" उस ने अर्ज़ की "क्यूं नहीं।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह **तिहाई कुरआन** के बराबर है।" फिर फ़रमाया : "क्या तुम्हें اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُ याद नहीं ?" उस ने अर्ज़ की क्यूं नहीं। फ़रमाया : "येह **चौथाई कुरआन** के बराबर है।" फिर दर्याफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम्हें قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ याद नहीं ?" उस ने अर्ज़ की : "क्यूं नहीं।" फ़रमाया : "येह **चौथाई कुरआन** के बराबर है।" फिर फ़रमाया : "क्या तुझे اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ याद नहीं ?" उस ने अर्ज़ की : "क्यूं नहीं ?" फ़रमाया : "येह "**चौथाई कुरआन** है" फिर फ़रमाया : "शादी कर लो", शादी कर लो।" (سُنَنُ التِّرْمِذِی حدیث ۲۹۰٤ ج ٤ ص ٤۰۹)

(3) **हज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "اِذَا زُلْزِلَتِ निस्फ़ कुरआन के बराबर है और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ **तिहाई कुरआन** के बराबर है और قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ **चौथाई कुरआन** के बराबर है।"

(سُنَنُ التِّرمِذی الحدیث۲۹۰۳، ج۴، ص۴۰۹)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾

तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो न मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो

وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾ وَلَاۤ اَنَا

और न तुम पूजते हो जो मैं पूजता हूं और न मैं पूजूंगा

عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ

जो तुम ने पूजा और न तुम पूजोगे जो मैं

اَعْبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ٪﴿۶﴾

पूजता हूं तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन

“बिस्मिल्लाह” के सात हुरूफ़ की निस्बत से सू-रतुल इख़्लास के 7 फ़ज़ाइल

(1) **हज़रते** सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : “तुम में से कोई शख़्स रात में **तिहाई कुरआन** क्यूं नहीं पढ़ता ?” सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم ने अर्ज़ किया : कोई शख़्स **तिहाई कुरआन** कैसे पढ़ सकता है ? इर्शाद फ़रमाया : “قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ **तिहाई कुरआन** के बराबर है।”

(صَحِیح مُسلِم،حدیث:۸۱۱،ص۴۰۵)

(2) **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ातिमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : “इकठ्ठे हो जाओ क्यूं कि अभी मैं तुम्हारे सामने **तिहाई कुरआन** पढूंगा।” चुनान्चे सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم में से जिन्हें जम्अ़ होना था वोह जम्अ़ हो गए फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ी और वापस तशरीफ़ ले गए। हम एक दूसरे से कहने लगे : “शायद आस्मान से कोई ख़बर आई है जिस की वजह से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले गए हैं।” जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दोबारा तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : “मैं ने तुम्हारे सामने **तिहाई कुरआन** पढ़ने का कहा था तो सुन लो ? येही सूरत **तिहाई कुरआन** के बराबर है।”

(صَحِیح مُسلِم، حدیث: ۸۱۲، ص۴۰۵)

(3) **हज़रते** सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "एक शख़्स ने किसी को बार बार قُلۡ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ते हुए सुना तो सुब्ह़ के वक़्त रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर इस का तज़्किरा किया वोह साहिब गोया उसे कम समझ रहे थे तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है येह सूरत **तिहाई क़ुरआन** के बराबर है।"

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی الحدیث ۵۰۱۳ ج۳ ص۴۰۶)

(4) **हज़रते** सय्यिदुना मुआज़ बिन अनस जुहनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स दस मर्तबा قُلۡ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक **मह़ल** बनाएगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फिर तो हम इसे कसरत से पढ़ा करेंगे।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बहुत ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाने वाला और पाक है।"

(مُسنَد اِمام اَحمد بن حَنبل حدیث ۱۵۶۱۰ ج۵ ص۳۰۸)

(5) **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि नूर के पैकर, नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक साह़िब को एक सरिय्या का अमीर बना कर भेजा येह अपने अस्ह़ाब को नमाज़ पढ़ाते तो उस में और सूरत के साथ अख़ीर में قُلۡ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ते। सरिय्या से लौटने के बा'द लोगों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से

इस का तज़्किरा किया तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस से पूछो वोह ऐसा क्यूं करता है ?" लोगों ने उस से पूछा तो उस ने बताया कि "मैं इस को हर नमाज़ में इस लिये पढ़ता हूं कि येह रह़मान عَزَّوَجَلَّ की सिफ़त है और मैं इस के पढ़ने को पसन्द करता हूं।" येह सुन कर नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस को ख़बर दो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस से **मह़ब्बत** फ़रमाता है।"

(صَحِيحُ الْبُخارِیّ الحدیث ۷۳۷۵ ج۴ ص۵۳۱)

(6) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं **ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन**, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कहीं जा रहा था कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी शख़्स को सूरए इख़्लास पढ़ते हुए सुना तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**वाजिब** हो गई।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या चीज़ वाजिब हो गई ?" फ़रमाया : "**जन्नत**।"

(الموطأ للامام مالك الحديث ٤٩٥ ج١ ص١٩٨)

(7) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स रोज़ाना दो सो मर्तबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ेगा उस के **पचास बरस** के गुनाह मिटा दिये जाएंगे मगर येह कि उस पर क़र्ज़ हो।" (سُنَنُ التِّرمِذی حدیث ۲۹۰۷ ج۴ ص۴۱۱)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

قُلۡ ہُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰہُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمۡ یَلِدۡ ۬ۙ وَ لَمۡ

तुम फ़रमाओ वोह अल्लाह है वोह एक है अल्लाह बे नियाज़ है न उस की कोई औलाद और न

یُوۡلَدۡ ۙ﴿۳﴾ وَ لَمۡ یَکُنۡ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई

लोगों से सुवाल न करने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स मुझे इस बात की ज़मानत दे कि लोगों से कोई चीज़ न मांगे, तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि मैं इस बात की ज़मानत देता हूं। चुनान्चे वोह किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे।

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد حدیث: ۱۶۴۳، ص۱۳۴٦)

"पन्ज तन" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से सूरए फ़लक़ और सूरए नास के 5 फ़ज़ाइल

(1) **हज़रते** सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ जाबिर ! पढ़ो ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! क्या पढ़ूं ?" फ़रमाया : قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ और قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ फिर मैं ने येह दोनों (सूरतें) पढ़ीं तो फ़रमाया : "इन दोनों को पढ़ा करो क्यूं कि तुम इन की **मिस्ल** हरगिज़ न पढ़ सकोगे ।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، الحدیث:۷۹۳، ج۲، ص۸٤)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि "मैं एक सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ उ़क़्बा ! क्या मैं तुम्हें पढ़ी जाने वाली दो **बेहतरीन सूरतें** न सिखाऊं ?" फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ और قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ सिखाई ।"

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد، الحدیث:۱٤٦۲ ج۲، ص۱۰۳)

(3) **हज़रते** सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि "मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जुह़फ़ा और अब्वा (दो मक़ामात) के दरमियान से गुज़र रहा था कि हमें शदीद

आंधी और तारीकी ने घेर लिया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ के ज़रीए पनाह मांगना शुरूअ की और मुझ से फ़रमाया : "ऐ उक़्बा ! इन दोनों के ज़रीए **पनाह** मांगा करो किसी **पनाह** चाहने वाले ने इस की मिस्ल किसी चीज़ के वसीले से पनाह नहीं मांगी।"

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد، الحدیث: ۱٤٦۳، ج۲، ص۱۰۳)

(4) **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमाने के लिये बिस्तर पर तशरीफ़ लाते तो दोनों हाथों को जोड़ कर सूरए इख़्लास, फ़लक़ और नास पढ़ कर दम करते और ब-दने अक़्दस के जिस ह़िस्से तक हाथ पहुंचते वहां हाथ फैरते मगर हाथ फैरने की इब्तिदा सर और चेहरे से होती और जिस्मे अक़्दस के अगले ह़िस्से से और इसी त़रह़ तीन मर्तबा येह अ़मल करते थे।

(صَحِیحُ الْبُخارِیّ،الحدیث:۵۰۱۷، ج۳،ص٤۰۷)

(5) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़बीब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे दो आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ और **मुअ़व्वि-ज़तैन** (सूरए फ़लक़ और सूरए नास) रोज़ाना तीन तीन मर्तबा सुब्ह़ व शाम पढ़ लिया करो येह तुम्हारे लिये हर चीज़ से **किफ़ायत** करेंगी। (اَلدُّرُّالْمَنْثُور، ج۸، ص٦۸۱)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنۡ

तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूं जो सुब्ह़ का पैदा करने वाला है उस की सब मख़्लूक़ के शर से और अंधेरी

شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَ مِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی

डालने वाले के शर से जब वोह डूबे और उन औ़रतों के शर से जो गिरहों

الۡعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَ مِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

में फूंकती हैं और ह़सद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِکِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾

तुम कहो मैं उस की पनाह में आया जो सब लोगों का रब सब लोगों का बादशाह

اِلٰہِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۬ۙ الۡخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾

सब लोगों का खु़दा उस के शर से जो दिल में बुरे ख़त़रे डाले

الَّذِیۡ یُوَسۡوِسُ فِیۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾

और दुबुक रहे वोह जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालते हैं

مِنَ الۡجِنَّۃِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾

जिन्न और आदमी

"नमाज़" के चार हुरूफ़ की निस्बत से सूरए ब-क़रह की आख़िरी आयात के चार फ़ज़ाइल

(1) **शहन्शाहे मदीना**, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन व आस्मान को पैदा करने से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी फिर उस में से ब-क़रह की आख़िरी दो आयतें नाज़िल फ़रमाईं, जिस घर में **तीन रातें** इन दो आयतों को पढ़ा जाएगा शैत़ान उस घर के **क़रीब** न आएगा।

(سُنَنُ التِّرمِذِیّ الحدیث ۲۸۹۱ ج۴ ص۴۰۴)

(2) **एक** रिवायत के अल्फ़ाज़ कुछ यूं हैं कि "जिस घर में इन दो आयतों को पढ़ा जाएगा शैत़ान **तीन दिन** तक उस के **क़रीब** न आएगा।" (اَلْمُستَدرَك حدیث ۲۱۰۹ ج۲ ص۲۶۸)

(3) **नूर** के पैकर, नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने अ़र्श के नीचे के ख़ज़ाने में से ऐसी दो आयतें अ़त़ा फ़रमाईं जिन के ज़रीए़ सू-रतुल ब-क़रह का इख़्तिताम फ़रमाया, इन्हें **सीखो** और अपनी औ़रतों और बच्चों को **सिखाओ** क्यूं कि येह **नमाज़** और **क़ुरआन** और **दुआ़** हैं।" (اَلْمُستَدرَك الحدیث ۲۱۱۰ ج۲ ص۲۶۸)

(4) सुल्त़ाने दो जहान, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स़ (सूरए) ब-क़रह की आख़िरी दो आयतें रात में पढ़ेगा वोह उसे **किफ़ायत** करेंगी।" (صَحِیحُ البُخارِیّ حدیث ۵۰۰۹ ج۳ ص۴۰۵)

किफ़ायत से मुराद येह है कि येह दो आयतें उस रात के क़ियाम के क़ाइम मक़ाम हो जाएंगी या उस रात उसे शैत़ान से मह़फ़ूज़ रखेंगी या उस रात में नाज़िल होने वाली आफ़ात से बचाएंगी या उसे फ़ज़ीलत व सवाब के लिये काफ़ी होंगी। واللہ تعالٰی اعلم

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْهِ مِنْ

रसूल ईमान लाया उस पर जो उस के रब के पास से

رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ

इस पर उतरा और ईमान वाले सब ने माना अल्लाह और उस के

مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ ۫ لَا نُفَرِّقُ

फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों को येह कहते

بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۫ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا

हुए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते और अ़र्ज़ की, कि हम ने

وَ اَطَعْنَا ۗ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَیْكَ الْمَصِیْرُ ﴿۲۸۵﴾

सुना और माना तेरी मुआ़फ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है अल्लाह

يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ

किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की ताक़त भर उस का फ़ाएदा है

وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ

जो अच्छा कमाया और उस का नुक़्सान है जो बुराई कमाई ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें

اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا

या चूकें ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा कि

حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا

तूने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब हमारे और हम पर वोह

طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ٙ وَاغْفِرْ لَنَا ٙ وَارْحَمْنَا ٙ

बोझ न डाल जिस की हमें सहार न हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम

اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۸۶﴾ ع

पर मेहर कर तू हमारा मौला है तो काफ़िरों पर हमें मदद दे

म-दनी फूल

ऐ काश ! रोज़ी में कसरत की **महब्बत** के बदले हम नेकियों में ब-र-कत की ह़सरत करते और इस के लिये भी कोई विर्द करते

सूरए ह़श्र की आख़िरी आयात

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स सुब्ह़ के वक़्त तीन बार اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ कहे और सूरए ह़श्र की **आख़िरी तीन आयात** पढ़े तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये **सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते** मुक़र्रर कर देता है जो शाम तक उस के लिये **दुआ़ए रह़मत** करते हैं और अगर उस दिन मरे तो **शहीद** होगा और शाम को पढ़े तो सुब्ह़ तक येही **फ़ज़ीलत** है।"

(سُنَنُ التِّرْمِذِی حدیث ۲۹۳۱ ج۴ ص۴۲۳)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ

वोही अल्लाह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं हर निहां व इ़यां का जानने वाला

الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۲۲﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ

वोही है बड़ा मेहरबान रह़मत वाला वोही है अल्लाह जिस के सिवा

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ

कोई मा'बूद नहीं बादशाह निहायत पाक सलामती देने वाला

الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا

अमान बख़्शने वाला हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला इ़ज़्ज़त वाला अ़-ज़मत वाला तकब्बुर वाला अल्लाह को पाकी

يُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ

है उन के शिर्क से वोही है अल्लाह बनाने वाला पैदा करने वाला हर एक को सूरत

الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ

देने वाला उसी के हैं सब अच्छे नाम उस की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों और

وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۴﴾ ع

ज़मीन में है और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है

“मदीना” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से आ-यतुल कुरसी के 5 फ़ज़ाइल

(1) **ह़दीस** शरीफ़ में है कि येह आयत कुरआने मजीद की आयतों में बहुत ही **अ़-ज़मत वाली** आयत है। (اَلدُّرُّالْمَنْثُوْر ج٢ ص٦)

(2) **ह़ज़रते** सय्यिदुना उबय्य बिन का’ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “ऐ अबू मुन्ज़िर ! क्या तुम्हें मा’लूम है कि कुरआने पाक की जो आयतें तुम्हें याद हैं इन में कौन सी आयत **अ़ज़ीम** है ?” मैं ने अ़र्ज़ किया : “ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ ”

फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया : ''ऐ अबू मुन्ज़िर ! तुम्हें इ़ल्म मुबारक हो ।''

(صَحِیح مُسلِم حدیث ۸۱۰ ص ۴۰۵)

(3) एक रिवायत में है कि **सू-रतुल ब-क़रह** में एक आयत है जो कुरआन की तमाम आयतों की **सरदार** है, वोह जिस घर में पढ़ी जाए उस घर से शैत़ान भाग जाता है वोह **आ-यतुल कुरसी** है ।

(اَلْمُستَدرَک حدیث ۳۰۸۰ ج۲ ص۶۴۷)

(4) **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰہ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द आ-यतुल कुरसी पढ़े उसे **जन्नत** में दाख़िल होने से कोई चीज़ नहीं रोक सकती वोह मरते ही **जन्नत** में चला जाएगा और जो कोई रात को सोते वक़्त इसे पढ़ेगा वोह, उस के पड़ोसी और आस पास के दूसरे घर वाले शैत़ान और चोर से **मह़फ़ूज़** रहेंगे ।

(شُعَبُ الْاِیْمَان حدیث۲۳۹۵ ج۲ ص۴۵۸)

(5) जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द आ-यतुल कुरसी पढ़ेगा उस को ह़स्बे ज़ैल **ब-र-कतें** नसीब होंगी : اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

﴾1﴿ वोह मरने के बा'द **जन्नत** में जाएगा ।

﴾2﴿ वोह शैत़ान और जिन्न की तमाम शरारतों से **मह़फ़ूज़** रहेगा ।

﴾3﴿ अगर मोह़ताज होगा तो चन्द दिनों में उस की मोह़ताजी और ग़रीबी **दूर** हो जाएगी ।

﴾4﴿ जो शख़्स सुब्ह़ व शाम और बिस्तर पर लैटते वक़्त आ-यतुल कुरसी और इस के बा'द की दो आयतें خٰلِدُوْن तक पढ़ा करेगा वोह

चोरी, ग़र्क़ आबी और जलने से **महफ़ूज़** रहेगा।

﴾5﴿ अगर सारे मकान में किसी ऊंची जगह पर लिख कर उस का कत्बा आवेज़ां कर दिया जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی उस घर में कभी फ़ाक़ा न होगा। बल्कि रोज़ी में **ब-र-कत** और **इज़ाफ़ा** होगा और उस मकान में कभी चोर न आ सकेगा। (जन्नती ज़ेवर, स. 589)

आ-यतुल कुरसी

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُۚ

अल्लाह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह आप ज़िन्दा

لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا

और औरों का क़ाइम रखने वाला उसे न ऊंघ आए न नींद उसी का है जो कुछ आस्मानों

فِی الْاَرْضِؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖؕ

में है और जो कुछ ज़मीन में वोह कौन है जो उस के यहां सिफ़ारिश करे

یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْۚ وَ لَا یُحِیْطُوْنَ

बे उस के हुक्म के जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे

بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ

और वोह नहीं पाते उस के इल्म में से मगर जितना वोह चाहे उस की कुरसी में समाए

وَ الْاَرْضَۚ وَ لَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَاۚ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۝

हुए हैं आस्मान और ज़मीन और उसे भारी नहीं उन की निगहबानी और वोही बुलन्द बड़ाई वाला

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ैज़ाने ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : जो मेरी **महब्बत** और मेरी त़रफ़ शौक की वजह से मुझ पर हर दिन और हर रात को **तीन तीन** बार दुरूद शरीफ़ पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि वोह इस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे । (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر ج۱۸ ص۳۶۱ حدیث۹۲۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईमाने मुफ़स्सल

اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ وَمَلٰٓئِکَتِہٖ وَکُتُبِہٖ وَرُسُلِہٖ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ
وَالْقَدْرِ خَیْرِہٖ وَشَرِّہٖ مِنَ اللّٰہِ تَعَالٰی وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

तरजमा : मैं ईमान लाया **अल्लाह** पर और उस के फ़िरिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर और इस पर कि अच्छी और बुरी तक़्दीर **अल्लाह** की त़रफ़ से है और मौत के बा'द उठाए जाने पर ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

ईमाने मुज्मल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ اِقْرَارٌۢ بِاللِّسَانِ وَتَصْدِيْقٌۢ بِالْقَلْبِ

तरजमा : मैं ईमान लाया **अल्लाह** पर जैसा कि वोह अपने नामों और अपनी सिफ़तों के साथ है और मैं ने उस के तमाम अह्काम क़बूल किये ज़बान से इक़रार करते हुए और दिल से तस्दीक़ करते हुए।

अव्वल कलिमा तय्यिब

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

तरजमा : अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं **मुहम्मद** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं।

दूसरा कलिमा शहादत

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

तरजमा : मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि बेशक **मुहम्मद** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के बन्दे और रसूल हैं।

तीसरा कलिमा तम्जीद

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

तरजमा : अल्लाह पाक है और सब ख़ूबियां **अल्लाह** के लिये हैं और **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** सब से बड़ा है गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ **अल्लाह** ही की तरफ़ से है जो सब से बुलन्द अ-ज़मत वाला है।

चौथा कलिमा तौहीद

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ط ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ط بِيَدِهِ الْخَيْرُ ط وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط

तरजमा : अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ कभी मौत नहीं आएगी। बड़े जलाल और बुज़ुर्गी वाला है। उस के हाथ में भलाई है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

पांचवां कलिमा इस्तिग़फ़ार

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ أَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا أَوْ خَطَأً سِرًّا أَوْ عَلَانِيَةً وَّأَتُوْبُ إِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ أَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ لَا أَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

तरजमा : मैं **अल्लाह** से मुआ़फ़ी मांगता हूं जो मेरा परवर्द गार है हर गुनाह से जो मैं ने जान बूझ कर किया या भूल कर, छुप कर किया या ज़ाहिर हो कर और मैं उस की बारगाह में तौबा करता हूं उस गुनाह से जिस को मैं जानता हूं और उस गुनाह से भी जिस को मैं नहीं जानता, (ऐ **अल्लाह**) बेशक तू ग़ैबों का जानने वाला और ऐ़बों का छुपाने वाला और गुनाहों का बख़्शने वाला है और गुनाह से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की क़ुव्वत **अल्लाह** ही की त़रफ़ से है जो सब से बुलन्द अ़-ज़मत वाला है।

छटा कलिमा रद्दे कुफ़्र

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّأَنَا أَعْلَمُ بِهٖ وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا أَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रह़मतें भेजता है।

وَتَبَرَّأْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ وَالْغِيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِيْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِيْ كُلِّهَا وَاَسْلَمْتُ وَاَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से कि मैं किसी शै को तेरा शरीक बनाऊं जान बूझ कर और बख़्शिश मांगता हूं तुझ से उस (शिर्क) की जिस को मैं नहीं जानता और मैं ने उस से तौबा की और मैं बेज़ार हुवा कुफ़्र से और शिर्क से और झूट से और ग़ीबत से और बिदअ़त से और चुग़ली से और बे ह़याइयों से और बोहतान से और तमाम गुनाहों से और मैं इस्लाम लाया और मैं कहता हूं **अल्लाह** के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं **मुह़म्मद** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं।

"मग़्फ़िरत" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से इस्तिग़्फ़ार करने के 5 फ़ज़ाइल

(1) दिलों के ज़ंग की सफ़ाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, साहि़बे क़ुरआने मुबीन, **मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन**, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है **:** बेशक लौहे की त़रह़ दिलों को भी ज़ंग लग जाता है और इस की जिला (या'नी सफ़ाई) **इस्तिग़्फ़ार** करना है।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ١٠ ص ٣٤٦ حديث ١٧٥٧٥)

(2) परेशानियों और तंगियों से नजात

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि महबूबे रब्बे जुल जलाल, साहिबे जूदो नवाल, शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, सुल्ताने शीरीं मक़ाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिस ने इस्तिग़फ़ार को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की **हर परेशानी** दूर फ़रमाएगा और **हर तंगी** से उसे राहत अ़ता फ़रमाएगा और उसे ऐसी जगह से **रिज़्क़** अ़ता फ़रमाएगा जहां से उसे गुमान भी न होगा । (سُنَن ابن ماجه ج٤ ص٢٥٧ حديث٣٨١٩)

(3) ख़ुश करने वाला आ'माल नामा

हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुसर्रत निशान है : जो इस बात को पसन्द करता है कि उस का नामए आ'माल उसे ख़ुश करे तो उसे चाहिये कि उस में **इस्तिग़फ़ार** का इज़ाफ़ा करे ।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج١٠ ص٣٤٧ حديث١٧٥٧٩)

(4) ख़ुश ख़बरी !

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह् और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

को फ़रमाते हुए सुना कि **ख़ुश ख़बरी** है उस के लिये जो अपने नामए आ'माल में **इस्तिग़फ़ार** को कसरत से पाए।

(سُنَن ابن ماجه ج٤ ص٢٥٧حديث٣٨١٨)

(5) सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार पढ़ने वाले के लिये जन्नत की बिशारत

ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि **ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन**, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह **सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार** है :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

तरजमा : "ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ तू मेरा रब है तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तूने मुझे पैदा किया मैं तेरा बन्दा हूं और ब क़द्रे त़ाक़त तेरे अ़हदो पैमान पर क़ाइम हूं, मैं अपने किये के शर से तेरी पनाह मांगता हूं, तेरी ने'मत का जो मुझ पर है इक़रार करता हूं और अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करता हूं मुझे बख़्श दे कि तेरे सिवा कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता।"

जिस ने इसे दिन के वक़्त ईमान व यक़ीन के साथ पढ़ा फिर उसी दिन **शाम** होने से पहले उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह **जन्नती** है और जिस ने रात के वक़्त इसे ईमान व यक़ीन के साथ पढ़ा फिर सुब्ह होने से पहले उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह जन्नती है।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيّ ج٤ ص١٩٠ حديث٦٣٠٦)

" वाहिद " के चार हुरूफ़ की निस्बत से कलिमए तय्यिबा के 4 फ़ज़ाइल

(1) ख़ुश नसीब कौन

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है उन्हों ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ियामत के दिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से बहरा मन्द होने वाले **ख़ुश नसीब** लोग कौन होंगे ? फ़रमाया : ऐ अबू हुरैरा ! मेरा गुमान येही था कि तुम से पहले मुझ से येह बात कोई न पूछेगा क्यूं कि मैं हदीस सुनने के मुआ-मले में तुम्हारी हिर्स को जानता हूं, क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त पाने वाला **ख़ुश नसीब** वोह होगा जो सिद्क़ दिल से " لَا اِلٰهَ اِلَّا الله " कहेगा। (صَحِيحُ الْبُخَارِيّ ج١ ص٥٣ حديث٩٩)

(2) अफ़्ज़ल ज़िक्र व दुआ

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : सब से अफ़्ज़ल ज़िक्र " لَا اِلٰهَ اِلَّا الله " है और सब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे।

से अफ़्ज़ल दुआ "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" है। (سُنَنُ ابنِ ماجه ج٤ ص ٢٤٨ حديث ٣٨٠٠)

(3) आस्मानों के दरवाज़े खुल जाते हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहूरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस बन्दे ने इख़्लास के साथ "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" कहा तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, यहां तक कि वोह अ़र्श तक पहुंच जाता है जब कि कबीरा गुनाहों से बचता रहे।"

(سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج٥ ص ٣٤٠ حديث ٣٦٠١)

(4) तज्दीदे ईमान

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने ईमान की तज्दीद कर लिया करो। अ़र्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम अपने ईमान की तज्दीद कैसे किया करें ? फ़रमाया : "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" कसरत से पढ़ा करो।

(مُسْنَدُ لِلْاِمَام اَحْمَد بن حَنْبَل ج٣ ص ٢٨١ حديث ٨٧١٨)

"जन्नत" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल

(1) गुनाह मिटा दिये जाते हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : जो **सो मर्तबा** "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" पढ़ता है उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों। (سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج٥ ص٢٨٧ حدیث٣٤٧٧)

(2) सोने का पहाड़ स-दक़ा करने का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिस के लिये रात में इ़बादत करना दुश्वार हो या वोह अपना माल ख़र्च करने में बुख़्ल से काम लेता हो या दुश्मन से जिहाद करने से डरता हो तो वोह "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" कसरत से पढ़ा करे क्यूं कि ऐसा करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अपनी राह में **सोने का पहाड़** स-दक़ा करने से ज़ियादा पसन्द है।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج١٠ ص١١٢ حدیث١٦٨٧٦)

(3) जन्नत में खजूर का दरख़्त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" पढ़ता है उस के लिये **जन्नत में खजूर** का एक दरख़्त लगा दिया जाता है।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج١٠ ص١١١ حدیث١٦٨٧٥)

"आक़ा" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से "لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ" पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल

(1) जन्नत का दरवाज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें **जन्नत** के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े के बारे में न बताऊं ? अ़र्ज़ की गई : वोह क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : "لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ"

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج۱۰ ص۱۱۸ حدیث ۱۶۸۹۷)

(2) निनानवे बीमारियों के लिये दवा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने "لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ" कहा तो येह (उस के लिये) निनानवे बीमारियों की दवा है उन में सब से हलकी बीमारी रन्जो अलम है । (اَلتَّرْغِیب وَالتَّرْهِیب ج۲ ص۲۸۵ حدیث ۲۴۴۸)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

(3) ने'मत की हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा

हज़रते सय्यिदुना उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कोई ने'मत अता फ़रमाई फिर वोह बन्दा उस ने'मत को बाक़ी रखना चाहता हो तो उसे चाहिये कि "لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ" की कसरत करे। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِیْر ج١٧ ص٣١١ حدیث٨٥٩)

बेदार होते वक़्त के 3 अवराद

(1) **हज़रते सय्यिदुना उबादा** बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने नींद से बेदार हो कर कहा :

لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

(तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी की ख़ूबियां और वोह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ूबियों वाला है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और गुनाह से बचने की कुव्वत और नेकी करने की ताक़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की तरफ़ से हासिल होती है।) फिर "اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ" कहा या कोई दुआ मांगी तो उसे क़बूल कर लिया जाएगा, फिर अगर वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी तो उस की नमाज़ क़बूल कर ली जाएगी। (صَحِیحُ البُخارِیّ ج١ ص٣٩١حدیث١١٥٤)

(2) **हज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने नींद से बेदार होते वक़्त

بِسْمِ اللّٰهِ،سُبْحَانَ اللّٰهِ،اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَكَفَرْتُ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ

(तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, **अल्लाह** पाक है, मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया और बुत और शैतान से मुन्किर हुवा।) दस दस मर्तबा पढ़ा तो हर उस गुनाह से बचा लिया जाएगा जिस का उसे ख़ौफ़ हो और कोई गुनाह उस तक न पहुंच सकेगा। (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج١٠ ص١٧٤حدیث١٧٠٦٠)

(3) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَحْیَانَا بَعْدَ مَاۤ اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ ○

तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** तआ़ला के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द ह़यात (बेदारी) अ़ता फ़रमाई और हमें उसी की तरफ़ लौटना है। (صَحِیحُ البُخارِی ج٤ ص١٩٢حدیث٦٣١٢)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा।

"या खुदा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से सुब्ह व शाम के 5 अज़्कार

(1) **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक शख़्स बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और अर्ज़ किया : **या रसूलल्लाह**! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने ऐसा बिच्छू कभी नहीं देखा जिस ने मुझे गुज़श्ता रात काटा। सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम ने शाम के वक़्त

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

(तरजमा : मैं **अल्लाह** तआला के पूरे और कामिल कलिमात के साथ मख़्लूक़ के शर से पनाह लेता हूं (यहां मख़्लूक़ से मुराद वोह मख़्लूक़ है जिस से शर हो सके)) क्यूं न पढ़ लिया कि बिच्छू तुम्हें कोई नुक़्सान न पहुंचाता। (صَحِيْحُ ابْنِ حِبَّان ج۲ ص ۱۸۰ حديث۱۰۱۶)

(2) **हज़रते** सय्यिदुना अबान बिन उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स सुब्ह व शाम तीन तीन मर्तबा येह पढ़ेगा, तो उसे कोई चीज़ नुक़्सान न पहुंचा सकेगी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

(तरजमा : **अल्लाह** के नाम से जिस के नाम की ब-र-कत से ज़मीन व आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वोही सुनता जानता है।) (سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج٥ ص٢٥١حدیث٣٣٩٩)

(3) **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने सुब्ह और शाम सो सो मर्तबा ''سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ'' पढ़ा क़ियामत के दिन उस से अफ़्ज़ल अ़मल ले कर आने वाला कोई न होगा मगर वोह जो उस की मिस्ल कहे या उस से ज़ियादा पढ़े। (صَحِیح مُسلِم ص١٤٤٥ حدیث ٢٦٩٢)

(4) **हज़रते** सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जिस ने सुब्ह व शाम सात सात मर्तबा पढ़ा :

حَسْبِیَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ

(तरजमा : मुझे **अल्लाह** काफ़ी है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है।) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तमाम परेशानियों में किफ़ायत करेगा।

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج٤ ص٤١٦حدیث٥٠٨١)

(5) **हज़रते** सय्यिदुना **मुनैज़िर** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم जो शख़्स़ मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : जो सुब्ह़ के वक़्त येह पढ़े :

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا

(तरजमा : मैं **अल्लाह** के रब होने और इस्लाम के दीन होने और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हूं।) तो मैं उसे अपने हाथ से पकड़ कर जन्नत में दाख़िल करने की ज़मानत देता हूं।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج١٠ ص١٥٧ حديث ١٧٠٠٥)

"अह़द" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से कलिमए तौह़ीद के 3 फ़ज़ाइल

(1) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़्बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

(तरजमा : **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।) कहा तो इस कलिमे से कोई अ़मल आगे न बढ़ सकेगा और उस के साथ कोई गुनाह बाक़ी न रहेगा।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج١٠ ص٩٤ حديث ١٦٨٢٤)

(2) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ब वासित़ा वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, **बीबी आमिना** के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेहतरीन दुआ़ यौमे अ़-रफ़ा की दुआ़ है और सब से बेहतर **कलिमा** जो मैं ने और मुझ से पहले के अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام ने कहा (वोह येह है) :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْكَ لَہٗ لَہُ الْمُلْكُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

(جامع ترمذی ج۵ ص۳۳۹ حدیث۳۵۹۶)

(3) **ह़ज़रते** सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने चांदी या दूध स-दक़ा किया या अन्धे को रास्ता बताया तो येह एक ग़ुलाम आज़ाद करने की त़रह़ है और जिस ने

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْكَ لَہٗ لَہُ الْمُلْكُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

कहा तो येह भी एक ग़ुलाम आज़ाद करने की त़रह़ है।

(اَلْمُسْنَدُ لِلْاِمَام اَحْمَدبن حنبل ج۶ص۴۰۸ حدیث۱۸۵۴۱)

ईमान पर ख़ातिमा के चार अवराद

एक शख़्स बारगाहे **आ'ला हज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه में ह़ाज़िर हो कर ईमान पर ख़ातिमा बिलख़ैर के लिये दुआ का त़ालिब हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस के लिये दुआ फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : ﴾1﴿ (रोज़ाना) 41 बार सुब्ह़ को يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ (ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले ! ऐ हमेशा क़ाइम रहने वाले ! कोई मा'बूद नहीं मगर तू ।) अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ नीज़ ﴾2﴿ सोते वक़्त अपने सब अवराद के बा'द **सूरए काफ़िरून** रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये इस के बा'द कलाम वग़ैरा न कीजिये हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम करने के बा'द फिर **सूरए काफ़िरून** तिलावत कर लें कि ख़ातिमा इसी पर हो اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा ईमान पर होगा। और ﴾3﴿ तीन बार सुब्ह़ और तीन बार शाम इस दुआ का विर्द रखें : اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَّعْلَمُهٗ وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُهٗ (''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम तेरी पनाह मांगते हैं इस से कि जान कर हम तेरे साथ किसी चीज़ को शरीक करें और हम उस से इस्तिग़्फ़ार करते हैं जिस को नहीं जानते।'') (الملفوظ حصه ٢ ص٢٣٤ حامد اینڈ کمپنی مرکز الاولیاء لاهور)

﴾4﴿ بِسْمِ اللهِ عَلٰی دِيْنِىْ بِسْمِ اللهِ عَلٰی نَفْسِىْ وَوُلْدِىْ وَاَهْلِىْ وَمَالِىْ (**अल्लाह** तआला के नाम की ब-र-कत से मेरे दीन, जान, औलाद और अहलो माल की ह़िफ़ाज़त हो।) **सुब्ह़ व शाम तीन तीन** बार पढ़िये, दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब मह़फ़ूज़ रहें। (श-ज-रए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या, स. 12, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची) (ग़ुरूबे आफ़्ताब से सुब्हे सादिक़ तक रात और आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक **सुब्ह़** है)

गुनाहों की बख़्शिश

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

जो शख़्स येह विर्द पढ़ता है उस के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों।

(اَلْمُسْنَدُ لِلْاِمام اَحْمَدبن حنبل ج۲ ص۶۶۲ حدیث۶۹۷۷)

चार करोड़ नेकियां कमाएं

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

اِلٰهًا وَّاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا لَّمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً

وَّلَا وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ٥

हज़रते तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि जो शख़्स येह कलिमात दस मर्तबा कहे, ऐसे आदमी के लिये चार करोड़ नेकियां लिखी जाती हैं। (سُنَنُ التِّرمِذی ج۵ ص۲۸۹ حدیث۳۴۸۴)

शैतान से बचने का अमल

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ

الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह् और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने येह कलिमात दिन में सो बार कहे तो उस का येह अमल दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर होगा और उस के नामए आ'माल में सो नेकियां लिखी जाएंगी और उस के सो गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे और येह कलिमात उस दिन शाम तक शैतान से उस की हिफ़ाज़त करेंगे और कोई शख़्स उस से बेहतर अमल ले कर नहीं आएगा मगर वोह जिस ने उस से ज़ियादा येह अमल किया।" (صَحِیحُ البُخارِیّ حدیث۳۲۹۳ ج۲ ص۴۰۲)

ग़ीबत से बचने का म-दनी नुस्ख़ा

हज़रते अ़ल्लामा मजदुद्दीन फ़ीरोज़आबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मन्क़ूल है: जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो तो कहो :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَصَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को ग़ीबत से बाज़ रखेगा और जब मजलिस से उठो तो कहो :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَصَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

तो वोह फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी ग़ीबत करने से बाज़ रखेगा।

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص۲۷۸)

पांच म-दनी फूल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इर्शादे सआ़दत बुन्याद है: पांच आ़दतें ऐसी हैं कि कोई इन्हें इख़्तियार कर ले तो दुन्या व आख़िरत में सआ़दत मन्द हो जाए। ﴾1﴿ वक़्तन फ़ वक़्तन "لَآ اِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ" صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहता रहे ﴾2﴿ जब किसी मुसीबत में मुब्तला हो (म-सलन बीमार हो या नुक़्सान हो जाए या परेशानी की ख़बर सुने) तो "اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ" और "لَاحَوْلَ وَ لَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ" पढ़े ﴾3﴿ जब भी ने'मत मिले तो शुक्राने में "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ" कहे ﴾4﴿ जब किसी (जाइज़) काम का आग़ाज़ करे तो "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ" पढ़े और ﴾5﴿ जब गुनाह कर बैठे तो यूं कहे, "اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الْعَظِیْمَ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ" (या'नी मैं अ़-ज़मत वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़फ़िरत त़लब करते हुए उस की त़रफ़ तौबा करता हूं।) (اَلْمُنَبِّھَات ص۵۷)

जादू और बलाओं से ह़िफ़ाज़त के लिये शश क़ुफ़्ल

इन छ दुआ़ओं को "शश क़ुफ़्ल" कहते हैं जो शख़्स रात को हमेशा **शश क़ुफ़्ल** पढ़ता रहे या लिख कर अपने पास रखे वोह हर ख़ौफ़ व ख़त़रे से और जादू से और हर क़िस्म की बलाओं से اِنْ شَآءَ اللّٰہ تَعَالٰی मह़फ़ूज़ रहेगा। (जन्नती ज़ेवर, स. 582)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग्फार करते रहेंगे ।

कुफ़्ले अव्वल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

कुफ़्ले दुवुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الْخَلَّاقِ الْعَلِيْمِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَّهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ

कुफ़्ले सिवुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَّهُوَ الْعَلِيْمُ الْبَصِيْرُ

कुफ़्ले चहारुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَّهُوَ الْغَنِىُّ الْقَدِيْرُ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है।

कुफ़्ले पन्जुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَّهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ

कुफ़्ले शशुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَّهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ الْحَكِيْمُ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ

नमाज़ के बा'द पढ़े जाने वाले अवराद

नमाज़ के बा'द जो अज़्कारे त़वीला (त़वील अवराद) अह़ादीसे मुबा-रका में वारिद हैं, वोह ज़ोहर व मग़्रिब व इ़शा में सुन्नतों के बा'द पढ़े जाएं, क़ब्ले सुन्नत मुख़्तसर दुआ़ पर क़नाअ़त चाहिये, वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जाएगा।

(رَدُّالْمُحتار، ج۲، ص۳۰۰، بہارِ شریعت حصّہ ۳ ص۱۰۷)

अह़ादीसे मुबा-रका में किसी दुआ़ की निस्बत जो ता'दाद वारिद है उस से कम ज़ियादा न करे कि जो फ़ज़ाइल उन अज़्कार के लिये हैं वोह उसी अ़दद के साथ मख़्सूस हैं उन में कम ज़ियादा करने की मिसाल येह है कि कोई कुफ़्ल (ताला) किसी ख़ास क़िस्म की कुन्जी से खुलता है अब अगर कुन्जी में दन्दाने कम या ज़ाइद कर दें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज्र लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है।

तो उस से न खुलेगा, अलबत्ता अगर शुमार में शक वाक़ेअ़ हो तो ज़ियादा कर सकता है और येह ज़ियादत (बढ़ाना) नहीं बल्कि इत्माम (मुकम्मल करना) है। (ऐज़न, स. 302)

पन्ज वक़्ता नमाज़ों के सुनन व नवाफ़िल से फ़राग़त के बा'द ज़ैल के अवराद पढ़ लीजिये सहूलत के लिये नम्बर ज़रूर दिये हैं मगर इन में तरतीब शर्त़ नहीं है। हर विर्द के अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ना सोने पे सुहागा है।

﴾1﴿ "आ-यतुल कुरसी" एक एक बार पढ़ने वाला मरते ही दाख़िले जन्नत हो। (مشكاة المصابيح ج١ ص١٩٧ حديث ٩٧٤)

﴾2﴿ اَللّٰهُمَّ اَعِنِّىْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ ـ (1)

(سنن ابى داؤد ج٢ ص١٢٣ حديث ١٥٢٢)

﴾3﴿ (2) اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ ـ

(तीन तीन बार) उस के गुनाह मुआफ़ हों अगर्चे वोह मैदाने जिहाद से भागा हुवा हो। (سنن الترمذى، ج٥ ص٣٣٦ حديث ٣٥٨٨)

﴾4﴿ तस्बीहे़ फ़ाति़मा رضى الله تعالى عنها : سُبْحٰنَ الله तेंतीस बार, اَلْحَمْدُ لِلّٰه तेंतीस बार, اَللّٰهُ اَكْبَر तेंतीस बार येह 99 हुए, आख़िर में

---

(1) ऐ **अल्लाह** عزوجل ! तू अपने ज़िक्र, अपने शुक्र और अपनी अच्छी इ़बादत करने पर मेरी मदद फ़रमा।

(2) तरजमा : मैं **अल्लाह** عزوجل से मुआफ़ी मांगता (मांगती) हूं **जिस के सिवा कोई** मा'बूद नहीं वोह ज़िन्दा है क़ाइम रखने वाला है और उस की बारगाह में तौबा करता (करती) हूं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ؕ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ؕ(1)

एक बार पढ़ कर (100 का अ़दद पूरा कर ले) इस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों।

﴾5﴿ हर नमाज़ के बा'द पेशानी के अगले हिस्से पर हाथ रख कर पढ़े :

(2) بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ؕ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّي الْهَمَّ وَالْحُزْنَ۔

(पढ़ने के बा'द हाथ खींच कर पेशानी तक लाए) तो हर ग़म व परेशानी से बचे। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद **रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने मज़्कूरा दुआ़ के आख़िर में मज़ीद इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा फ़रमाया है, **وَعَنْ اَهْلِ السُّنَّة** या'नी और अहले सुन्नत से।

﴾6﴿ अ़स्र व फ़ज्र के बा'द बिग़ैर पाउं बदले, बिग़ैर कलाम किये

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِيْ وَ يُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔(3)

दस[10] दस[10] बार पढ़िये। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 107)

﴾7﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये

---

(1) या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह यक्ता व यगाना है उस का कोई शरीक नहीं। उसी का मुल्क है। उसी की ह़म्द है। वोह हर शै पर क़ादिर है। (2) **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह रह़मान व रह़ीम है। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) मुझ से ग़म व मलाल दूर फ़रमा। (3) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह तन्हा है, उस का कोई शरीक नहीं, उस के लिये मुल्क व ह़म्द है, उसी के हाथ में ख़ैर है, वोह ज़िन्दा करता है और मौत देता है और वोह हर शै पर क़ादिर है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रह़मतें भेजता है।

रह़मत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने नमाज़ के बा'द येह कहा, "سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَ بِحَمْدِهٖ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ۔"(1) तो वोह मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर उठेगा।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج١٠ ص١٢٩ حديث ١٦٩٢٨)

《8》 ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस10 मर्तबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) पढ़ेगा **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये अपनी रिज़ा और मग़्फ़िरत लाज़िम फ़रमा देगा।" (تَفسِير دُرِّمَنثُور ج٨ ص٦٧٨)

《9》 ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है रसूले अकरम, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾ (2)

(پ٢٣ الصّٰفّٰت ١٨٠ تا ١٨٢)

तीन बार पढ़ेगा गोया उस ने अज्र का बहुत बड़ा पैमाना भर लिया।

(تَفسِير دُرِّمَنثُور للسيوطی ج٧ ص١٤١)

(1) पाक है अ़-ज़मत वाला रब और उसी की ता'रीफ़ है और उसी की अ़ता से नेकी की तौफ़ीक़ और गुनाह से बचने की क़ुव्वत (मिलती) है। (2) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** पाकी है तुम्हारे रब को इ़ज़्ज़त वाले रब को उन की बातों से और सलाम है पैग़म्बरों पर और सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो सारे जहान का रब है।

मिनटों में चार ख़त्मे कुरआने पाक का सवाब

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है मदीने के ताजदार, सुल्ताने दो जहान, रहमते आ-लमियान, सरवरे ज़ी शान, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हक़ीक़त निशान है : जो बा'दे फ़ज्र बारह मर्तबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) पढ़ेगा गोया वोह चार बार (पूरा) कुरआन पढ़ेगा और उस दिन उस का येह अमल अहले ज़मीन से अफ़्ज़ल है जब कि वोह तक़्वा का पाबन्द रहे ।

(شُعَبُ الْاِیْمَان لِلْبَیْہَقِیّ ج۲ ص۵۰۱ حدیث۲۵۲۸)

शैतान से महफ़ूज़ रहने का अमल

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जिस ने नमाज़े फ़ज्र अदा की और बात किये बिग़ैर قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) को दस मर्तबा पढ़ा तो उस दिन में उसे कोई गुनाह न पहुंचेगा और वोह शैतान से बचाया जाएगा । (تَفسِیر دُرِّمَنثُور ج۸ص۶۷۸)

(नमाज़ के बा'द पढ़ने के मज़ीद अवराद मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत हिस्सा 3 सफ़हा 107 ता 110 पर, अल वज़ी-फ़तुल करीमा और श-ज-रए क़ादिरिय्या में मुला-हज़ा फ़रमा लीजिये ।)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गुस्सा रोकने की फ़ज़ीलत

हदीसे पाक में है : जो शख़्स अपने **गुस्से** को रोकेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के रोज़ उस से अपना अ़ज़ाब रोक देगा । (شعب الایمان ج۶ ص۳۱۵ حدیث ۸۳۱۱)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ैज़ाने दुरूद

"बिस्मिल्लाह" के सात हुरूफ़ की निस्बत से दुरूद शरीफ़ के 7 फ़ज़ाइल

(1) **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह परवर है कि जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **दस रह्मतें** नाज़िल फ़रमाएगा। (صَحِیح مُسلِم ص۲۱٦حدیث ٤٠٨)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) **हज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़मतो शराफ़त, मह्बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह्सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह्मत बुन्याद है : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **दस रह्मतें** नाज़िल फ़रमाएगा उस के **दस गुनाह मिटा** देगा।

(اَلْاِحْسَان بترتیبِ صَحِیح ابنِ حَبّان ج۲ ص۱۳۰ حدیث۹۰۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी ।

(3) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू बरदा बिन नियार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : मेरी उम्मत में से जिस ने सिदक़े दिल से एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **दस रह़मतें** नाज़िल फ़रमाएगा और उस के लिये **दस नेकियां** लिखेगा और उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और उस के **दस गुनाह** मिटा देगा । (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج۲۲ ص۱۹۵ حديث۵۱۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा कमाल है : हर **जुमुआ** के दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो बेशक मेरी उम्मत का दुरूद हर जुमुआ के दिन मुझ पर पेश किया जाता है, (क़ियामत के दिन) लोगों में से मेरे ज़ियादा क़रीब वोही शख़्स होगा जिस ने (दुन्या में) मुझ पर **ज़ियादा दुरूद** पढ़ा होगा ।

(اَلسُّنَنُ الْكُبْرٰى ج۳ ص۳۵۳ حديث۵۹۹۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी

है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : बेशक क़ियामत के दिन मेरे सब से **ज़ियादा क़रीब** वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूद पढ़ा होगा ।

(اَلْاِحْسَان بترتیبِ صَحِیح ابنِ حَبَّان ج۲ ص۱۳۳ حدیث ۹۰۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6) **शहन्शाहे मदीना**, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आफ़िय्यत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक तुम में से बरोज़े **क़ियामत** उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से **जल्द नजात पाने वाला** वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर **कसरत से दुरूद** पढ़ा होगा । (فِردَوسُ الْاَخبَار ج۲ ص۴۷۱ حدیث ۸۲۱۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(7) **हुज़ूरे** पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर **दुरूदे पाक** पढ़ना तुम्हारे **गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत** है ।" (اَلْجَامِعُ الصَّغِیر ص۸۷ حدیث:۱۴۰۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

"اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاسَيِّدَ الْمُرْسَلِيْنَ" के तीस हुरूफ़ की निस्बत से दुरूद शरीफ़ के 30 म-दनी फूल

《1》 **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म की ता'मील होती है।

《2》 एक मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले पर दस रह़मतें नाज़िल होती हैं।

《3》 उस के दस द-रजात बुलन्द होते हैं।

《4》 उस के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं।

《5》 उस के दस गुनाह मिटाए जाते हैं।

《6》 दुआ़ से पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ना दुआ़ की क़बूलिय्यत का बाइ़स है।

《7》 दुरूद शरीफ़ पढ़ना नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त का सबब है।

《8》 दुरूद शरीफ़ पढ़ना गुनाहों की बख़्शिश का बाइ़स है।

《9》 दुरूद शरीफ़ के ज़रीए़ **अल्लाह** तआ़ला बन्दे के ग़मों को दूर करता है।

《10》 दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बाइ़स बन्दा क़ियामत के दिन रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कु़र्ब ह़ासिल करेगा।

《11》 दुरूद शरीफ़ तंगदस्त के लिये स-दक़ा के क़ाइम मक़ाम है।

《12》 दुरूद शरीफ़ क़ज़ाए ह़ाजात का ज़रीआ़ है।

《13》 दुरूद शरीफ़ **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत और फ़िरिश्तों की दुआ़ का बाइ़स है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

《14》 दुरूद शरीफ़ अपने पढ़ने वाले के लिये पाकीज़गी और त़हारत का बाइ़स है।

《15》 दुरूद शरीफ़ से बन्दे को मौत से पहले जन्नत की ख़ुश ख़बरी मिल जाती है।

《16》 दुरूद शरीफ़ पढ़ना क़ियामत के ख़त़रात से नजात का सबब है।

《17》 दुरूद शरीफ़ पढ़ने से बन्दे को भूली हुई बात याद आ जाती है।

《18》 दुरूद शरीफ़ मजलिस की पाकीज़गी का बाइ़स है और क़ियामत के दिन येह मजलिस बाइ़से हसरत नहीं होगी।

《19》 दुरूद शरीफ़ पढ़ने से फ़क्र (तंगदस्ती) दूर होता है।

《20》 येह अ़मल बन्दे को जन्नत के रास्ते पर डाल देता है।

《21》 दुरूद शरीफ़ पुल सिरात़ पर बन्दे की रोशनी में इज़ाफ़े का बाइ़स है।

《22》 दुरूद शरीफ़ के ज़रीए़ बन्दा ज़ुल्म व जफ़ा से निकल जाता है।

《23》 दुरूद शरीफ़ पढ़ने की वजह से बन्दा आस्मान और ज़मीन में क़ाबिले ता'रीफ़ हो जाता है।

《24》 दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले को इस अ़मल की वजह से उस की ज़ात, अ़मल, उ़म्र और बेहतरी के अस्बाब में ब-र-कत ह़ासिल होती है।

《25》 दुरूद शरीफ़ रह़मते ख़ुदा वन्दी के ह़ुसूल का ज़रीआ़ है।

《26》 दुरूद शरीफ़ मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दाइमी

मह़ब्बत और इस में ज़ियादत का सबब है और येह (मह़ब्बत) ईमानी उ़क़ूद में से है। जिस के बिग़ैर ईमान मुकम्मल नहीं होता।

《27》 दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मह़ब्बत फ़रमाते हैं।

《28》 दुरूद शरीफ़ पढ़ना, बन्दे की हिदायत और उस की ज़िन्दा दिली का सबब है क्यूं कि जब वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ता है और आप का ज़िक्र करता है तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत उस के दिल पर ग़ालिब आ जाती है।

《29》 दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का येह ए'ज़ाज़ भी है कि सुल्ताने अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में उस का नाम पेश किया जाता है और उस का ज़िक्र होता है।

《30》 दुरूद शरीफ़ पुल सिरात़ पर साबित क़दमी और सलामती के साथ गुज़रने का बाइ़स है। (جلاءُ الْاَفْہَام ص۲٤٦تا۲۵۳ ملتقطًا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार के त़लब गार के लिये तोह़फ़ा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِى الْاَرْوَاحِ وَعَلٰى جَسَدِهٖ فِى الْاَجْسَادِ وَعَلٰى قَبْرِهٖ فِى الْقُبُوْرِ

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े उस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

को ख़्वाब में मेरी **ज़ियारत** होगी और जिस ने ख़्वाब में मुझे देखा वोह मुझे क़ियामत के दिन भी देखेगा और जो मुझे क़ियामत के दिन देख लेगा मैं उस की **शफ़ाअ़त** करूंगा और मैं जिस की शफ़ाअ़त करूंगा वोह **हौज़े कौसर** से पानी पियेगा और उस के जिस्म को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दोज़ख़ पर ह़राम कर देगा। (كشف الغمة عن جميع الأمة ج١ ص٣٢٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बख़्शिश व मग़्फ़िरत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ

किसी शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عليه رَحْمَةُ اللهِ الكافی को वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा और ह़ाल दर्याफ़्त किया तो आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस दुरूदे पाक की ब-र-कत से मेरी बख़्शिश फ़रमा दी। (افضل الصلوات على سيد السادات ص٨١ ملخصًا)

माल में ख़ैरो ब-र-कत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

साह़िबे रूहुल बयान फ़रमाते हैं : जो शख़्स इस दुरूदे पाक को पढ़ेगा उस का मालो दौलत बढ़ता रहेगा।

(تَفسِيرِ رُوحُ الْبَيَان الاحزاب:٥٦ ج٧ ص٢٣٣)

कुव्वते ह़ाफ़िज़ा मज़बूत हो

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ ﹰالنَّبِيِّ الْكَامِلِ وَعَلٰى اٰلِهٖ كَمَا لَا نِهَايَةَ لِكَمَالِكَ وَعَدَدَ كَمَالِهٖ

अगर किसी शख़्स को निस्यान या'नी भूल जाने की बीमारी हो तो वोह मग़्रिब और इ़शा के दरमियान इस दुरूदे पाक को कसरत से पढ़े, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ाफ़िज़ा क़वी हो जाएगा।

(اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ۱۹۱،۱۹۲ ملتقطاً)

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ ﹰالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मर्तबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह

देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص۱۵۱ ملخصًا)

﴿2﴾ तमाम गुनाह मुआ़फ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो **शख़्स** येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे। (ऐज़न, स. 65)

﴿3﴾ रह़मत के सत्तर दरवाज़े

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص۲۷۷)

﴿4﴾ एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है की सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं। (مَجْمَعُ الزَّوائِد ج۱۰ ص۲۵٤ حدیث ۱۷۳۰۵)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

﴾5﴿ छ लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰہِ

हज़रते अह़मद सावी علیہ رحمۃ اللہ الہادی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छ लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है। (اَفضلُ الصَّلوات علٰی سَیِّدِ السّادات ص۱۴۹)

﴾6﴿ क़ुर्बे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दरमियान बिठा लिया। इस से **सह़ाबए** किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को **तअ़ज्जुब** हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص۱۲۵)

दुरूदे २-ज़विय्या

صَلَّی اللّٰہُ عَلَی النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ وَاٰلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ صَلٰوۃً وَّسَلَامًا عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ

येह दुरूद शरीफ़ हर नमाज़ के बा'द ख़ुसूसन बा'द नमाज़े जुमुआ़ मदीनए मुनव्वरह زادها الله شرفاً و تعظيماً و تكريماً की जानिब मुंह कर के सो मर्तबा पढ़ने से बे शुमार फ़ज़ाइल व ब-रकात ह़ासिल होते हैं। (الوظيفة الكريمة ص٤٠) (पाक व हिन्द में का'बा शरीफ़ की त़रफ़ रुख़ करने से मदीनए मुनव्वरह زادها الله شرفاً و تعظيماً و تكريماً की त़रफ़ भी मुंह हो जाता है।)

दीन व दुन्या की ने'मतें ह़ासिल कीजिये

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ عَدَدَ اِنْعَامِ اللّٰهِ وَاِفْضَالِهٖ

इस दुरूदे पाक को पढ़ने से दीन व दुन्या की बे शुमार ने'मतें ह़ासिल होंगी। (افضل الصلوات على سيد السادات ص١٥١)

दुरूदे शफ़ाअ़त

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है।

(اَلتَّرْغِيب وَالتَّرْهِيب ج٢ ص٣٢٩ حديث٣١)

दुन्या व आख़िरत की सुर्ख़-रूई

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ بِعَدَدِ مَا فِيْ جَمِيْعِ الْقُرْاٰنِ حَرْفًا حَرْفًا وَّبِعَدَدِ كُلِّ حَرْفٍ اَلْفًا اَلْفًا

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है।

येह दुरूद शरीफ़ हर नमाज़ के बा'द खुसूसन बा'द नमाज़े जुमुआ मदीनए मुनव्वरह زادها الله شرفاً و تعظيماً و تكريماً की जानिब मुंह कर के सो मर्तबा पढ़ने से बे शुमार फ़ज़ाइल व ब-रकात हासिल होते हैं। (الوظيفة الكريمة ص٤٠) (पाक व हिन्द में का'बा शरीफ़ की तरफ़ रुख़ करने से मदीनए मुनव्वरह زادها الله شرفاً و تعظيماً و تكريماً की तरफ़ भी मुंह हो जाता है।)

दीन व दुन्या की ने'मतें हासिल कीजिये

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ عَدَدَ اِنْعَامِ اللّٰهِ وَاِفْضَالِهٖ

इस दुरूदे पाक को पढ़ने से दीन व दुन्या की बे शुमार ने'मतें हासिल होंगी। (افضل الصلوات على سيد السادات ص١٥١)

दुरूदे शफ़ाअत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए उमम صلى الله تعالى عليه واله وسلم का फ़रमाने मुअज़्ज़म है: जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब हो जाती है। (الترغيب والترهيب ج٢ ص٣٢٩ حديث٣١)

दुन्या व आख़िरत की सुर्ख़-रूई

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ بِعَدَدِ مَا فِيْ جَمِيْعِ الْقُرْاٰنِ حَرْفًا حَرْفًا وَّبِعَدَدِ كُلِّ حَرْفٍ اَلْفًا اَلْفًا

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग्फ़ार करते रहेंगे।

कुरआने करीम की तिलावत के बा'द जो शख़्स इस दुरूदे पाक को पढ़ेगा वोह दुन्या व आख़िरत में सुरख़ुरू रहेगा।

(تَفْسِیر رُوحُ الْبَیَان،الاحزاب:٥٦ ج٧ ص٢٣٤)

ग्यारह हज़ार दुरूद का सवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ

صَلٰوۃً اَنْتَ لَھَا اَھْلٌ وَّھُوَلَھَا اَھْلٌ

हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ जलालुद्दीन अस्सुयूतिश्शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक का एक मर्तबा पढ़ना **ग्यारह हज़ार मर्तबा** दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बराबर है।

(اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات ص١٥٣)

चौदह हज़ार दुरूदे पाक का सवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ

وَّعَلٰی اٰلِہٖ عَدَدَ کَمَالِ اللّٰہِ وَکَمَا یَلِیْقُ بِکَمَالِہٖ

इस दुरूद शरीफ़ को सिर्फ़ एक मर्तबा पढ़ने से **चौदह हज़ार दुरूदे पाक** का सवाब मिलता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات ص١٥٠)

एक लाख दुरूदे पाक का सवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِ ٱلنُّوْرِ

الذَّاتِیِّ وَالسِّرِّ السَّارِیْ فِیْ سَائِرِ الْاَسْمَآءِ وَالصِّفَاتِ

इस दुरूदे पाक को एक बार पढ़ा जाए तो **एक लाख बार दुरूद शरीफ़** पढ़ने का सवाब मिलता है। नीज़ अगर किसी को कोई ह़ाजत दरपेश हो तो येह दुरूदे पाक पांच सो बार पढ़े। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ह़ाजत पूरी होगी। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص۱۱۳)

हर क़िस्म की परेशानी से नजात के लिये

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ

قَدْ ضَاقَتْ حِیْلَتِیْ اَدْرِکْنِیْ یَا رَسُوْلَ اللہِ

सय्यिद इब्ने आबिदीन علیہم رحمۃ اللہ المبین फ़रमाते हैं कि मैं ने इसे एक फ़ित्नए अ़ज़ीम में पढ़ा जो दिमिश्क़ में वाक़ेअ़ हुवा, इसे अभी दो सो मर्तबा भी नहीं पढ़ा था कि मुझे एक शख़्स ने आ कर इत्तिलाअ़ दी कि फ़ितना ख़त्म हो गया। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص۱۰٤)

आबे कौसर से भरा पियाला

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَاَوْلَادِہٖ

وَاَزْوَاجِہٖ وَذُرِّیَّتِہٖ وَاَھْلِ بَیْتِہٖ وَاَصْھَارِہٖ وَاَنْصَارِہٖ

وَاَشْیَاعِہٖ وَمُحِبِّیْہِ وَاُمَّتِہٖ وَعَلَیْنَا مَعَھُمْ اَجْمَعِیْنَ

یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं कि जो शख़्स **हौज़े कौसर से भरा पियाला** पीना चाहे वोह इस दुरूदे पाक को पढ़े। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص۱۲۲)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआ़ला उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है।

"रसूले रह़मत" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से दुरूदे ताज के 8 म-दनी फूल

﴾1﴿ **जो** शख़्स उ़रूजे माह (या'नी चांद की पहली से चौदहवीं तक) शबे जुमुआ़ में बा'द नमाज़े इ़शा बा वुज़ू पाक कपड़े पहन कर ख़ुश्बू लगा कर एक सो सत्तर बार इस दुरूदे पाक को पढ़ कर सो रहे, ग्यारह शब मु-तवातिर इसी त़रह़ करे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होगा।

﴾2﴿ **सेह़र** व आसेब जिन्न व शैत़ान के दफ़्अ़ के लिये और चेचक के लिये 11 बार पढ़ कर दम करे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

﴾3﴿ क़ल्ब की सफ़ाई के लिये हर रोज़ बा'द नमाज़े सुब्ह़ **साठ बार** और बा'द नमाज़े अ़स्र तीन बार और बा'द नमाज़े इ़शा 3 बार विर्द रखे।

﴾4﴿ दुश्मनों, ज़ालिमों, ह़ासिदों और ह़ाकिमों के शर से मह़फ़ूज़ रहने के लिये और ग़म व ग़ुरबत दूर होने के लिये चालीस शब मु-तवातिर बा'द नमाज़े इ़शा 41 बार पढ़े।

﴾5﴿ रोज़ी में ब-र-कत के लिये सात बार बा'द नमाज़े फ़ज्र हमेशा विर्द रखे।

﴾6﴿ अ़क़ीमा (बांझ औ़रत) के लिये 21 ख़ुरमों (छुहारों) पर सात सात बार दम कर के एक ख़ुरमा (छुहारा) रोज़ खिला दे और बा'दे ह़ैज़ त़ुहर (या'नी पाकी के अय्याम) में हम बिस्तर हो ब फ़ज़्ले ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ नेक फ़रज़न्द पैदा हो।

﴾7﴿ अगर ह़ामिला पर ख़लल (या'नी तक्लीफ़) हो तो सात दिन बराबर सात मर्तबा पानी पर दम कर के पिलाए।

﴾8﴿ वासिते़ मुवा-स-लते त़ालिब व मत़्लूब (जाइज़ मह़ब्बत म-सलन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

मियां बीवी में महब्बत) और हर मक्सूद के लिये आधी रात के बा'द बा वुज़ू चालीस बार सिदक़ो यक़ीन के साथ पढ़े اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ मत़्लूबे दिली ह़ासिल होगा। (आ'माले रज़ा, स. 22)

दुरूदे ताज

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ صَاحِبِ التَّاجِ وَالْمِعْرَاجِ وَالْبُرَاقِ وَالْعَلَمِ ؕ دَافِعِ الْبَلَاۤءِ وَالْوَبَاۤءِ وَالْقَحْطِ وَالْمَرَضِ وَالْاَلَمِ ؕ اِسْمُہٗ مَکْتُوْبٌ مَّرْفُوْعٌ مَّشْفُوْعٌ مَنْقُوْشٌ فِی اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ ؕ سَیِّدِ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ ؕ جِسْمُہٗ مُقَدَّسٌ مُّعَطَّرٌ مُّطَهَّرٌ مُّنَوَّرٌ فِی الْبَیْتِ وَالْحَرَمِ ؕ شَمْسِ الضُّحٰی بَدْرِ الدُّجٰی صَدْرِ الْعُلٰی نُوْرِ الْھُدٰی کَھْفِ الْوَرٰی مِصْبَاحِ الظُّلَمِ ؕ جَمِیْلِ الشِّیَمِ ؕ شَفِیْعِ الْاُمَمِ ؕ صَاحِبِ الْجُوْدِ وَالْکَرَمِ ؕ وَاللہُ عَاصِمُہٗ وَجِبْرِیْلُ خَادِمُہٗ وَالْبُرَاقُ مَرْکَبُہٗ وَالْمِعْرَاجُ سَفَرُہٗ وَسِدْرَۃُ الْمُنْتَھٰی مَقَامُہٗ وَقَابَ قَوْسَیْنِ مَطْلُوْبُہٗ وَالْمَطْلُوْبُ مَقْصُوْدُہٗ وَالْمَقْصُوْدُ مَوْجُوْدُہٗ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ شَفِیْعِ الْمُذْنِبِیْنَ اَنِیْسِ الْغَرِیْبِیْنَ رَحْمَۃٍ لِّلْعٰلَمِیْنَ

رَاحَةِ الْعَاشِقِيْنَ مُرَادِ الْمُشْتَاقِيْنَ شَمْسِ الْعَارِفِيْنَ
سِرَاجِ السَّالِكِيْنَ مِصْبَاحِ الْمُقَرَّبِيْنَ مُحِبِّ الْفُقَرَآءِ وَ
الْغُرَبَآءِ وَالْمَسَاكِيْنِ سَيِّدِ الثَّقَلَيْنِ نَبِيِّ الْحَرَمَيْنِ اِمَامِ
الْقِبْلَتَيْنِ وَسِيْلَتِنَا فِي الدَّارَيْنِ صَاحِبِ قَابَ قَوْسَيْنِ
مَحْبُوْبِ رَبِّ الْمَشْرِقَيْنِ وَالْمَغْرِبَيْنِ جَدِّ الْحَسَنِ
وَالْحُسَيْنِ مَوْلَانَا وَمَوْلَى الثَّقَلَيْنِ اَبِي الْقَاسِمِ مُحَمَّدِ
ابْنِ عَبْدِ اللّٰهِ نُوْرٍ مِّنْ نُّوْرِ اللّٰهِ ط يَآ اَيُّهَا الْمُشْتَاقُوْنَ بِنُوْرِ
جَمَالِهٖ صَلُّوْا عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ रह़मत फ़रमा हमारे सरदार और हमारे आक़ा मुह़म्मद, ताज व मे'राज वाले, बुराक़ और बुलन्दी वाले पर, बलिय्यात व वबा, क़ह़त़ व मरज़, दुख और मुसीबत के दूर करने वाले पर, जिन का इस्मे गिरामी लिखा हुवा है बुलन्द है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम के साथ जुड़ा हुवा है लौह़े मह़फ़ूज़ और क़लम में रंग आमेज़ी किया हुवा है, अ़रब और अ़जम के सरदार, जिन का जिस्मे मुबारक हर ऐ़ब से मुबर्रा, ख़ुश्बू का मम्बअ़, इन्तिहाई पाकीज़ा, नूरुन अ़ला नूर, अपने घर और ह़रम में (इन तमाम अह़वाल के साथ आज भी मौजूद है) सुब्ह़ के रोशन और ख़ुश्नुमा सूरज, चौदहवीं रात के चांद, बुलन्दी के मआख़ज़, हिदायत के नूर, मख़्लूक़ की जाए पनाह, तारीकियों के चराग़, बेहतरीन ख़ुल्क़ व आ़दात वाले, उम्मतों की शफ़ाअ़त करने वाले, सख़ावत और करम के वाली पर दुरूदो सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन का मुह़ाफ़िज़ है जिब्रीले अमीन ख़ादिम हैं और बुराक़ सुवारी है मे'राज उन का सफ़र है और सिद-रतुल मुन्तहा उन का मक़ाम है और क़ा-ब क़ौसैन (कमाले क़ुर्बे इलाही) उन का मत़्लूब है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

और मत्लूब या'नी कमाले कुर्बे इलाही वोही मक़्सूद है और मक़्सूद ह़ासिल हो चुका है तमाम रसूलों के सरदार, तमाम अम्बिया के बा'द आने वाले, गुनहगारों की शफ़ाअ़त करने वाले, मुसाफ़िरों और अज्नबियों के ग़म गुसार, तमाम जहानों पर रह़्म फ़रमाने वाले, आ़शिक़ों की राह़त और मुश्ताक़ों की मुराद, जुम्लाहाए आ़रिफ़ों के सूरज, सालिकों के चराग़, मुक़र्रबीन की शम्अ़, फ़क़ीरों परदेसियों और मिस्कीनों से मह़ब्बत व उल्फ़त रखने वाले, जिन्नात और इन्सानों के सरदार, ह़-रमे मक्का और ह़-रमे मदीना के नबी, बैतुल मुक़द्दस और ख़ानए का'बा दोनों क़िब्लों के इमाम, दुन्या व आख़िरत में हमारे वसीला, क़ा-ब क़ौसैन की नवीद वाले, मश्रिक़ों और मग़रिबों के रब के ह़बीब, इमामे ह़सन और इमामे हुसैन के नाना, हमारे आक़ा, जुम्ला जिन्न व इन्स के वाली, या'नी अबुल क़ासिम मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर में से अ़-ज़मत व रिफ़्अ़त वाले नूर पर दुरूदो सलाम, उन के नूरे जमाल के आ़शिक़ो ! ख़ूब सलातो सलाम भेजो उन की ज़ाते वाला सिफ़ात पर और उन की आल व अस्ह़ाब पर।

दुरूदे तुनज्जीना के बारे में ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत

अ़ल्लामा इब्ने फ़ाकहानी علیہ رحمۃ اللہ الغنی किताब "**अल फ़ज्रुल मुनीर**" में इस दुरूद शरीफ़ के बारे में एक वाक़िआ बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि पारसा शैख़ मूसा ज़रीर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुझ से बयान किया कि वोह ब ज़रीअ़ए कश्ती समुन्दरी सफ़र पर रवाना हुए, रास्ते में शदीद तूफ़ान ने आ लिया जिसे इक़्लाबिया (उलट पलट कर देने वाली) कहते हैं। बहुत कम लोग हैं जो इस तूफ़ान में फंस कर डूबने से बचते हैं, लोग डूबने के ख़ौफ़ से चीख़ो पुकार करने लगे, मुझे नींद आ गई, ख़्वाब में नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कश्ती वालों को कहो कि वोह एक हज़ार मर्तबा येह दुरूद

ले से اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلاۃً تُنَجِّیْنَا بِھَا शरीफ़ कर بَعْدَ الْمَمَاتِ तक पढ़ें। मैं बेदार हुवा और कश्ती वालों को ख़्वाब बयान किया। हम ने मिल कर तीन सो मर्तबा ही पढ़ा था कि **अल्लाह** तआला ने तूफ़ान से नजात अता फ़रमा दी। (مَطَالِعُ الْمُسَرَّات ص٤٧١)

शैख़ मजदुद्दीन फ़िरोज़आबादी साहिबे क़ामूस ने, शैख़ हसन बिन अली असवानी के हवाले से बयान किया कि जो शख़्स येह दुरूदे पाक (**दुरूदे तुनज्जीना**) किसी भी मुश्किल, आफ़त या मुसीबत में एक हज़ार मर्तबा पढ़े **अल्लाह** तआला उस मुश्किल को आसान फ़रमा देगा और उस का मक़्सद पूरा फ़रमा देगा।

(مَطَالِعُ الْمُسَرَّات ص٤٧١)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوۃً تُنَجِّیْنَا بِھَا مِنْ جَمِیْعِ الْاَھْوَالِ وَالْاٰفَاتِ وَتَقْضِیْ لَنَا بِھَا جَمِیْعَ الْحَاجَاتِ وَتُطَھِّرُنَا بِھَا مِنْ جَمِیْعِ السَّیِّئَاتِ وَتَرْفَعُنَا بِھَا اَعْلَی الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِھَا اَقْصَی الْغَایَاتِ مِنْ جَمِیْعِ الْخَیْرَاتِ فِی الْحَیَاۃِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

तरजमा : ऐ **अल्लाह**! عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा पर ऐसी रह़मत नाज़िल फ़रमा कि तू इन के सबब हमें तमाम ख़ौफ़ों और आफ़तों से नजात दे और इन के सबब तू हमारी तमाम ह़ाजतों को पूरा फ़रमा और इन की बदौलत तू हमें तमाम गुनाहों से पाक कर दे और इन के ज़रीए तू हमें बुलन्द द-रजात पर फ़ाइज़ फ़रमा दे और इन की ब-र-कत से तू हमें तमाम नेकियों की आख़िरी इन्तिहा तक पहुंचा दे, ज़िन्दगी में और मौत के बा'द और बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है।

शिफ़ाए अम्राज़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ طِبِّ الْقُلُوْبِ وَدَوَآئِهَا

وَعَافِيَةِ الْاَبْدَانِ وَشِفَآئِهَا وَنُوْرِ الْاَبْصَارِ وَضِيَآئِهَا

وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

बा वुज़ू मरीज़ को लिख कर दें कि ज़बान से चाटे या पानी में घोल कर पिला दें। शिफ़ा होने तक येह अ़मल बराबर करते रहें बि इज़्निल्लाह मौत के सिवा हर मरज़ को मुफ़ीद है।

दुरूदे माही के बारे में मछली की ह़िकायत

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दरिया के कनारे वुज़ू कर रहे थे कि एक मछली आई और उस ने येह दुरूद शरीफ़ पढ़ा उन्हों ने दर्याफ़्त किया कि इसे किस से सीखा उस मछली ने जवाब दिया कि एक दफ़्आ़ दरिया के कनारे पर मैं ने एक फ़िरिश्ते को पढ़ते सुना और याद कर लिया उसी रोज़ से हर आफ़त व बला से मह़फ़ूज़ हूं।

(आ'माले रज़ा, स. 138)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ خَیْرِ
الْخَلَآئِقِ وَاَفْضَلِ الْبَشَرِ وَشَفِیْعِ الْاُمَمِ یَوْمَ الْحَشْرِ
وَالنَّشْرِ وَصَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا
مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ کُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّکَ وَصَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی
اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ وَصَلِّ عَلٰی جَمِیْعِ الْاَنْبِیَآءِ
وَالْمُرْسَلِیْنَ وَصَلِّ عَلٰی کُلِّ الْمَلٰٓئِکَۃِ الْمُقَرَّبِیْنَ وَعَلٰی
عِبَادِ اللّٰہِ الصّٰلِحِیْنَ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا کَثِیْرًا
بِرَحْمَتِکَ وَبِفَضْلِکَ وَبِکَرَمِکَ یَا اَکْرَمَ الْاَکْرَمِیْنَ
بِرَحْمَتِکَ یَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ یَا قَدِیْمُ یَا دَآئِمُ
یَا حَیُّ یَا قَیُّوْمُ یَا وِتْرُ یَا اَحَدُ یَا صَمَدُ یَا مَنْ لَّمْ یَلِدْ
وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یَکُنْ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ بِرَحْمَتِکَ یَا اَرْحَمَ
الرّٰحِمِیْنَ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ैज़ाने दुआ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले **मुहूतशम**, शाफ़ेए उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, जो शख़्स बरोज़े जुमुआ़ मुझ पर सो बार दुरूदे पाक पढ़े, जब वोह क़ियामत के रोज़ आएगा तो उस के साथ एक ऐसा नूर होगा कि अगर वोह सारी मख़्लूक़ में तक़्सीम कर दिया जाए तो सब को किफ़ायत करे।

(حِلْيَةُ الْاَوْلِياء ج٨ص٤٩ حديث ١١٣٤١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुआ़ की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुआ़ मांगना बहुत बड़ी सआ़दत है, क़ुरआन व अहा़दीसे मुबा-रका में जगह जगह दुआ़ मांगने की तरग़ीब दिलाई गई है। एक ह़दीसे पाक में है : "क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न बताऊं जो तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दे और तुम्हारा रिज़्क़ वसीअ़ कर दे, रात दिन **अल्लाह** तआ़ला से **दुआ़** मांगते रहो कि **दुआ़** मोमिन का हथियार है।"

(اَلْمُسْنَدُ اَبِىْ يَعْلٰى ج٢ ص٢٠١ حديث ١٨٠٦)

दुआ दाफ़ेए बला है

मक्की म-दनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्क़बार है : "बला उतरती है फिर दुआ उस से जा मिलती है। फिर दोनों क़ियामत तक झगड़ा करते रहते हैं।"

(اَلْمُسْتَدْرَك ج ۲ ص ۱۶۲ حديث ۱۸۵۶)

इबादात में दुआ का मक़ाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "इबादात में दुआ की वोही ह़ैसिय्यत है जो खाने में नमक की।"

(تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْن ص ۲۱٦ حديث ۵۷۷)

दुआ के तीन फ़ाएदे

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो मुसल्मान ऐसी दुआ करे जिस में गुनाह और क़त़्ए रेह़्मी की कोई बात शामिल न हो तो **अल्लाह** तआला उसे तीन चीज़ों में से कोई एक ज़रूर अ़त़ा फ़रमाता है : ﴾1﴿ या उस की दुआ का नतीजा जल्द ही उस की ज़िन्दगी में ज़ाहिर हो जाता है। या ﴾2﴿ **अल्लाह** तआला कोई मुसीबत उस बन्दे से दूर फ़रमा देता है। या ﴾3﴿ उस के लिये आख़िरत में भलाई जम्अ़ की जाती है। एक और रिवायत में है कि बन्दा (जब आख़िरत में अपनी दुआओं का सवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब (या'नी मक़्बूल) न हुई थीं

तो) तमन्ना करेगा, काश ! दुन्या में मेरी कोई दुआ़ क़बूल न होती।

(اَلْمُسْتَدرَك لِلْحَاكم ج٢ص١٦٣،١٦٥ حديث ١٨٥٩،١٨٦٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **दुआ़** राएगां तो जाती ही नहीं। इस का दुन्या में अगर असर ज़ाहिर न भी हो तो आख़िरत में अज्रो सवाब मिल ही जाएगा। लिहाज़ा **दुआ़** में सुस्ती करना मुनासिब नहीं।

"या अ़फ़ुव्वु" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 म-दनी फूल

(1) **पहला** फ़ाएदा येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की पैरवी होती है कि उस का हुक्म है मुझ से दुआ़ मांगा करो। जैसा कि कुरआने पाक में इर्शाद है :

اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ

(پ٢٤ المؤمن:٦٠)

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान: मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।

(2) **दुआ़** मांगना सुन्नत है कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर अवक़ात **दुआ़** मांगते। लिहाज़ा दुआ़ मांगने में **इत्तिबाए़ सुन्नत** का भी शरफ़ ह़ासिल होगा।

(3) **दुआ़** मांगने में इत़ाअ़ते रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **दुआ़** की अपने गुलामों को ताकीद फ़रमाते रहते।

(4) **दुआ़** मांगने वाला आ़बिदों के ज़ुमरे (या'नी गुरौह) में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

दाख़िल होता है कि दुआ़ बज़ाते ख़ुद एक इ़बादत बल्कि इ़बादत का भी मग़्ज़ है। जैसा कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :-

اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ **तरजमा :** दुआ़ इ़बादत का **मग़्ज़** है।

(سُنَنُ التِّرمِذِی ج٥ ص٢٤٣ حدیث٣٣٨٢)

(5) **दुआ़** मांगने से या तो उस का गुनाह मुआ़फ़ किया जाता है या दुन्या ही में उस के मसाइल ह़ल होते हैं या फिर वोह **दुआ़** उस के लिये आख़िरत का ज़ख़ीरा बन जाती है।

न जाने कौन सा गुनाह हो गया है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? दुआ़ मांगने में **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब माहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त भी है, दुआ़ मांगना सुन्नत भी है, दुआ़ मांगने से इ़बादत का सवाब भी मिलता है नीज़ दुन्या व आख़िरत के मु-तअ़द्दद फ़वाइद ह़ासिल होते हैं। बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि वोह दुआ़ की क़बूलिय्यत के लिये बहुत जल्दी मचाते बल्कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! बातें बनाते हैं कि हम तो इतने अ़रसे से दुआ़एं मांग रहे हैं, बुज़ुर्गों से भी दुआ़एं करवाते रहे हैं, कोई पीर फ़क़ीर नहीं छोड़ा, येह वज़ाइफ़ पढ़ते हैं, वोह अवराद पढ़ते हैं, फ़ुलां फ़ुलां मज़ार पर भी गए मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी ह़ाजत पूरी करता ही नहीं। बल्कि बा'ज़ येह भी कहते सुने जाते हैं :

"न जाने ऐसा कौन सा गुनाह हो गया है जिस की हमें सज़ा मिल रही है ।"

नमाज़ न पढ़ना तो गोया ख़ता ही नहीं !

इस तरह की "भड़ास" निकालने वाले से अगर दरयाफ़्त किया जाए कि भाई ! आप नमाज़ तो पढ़ते ही होंगे ? तो शायद जवाब मिले, "जी नहीं ।" देखा आप ने ! ज़बान पर तो बे साख़्ता जारी हो रहा है, "न जाने क्या ख़ता हम से ऐसी हुई है ? जिस की हम को सज़ा मिल रही है !" और नमाज़ में इन की ग़फ़्लत तो इन्हें नज़र ही नहीं आ रही ! गोया नमाज़ न पढ़ना तो (معاذ اللہ عزوجل) कोई गुनाह ही नहीं है ! अरे ! अपने मुख़्तसर से वुजूद पर ही थोड़ी नज़र डाल लेते, देखिये तो सही ! सर के बाल इंग्रेज़ी, इंग्रेज़ों की तरह सर भी बरह्ना, लिबास भी इंग्रेज़ी, चेहरा दुश्मनाने मुस्तफ़ा आतश परस्तों जैसा या'नी ताजदारे रिसालत صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की अज़ीम सुन्नत दाढ़ी मुबारक चेहरे से ग़ाइब ! तहज़ीब व तमद्दुन इस्लाम के दुश्मनों जैसा, नमाज़ तक भी न पढ़ें । हालां कि नमाज़ न पढ़ना ज़बर दस्त गुनाह, दाढ़ी मुंडाना हराम और दिन भर में झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, बद गुमानी, बद निगाही, वालिदैन की ना फ़रमानी, गाली गलोच, फ़िल्में डिरामे, गाने बाजे वग़ैरा वग़ैरा न जाने कितने गुनाह किये जाएं । लेकिन येह गुनाह "जनाब" को नज़र ही न आएं । इतने इतने गुनाह करने के बा वुजूद शैतान ग़ाफ़िल कर देता है । और ज़बान पर येह अल्फ़ाज़े शिक्वा खेल रहे होते हैं : "**क्या ख़ता हम**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे ।

से ऐसी हुई है ? जिस की हम को सज़ा मिल रही है !"

जिस दोस्त की बात न मानें

ज़रा सोचिये तो सही ! आप का कोई जिगरी दोस्त आप को कई बार कुछ काम बताए मगर आप उस का काम न करें । और कभी आप को अपने उसी दोस्त से काम पड़ जाए तो ज़ाहिर है आप पहले ही सहमे रहेंगे कि मैं ने तो इस का एक भी काम नहीं किया अब वोह भला मेरा काम क्यूं करेगा ! अगर आप ने हिम्मत कर के बात कर के भी देखी और वाक़ेई उस ने काम न भी किया तब भी आप शिक्वा नहीं कर सकेंगे क्यूं कि आप ने भी तो अपने दोस्त का कोई काम नहीं किया था ।

अब ठन्डे दिल से ग़ौर कीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कितने कितने काम बताए, कैसे कैसे अह़काम जारी फ़रमाए । मगर खुद उस के कौन कौन से अह़काम पर अ़मल करते हैं ? ग़ौर करने पर मा'लूम होगा कि उस के कई अह़कामात की बजा आ-वरी में निहायत ही कोताह वाक़ेअ़ हुए हैं । उम्मीद है बात समझ में आ गई होगी कि खुद तो अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के हुक्मों पर अ़मल न करें । और वोह अगर किसी बात (या'नी दुआ़) का असर ज़ाहिर न फ़रमाए तो शिक्वा, शिकायत ले कर बैठ जाएं । देखिये ना ! आप अगर अपने किसी जिगरी दोस्त की कोई बात बार बार टालते रहें तो हो सकता है कि वोह आप से दोस्ती ही **ख़त्म** कर दे । लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दों पर किस क़दर मेहरबान है कि लाख उस के फ़रमान की ख़िलाफ़ वर्ज़ी

करें। फिर भी वोह अपने बन्दों की फ़ेहरिस से ख़ारिज नहीं करता। वोह लुत्फ़ो करम फ़रमाता ही रहता है। ज़रा ग़ौर तो फ़रमाइये ! जो बन्दे एह्सान फ़रामोशी का मुज़ा-हरा कर रहे हैं। अगर वोह भी बतौरे सज़ा अपने एह्सानात उन से रोक ले तो उन का क्या बनेगा ? यक़ीनन उस की इनायत के बिग़ैर एक क़दम भी नहीं उठा सकता। अरे ! वोह अपनी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत हवा को जो बिल्कुल मुफ़्त अ़ता फ़रमा रखी है अगर चन्द लम्ह़ों के लिये रोक ले तो अभी लाशों के अम्बार लग जाएं !

क़बूलिय्यते दुआ में ताख़ीर का एक सबब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बसा अवक़ात क़बूलिय्यते दुआ की ताख़ीर में काफ़ी मस्लहतें भी होती हैं जो हमारी समझ में नहीं आतीं। हुज़ूर, सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم का फ़रमाने पुर सुरूर है, जब **अल्लाह** عزوجل का कोई प्यारा **दुआ** करता है, तो **अल्लाह** तआला जिब्रईल (علیہ السلام) से इर्शाद फ़रमाता है, "ठहरो ! अभी न दो ताकि फिर मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ पसन्द है।" और जब कोई काफ़िर या फ़ासिक़ **दुआ** करता है, फ़रमाता है, "ऐ जिब्रईल (علیہ السلام) ! इस का काम जल्दी कर दो, ताकि फिर न मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ मक्रूह (या'नी ना पसन्द) है।

(کنز العمال ج۲ ص۳۹ حدیث ۳۲۶۱)

हिकायत

हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन सईद बिन क़त्तान (رضی اللہ تعالی عنہ) ने **अल्लाह** عزوجل को ख़्वाब में देखा, अ़र्ज़ की, इलाही عزوجل ! मैं अक्सर **दुआ** करता हूं। और तू क़बूल नहीं फ़रमाता ? हुक्म हुवा,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है।

"ऐ यह्या ! मैं तेरी आवाज़ को दोस्त रखता हूं। इस वासित़े तेरी **दुआ** की क़बूलिय्यत में ताख़ीर करता हूं।" (اَحسَنُ الوِعَاء ص ٣٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी जो ह़दीसे पाक और ह़िकायत गुज़री उस में येह बताया गया है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अपने नेक बन्दों की गिर्या व ज़ारी पसन्द है तो यूं भी बसा अवक़ात क़बूलिय्यते **दुआ** में ताख़ीर होती है। अब इस मस्लहत को हम कैसे समझ सकते हैं ! बहर ह़ाल जल्दी नहीं मचानी चाहिये। अह्सनुल विआअ सफ़ह़ा 33 में आदाबे दुआ बयान करते हुए ह़ज़रते रईसुल मु-तकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :-

जल्दी मचाने वाले की दुआ क़बूल नहीं होती

(दुआ के आदाब में से येह भी है कि) **दुआ** के क़बूल में जल्दी न करे। ह़दीस शरीफ़ में है कि ख़ुदाए तआला तीन आदमियों की **दुआ** क़बूल नहीं करता। एक वोह कि गुनाह की दुआ मांगे। दूसरा वोह कि ऐसी बात चाहे कि क़त़ए रेह्म हो। तीसरा वोह कि क़बूल में जल्दी करे कि मैं ने **दुआ** मांगी अब तक क़बूल नहीं हुई।

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج٢ص٣١٤حدیث٩)

इस ह़दीस में फ़रमाया गया है कि ना जाइज़ काम की **दुआ** न मांगी जाए कि वोह क़बूल नहीं होती। नीज़ किसी रिश्तेदार का ह़क़ ज़ाएअ़ होता हो ऐसी **दुआ** भी न मांगें और **दुआ** की क़बूलिय्यत के लिये जल्दी भी न करें वरना **दुआ** क़बूल नहीं की जाएगी।

अह्सनुल विआए लि आदाबिदुआअ पर **आ'ला हज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह्मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن ने हाशिया तह्रीर फ़रमाया है। और उस का नाम ज़ैलुल मुद्दआ लि अह्सनिल विआअ रखा है। इसी हाशिये में एक मक़ाम पर **दुआ** की क़बूलिय्यत में जल्दी मचाने वालों को अपने मख़्सूस और निहायत ही इल्मी अन्दाज़ में समझाते हुए फ़रमाते हैं :-

अफ़्सरों के पास तो बार बार धक्के खाते हो मगर....

सगाने दुन्या (या'नी दुन्यवी अफ़्सरों) के उम्मीदवारों (या'नी उन से काम निकलवाने के आरज़ू मन्दों) को देखा जाता है कि तीन तीन बरस तक उम्मीद वारी (और इन्तिज़ार) में गुज़ारते हैं, सुब्हो शाम उन के दरवाज़ों पर दौड़ते हैं, (धक्के खाते हैं) और वोह (अफ़्सरान) हैं कि रुख़ नहीं मिलाते, जवाब नहीं देते, झिड़कते, दिल तंग होते, नाक भौं चढ़ाते हैं, उम्मीद वारी में लगाया तो बेगार (बेकार मेह्नत) सर पर डाली, येह हज़रत गिरेह (या'नी उम्मीद वार जेब) से खाते, घर से मंगाते, बेकार बेगार (फ़ुज़ूल मेह्नत) की बला उठाते हैं, और वहां (या'नी अफ़्सरों के पास धक्के खाने में) बरसों गुज़रें हुनूज़ (या'नी अभी तक गोया) रोज़े अव्वल (ही) है। मगर येह (दुन्यवी अफ़्सरों के पास धक्के खाने वाले) न उम्मीद तोडें, न (अफ़्सरों का) पीछा छोड़ें। और अह्कमुल हाकिमीन, अक्रमुल अक्रमीन عَزَّوَجَلَّ के दरवाज़े पर अव्वल तो आता ही कौन है! और आए भी तो उक्ताते, घबराते, कल का होता आज हो जाए, एक हफ़्ता कुछ पढ़ते गुज़रा और शिकायत होने लगी,

साहिब ! पढ़ा तो था, कुछ असर न हुवा ! येह अह़मक़ अपने लिये इजाबत (या'नी क़बूलिय्यत) का दरवाज़ा ख़ुद बन्द कर लेते हैं। **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

يُسْتَجَابُ لِاَحَدِكُمْ مَالَمْ يُعَجِّلْ يَقُوْلُ دَعَوْتُ فَلَمْ يَسْتَجِبْ لِيْ.

तरजमा : "तुम्हारी दुआ़ क़बूल होती है जब तक जल्दी न करो येह मत कहो कि मैं ने दुआ़ की थी क़बूल न हुई।"

(صَحِيحُ الْبُخَارِى ج ٤ص ٢٠٠ حديث: ٦٣٤٠)

बा'ज़ तो इस पर ऐसे जामे से बाहर (या'नी बे क़ाबू) हो जाते हैं कि आ'माल व अदइय्या (या'नी अवराद और दुआ़ओं) के असर से बे ए'तिक़ाद, बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वा'दए करम से बे ए'तिमाद, وَالْعِيَاذُ بِاللهِ الْكَرِيْمِ الْجَوَادِ। ऐसों से कहा जाए कि ऐ बे ह़या ! बे शर्मो ! ज़रा अपने गरीबान में मुंह डालो। अगर कोई तुम्हारा बराबर वाला दोस्त तुम से हज़ार बार कुछ काम अपने कहे और तुम उस का एक काम न करो तो अपना काम उस से कहते हुए अव्वल तो आप लजाओ (शरमाओ)गे, (कि) हम ने तो उस का कहना किया ही नहीं अब किस मुंह से उस से काम को कहें ? और अगर गरज़ दीवानी होती है (या'नी मत़लब पड़ा तो) कह भी दिया और उस ने (अगर तुम्हारा काम) न किया तो अस्लन मह़ल्ले शिकायत न जानोगे (या'नी इस बात पर शिकायत करोगे ही नहीं ज़ाहिर है ख़ुद ही समझते हो) कि हम ने (उस का काम) कब किया था जो वोह करता।

अब जांचो, कि तुम मालिके अ़लल इत़्लाक़ عَزَّوَجَلَّ के कितने अह़काम बजा लाते हो ? उस के हुक्म बजा न लाना और अपनी दर-ख़्वास्त का ख़्वाही न ख़्वाही (हर सूरत में) क़बूल चाहना कैसी बे ह़याई है !

ओ अह़मक़ ! फिर फ़र्क़ देख ! अपने सर से पाउं तक नज़्रे ग़ौर कर ! एक एक रूएं में हर वक़्त हर आन कितनी कितनी हज़ार दर हज़ार दर हज़ार सद हज़ार बे शुमार ने'मतें हैं। तू सोता है और उस के मा'सूम बन्दे (या'नी फ़िरिश्ते) तेरी ह़िफ़ाज़त को पहरा दे रहे हैं, तू गुनाह कर रहा है और (फिर भी) सर से पाउं तक सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत, बलाओं से ह़िफ़ाज़त, खाने का हज़्म, फ़ुज़लात (या'नी जिस्म के अन्दर की गन्दगियों) का दफ़्अ़, ख़ून की रवानी, आ'ज़ा में त़ाक़त, आंखों में रोशनी। बे ह़िसाब करम बे मांगे बे चाहे तुझ पर उतर रहे हैं। फिर अगर तेरी बा'ज़ ख़्वाहिशें अ़त़ा न हों, किस मुंह से शिकायत करता है ? तू क्या जाने कि तेरे लिये भलाई काहे में है ! तू क्या जाने कैसी सख़्त बला आने वाली थी कि इस (ब ज़ाहिर न क़बूल होने वाली) दुआ़ ने दफ़्अ़ की, तू क्या जाने कि इस दुआ़ के इ़वज़ कैसा सवाब तेरे लिये ज़ख़ीरा हो रहा है, उस का वा'दा सच्चा है और क़बूल की येह तीनों सूरतें हैं जिन में हर पहली, पिछली से आ'ला है। हां, बे ए'तिक़ादी आई तो यक़ीन जान कि मारा गया और इब्लीसे लई़न ने तुझे अपना सा कर लिया। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ سُبْحٰنَهٗ وَتَعَالٰى (और **अल्लाह** की पनाह वोह पाक है और अ़-ज़मत वाला)

ऐ ज़लील ख़ाक ! ऐ आबे नापाक ! अपना मुंह देख और इस अ़ज़ीम शरफ़ पर ग़ौर कर कि अपनी बारगाह में ह़ाज़िर होने, अपना पाक, मु-तआ़ली (या'नी बुलन्द) नाम लेने, अपनी त़रफ़ मुंह करने, अपने पुकारने की तुझे इजाज़त देता है । लाखों मुरादें इस फ़ज़्ले अ़ज़ीम पर निसार ।

ओ बे सब्रे ! ज़रा भीक मांगना सीख । इस आस्ताने रफ़ीअ़ की ख़ाक पर लौट जा । और लिपटा रह और **टिकटिकी** बंधी रख कि अब देते हैं, अब देते हैं ! बल्कि पुकारने, उस से मुनाजात करने की लज़्ज़त में ऐसा डूब जा कि इरादा व मुराद कुछ याद न रहे, यक़ीन जान कि इस दरवाज़े से हरगिज़ मह़रूम न फिरेगा कि **مَنْ دَقَّ بَابَ الْكَرِيْمِ اِنْفَتَحَ** (जिस ने करीम के दरवाज़े पर दस्तक दी तो वोह इस पर खुल गया) **وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيْقُ** (और तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है)

(ذَیْلُ الْمُدَّعا لِاَحْسَنِ الْوِعاء ص ٣٤ تا ٣٧)

दुआ़ की क़बूलिय्यत में ताख़ीर तो करम है

ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن) फ़रमाते हैं, ऐ अ़ज़ीज़ ! तेरा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ मैं दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल करता हूं जब मुझ से दुआ़ मांगे ।

(پ٢ البقرة: ١٨٦)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे ।

فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾ हम क्या अच्छे क़बूल करने वाले हैं ।

(پ۲۳،الصّٰفّٰت:۷۵)

اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ مुझ से दुआ मांगो मैं क़बूल फ़रमाऊंगा ।

(پ۲٤،المؤمن:٦٠)

पस यक़ीन समझ कि वोह तुझे अपने दर से महरूम नहीं करेगा और अपने वा'दे को वफ़ा फ़रमाएगा । वोह अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाता है :

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾ साइल को न झिड़क ।

(پ۳۰ والضحٰی:۱۰)

आप किस त़रह़ अपने ख़्वाने करम से दूर करेगा । बल्कि वोह तुझ पर नज़रे करम रखता है । कि तेरी दुआ के क़बूल करने में देर करता है । (اَحسَنُ الْوِعَاء ص۳۲, ۳۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के दुआ मांगने वालों के मसाइल ह़ल होने के काफ़ी वाक़िआत सुनने को मिलते हैं ।

म-दनी क़ाफ़िले में इर्क़ुन्निसा का इलाज हो गया

एक इस्लामी भाई का बयान अपने अन्दाज़ में अ़र्ज़ करने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा।

की सआदत ह़ासिल करता हूं। हमारा **म-दनी क़ाफ़िला** ठठ्ठा शहर वारिद हुवा, शु-रकाअ में से एक इस्लामी भाई को **इर्क़ुन्निसा** का शदीद दर्द उठता था बेचारे शिद्दते दर्द से माहिये बे आब की त़रह़ तड़पते थे। एक बार दर्द के सबब रात भर सो न सके। आख़िरी दिन **अमीरे क़ाफ़िला** ने फ़रमाया : आइये ! सब मिल कर इन के लिये दुआ़ करते हैं। चुनान्चे दुआ़ शुरूअ़ हुई, उन इस्लामी भाई का बयान है : اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दौराने दुआ़ ही दर्द में कमी आनी शुरूअ़ हो गई और कुछ देर के बा'द **इर्क़ुन्निसा का दर्द बिल्कुल जाता रहा।** اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह बयान देते वक़्त काफ़ी अ़रसा हो चुका है वोह दिन आज का दिन मुझे फिर कभी **इर्क़ुन्निसा** की तक्लीफ़ नहीं हुई। اَلْحَمْدُلِلّٰہ येह बयान देते वक़्त मुझे अ़लाक़ाई **म-दनी क़ाफ़िला** ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से म-दनी क़ाफ़िलों की धूमें मचाने की ख़िदमत मिली हुई है।

गर हो इ़र्क़ुन्निसा, आ़रिज़ा कोई सा पाओगे सिह़्ह़तें, क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां, और परेशानियां होंगी बस चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से **इर्क़ुन्निसा** जैसी मूज़ी बीमारी से नजात मिल गई। **इर्क़ुन्निसा** की पहचान येह है कि इस में चढ्ढे (या'नी रान के जोड़) से ले कर पाउं के टख़्ने तक शदीद दर्द होता है येह मरज़ बरसों तक पीछा नहीं छोड़ता।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

"दुआ मोमिन का हथियार है" के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से दुआ मांगने के 17 म-दनी फूल

(तक़रीबन तमाम म-दनी फूल अह्सनुल विआअ लि आदाबिद्दुआ मअ़ शर्ह ज़ैलिल मुद्दआ लि अह्सनिल विआअ, मत्बूआ मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना से माख़ूज़ हैं)

《1》 हर रोज़ कम अज़ कम बीस बार **दुआ** करना वाजिब है। اَلْحَمْدُلِلّٰه नमाज़ियों का येह वाजिब, नमाज़ में सू-रतुल फ़ातिहा से अदा हो जाता है कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ (तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : हम को सीधा रास्ता चला) भी **दुआ** और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : सब ख़ूबियां अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का) कहना भी **दुआ** है। (स. 123) 《2》 **दुआ** में ह़द से न बढ़े। म-सलन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मर्तबा मांगना या आस्मान पर चढ़ने की तमन्ना करना। नीज़ दोनों जहां की सारी भलाइयां और सब की सब ख़ूबियां मांगना भी मन्अ़ है कि इन ख़ूबियों में मरातिबे अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी हैं जो नहीं मिल सकते। (स. 80,81) 《3》 जो मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन) या क़रीब ब मुह़ाल हो उस की **दुआ** न मांगे। लिहाज़ा हमेशा के लिये तन्दुरुस्ती आ़फ़िय्यत मांगना कि आदमी उ़म्र भर कभी किसी त़रह़ की तक्लीफ़ में न पड़े येह मुह़ाले आ़दी की **दुआ** मांगना है। यूंही लम्बे क़द के आदमी का छोटा क़द होने या छोटी आंख वाले का बड़ी आंख की **दुआ** करना मम्नूअ़ है कि येह ऐसे अम्र की **दुआ** है जिस पर क़लम जारी हो चुका है। (स. 81) 《4》 गुनाह की **दुआ** न करे कि मुझे पराया माल मिल जाए कि गुनाह की त़लब करना भी गुनाह है। (स. 82) 《5》 क़त़्ए रेह्म (म-सलन फ़ुलां

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

रिश्तेदारों में लड़ाई हो जाए) की **दुआ** न करे। (स. 82) 《6》 अल्लाह عزوجل से सिर्फ़ ह़क़ीर चीज़ न मांगे कि परवर्द गार عزوجل ग़नी है बल्कि अपनी तमाम तवज्जोह उसी की त़रफ़ रखे और हर चीज़ का उसी से सुवाल करे। (स. 84) 《7》 रन्जो मुसीबत से घबरा कर अपने मरने की **दुआ** न करे। ख़याल रहे कि दुन्यवी नुक़्सान से बचने के लिये मौत की तमन्ना ना जाइज़ है और दीनी मुज़र्रत (या'नी दीनी नुक़्सान) के ख़ौफ़ से जाइज़ (स. 85,87) 《8》 बिला ज़रूरते शर-ई किसी के मरने और ख़राबी (बरबादी) की **दुआ** न करे, अलबत्ता अगर किसी काफ़िर के ईमान न लाने पर यक़ीन या ज़न्ने ग़ालिब हो और (उस के) जीने से दीन का नुक़्सान हो या किसी ज़ालिम से तौबा और ज़ुल्म छोड़ने की उम्मीद न हो और उस का मरना, तबाह होना मख़्लूक़ के ह़क़ में मुफ़ीद हो तो ऐसे शख़्स पर बद दुआ करना दुरुस्त है। (स. 87)

《9》 किसी मुसल्मान को येह बद दुआ न दे कि "तू काफ़िर हो जाए" कि बा'ज़ उ़-लमा के नज़दीक (ऐसी **दुआ** मांगना) कुफ़्र है और तह़क़ीक़ येह है कि अगर कुफ़्र को अच्छा या इस्लाम को बुरा जान कर कहे तो बेशक कुफ़्र है वरना बड़ा गुनाह है कि मुसल्मान की बद ख़्वाही (या'नी बुरा चाहना) ह़राम है, ख़ुसूसन येह बद ख़्वाही (कि फ़ुलां का ईमान बरबाद हो जाए) तो सब बद ख़्वाहियों से बदतर है। (स. 90)

《10》 **किसी** मुसल्मान पर ला'नत न करे और उसे मरदूद व मल्ऊ़न न कहे और जिस काफ़िर का कुफ़्र पर मरना यक़ीनी नहीं उस पर भी नाम ले कर ला'नत न करे। (स. 90) 《11》 **किसी** मुसल्मान को येह बद दुआ न दे कि "तुझ पर ख़ुदा عزوجل का ग़ज़ब नाज़िल हो और तू (भाड़ और) आग या दोज़ख़ में दाख़िल हो।" कि ह़दीस शरीफ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

में इस की मुमा-न-अ़त वारिद है। (स. 100) ﴾12﴿ जो काफ़िर मरा उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत ह़राम व कुफ़्र है। (स. 100) ﴾13﴿ येह **दुआ़** करना, "ख़ुदाया ! सब मुसल्मानों के सब गुनाह बख़्श दे।" जाइज़ नहीं कि इस में उन अह़ादीसे मुबा-रका की तक्ज़ीब (या'नी झुटलाना) होती है जिन में बा'ज़ मुसल्मान का दोज़ख़ में जाना वारिद हुवा। (स. 106) अलबत्ता यूं **दुआ़** करना "सारी उम्मते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मग़्फ़िरत (या'नी बख़्शिश) हो या सारे मुसल्मानों की मग़्फ़िरत हो" जाइज़ है। (स. 103) ﴾14﴿ अपने लिये और अपने दोस्त अह़बाब, अहलो माल और औलाद के लिये बद दुआ़ न करे, क्या मा'लूम कि क़बूलिय्यत का वक़्त हो और बद दुआ़ का असर ज़ाहिर होने पर नदामत हो। (स. 107) ﴾15﴿ जो चीज़ ह़ासिल हो (या'नी अपने पास मौजूद हो) उस की **दुआ़** न करे म-सलन मर्द यूं न कहे, "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मर्द कर दे" कि इस्तिह्ज़ा (मज़ाक़ बनाना) है। अलबत्ता ऐसी **दुआ़** जिस में शरीअ़त के हुक्म की ता'मील या आ़जिज़ी व बन्दगी का इज़्हार या परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ और मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत या दीन या अहले दीन की त़रफ़ रग़्बत या कुफ़्रो काफ़िरीन से नफ़्रत वग़ैरा के फ़वाइद निकलते हों वोह जाइज़ है अगर्चे इस अम्र का हुसूल यक़ीनी हो। जैसे दुरूद शरीफ़ पढ़ना, वसीले की, सिरात़े मुस्तक़ीम की अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मनों पर ग़ज़ब व ला'नत की **दुआ़** करना। (स. 108) ﴾16﴿ **दुआ़** में तंगी न करे म-सलन यूं न मांगे या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तन्हा मुझ पर रह़म फ़रमा या सिर्फ़ मुझे और मेरे फुलां फुलां दोस्त को ने'मत बख़्श। (स. 109) बेहतर येह है कि सब मुसल्मानों को **दुआ़** में शामिल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

कर ले इस का एक फ़ाएदा येह भी होगा कि अगर ख़ुद उस नेक बात का ह़क़दार न भी हुवा तो अच्छे मुसल्मानों के तुफ़ैल पा लेगा। ﴾17﴿ हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : मज़बूत़ अ़क़ीदे के साथ **दुआ** मांगे और क़बूलिय्यत का यक़ीन रखे। (احیاء العلوم ج ۱ ص ۷۷۰)

15 क़ुरआनी दुआएं

(1) رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ (پ۲ البقرة:۲۰۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

(2) رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِیْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ (پ۳ البقرة:۲۸۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें या चूकें।

(3) رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَیْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ (پ۳ البقرة:۲۸۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तूने हम से अगलों पर रखा था।

(4) رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَیْتَنَا وَ هَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۸﴾ (پ۳ ال عمرٰن:۸)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बा'द इस के कि तूने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रह़मत अ़ता कर बेशक तू है बड़ा देने वाला।

(5) رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۶﴾

(پ۳ ال عمرٰن:۱۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे हम ईमान लाए तो हमारे गुनाह मुआ़फ़ कर और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

(6) رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾ (پ٤ ال عمرٰن:۱۹۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे तो हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयां मह़्व फ़रमा दे और हमारी मौत अच्छों के साथ कर।

(7) رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۷﴾

(پ۸ الاعراف:۴۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न कर।

(8) رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿۱۲۶﴾

(پ۹ الاعراف:۱۲۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे और हमें मुसल्मान उठा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

(9) رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۖ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾ (پ۱۳ ابراھیم:۴۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब और हमारी दुआ़ सुन ले।

(10) رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿۴۱﴾ (پ۱۳ ابراھیم:۴۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसल्मानों को जिस दिन ह़िसाब क़ाइम होगा।

(11) رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَ ارْحَمْنَا وَ اَنْتَ خَیْرُ الرّٰحِمِیْنَ ﴿۱۰۹﴾

(پ۱۸ المؤمنون:۱۰۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब हम ईमान लाए तो हमें बख़्श दे और हम पर रह़्म कर और तू सब से बेहतर रह़्म करने वाला है।

(12) رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّیّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْیُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِیْنَ اِمَامًا ﴿۷۴﴾ (پ۱۹ الفرقان:۷۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم मुझ पर दुरूदे पाक की कस्रत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है।

और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेशवा बना।

(13) رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۰﴾

(پ۲۸ الحشر:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की त़रफ़ से कीना न रख ऐ रब हमारे बेशक तू ही निहायत मेहरबान रह़म वाला है।

(14) رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿۹۷﴾

(پ۱۸ المؤمنون:۹۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब तेरी पनाह शयात़ीन के वस्वसों से।

(15) رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿۲۴﴾

(پ۱۵ بنی اسراءیل:۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रह़म कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन (बचपन) में पाला।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग्फ़ार करते रहेंगे ।

दीन व दुन्या की भलाइयों वाली 49 दुआ़एं

(1) दुआ़ए मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर येह दुआ़ भी मांगा करते थे :

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِیْ عَلٰی دِیْنِكَ

या'नी ऐ दिलों के फैरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर क़ाइम रख । (مُسْنَدُ اِمَام اَحْمَد بن حَنْبَل، ج ٤ ص ٥١١ حديث١٣٦٩٧)

येह दुआ़ ता'लीमे उम्मत के लिये है ताकि लोग सुन कर सीख लें ।

(मिरआत, जि. 1 स. 109)

(2) सोते वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيَا

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे नाम के साथ ही मरता और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं) ।

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی ج٤ ص١٩٣ حدیث٦٣١٤)

(3) नींद से बेदार होने के बा'द की दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَحْیَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی ج٤ ص١٩٣ حدیث٦٣١٤)

तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** तआ़ला के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द ह़यात (बेदारी) अ़त़ा फ़रमाई और हमें उसी की त़रफ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है।

लौटना है।

(4) बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ

(صَحِیحُ البُخارِی ج٤ ص١٩٥ حدیث٦٣٢٢)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं नापाक जिन्न और जिन्नियों से तेरी पनाह मांगता हूं।

चूंकि पाख़ाने में गन्दे जिन्नात रहते हैं। इस लिये येह दुआ पढ़नी चाहिये। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1 स. 259)

(5) बैतुल ख़ला से बाहर आने के बा'द की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

(مُصَنَّفُ ابنُ اَبِی شَیْبَة ج٧ ص١٤٩ حدیث٢)

तरजमा : **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र है जिस ने मुझ से अज़िय्यत दूर की और मुझे आ़फ़िय्यत दी।

(6) घर में दाख़िल होते वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ خَیْرَ الْمَوْلَجِ وَخَیْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَی اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से दाख़िल होने और निकलने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआ़ला उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है।

की जगहों की भलाई त़लब करता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से हम अन्दर आए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से बाहर निकले और हम ने अपने रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया। (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج٤ ص ٤٢١ حدیث٥٠٩٦)

(7) घर से निकलते वक़्त की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج٤ ص٤٢٠ حدیث٥٠٩٥)

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, गुनाह से बचने की क़ुव्वत और नेकी करने की त़ाक़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है।

इस दुआ़ के पढ़ने पर ग़ैबी फ़िरिश्ता पढ़ने वाले से कहता है कि तूने बिस्मिल्लाह की ब-र-कत से **हिदायत** पाई और تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰه के वसीले से **किफ़ायत** और **लाहौल** के वासित़े से **हि़फ़ाज़त।**

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4 स. 48)

(8) खाना खाने से पहले की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ يَا حَىُّ يَا قَيُّوْمُ

(کَنْزُ الْعُمَّال ج١٥ ص١٠٩ حدیث٤٠٧٩٢)

तरजमा : **अल्लाह** तआ़ला के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की ब-र-कत से ज़मीन व आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती, ऐ हमेशा ज़िन्दा व क़ाइम रहने वाले।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

शुरूअ़ करने से क़ब्ल येह दुआ़ पढ़ ली जाए, अगर खाने पीने में ज़ह्‌र भी होगा तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ असर नहीं करेगा।

(9) खाने के बा'द की दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِیْنَ

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج ۳ ص۵۱۳ حدیث ۳۸۵۰)

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने हमें खिलाया, पिलाया और हमें मुसल्मान बनाया।

(10) दूध पीने के बा'द की दुआ़

اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لَنَا فِیْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج۳ ص۴۷۶ حدیث ۳۷۳۰)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ हमारे लिये इस में ब-र-कत दे और हमें इस से ज़ियादा इनायत फ़रमा।

(11) आईना देखते वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ

(اَلْحِصْنُ وَ الْحُصَیْن ص۱۰۲)

तरजमा : या **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ तूने मेरी सूरत तो अच्छी बनाई है मेरे अख़्लाक़ भी अच्छे कर दे।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जब तुम मुर्सलीन عَلَيۡهِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

(12) किसी मुसलमान को मुस्कराता देख कर पढ़ने की दुआ

اَضۡحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ

(صَحِيحُ البُخارِی ج۲ ص۴۰۳ حدیث۳۲۹۴)

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को हमेशा मुस्कराता रखे।

(13) शुक्रिया अदा करने की दुआ

جَزَاكَ اللّٰهُ خَيۡرًا

(سُنَنُ التِّرۡمِذِی ج۳ ص۴۱۷ حدیث۲۰۴۲)

तरजमा : **अल्लाह** तआ़ला तुझे जज़ाए ख़ैर दे।

इस मुख़्तसर से जुम्ले में उस की ने'मत का इक़रार भी हो गया अपने इ़ज्ज़ का इज़्हार भी हो गया और उस के ह़क़ में दुआ़ए ख़ैर भी, शुक्रिया का मक़्सद भी येही होता है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4 स. 257)

ह़दीस में है कि जो लोगों का शुक्रिया अदा न करे वोह **अल्लाह** का शुक्रिया भी अदा न करेगा।

(مِشۡکَاۃُ الۡمَصَابِیح ج۲ ص۵۵۷ حدیث۳۰۲۵)

(14) अदाए क़र्ज़ की दुआ

اَللّٰهُمَّ اكۡفِنِیۡ بِحَلَالِكَ عَنۡ حَرَامِكَ وَاَغۡنِنِیۡ بِفَضۡلِكَ عَمَّنۡ سِوَاكَ

(اَلۡمُسۡتَدۡرَك لِلۡحَاكِم ج۲ ص۲۳۰ حدیث ۲۰۱۶)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ मुझे ह़लाल रिज़्क़ अ़ता फ़रमा कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

ह़राम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे।

येह दुआ़ तीर ब हदफ़ नुस्ख़ा है अगर हर मुसल्मान हमेशा ही येह दुआ़ हर नमाज़ के बा'द ज़रूर एक बार पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ क़र्ज़ व ज़ुल्म से मह़फ़ूज़ रहेगा। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4 स. 51)

(15) ग़ुस्सा आने के वक़्त की दुआ़

اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

(صَحِيحُ البُخارِی ج٤ ص١٣١ حديث٦١١٥)

तरजमा : मैं शैत़ान मरदूद से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह चाहता हूं।

(16) इ़ल्म में इज़ाफ़े की दुआ़

رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ (پ١٦، طٰهٰ:١١٤)

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मुझे इ़ल्म ज़ियादा दे।

(17) शिआ़रे कुफ़्फ़ार को देखे या आवाज़ सुने तो येह दुआ़ पढ़े

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ
اِلٰهًا وَّاحِدًا لَّا نَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ

तरजमा : मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं, वोह मा'बूद यक्ता है हम सिर्फ़ उसी की इ़बादत करते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर रोजे़ जुमुआ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत में है कि मन्दरों के घन्टे और संख (नाकूस या'नी बड़ी कोड़ी जो मन्दरों में बजाई जाती है) की आवाज़ और गिर्जा वग़ैरा की इमारत को देख कर भी येह दुआ़ पढ़े।

(अल मल्फ़ूज़, हि़स्सए दुवुम, स. 235)

(18) मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلاً

(سُنَنُ التِّرْمِذِی ج٥ ص٢٧٢ حديث:٣٤٤٢)

तरजमा : **अल्लाह तआ़ला** का शुक्र है जिस ने मुझे इस मुसीबत से आ़फ़िय्यत दी जिस में तुझे मुब्तला किया और मुझे अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत दी।

जो शख़्स किसी बला रसीदा को देख कर येह दुआ़ पढ़ लेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस बला से मह़फ़ूज़ रहेगा। हर त़रह़ के अमराज़ व बला में मुब्तला को देख कर येह दुआ़ पढ़ सकते हैं। लेकिन तीन क़िस्म की बीमारियों में मुब्तला को देख कर येह दुआ़ न पढ़ी जाए इस लिये कि मन्कूल है कि तीन बीमारियों को मकरूह न रखो :

﴾1﴿ **ज़ुकाम** कि इस की वजह से बहुत सी बीमारियों की जड़ कट जाती है।

﴾2﴿ **खुजली** कि इस से अमराज़े **जिल्दिया** और जुज़ाम वग़ैरा का इन्सिदाद हो जाता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

﴾3﴿ **आशोबे** चश्म ना बीनाई को दफ़्अ़ करता है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सए अव्वल, स, 78, मलख़्ख़सन)

(इस दुआ़ को पढ़ते वक़्त इस बात का ख़याल रखें कि मुसीबत ज़दा तक आवाज़ न पहुंचे क्यूं कि इस से उस की दिल शिकनी हो सकती है।)

(19) मुर्ग़ की बांग सुन कर पढ़ने की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اَسْـَٔلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

(صَحِيحُ البُخارِی ج٢ ص٤٠٥ حديث٣٣٠٣ ماخوذًا)

तरजमा : **या इलाही** ! عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सुवाल करता हूं।

मुर्ग़ रह़मत का फ़िरिश्ता देख कर बोलता है, उस वक़्त की दुआ़ पर फ़िरिश्ते के आमीन कहने की उम्मीद है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4 स. 32)

(20) बारिश की ज़ियादती के वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا اَللّٰهُمَّ عَلَى الْاٰكَامِ

وَالظِّرَابِ وَبُطُوْنِ الْاَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ

(صَحِيحُ البُخارِی ج١ ص٣٤٨ حديث١٠١٤)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ हमारे इर्द गिर्द बरसा और हम पर न बरसा, ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ टीलों पर और पहाड़ियों पर और वादियों पर और दरख़्त उगने के मक़ामात पर बरसा। (या'नी जहां जानी व माली नुक़्सान होने का अन्देशा न हो)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

(21) आंधी के वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْاَلُكَ خَیْرَهَا وَخَیْرَ مَا فِیْهَا وَخَیْرَ مَاۤ اُرْسِلَتْ بِهٖ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِیْهَا وَشَرِّ مَاۤ اُرْسِلَتْ بِهٖ

(صَحِیح مُسلِم ص٤٤٦ حدیث٨٩٩)

तरजमा : **या इलाही** ! عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से इस (या'नी आंधी) की और जो कुछ इस में है और जिस के साथ येह भेजी गई है, उस की भलाई का सुवाल करता हूं और मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस (आंधी) के शर से और उस चीज़ के शर से जो इस में है और उस के शर से जिस के साथ येह भेजी गई है।

(22) सितारा टूटता देखते वक़्त की दुआ़

مَاشَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

(عَمَلُ الْیَوْمِ وَاللَّیْلَةِ ص١٩٨ حدیث٦٥٣)

तरजमा : जो **अल्लाह** तआ़ला चाहे, कोई कुव्वत नहीं मगर **अल्लाह** तआ़ला की मदद से।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रह़मतें भेजता है।

(23) बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त की दुआ़

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

(سُنَنُ التِّرْمِذِی ج۵ ص۲۷۱ حديث ۳۴۳۹)

तरजमा : **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है, वोही ज़िन्दा करता और मारता है वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ मौत नहीं आएगी, तमाम भलाइयां उसी के दस्ते क़ुदरत में हैं और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

अल्लाह तआ़ला इस (दुआ़ के पढ़ने वाले) के लिये **दस लाख नेकियां** लिखता है और उस के **दस लाख गुनाह** मिटाता है और उस के **दस लाख द-रजे बुलन्द** करता है और उस के लिये **जन्नत में घर** बनाता है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4 स. 39)

(24) बाज़ार में नुक़्सान न हो बल्कि फ़ाएदा हो

बाज़ार जाएं तो येह दुआ़ पढ़ें :

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ السُّوْقِ وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اُصِيْبَ فِيْهَا يَمِيْنًا فَاجِرَةً اَوْ صَفْقَةً خَاسِرَةً

(اَلْمُسْتَدْرَك لِلْحَاكِم ج٢ ص٢٣٢ حديث٢٠٢١)

इस दुआ की ब-र-कत से اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰى बाज़ार में ख़ूब नफ़्अ होगा और कोई घाटा नहीं होगा इस दुआ को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पढ़ा है। (जन्नती ज़ेवर, स. 580)

(25) शबे क़द्र की दुआ

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : मैं ने अपने सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में अ़र्ज़ की : "या **रसूलल्लाह**! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर मुझे शबे क़द्र का इ़ल्म हो जाए तो क्या पढ़ूं ?" सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस त़रह़ दुआ मांगो :

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّىْ

तरजमा : ऐ **अल्लाह**! عَزَّوَجَلَّ बेशक तू मुआफ़ फ़रमाने वाला, दर गुज़र फ़रमाने वाला है और मुआफ़ करने को पसन्द फ़रमाता है लिहाज़ा मुझे मुआफ़ फ़रमा दे। (سُنَنُ التِّرْمِذِى ج٥ ص٣٠٦ حديث٣٥٢٤)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

(26) इफ़्त़ार के वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ لَکَ صُمْتُ وَعَلٰی رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج۲ ص۴۴۷حدیث۲۳۵۸)

तरजमा : ऐ **अल्लाह**! عَزَّوَجَلَّ मैं ने तेरे लिये रोज़ा रखा और तेरे ही अ़ता कर्दा रिज़्क़ से इफ़्त़ार किया।

(27) आबे ज़म ज़म पीते वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اَسْاَلُکَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّشِفَآءً مِّنْ کُلِّ دَآءٍ

(اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحَاکِم ج۲ ص۱۳۲حدیث۱۷۸۲)

तरजमा : ऐ **अल्लाह**! عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से इ़ल्मे नाफ़ेअ़ का और रिज़्क़ की कुशा-दगी का और हर बीमारी से शिफ़ायाबी का सुवाल करता हूं।

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आबे ज़मज़म जिस काम के लिये पिया जाए (कार आमद है) आप इस को पीते वक़्त शिफ़ा त़लब करें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाएगा, और अगर पनाह मांगें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे पनाह अ़त़ा फ़रमाएगा।

(اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحَاکِم ج۲ ص۱۳۲حدیث ۱۷۸۲)

(28,29) नया लिबास पहनते वक़्त की दो दुआएं

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ مَآ اُوَارِیْ بِہٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِہٖ فِیْ حَیَاتِیْ

(سُنَنُ التِّرمِذِی ج۵ ص۳۲۷ حدیث۳۵۷۱)

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे वोह कपड़ा पहनाया जिस से मैं अपना सित्र छुपाता हूं और ज़िन्दगी में इस से ज़ीनत ह़ासिल करता हूं।

اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ کَسَوْتَنِیْہِ اَسْاَلُکَ خَیْرَہٗ وَخَیْرَ مَا صُنِعَ لَہٗ وَاَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّہٖ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَہٗ

(سُنَنُ التِّرمِذِی ج۳ ص۲۹۷ حدیث۱۷۷۳)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ तेरा शुक्र है तूने मुझे येह कपड़ा पहनाया मैं तुझ से इस की भलाई और जिस ग़रज़ के लिये येह बनाया गया है उस की भलाई मांगता हूं और इस की बुराई और जिस ग़रज़ के लिये येह बनाया गया है उस की बुराई से तेरी पनाह त़लब करता हूं।

(30) तेल लगाते वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला ।

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो बिग़ैर बिस्मिल्लाह पढ़े तेल लगाए तो उस के साथ सत्तर70 शैत़ान तेल लगाते हैं । (عَمَلُ الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ ص٦٢ حديث ١٧٤)

(31) लड़के के अ़क़ीके़ की दुआ़

اَللّٰھُمَّ ھٰذِہٖ عَقِیْقَةُ اِبْنِیْ (यहां पर लड़के का नाम लिया जाए) دَمُھَا بِدَمِہٖ

وَلَحْمُھَا بِلَحْمِہٖ وَعَظْمُھَا بِعَظْمِہٖ وَجِلْدُھَا بِجِلْدِہٖ

وَشَعْرُھَا بِشَعْرِہٖ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا فِدَآءً لِّابْنِیْ مِنَ النَّارِ

بِسْمِ اللّٰہِ اَللّٰہُ اَکْبَرُ

(दुआ़ ख़त्म कर के फ़ौरन ज़ब्ह़ कर दे) (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 575)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ येह मेरे फ़ुलां बेटे का अ़क़ीक़ा है, इस का ख़ून इस के ख़ून, इस का गोश्त इस के गोश्त, इस की हड्डी इस की हड्डी, इस का चमड़ा इस के चमड़े और इस के बाल, इस के बाल के बदले में हैं । ऐ **अल्लाह**! عَزَّوَجَلَّ इस को मेरे बेटे के लिये जहन्नम की आग से फ़िदया बना दे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم मुझ पर कस्रत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है।

(32) लड़की के अ़क़ीके़ की दुआ

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ بِنْتِیْ (यहां पर लड़की का नाम लिया जाए) دَمُهَا بِدَمِهَا وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهَا وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهَا وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهَا وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهَا اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَآءً لِّبِنْتِیْ مِنَ النَّارِ

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

(दुआ ख़त्म कर के फ़ौरन ज़ब्ह़ कर दे) (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 585)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ येह मेरी फुलां बेटी का अ़क़ीक़ा है, इस का ख़ून इस के ख़ून, इस का गोश्त इस के गोश्त, इस की हड्डी इस की हड्डी, इस का चमड़ा इस के चमड़े और इस के बाल, इस के बाल के बदले में हैं। ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ इस को मेरी बेटी के लिये जहन्नम की आग से फ़िदया बना दे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है।

(33) सुवारी पर इत़्मीनान से बैठ जाने पर दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّآ اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج٣ ص٤٩ حديث:٢٦٠٢)

तरजमा : **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र है, पाकी है उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते (त़ाक़त) की न थी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज्र लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है।

और बेशक हमें अपने रब की त़रफ़ पलटना है।

(34) जब कोई शगून दिल में खटके उस वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ لَا يَأْتِيْ بِالْحَسَنَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا يَدْفَعُ السَّيِّئَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ

(سُنَنْ اَبِی دَاوُد ج٤ ص٢٥ حديث٣٩١٩)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ तू ही भलाई अ़त़ा फ़रमाता है और तू ही बुराई दूर करता है और गुनाह से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की कुव्वत तेरी ही मदद से है।

बद शगूनी की इस्लाम में कोई ह़क़ीक़त नहीं है। म-सलन बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि अगर उन के सामने से काली बिल्ली रास्ता काट कर गुज़र जाए तो कहते हैं कि हमारे लिये बुरा हुवा, हम जिस मक़्सद के लिये जा रहे थे वोह पूरा न होगा लिहाज़ा वापस घर लौट जाते हैं और दोबारा फिर जिस मक़्सद के लिये घर से निकले थे उस काम के लिये रवाना होते हैं। याद रहे कि इस्लाम में ऐसे तवह्हुमात (वहमों) और बद शगूनियों की कोई ह़क़ीक़त नहीं है, इन से इज्तिनाब ज़रूरी है, अगर दिल में कभी ऐसी बात खटके तो येह दुआ़ पढ़े कि इस दुआ़ में मुसल्मानों को ता'लीम दी गई है कि मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी **अल्लाह** तआ़ला है। वोह जो चाहता है वोही होता है येही बात अगर बन्दए मोमिन हमेशा अपने पेशे नज़र रखे तो तमाम तवह्हुमात और बद शगूनियों से छुटकारा हो जाए। اِنْ شَاءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

(35,36) नज़रे बद लगने पर पढ़े

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ○

(پ۲۹ القلم:۵۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़रूर काफ़िर तो ऐसे मा'लूम होते हैं कि गोया अपनी बद नज़र लगा कर तुम्हें गिरा देंगे, जब कुरआन सुनते हैं और कहते हैं येह ज़रूर अ़क्ल से दूर हैं।

येह आयत नज़रे बद से बचने के लिये इक्सीर है।

(नूरुल इरफ़ान, स. 971)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : जिस को नज़र लगे उस पर येह आयत पढ़ कर दम कर दी जाए।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 1019)

اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنْهُ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا

(اَلْمُسْتَدْرَك لِلْحَاكِم ج۵، ص۳۰۵ حديث: ۷۵۷۵)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ इस (नज़रे बद) की गरमी, सर्दी और मुसीबत इस से दूर कर दे।

(37) जल जाने पर पढ़ने की दुआ

اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ ط اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ لَا شَافِيَ اِلَّا اَنْتَ

(سُنَنُ الْكُبْرٰى لِلنَّسَائِى ج۶ ص۲۵۴ حديث ۱۰۸۶۴)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

तरजमा : ऐ तमाम लोगों के रब ! عَزَّوَجَلَّ तक्लीफ़ दूर फ़रमा, शिफ़ा दे तू ही शिफ़ा देने वाला है तेरे सिवा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं।

(38) ज़हरीले जानवरों से महफ़ूज़ रहने की दुआ

नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े मगरिब के बा'द हर रोज़ तीन बार येह दुआ पढ़े अव्वल व आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ ले।

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

तरजमा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पूरे और कामिल कलिमात के साथ मख़्लूक़ के शर से पनाह लेता हूं। (यहां मख़्लूक़ से मुराद वोह मख़्लूक़ है जिस से शर हो सके) फिर येह पढ़े :

येह दुआ सफ़र व हज़र में हमेशा ही सुब्ह व शाम पढ़ा कीजिये, ज़हरीली चीज़ों से महफ़ूज़ रहेंगे, बहुत मुजर्रब है।

(मिरआत, जि. 4 स. 35)

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ○ (پ ۲۳ الصفت: ۷۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : नूह़ पर सलाम हो जहान वालों में।

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो ज़हरीले जानवरों सांप बिच्छू वग़ैरा से महफ़ूज़ रहेगा। निहायत मुजर्रब है। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 128)

(39) किसी क़ौम से ख़तरे के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِىْ نُحُوْرِهِمْ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ

(سُنَنُ اَبی دَاوٗد ج۲ ص۱۲۷ حدیث۱۵۳۷)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम तुझे दुश्मनों के मुक़ाबिल करते हैं और उन की शरारतों से तेरी पनाह चाहते हैं।

(40) सख़्त ख़तरे के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَاٰمِنْ رَوْعَاتِنَا

(مُسْنَدْ اِمَام اَحْمَدبن حَنْبَل ج٤ ص٨ حدیث١٠٩٩٦)

तरजमा : **इलाही !** عَزَّوَجَلَّ हमारी पर्दादारी फ़रमा और हमारी घबराहट को बे ख़ौफ़ी व इत़्मीनान से बदल दे।

(41) ज़बान की लुक्नत की दुआ

رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿۲۵﴾ وَيَسِّرْ لِيْۤ اَمْرِيْ ﴿۲۶﴾
وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ﴿۲۷﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿۲۸﴾

(پ١٦ طٰهٰ:٢٥تا٢٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे कि वोह मेरी बात समझें।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

(42) कुफ़्र व फ़क़्र से पनाह की दुआ

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُ بِكَ مِنَ الۡكُفۡرِ وَالۡفَقۡرِ وَعَذَابِ الۡقَبۡرِ

(سُنَنُ النَّسَائی ص۲۳۱ حدیث ۱۳۴٤)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं कुफ़्र, फ़क़्र और अ़ज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह चाहता हूं।

(43,44) इ़यादत करते वक़्त की दो दुआएं

لَا بَأۡسَ طَھُوۡرٌ اِنۡ شَآءَ اللّٰهُ

(صَحِیحُ البُخارِی ج۲ ص۵۰۵ حدیث ۳٦۱٦)

तरजमा : कोई ह़रज की बात नहीं اِنۡ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह मरज़ गुनाहों से पाक करने वाला है।

اَسۡأَلُ اللّٰهَ الۡعَظِیۡمَ رَبَّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِیۡمِ اَنۡ یَّشۡفِیَكَ

(سُنَنُ اَبی دَاوٗد ج۳،ص۲۵۱ حدیث ۳۱۰٦)

तरजमा : मैं अ़-ज़मत वाले से सुवाल करता हूं जो अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है कि वोह तुझे शिफ़ा दे।

(45) मुसीबत के वक़्त की दुआ

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیۡهِ رَاجِعُوۡنَ ○ اَللّٰھُمَّ اَجِرۡنِیۡ فِیۡ مُصِیۡبَتِیۡ وَاَخۡلِفۡ لِیۡ خَیۡرًا مِّنۡھَا

(صَحِیح مُسلِم ص٤۵۷ حدیث ۹۱۸)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे।

तरजमा : बेशक हम **अल्लाह** तआला के हैं और बेशक हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं, ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ मेरी मुसीबत में मुझे अज्र दे और मुझे इस से बेहतर अता फ़रमा।

(46) ता'ज़िय्यत करते वक़्त की दुआ

اِنَّ لِلّٰهِ مَآ اَخَذَ وَلَهٗ مَآ اَعْطٰى وَكُلٌّ عِنْدَهٗ بِاَجَلٍ مُّسَمًّى فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ

(صَحِيحُ البُخارِى ج١ ص٤٣٤ حديث١٢٨٤)

तरजमा : बेशक **अल्लाह** तआला ही का है जो उस ने ले लिया और जो कुछ उस ने दिया है और हर चीज़ की उस की बारगाह में मीआद मुक़र्रर है पस चाहिये कि तू सब्र करे और सवाब की उम्मीद रखे।

(47) कफ़न पर लिखने की दुआएं

जो येह दुआ मय्यित के कफ़न पर लिखे **अल्लाह** तआला क़ियामत तक उस से अज़ाब उठा ले। वोह दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ يَا عَالِمَ السِّرِّ يَا عَظِيْمَ الْخَطَرِ يَا خَالِقَ الْبَشَرِ يَا مُوْقِعَ الظَّفَرِ يَا مَعْرُوْفَ الْاَثَرِ يَا ذَا الطَّوْلِ وَالْمَنِّ يَا كَاشِفَ الضَّرِّ وَالْمِحَنِ يَا اِلٰهَ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ فَرِّجْ عَنِّىْ هُمُوْمِىْ وَاكْشِفْ عَنِّىْ غُمُوْمِىْ وَصَلِّ اللّٰهُمَّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّسَلِّمْ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा।

जो येह दुआ किसी परचे पर लिख कर सीने पर कफ़न के नीचे रख दे उसे **अ़ज़ाबे क़ब्र** न हो न मुन्कर नकीर नज़र आएं और वोह दुआ येह है :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि.9, स. 108,110)

म-दनी फूल : बेहतर येह है कि येह परचा (बल्कि अ़हद नामा और श-जरा वग़ैरा) मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ला की जानिब (क़ब्र की अन्दरूनी दीवार में) ताक़ खोद कर उस में रखें।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 848)

म-दनी मश्वरा : कुछ परचे अपने पास रख लीजिये और मुसल्मानों की फ़ौतगी के मवाक़ेअ़ पर पेश कर के सवाब कमाइये नीज़ कफ़न फ़रोशों और तज्हीज़ व तक्फ़ीन करने वाले समाजी इदारों को भी पेश कीजिये कि वोह हर मुसल्मान के लिये कफ़न के साथ एक परचा फ़ी सबीलिल्लाह दे दिया करें।

(48) दुआ बराए रोशनिये चश्म

आ-यतुल कुरसी हर नमाज़ के बा'द एक बार पढ़ी जाए और नमाज़े पन्जगाना की पाबन्दी करे जिन दिनों में औरत को नमाज़ का हुक्म नहीं उन में भी पांचों नमाज़ के वक़्त आ-यतुल कुरसी इस निय्यत से कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ है न इस निय्यत से कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह्मतें भेजता है।

कलामुल्लाह है पढ़ ले और जब इस कलिमे पर पहुंचे وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا दोनों हाथों की उंग्लियों के पोरे आंखों पर रख कर इस कलिमे को ग्यारह बार कहे फिर दोनों हाथों की उंग्लियों पर दम कर के आंखों पर फैर ले।

(49) फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द की दुआएं

हर नमाज़ के बा'द पेशानी या'नी सर के अगले हिस्से पर हाथ रख कर पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ

اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّی الْهَمَّ وَالْحُزْنَ

(مَجْمَعُ الزَّوائِد ج١٠ ص١٤٤ حديث١٦٩٧١)

और हाथ खींच कर माथे तक लाए।

(बहारे शरीअ़त, जि. अव्वल, हिस्सए सिवुम, स. 539)

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह रह्मान व रहीम है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से ग़म व रन्ज को दूर कर दे।

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِكَ وَ شُکْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج٢ ص١٢٣ حديث١٥٢٢)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू अपने ज़िक्र व शुक्र और हुस्ने इबादत पर मेरी मदद फ़रमा।

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

(صحيح مسلم ص٢٩٨ حديث ٥٩٢)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू सलामती देने वाला है और तेरी ही त़रफ़ से सलामती है तू ब-र-कत वाला है ऐ जलाल व बुज़ुर्गी वाले।

अ़हद नामा

जो हर नमाज़ (या'नी फ़र्ज़ व सुन्नतें वग़ैरा पढ़ने) के बा'द अ़हद नामा पढ़े, फ़िरिश्ते उसे लिख कर मोहर लगा कर क़ियामत के लिये उठा रखे, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे को क़ब्र से उठाए, फ़िरिश्ता वोह नविश्ता (या'नी दस्तावेज़) साथ लाए और निदा की जाए अ़हद वाले कहां हैं, उन्हें वोह अ़हद नामा दिया जाए। इमाम ह़कीम तिरमिज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इसे रिवायत कर के फ़रमाया, इमाम त़ाऊस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वसिय्यत से येह अ़हद नामा उन के कफ़न में लिखा गया। (اَلدُّرُّالْمَنْثُوْر ج٥ ص٥٤٢)

अ़हद नामा येह है :

اَللّٰھُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّھَادَۃِ الرَّحْمٰنَ الرَّحِیْمَ اِنِّیْٓ اَعْھَدُ اِلَیْکَ فِیْ ھٰذِہِ الْحَیَاۃِ الدُّنْیَا بِاَنَّکَ اَنْتَ اللّٰہُ الَّذِیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُکَ وَرَسُوْلُکَ فَلَا تَکِلْنِیْٓ اِلٰی نَفْسِیْ فَاِنَّکَ اِنْ تَکِلْنِیْ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

اِلٰی نَفْسِیْ تُقَرِّبُنِیْ مِنَ الشَّرِّ وَتُبَاعِدُنِیْ مِنَ الْخَیْرِ وَاِنِّیْ لَا اَثِقُ اِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ لِیْ عَهْدًا عِنْدَكَ تُؤَدِّیْهِ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ

(اَلدُّرُّالْمَنْثُوْر ج٥ ص٥٤٢)

म-दनी फूल : बेहतर येह है कि अ़हद नामा (बल्कि श-जरा वग़ैरा) मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ला की जानिब (क़ब्र की अन्दरूनी दीवार में) ताक़ खोद कर उस में रखें। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 848)

म-दनी मश्वरा

रोज़ाना ही सोने से क़ब्ल एह़तियाती तौबा व तज्दीदे ईमान कर लेना चाहिये। याद रखिये ! مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ जिस का **कुफ़्र** पर ख़ातिमा हुवा वोह हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम की आग में जलता और अ़ज़ाब पाता रहेगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैज़ाने अवराद

रह़मतों की बरसात

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह तआला तुम पर **रह़मत** भेजेगा ।"

(الكامل في ضعفاء الرجال ج٥ ص٥٠٥ حديث ١١٤١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बुज़ुर्गों से मन्क़ूल 38 म-दनी वज़ाइफ़

(1) डरावने ख़्वाबों से नजात

"يَا مُتَكَبِّرُ" 21 बार, अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ सोते वक़्त पढ़ लेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ डरावने ख़्वाब नहीं आएंगे । (फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब आदाबे त़आम, जि. 1, स. 242)

(2) जानवर के काटे का अ़मल

येह आयते करीमा हर जानवर के काटे के लिये इक्सीर है, **ग्यारह बार** पढ़ कर काटने की जगह पर दम करे :

اَمْ اَبْرَمُوْۤا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿۷۹﴾ (پ٢٥ الزخرف:٧٩)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रह़मतें भेजता है।

(3) बराए दफ़्ए बवासीर ख़ूनी व बादी

हर क़िस्म की बवासीर ख़ूनी व बादी के लिये दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े पहली रक्अ़त में बा'द **अल ह़म्द** शरीफ़ के सूरए **अलम नशरह़**, दूसरी में सूरए **फ़ील** और सलाम के बा'द सत्तर बार कहे :

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ

سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

चन्द रोज़ इसी त़रह़ करे اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی बवासीर दफ़्अ़ हो।

(4) फ़ालिज व लक़्वा

लक़्वा व फ़ालिज : सूरए ज़िलज़ाल लोहे (STEEL) के बरतन पर लिख कर धो कर पिलाई जाए।

दीगर तरकीब : सूरए ज़िलज़िलत लोहे (STEEL) के बरतन में लिख कर दें कि मरीज़ उस पर देखे اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی सिह़ह़त होगी।

(5) बराए क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से क़ब्ल ज़ैल में दी हुई दुआ़ (अव्वल आख़िर दुरूदे पाक) पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद** रहेगा :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ! (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

(6) ज़ेह्न खोलने के लिये

हर रोज़ सबक़ से पहले इक्तालीस मर्तबा पढ़ कर सबक़ शुरूअ़ करें :

اِلٰھِیْ اَنْتَ اِلٰہٌ عَالِمٌ وَّاَنَا عَبْدُكَ جَاھِلٌ اَسْئَلُكَ اَنْ تَرْزُقَنِیْ عِلْمًا نَّافِعًا وَّ فَھْمًا کَامِلًا وَّطَبْعًا زَکِیًّا وَّ قَلْبًا صَفِیًّا حَتّٰی اَعْبُدَكَ وَلَا تُھْلِکْنِیْ بِالْجَھَالَۃِ بِرَحْمَتِكَ یَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

(7) कोढ़ और पीलिया

सूरए बय्यिनह पढ़ कर **बरस व यरक़ान** (या'नी कोढ़ और पीलिया) वाले पर दम करें और लिख कर गले में डालें। खाने पर दोनों वक़्त येह सूरह सह़ीह़ ख़्वां (या'नी दुरुस्त पढ़ने वाले) से पढ़वा कर दम कर के खिलाएं ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ चाहे बहुत ज़ियादा फ़ाएदा हो।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

(8) वुस्अ़ते रिज़्क़

"یَامُسَبِّبَ الْاَسْبَابِ" पांच सो बार अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ 11, 11 बार बा'द नमाज़े इशा क़िब्ला रू बा वुज़ू **नंगे सर** ऐसी जगह कि सर और आस्मान के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल न हो, यहां तक की सर पर टोपी भी न हो पढ़ा करें।

(9) तलाशे मआ़श

तलाशे मआ़श के लिये सूरए इख़्लास को बिस्मिल्लाह शरीफ़ के साथ एक हज़ार एक बार, अव्वल व आख़िर सो सो मर्तबा दुरूद शरीफ़, उ़रूजे माह (या'नी चांद की पहली से चौदहवीं तक के ज़माने) में पढ़ना निहायत मुअस्सिर है।

(10) कभी मोह़ताज न हो

जो शख़्स हर रात में सूरए वाक़िआ़ पढ़ेगा उस को कभी **फ़ाक़ा** न होगा। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ (مشکاۃ المصابیح ج۱ ص۴۰۹ حدیث۲۱۸۱)

ह़ज़रते ख़्वाजा कलीमुल्लाह साह़िब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अदाए क़र्ज़ और फ़ाक़ा दूर करने के लिये इस को बा'दे मग़रिब पढ़ो। (जन्नती ज़ेवर, स. 597)

(11) चोरी से मह़फ़ूज़ रहे

सूरए तौबा को अपने अस्बाब में रखे اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ चोरी से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(12) गुमशुदा शै के मिलने का अ़मल

चालीस बार सूरए **यासीन** शरीफ़ सात दिन तक पढ़े।

(13) बराए क़ज़ाए ह़ाजात

ह़दीस शरीफ़ में है हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि मुझे एक ऐसी आयत मा'लूम है कि अगर लोग उस पर आ़मिल हों तो उन की ह़ाजतों को काफ़ी है फिर येह आयते करीमा इर्शाद फ़रमाई। (अदाए क़र्ज़ और रोज़ी व रोज़गार के लिये इस की कसरत मुफ़ीद व मुजर्रब है।)

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَیْءٍ قَدْرًا ﴿۳﴾

(پ۲۸ الطلاق:۲،۳)

(14) हर ह़ाजत व मुराद पूरी होगी

हज़ार बार "يَا شَيْخ عَبْدَالْقَادِر شَيْئًا لِّلّٰهِ" पढ़े अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ 10, 10 बार पढ़ कर दाहिने हाथ पर दम कर के ज़ेरे कल्ला (रुख़्सार) रख कर सो जाए हर ह़ाजत व मुराद पूरी होगी। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे।

(15) बर्फ़ बारी रोकने के लिये

लोहे के तवे पर सियाही की त़रफ़ (या'नी तवे की उलटी त़रफ़) इस दुआ़ को उंगली से लिख कर आस्मान के नीचे रखे اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ बर्फ़ बारी बन्द हो जाएगी : يَاحَافِظُ يَاخَافِضُ

(16) ग़ाइब या भागे हुए शख़्स को बुलाने के लिये

《अलिफ़》 किसी बुज़ुर्ग के मज़ार के पास और येह मुम्किन न हो तो मकान के गोशे में बैठ कर आयत :

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۝ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ۝

(پ ۳۰ الضحٰی:۸،۷) नव सो नव्वे बार पढ़े फिर एक बार पूरी सूरए **वद्दुहा** पढ़ कर दुआ़ करे اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ वोह वापस आ जाएगा।

《बा》 बा'द नमाज़े इशा इक्तालीस बार सूरए **वद्दुहा** मअ़ बिस्मिल्लाह शरीफ़ के पढ़ कर खड़े हो कर मकान के दो गोशों में अज़ान और दो गोशों में तक्बीर कह कर वापसी के लिये दुआ़ करे एक हफ़्ते के अन्दर اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ वापस आ जाएगा।

(17) ज़ह्र का असर न हो

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم मुझ पर कस्रत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।

हमेशा येह दुआ़ पढ़ कर खाना खाएं और पानी वग़ैरा पियें तो اِنْ شَآءَ اللہ تعالٰی **जहर** का असर दूर हो जाएगा और ज़ह्र कोई नुक़्सान नहीं देगा। (जन्नती ज़ेवर, स. 579)

(18) बुख़ार से शिफ़ा

जिस को बुख़ार हो सात बार येह दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَّعَّارٍ وَّمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ

(المستدرك للحاكم ج٥ ص٥٩٢ حديث٨٣٢٤)

अगर मरीज़ ख़ुद न पढ़ सके तो कोई दूसरा नमाज़ी आदमी सात बार पढ़ कर दम कर दे या पानी पर दम कर के पिला दे اِنْ شَآءَ اللہ تعالٰی बुख़ार **उतर** जाएगा। एक मर्तबा में **बुख़ार** न उतरे तो बार बार येह अ़मल करें। (जन्नती ज़ेवर, स. 580)

(19) ज़ालिम और शैतान के शर से पनाह के लिये

मुह़क़्क़िक़े अ़लल इत़्लाक़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी علیہ رحمۃ اللہ الغنی अपने एक मक्तूब में लिखते हैं :

सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ "जम्उ़ल जवामेअ़" में मुह़द्दिस अबुश्शैख़ की किताबुस्सवाब और तारीख़े इब्ने अ़साकिर से नक़्ल करते हैं कि एक रोज़ ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी ज़ालिम गवर्नर ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुख़्तलिफ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है।

अक़्साम के 400 **घोड़े** दिखा कर कहा कि ऐ अनस ! क्या तुम ने अपने साहि़ब (या'नी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के पास भी इतने घोड़े और येह शानो शौकत देखी है ? ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास इस से बेहतर चीज़ें देखी हैं और मैं ने हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है कि घोड़े तीन त़रह़ के हैं, एक वोह घोड़ा जो **जिहाद** के लिये रखा जाए फिर उस के रखने का सवाब बयान फ़रमाया (येह आ़म त़ौर पर ह़दीस की किताबों में मौजूद है) दूसरा वोह घोड़ा जो **अपनी सुवारी** के लिये रखा जाता है, तीसरा वोह घोड़ा जो **नाम व नुमूद** के लिये रखा जाता है इस के रखने से आदमी जहन्नम में जाएगा। ऐ ह़ज्जाज ! तेरे घोड़े ऐसे ही हैं।

ह़ज्जाज येह सुन कर आग बगूला हो गया और कहा कि ऐ अनस ! अगर मुझ को इस का लिह़ाज़ न होता कि तुम ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत की है और अमीरुल मुअमिनीन (अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान) ने तुम्हारे साथ रिआ़यत करने की हिदायत की है तो मैं तुम्हारे साथ बहुत बुरा मुआ़-मला कर डालता। **ह़ज़रते सय्यिदुना अनस** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : ऐ ह़ज्जाज ! ख़ुदा की क़सम ! तू मेरे साथ कोई बद उ़न्वानी नहीं कर सकता मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से चन्द कलिमात सुने हैं जिन की ब-र-कत से मैं हमेशा **अल्लाह तआ़ला** की पनाह में रहता हूं और इन कलिमात की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

बदौलत किसी ज़ालिम की सख़्ती और किसी शैतान के शर से डरता ही नहीं, हज्जाज इस कलाम की हैबत से **दम बख़ुद** रह गया और सर झुका लिया, थोड़ी देर के बा'द सर उठा कर बोला कि **ऐ अबू हम्ज़ा** ! (येह हज़रते सय्यिदुना अनस की कुन्यत है) येह कलिमात मुझे बता दीजिये। हज़रते **सय्यिदुना अनस** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं हरगिज़ तुझे न बताऊंगा इस लिये कि तू इस का अहल नहीं है। रावी का बयान है कि जब हज़रते **सय्यिदुना अनस** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का आख़िरी वक़्त आ गया तो उन के ख़ादिम हज़रते **सय्यिदुना अबान** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन के सिरहाने आ कर रोने लगे, हज़रते **सय्यिदुना अनस** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : क्या चाहता है ? हज़रते **सय्यिदुना अबान** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अर्ज़ की : वोह कलिमात हमें ता'लीम फ़रमाइये जिन के बताने की हज्जाज ने दर-ख़्वास्त की थी और आप ने इन्कार फ़रमा दिया था। हज़रते **सय्यिदुना अनस** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : लो सीख लो इन को सुब्ह व शाम पढ़ना। वोह कलिमात येह हैं :

दुआए सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى نَفْسِىْ وَدِيْنِىْ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى اَهْلِىْ
وَمَالِىْ وَوَلَدِىْ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى مَا اَعْطَانِىَ اللّٰهُ اَللّٰهُ
رَبِّىْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ
اَكْبَرُ وَاَعَزُّ وَاَجَلُّ وَاَعْظَمُ مِمَّا اَخَافُ وَاَحْذَرُ عَزَّ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जब तुम मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَآؤُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ ؕ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّرِيْدٍ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ

इस दुआ को तीन मर्तबा सुब्ह को और तीन मर्तबा शाम को पढ़ना बुज़ुर्गों का मा'मूल है। (जन्नती ज़ेवर, स. 583, अख़बारुल अख़्यार, स. 292)

सुब्ह व शाम की ता'रीफ़ : आधी रात के बा'द से ले कर सूरज की पहली किरन चमकने तक **सुब्ह** (इस सारे वक़्फ़े में जो कुछ पढ़ा जाए उसे सुब्ह में पढ़ना कहेंगे) और इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर से गुरूबे आफ़्ताब तक **शाम** कहलाती है। (इस सारे वक़्फ़े में जो कुछ पढ़ा जाए उसे शाम में पढ़ना कहेंगे)

(20) कुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये

पांचों नमाज़ों के बा'द सर पर दाहिना हाथ रख कर ग्यारह मर्तबा **يَا قَوِيُّ** पढ़ें। (जन्नती ज़ेवर, स. 605)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

(21) बीनाई की हि़फ़ाज़त के लिये

पांचों नमाज़ों के बा'द ग्यारह मर्तबा يَا نُوْرُ पढ़ कर दोनों हाथों के पोरों पर दम कर के आंखों पर फैर लीजिये।

(जन्नती ज़ेवर,स. 606)

(22) ज़बान में लुक्नत

फ़ज्र की नमाज़ पढ़ कर एक पाक कंकरी मुंह में रख कर येह आयत इक्कीस मर्तबा पढ़िये : (ऐज़न)

رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ ﴿۲۵﴾ لا وَیَسِّرْ لِیْۤ اَمْرِیْ ﴿۲۶﴾ لا
وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ ﴿۲۷﴾ لا یَفْقَهُوْا قَوْلِیْ ﴿۲۸﴾ ص

(23) पेट के दर्द के लिये

येह आयत पानी वग़ैरा पर तीन बार पढ़ कर पिला दीजिये या लिख कर पेट पर बांध दीजिये : (जन्नती ज़ेवर,स. 606)

لَا فِیْهَا غَوْلٌ وَّ لَا هُمْ عَنْهَا یُنْزَفُوْنَ ﴿۴۷﴾ (پ ۲۳ الصّٰفّٰت:۴۷)

(24) तिल्ली बढ़ जाना

इस आयत को लिख कर तिल्ली की जगह बांधें : (ऐज़न)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

ذٰلِكَ تَخْفِیْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ رَحْمَةٌ ط

(پ ۲ البقرة:۱۷۸)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

(25) नाफ़ उतर जाना

(अलिफ़) इस आयत को लिख कर नाफ़ की जगह बांधिये :

(जन्नती ज़ेवर, स. 606)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ
اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۱﴾

(پ۲۲ فاطر:۴۱)

(बा) **ता हुसूले** शिफ़ा रोज़ाना एक बार नाफ़ पर हाथ रख कर अव्वल आख़िर एक मर्तबा दुरूद शरीफ़ के साथ ज़ैल की आयात सात बार पढ़ कर दम कीजिये। (येह अमल सगे मदीना का मुजर्रब है)

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ
الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ۭ فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ
مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاۗءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاۗءَ تَاْوِيْلِهٖ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ
اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ
رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۷﴾ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ
اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۸﴾

(پ۳ اٰلِ عمران:۸،۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم जो शख़्स़ मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

(26) बुख़ार

(अलिफ़) अगर बिग़ैर जाड़े के हो तो येह आयत लिख कर गले में बांधिये और इसी को पढ़ कर दम कीजिये।

(जन्नती ज़ेवर,स. 606)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

قُلۡنَا یٰنَارُ کُوۡنِیۡ بَرۡدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤی اِبۡرٰہِیۡمَ ﴿ۙ۶۹﴾

(پ۱۷ الانبیاء:۶۹)

(बा) अगर बुख़ार जाड़े के साथ हो तो येह आयत लिख कर गले में बांधे। (जन्नती ज़ेवर,स. 606)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

بِسۡمِ اللّٰہِ مَجۡرٖىہَا وَ مُرۡسٰىہَا ؕ اِنَّ رَبِّیۡ لَغَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۴۱﴾

(پ۱۲ ھود:۴۱)

(27) फोड़ा फुन्सी

पाक साफ़ ढेला पीस कर उस पर येह दुआ़ तीन मर्तबा पढ़ कर थूके और उस मिट्टी पर थोड़ा पानी छिड़क कर वोह मिट्टी तक्लीफ़ की जगह पर दिन में दो चार बार मल लिया करे चाहे फोड़े पर येह मिट्टी लगा कर पट्टी बांध दे। (जन्नती ज़ेवर,स. 607)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

اِنَّہُمۡ یَکِیۡدُوۡنَ کَیۡدًا ﴿ۙ۱۵﴾ وَّ اَکِیۡدُ کَیۡدًا ﴿ۚ۱۶﴾

فَمَہِّلِ الۡکٰفِرِیۡنَ اَمۡہِلۡہُمۡ رُوَیۡدًا ﴿۱۷﴾

(پ۳۰ الطارق:۱۵۔۱۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

(28) पागल कुत्ते का काट लेना

ऊपर ज़िक्र की हुई आयत को रोटी या बिस्कुट के चालीस टुकड़ों पर लिख कर एक टुकड़ा रोज़ उस शख़्स को खिला दें, اِنْ شَآءَ اللہ تَعَالٰی उस शख़्स को बावला पन और हड़क न होगी।

(जन्नती ज़ेवर,स. 607)

(29) बांझ पन

चालीस लोंगें ले कर हर एक पर सात सात बार इस आयत को पढ़े और जिस दिन औ़रत हैज़ से पाक हो कर ग़ुस्ल करे उस दिन से एक **लोंग** रोज़ मर्रा सोते वक़्त खाना शुरूअ़ करे और उस पर पानी न पीवे और इस दरमियान में ज़रूर शोहर के साथ तख़्लिया करे। आयत येह है। (जन्नती ज़ेवर,स. 607)

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِیْ بَحْرٍ لُّجِّیٍّ یَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَاۤ اَخْرَجَ یَدَهٗ لَمْ یَكَدْ یَرٰىهَا ؕ وَ مَنْ لَّمْ یَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿۴۰﴾

(پ ۱۸ النور ۴۰)

اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ औलाद मिलेगी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

(30) अगर पेट में बच्चा टेढा हो गया तो...

सूरए इन्शिक़ाक़ की इब्तिदाई पांच आयात तीन बार पढ़े। (अव्वल व आख़िर तीन मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े) आयतों के शुरूअ़ में हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ ले। पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले। रोजाना येह अ़मल करती रहे। वक़्तन फ वक़्तन इन आयात का विर्द करती रहे। दूसरा कोई भी दम कर के दे सकता है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बच्चा सीधा हो जाएगा दर्दे ज़ेह के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है।

(31) हैज़ा

हर खाने पीने की चीज़ पर सूरए क़द्र पढ़ कर दम कर लिया करें اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हिफ़ाज़त रहेगी और जिस को मरज़ हो जाए उस को भी किसी चीज़ पर दम कर के खिलाएं पिलाएं اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा हासिल होगी। (जन्नती ज़ेवर,स. 609)

(32) कै, दर्द, दर्दे शिकम के लिये

इस आयते करीमा को लिख कर पिलाएं :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝

(پ ۲۳ يس:۷۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

(33) दर्दे आ'ज़ा के लिये

नमाज़ के बा'द सात बार येह आयते करीमा :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

لَوۡ اَنۡزَلۡنَا ہٰذَا الۡقُرۡاٰنَ عَلٰی جَبَلٍ لَّرَاَیۡتَہٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنۡ خَشۡیَۃِ
اللّٰہِ ؕ وَ تِلۡکَ الۡاَمۡثَالُ نَضۡرِبُہَا لِلنَّاسِ لَعَلَّہُمۡ یَتَفَکَّرُوۡنَ ﴿۲۱﴾

(پ۲۸ الحشر:۲۱)

पढ़ कर दोनों हाथों पर दम कर के दर्द की जगह पर मले दर्द जाता रहेगा। اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(34) एह़तिलाम से हि़फ़ाज़त

एह़तिलाम से बचने के लिये सूरए नूह़ सोते वक़्त एक बार पढ़ कर अपने ऊपर दम करें।

(35) आंखें कभी न दुखें

مَرۡحَبًا بِحَبِیۡبِیۡ وَقُرَّۃُ عَیۡنِیۡ مُحَمَّدِ بۡنِ عَبۡدِ اللّٰہِ

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है, जो शख़्स मुअज़्ज़िन को "اَشۡھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوۡلُ اللّٰہِ" कहता सुन कर येह कहे और अपने अंगूठे चूम कर आंखों से लगाए तो न कभी वोह अन्धा होगा न ही कभी उस की आंखें दुखेंगी।

(اَلۡمَقَاصِدُ الۡحَسَنَہ ص۳۹۱)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

(35) घर में म-दनी माहोल बनाने का नुस्ख़ा

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿۷۴﴾ (پ۱۹ الفرقان:۷۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेशवा बना।

हर नमाज़ के बा'द येह दुआ़ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लें। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में म-दनी माहोल क़ाइम होगा।

(मसाइलुल क़ुरआन , स. 290)

(37) शूगर का इ़लाज

رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿۸۰﴾

(پ۱۵ بنی اسرائیل:۸۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मुझे सच्ची त़रह़ दाख़िल कर और सच्ची त़रह़ बाहर ले जा और मुझे अपनी त़रफ़ से मददगार ग़-लबा दे।

येह क़ुरआनी दुआ़ रोज़ाना सुब्ह़ व शाम तीन तीन बार

(अव्वल व आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पियें। (मुद्दते इ़लाज : ता हुसूले शिफ़ा)

(38) क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा

اَللّٰھُمَّ اکْفِنِیْ بِحَلَالِکَ عَنْ حَرَامِکَ وَاَغْنِنِیْ بِفَضْلِکَ عَمَّنْ سِوَاکَ

तरजमा : "**या अल्लाह** عزوجل मुझे ह़लाल रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा कर ह़राम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे।" ता हुसूले मुराद हर नमाज़ के बा'द 11, 11 बार और सुब्ह़ व शाम सो सो बार रोज़ाना (अव्वल व आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़िये।

मरवी हुवा कि एक मुकातब (मुकातब उस ग़ुलाम को कहते हैं जिस ने अपने आक़ा से माल की अदाएगी के बदले आज़ादी का मुआ़-हदा किया हुवा हो। (مختصر القدوری ص۱۷۱) ने ह़ज़रते **मुश्किल कुशा**, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की बारगाह में अ़र्ज़ की : मैं अपनी किताबत (या'नी आज़ादी की क़ीमत) अदा करने से आ़जिज़ हूं मेरी मदद फ़रमाइये। आप کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : मैं तुम्हें चन्द कलिमात न सिखाऊं जो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे सिखाए हैं, अगर तुम पर ज-बले सैर (सैर एक पहाड़ का नाम है। النھایۃ ج۳ ص۶۱) जितना दैन (या'नी क़र्ज़) होगा तो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी त़रफ़ से अदा कर देगा तुम यूं कहा करो :

"اَللّٰھُمَّ اکْفِنِیْ بِحَلَالِکَ عَنْ حَرَامِکَ وَاَغْنِنِیْ بِفَضْلِکَ عَمَّنْ سِوَاکَ"

(سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج۵ ص۳۲۹ حدیث:۳۵۷۴)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे ।

99 अस्माए हुस्ना और इन के फ़ज़ाइल

हर विर्द के अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये, फ़ाएदा ज़ाहिर न होने की सूरत में शिक्वा करने के बजाए अपनी कोताहियों की शामत तसव्वुर कीजिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मस्लहत पर नज़र रखिये ।

﴾1﴿ يَا اَللّٰهُ जो हर नमाज़ के बा'द 100 बार पढ़े اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का बातिन कुशादा हो जाएगा ।

﴾2﴿ هُوَاللّٰهُ الرَّحِيْمُ जो हर नमाज़ के बा'द 7 बार पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैतान के शर से बचा रहेगा और उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा ।

﴾3﴿ يَاقُدُّوْسُ का जो कोई दौराने सफ़र विर्द करता रहे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ थकन से महफ़ूज़ रहेगा ।

﴾4﴿ يَا رَحْمٰنُ जो कोई सुब्ह की नमाज़ के बा'द 298 बार पढ़ेगा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ उस पर बहुत रहम करेगा । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

﴾5﴿ يَا رَحِيْمُ जो कोई हर रोज़ 500 बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दौलत पाएगा और मख़्लूक़ उस पर मेहरबान और शफ़ीक़ होगी ।

﴾6﴿ يَامَلِكُ 90 बार जो ग़रीब व नादार रोज़ाना पढ़ा करे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ुरबत से नजात पाएगा ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर कस्रत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है।

《7》 يَاسَلَامُ 111 बार पढ़ कर बीमार पर दम करने से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा ह़ासिल होगी।

《8》 يَامُؤْمِنُ जो 115 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम करेगा, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ तन्दुरुस्ती पाएगा।

《9》 يَامُهَيْمِنُ 29 बार रोज़ाना पढ़ने वाला اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर आफ़त व बला से मह़फ़ूज़ रहेगा।

《10》 يَاعَزِيْزُ 41 बार ह़ाकिम या अफ़्सर वग़ैरा के पास जाने से क़ब्ल पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह ह़ाकिम या अफ़्सर मेहरबान हो जाएगा।

《11》 يَاجَبَّارُ जो इस का मुसल्सल विर्द रखेगा अपनी ग़ीबत से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बचा रहेगा।

《12》 يَامُتَكَبِّرُ 21 बार रोज़ाना पढ़ लीजिये, डरावने ख़्वाब आते होंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़्वाब में नहीं डरेंगे। (मुद्दते इ़लाज : ता हुसूले शिफ़ा) يَامُتَكَبِّرُ ज़ौजा से "मिलाप" से क़ब्ल 10 बार पढ़ लेने वाला اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ नेक बेटे का बाप बनेगा।

《13》 يَاخَالِقُ जो 300 बार पढ़े اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का दुश्मन मग़्लूब होगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज्र लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है।

﴾14﴿ **يَابَارِئُ** 10 बार जो कोई हर जुमुआ को पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस को बेटा अ़ता होगा।

﴾15﴿ **يَا مُصَوِّرُ** जो बांझ औरत सात रोज़े रखे और इफ़्तार के वक़्त 21 बार **اَلْمُصَوِّرُ** पढ़ कर पानी पर दम कर के पी लिया करे, **अल्लाह** तआ़ला उस को नेक बेटा अ़ता करेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

﴾16﴿ **يَا غَفَّارُ** जो इसे हमेशा पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ नफ़्स की बुरी ख़्वाहिशात से छुटकारा पाएगा।

﴾17﴿ **يَاقَهَّارُ** 100 बार अगर कोई मुसीबत आ पड़े तो पढ़िये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुश्किल आसान होगी।

﴾18﴿ **يَاوَهَّابُ** 7 बार जो रोज़ाना पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुस्तजाबुद्दा'वात होगा। (या'नी हर दुआ़ क़बूल हुवा करेगी)

﴾19﴿ **يَارَزَّاقُ** जो फ़ज्र के फ़र्ज़ व सुन्नत के दरमियान 41 दिन तक 550 बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दौलत मन्द होगा।

﴾20﴿ **يَافَتَّاحُ** 70 बार जो रोज़ाना बा'द नमाज़े फ़ज्र दोनों हाथ सीने पर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

रख कर पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस के दिल का ज़ंग व मेल दूर होगा।

يَافَتَّاحُ 7 बार जो रोज़ाना (किसी भी वक़्त दिन में एक मर्तबा) पढ़ा करेगा, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का दिल रोशन होगा।

﴾21﴿ يَاعَلِيْمُ जो कोई इस इस्म को बहुत पढ़ेगा **अल्लाह** तआ़ला उस को दीन व दुन्या की मा'रिफ़त अ़ता फ़रमाएगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ।

﴾22﴿ يَاقَابِضُ 30 बार जो हर रोज़ पढ़ा करे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह दुश्मन पर फ़त्ह़ पाएगा।

﴾23﴿ يَا بَاسِطُ जो 40 बार पढ़े اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ल्क़ से बे परवाह होगा।

﴾24﴿ يَا خَافِضُ जो कोई इसे 500 बार पढ़ ले اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुश्मन से अमान में रहेगा।

﴾25﴿ يَارَافِعُ 20 बार जो रोज़ाना पढ़ा करेगा, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की मुराद पूरी होगी।

﴾26﴿ يَا مُعِزُّ जो कोई इसे बा'द नमाज़े इ़शा शबे जुमुआ़ 140 बार पढ़े मख़्लूक़ की नज़र में उस की इ़ज़्ज़त व हुरमत और हैबत बढ़ेगी। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रह़मतें भेजता है ।

《27》 يَا حَكَمُ जो पांचों वक़्त हर नमाज़ के बा'द 80 बार पढ़ लिया करे किसी का मोह़ताज न होगा । اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

《28》 يَا بَصِيْرُ 7 बार जो कोई रोज़ाना ब वक़्ते अ़स्र (या'नी इब्तिदाए वक़्ते अ़स्र ता गुरूबे आफ़्ताब किसी भी वक़्त) पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ अचानक मौत से मह़फ़ूज़ रहेगा ।

《29》 يَاسَمِيْعُ 100 बार जो रोज़ाना पढ़े और इस दौरान गुफ़्त-गू न करे और पढ़ कर दुआ मांगे اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ जो मांगेगा पाएगा ।

《30》 يَا مُذِلُّ जो कोई 75 बार पढ़ कर सज्दा करे और कहे या इलाही عَزَّوَجَلَّ फ़ुलां ज़ालिम के शर से मुझे मह़फ़ूज़ रख, **अल्लाह** तआला उसे अमान देगा और अपनी ह़िफ़ाज़त में रखेगा । اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

《31》 يَا عَدْلُ जो कोई मग़रिब की नमाज़ के बा'द 1000 बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आस्मानी बलाओं से नजात पाएगा ।

《32》 يَا لَطِيْفُ बेटियों के नसीब खुलने और अमराज़ से सिह़ह़त और मुश्किलात से नजात के लिये हर रोज़ तह़िय्यतुल वुज़ू के बा'द 100 बार पढ़ लिया करे ।

《33》 يَا خَبِيْرُ जो कोई नफ़्से अम्मारा के हाथ गरिफ़्तार हो तो हर रोज़ वज़ीफ़ा कर लिया करे اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ नजात पाएगा ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

﴾34﴿ يَـا حَلِيْمُ जो कोई इस को कागज़ पर लिख कर फिर इस को धो दे और अपनी खेती पर छिड़क दे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़राअत हर आफ़त से हिफ़ाज़त में रहेगी।

﴾35﴿ يَا عَظِيْمُ जो 7 दफ़्आ़ पानी पर पढ़ कर दम कर के पानी पी ले اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस के पेट में दर्द न हो।

﴾36﴿ يَا غَفُوْرُ जिस को दर्दे सर या कोई बीमारी या ग़म पेश आ जाए 3 बार يَا غَفُوْرُ की मुक़त्तआ़त लिख कर (या'नी इस इस्मे पाक को कागज़ पर लिख कर इस की गीली सियाही पर रोटी का टुकड़ा लगा कर वोह नक़्श रोटी में जज़्ब कर ले और) खा ले, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा पाएगा।

﴾37﴿ يَاشَكُوْرُ जो कोई 5000 बार रोज़ पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन बुलन्द मर्तबा होगा।

﴾38﴿ يَا عَلِيُّ जो वरम (या'नी सूजन) पर 3 बार पढ़ कर दम करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सिह़्ह़त पाएगा।

﴾39﴿ يَا كَبِيْرُ जो 9 दफ़्आ़ किसी बीमार पर पढ़ कर दम करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सिह़्ह़त याब हो जाएगा।

﴾40﴿ يَـا حَفِيْظُ जो 16 बार हर रोज़ पढ़े اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हर त़रह़ बहादुर रहे।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

﴾41﴿ يَا مُقِيْتُ जिस की आंख सुर्ख़ हो और दर्द करे 10 बार पढ़ कर दम कर ले।

﴾42﴿ يَا حَسِيْبُ जो हर रोज़ 70 बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ हर आफ़त से मह़फ़ूज़ रहेगा।

﴾43﴿ يَا جَلِيْلُ 10 बार पढ़ कर जो अपने माल व अस्बाब और रक़म वग़ैरा पर दम कर दे, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ चोरी से मह़फ़ूज़ रहेगा।

﴾44﴿ يَا كَرِيْمُ अगर अपने बिस्तर में इस को पढ़ते पढ़ते सो जाए तो फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ करेंगे। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

﴾45﴿ يَا رَقِيْبُ जो कोई फोड़े फुन्सी पर 3 बार पढ़ कर फूंक देगा, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा ह़ासिल होगी।

﴾46﴿ يَا مُجِيْبُ जो कोई 3 बार पढ़ कर दम करेगा اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर दूर होगा।

﴾47﴿ يَا وَاسِعُ जिस को बिच्छू काट ले वोह 70 बार पढ़ कर दम करे اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ज़ह्र असर न करेगा।

﴾48﴿ يَا حَكِيْمُ 80 बार जो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द पढ़ लिया करे, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ किसी का मोह़ताज न हो।

﴾49﴿ يَا وَدُوْدُ इस इस्म को 1000 बार खाने पर पढ़ कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे।

जिस जानिब से ना मुवा-फ़क़त हो उसे खिला दें, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुश्मनी ख़त्म हो जाएगी।

﴾50﴿ يَا مَجِيْدُ जो गर्मियों में इसे पढ़ेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ प्यास से मामून रहेगा।

﴾51﴿ يَا بَاعِثُ जो कोई 7 बार पढ़ कर अपने ऊपर फूंके और हाकिम के रू बरू जाए اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हाकिम मेहरबान हो।

﴾52﴿ يَاشَهِيْدُ 21 बार सुब्ह़ (तुलूए़ आफ़्ताब से पहले पहले) ना फ़रमान बच्चे या बच्ची की पेशानी पर हाथ रख कर आस्मान की त़रफ़ मुंह कर के जो पढ़े اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का वोह बच्चा या बच्ची नेक बने।

﴾53﴿ يَا حَقُّ अगर क़ैदी आधी रात को नंगे सर 108 बार पढ़ेगा, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़ैद से रिहाई पाएगा।

﴾54﴿ يَاوَكِيْلُ 7 बार जो रोज़ाना अ़स्र के वक़्त पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आफ़त से पनाह पाए।

﴾55﴿ يَا قَوِىُّ अगर जुमुआ़ की दूसरी साअ़त में बहुत पढ़ेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ निस्यान (या'नी भूलने का मरज़) जाता रहेगा।

﴾56﴿ يَا مَتِيْنُ जिस बच्चे का दूध छुड़ा दिया गया हो उसे काग़ज़ पर लिख कर पिला दें, तस्कीन होगी और मां का दूध कम हो तो इसी इस्मे पाक को लिख कर पिला दें दूध ज़ियादा होगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

《57》 يَا وَلِيُّ जो कोई इस इस्म को बहुत पढ़ेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की ज़ौजा उस की फ़रमां बरदार हो जाएगी।

《58》 يَاحَمِيْدُ 90 बार, जिस की गन्दी बातों की आ़दत न जाती हो वोह पढ़ कर किसी ख़ाली पियाले या गिलास में दम कर दे। ह़स्बे ज़रूरत उसी में पानी पिया करे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ोह़्श गोई की आ़दत निकल जाएगी। (एक बार का दम किया हुवा गिलास बरसों तक चला सकते हैं)

《59》 يَامُحْيِي 7 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लीजिये, गेस हो या पेट या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उ़ज़्व के ज़ाएअ़ हो जाने का ख़ौफ़ हो, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा। (मुद्दते इ़लाज : ता हुसूले शिफ़ा, रोज़ाना कम अज़ कम एक बार)

《60》 يَامُمِيْتُ 7 बार रोज़ाना पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया कीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जादू असर नहीं करेगा।

《61》 يَا حَيُّ जो कोई बीमार हो इस इस्म को 1000 बार पढ़े, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सिह़्ह़त पाएगा।

《62》 يَاقَيُّوْمُ सुब्ह़ के वक़्त जो कोई इस को कसरत से पढ़ेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का तसर्रुफ़ दिलों में ज़ाहिर होगा, या'नी लोग उस को दोस्त रखेंगे।

《63》 يَاوَاجِدُ जो कोई खाना खाते वक़्त हर निवाले पर पढ़ा करेगा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह खाना उस के पेट में नूर होगा और बीमारी दूर होगी।

《64》 يَـامَاجِدُ 10 बार पढ़ कर शरबत वग़ैरा पर दम कर के जो पी लिया करे إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बीमार न होगा।

《65》 يَـاوَاحِدُ 1001 बार, जिस को अकेले में डर लगता हो, तन्हाई में पढ़ ले إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस के दिल से ख़ौफ़ जाता रहेगा।

《66》 يَا اَحَدُ जो कोई इस इस्म को 9 मर्तबा पढ़ कर ह़ाकिम के आगे जाए, إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ज़्ज़त और सरफ़राज़ी पाएगा। जो तन्हा इसे हज़ार बार पढ़ेगा नेक बन जाएगा। إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

《67》 يَا صَمَدُ जो इसे 1000 बार पढ़ेगा إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुश्मन पर फ़त्ह़ पाएगा।

《68》 يَاقَادِرُ जो वुज़ू के दौरान हर उ़ज़्व धोते हुए पढ़ने का मा'मूल बना ले إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुश्मन उस को इग़्वा नहीं कर सकेगा।

يَاقَادِرُ 41 बार, मुश्किल आ पड़े तो पढ़ लीजिये إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आसानी हो जाएगी।

《69》 يَـامُقْتَدِرُ 20 बार जो रोज़ाना पढ़ लिया करेगा إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ रह़मतों के साए में रहेगा।

يَـامُقْتَدِرُ 20 बार, जो नींद से बेदार हो कर पढ़ लिया करेगा उस के हर काम में मददे इलाही शामिल रहेगी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

﴾70﴿ يَا مُقَدِّمُ जो जंग या किसी ख़ौफ़ की जगह पर बेचैनी की ह़ालत में हो तो वोह इस इस्मे मुबारक की कसरत करे।

﴾71﴿ يَامُؤَخِّرُ 100 बार हर रोज़ पढ़ने वाले के اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सब काम पूरे होंगे।

﴾72﴿ يَااَوَّلُ 100 बार रोज़ाना पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की ज़ौजा उस से मह़ब्बत करेगी।

﴾73﴿ يَا آخِرُ जो किसी जगह जाए और इस इस्मे पाक को पढ़ ले اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वहां इ़ज़्ज़त व तौक़ीर पाएगा।

﴾74﴿ يَاظَاهِرُ घर की दीवार पर लिख लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दीवार सलामत रहेगी।

﴾75﴿ يَا بَاطِنُ जो किसी को अमानत सोंपे या ज़मीन में दफ़्न करे तो اَلْبَاطِنُ लिख कर उस शै के साथ रख दे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कोई उस में ख़ियानत न कर सकेगा।

﴾76﴿ يَا وَالِى जो कोई कोरे पियाले पर लिख कर उस में पानी भर कर घर के दरो दीवार पर डाले तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह घर आफ़तों से मह़फ़ूज़ रहेगा।

﴾77﴿ يَا مُتَعَالِى मुश्किल तरीन कामों के लिये इस की कसरत बेह़द मुफ़ीद है।

﴾78﴿ يَا بَرُّ जो शख़्स 7 मर्तबा पढ़ कर बच्चे पर दम कर के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

अल्लाह तआ़ला की सिपुर्दगी में दे दे बालिग़ होने तक اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ वोह बच्चा बलाओं से मह़फ़ूज़ रहेगा।

《79》 **يَا تَوَّابُ** जो कोई चाश्त की नमाज़ के बा'द 360 बार इस को पढ़ेगा **अल्लाह** तआ़ला उस को तौ–बतुन्नसूह़ नसीब फ़रमाएगा। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

《80》 **يَـا مُـنْتَقِمُ** दुश्मन को दोस्त बनाने के लिये तीन जुमुआ़ तक इस को कसरत से पढ़िये।

《81》 **يَا عَفُوُّ** जिस के गुनाह बहुत हों वोह इस इस्मे पाक की कसरत करे **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्ल से उस के तमाम गुनाह बख़्श देगा।

《82》 **يَـــارَءُوْفُ** 10 बार, जो किसी मज़्लूम का किसी ज़ालिम से पीछा छुड़ाना चाहे, पढ़े फिर उस ज़ालिम से बात करे اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ वोह ज़ालिम उस की सिफ़ारिश क़बूल कर लेगा।

《83》 **يَا مَالِكَ الْمُلْكِ** जो इस की कसरत करेगा اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ुशह़ाल होगा।

《84》 **يَـا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام** इस की कसरत से ख़ुशह़ाली नसीब होगी। इस के साथ दुआ़ करने से दुआ़ मक़्बूल होगी। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

《85》 **يَـا مُـقْسِطُ** शैत़ानी वस्वसों से बचने के लिये 100 मर्तबा पढ़ना बहुत मुफ़ीद है। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

﴾86﴿ يَا جَامِعُ जिस के अ़ज़ीज़ व अक़ारिब जुदा हो गए हों, चाश्त के वक़्त गुस्ल कर के आस्मान की त़रफ़ मुंह कर के 10 बार इस इस्म को पढ़े और हर बार में एक उंगली बन्द करता जाए फिर अपने मुंह पर हाथ फैरे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ थोड़े अ़रसे में सब जम्अ़ हो जाएंगे।

﴾87﴿ يَا غَنِيُّ रीढ़ की हड्डी, घुटनों, जोड़ों या जिस्म में कहीं भी दर्द हो, चलते फिरते उठते बैठते पढ़ते रहिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्द जाता रहेगा।

﴾88﴿ يَا مُغْنِيُ एक बार पढ़ कर हाथों पर दम कर के दर्द की जगह पर मलने से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुकून मिलेगा।

﴾89﴿ يَا مَانِعُ 20 बार, बीवी नाराज़ हो तो शोहर और अगर शोहर नाराज़ हो तो बीवी सोने से क़ब्ल बिछोने पर बैठ कर पढ़े اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुल्ह़ हो जाएगी। (मुद्दत : ता ह़ुसूले मुराद)

﴾90﴿ يَا ضَآرُّ जिसे कोई मन्सब मिले और वोह उस पर क़ाइम रहना चाहे तो वोह हर शबे जुमुआ़ और अय्यामे बीज़ (या'नी हर इस्लामी माह की 13,14,15 तारीख़) में 100 बार पढ़े।

﴾91﴿ يَا نَافِعُ 20 बार, जो किसी काम को शुरूअ़ करने से क़ब्ल पढ़ ले اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह काम उस की मरज़ी के मुत़ाबिक़ पूरा होगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

《92》 يَا نُوْرُ जो सात मर्तबा सूरए नूर और 1001 बार يا نور पढ़े اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस का दिल रोशन हो जाएगा।

《93》 يَا هَادِى जो कोई आस्मान की त़रफ़ मुंह कर के हाथ उठा कर इस इस्म को कसरत से पढ़े और वोह हाथ अपने मुंह और आंखों पर मल ले اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अहले मा'रिफ़त का मर्तबा पाएगा।

《94》 يَا بَدِيْعُ जिस को कोई सख़्त मुहिम दरपेश हो 70,000 बार पढ़े। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ काम्याब होगा।

《95》 يَا بَاقِىْ जो सूरज निकलने से पहले 100 बार रोज़ पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दुख से मह़फ़ूज़ रहेगा।

《96》 يَا وَارِثُ जो इस का विर्द करेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस की उ़म्र दराज़ होगी।

《97》 يَا رَشِيْدُ जो शख़्स किसी काम की तदबीर न जानता हो वोह मग़रिब और इ़शा के दरमियान 1000 बार पढ़े اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सह़ीह़ तदबीर उस के दिल में आ जाएगी।

《98》 يَا صَبُوْرُ जिस को दर्द या रन्ज या मुसीबत पेश आए 33 बार पढ़े, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सुकून ह़ासिल होगा।

《99》 يَا مُؤَخِّرُ जो इस नाम को किसी नमाज़ के बा'द 100 बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस का दिल **अल्लाह** तआ़ला की मह़ब्बत और उस की याद में रहे।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

ख़त्मे क़ादिरिय्यह

﴾1﴿ दुरूदे ग़ौसिया 111 बार पढ़ें

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ
الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

﴾2﴿ तीसरा कलिमा 111 बार पढ़ें

سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ
اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

﴾3﴿ सूरए अलम नशरह़ 111 बार पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۙ﴿۱﴾ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیْۤ
اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۙ﴿۳﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ؕ﴿۴﴾ فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۙ﴿۵﴾
اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ؕ﴿۶﴾ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۙ﴿۷﴾
وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۠﴿۸﴾

﴾4﴿ सू-रतुल इख़्लास 111 बार पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ۵
وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۠﴿۴﴾

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है।

《5》 111 बार يَا بَاقِیُ اَنْتَ الْبَاقِیُ

111 बार يَا شَافِیُ اَنْتَ الشَّافِیُ

111 बार يَا كَافِیُ اَنْتَ الْكَافِیُ

《6》 111 बार

يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اُنْظُرْ حَالَنَا يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ اِسْمَعْ قَالَنَا

اِنَّنِیْ فِیْ بَحْرِهَمٍّ مُّغْرَقٌ خُذْ يَدِیْ سَهِّلْ لَنَا اَشْكَالَنَا

《7》 111 बार

يَا حَبِيْبَ الْاِلٰهِ خُذْ بِيَدِیْ مَا لِعَجْزِیْ سِوَاكَ مُسْتَنَدِیْ

《8》 111 बार

فَسَهِّلْ يَا اِلٰهِیْ كُلَّ صَعْبٍ بِحُرْمَةِ سَيِّدِ الْاَبْرَارِ سَهِّلْ

《9》 111 बार

يَا صِدِّيْق يَا عُمَر يَا عُثْمَان يَا حَيْدَر

دَفْعِ شَرْ كُنْ خَيْر آوَر يَا شَبِّيْرُ يَا شَبَّر

《10》 111 बार

يَا حَضْرَتْ سُلْطَانْ شَيْخ سَيِّد شَاه عَبْدُ الْقَادِرْ

جِيْلَانِیْ شَيْئًا لِلّٰهِ اَلْمَدَدْ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे।

﴾11﴿ 111 बार

مَاهَمَه مُحْتَاجْ تو حَاجَتْ رَوَا اَلْمَدَدْ یَا غَوْثِ اَعْظَم سَیِّدَا

﴾12﴿ 111 बार

مُشْکِلَاتِ بے عَدَدْ دَارِیْم مَا اَلْمَدَدْ یَا غَوْثِ اَعْظَم پِیْرِ مَا

﴾13﴿ 111 बार

یَا حَضْرَتْ شَیْخ مُحْیِ الدِّیْن مُشْکِلْ کُشَا بِالْخَیْر

﴾14﴿ 111 बार

اِمْدَادْ کُنْ اِمْدَادْ کُنْ اَزْ بَنْدِ غَمْ آزَادْ کُنْ
دَرْدِیْن وَ دُنْیَا شَادْ کُنْ یَا غَوْثِ اَعْظَم دَسْتگِیْر

﴾15﴿ 111 बार

یَا حَضْرَتْ غَوْث اَغِثْنَا بِاِذْنِ اللّٰهِ تَعَالٰی

﴾16﴿ 111 बार

خُذْ یَدِیْ یَا شَاهِ جِیْلَانْ خُذْ یَدِیْ شَیْئًا لِلّٰهِ اَنْتَ نُوْرٌ اَحْمَدِیْ

﴾17﴿ 111 बार

طُفَیْلِ حَضْرَتْ دَسْتگِیْر دُشْمَنْ هوے زَیْر

﴾18﴿ सूरए यासीन शरीफ़ ﴾19﴿ क़सीदए ग़ौसिया

﴾20﴿ दुरूदे ग़ौसिया

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم मुझ पर कस्रत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।

क़सीदए ग़ौसिया

سَقَانِی الْحُبُّ كَاسَاتِ الْوِصَالِ   فَقُلْتُ لِخَمْرَتِیْ نَحْوِیْ تَعَالِیْ

سَعَتْ وَمَشَتْ لِنَحْوِیْ فِیْ كُئُوْسٍ   فَهِمْتُ بِسُكْرَتِیْ بَیْنَ الْمَوَالِیْ

فَقُلْتُ لِسَائِرِ الْاَقْطَابِ لُمُّوْا   بِحَالِیْ وَادْخُلُوْا اَنْتُمْ رِجَالِیْ

وَهُمُّوْا وَاشْرَبُوْا اَنْتُمْ جُنُوْدِیْ   فَسَاقِی الْقَوْمِ بِالْوَافِیْ مَلَالِیْ

شَرِبْتُمْ فُضْلَتِیْ مِنْ بَعْدِ سُكْرِیْ   وَلَا نِلْتُمْ عُلُوِّیْ وَاتِّصَالِیْ

مَقَامُكُمُ الْعُلٰى جَمْعًا وَّلٰكِنْ   مَقَامِیْ فَوْقَكُمْ مَا زَالَ عَالِیْ

اَنَا فِیْ حَضْرَةِ التَّقْرِیْبِ وَحْدِیْ   یُصَرِّفُنِیْ وَحَسْبِیْ ذُو الْجَلَالِ

اَنَا الْبَازِیُّ اَشْهَبُ كُلِّ شَیْخٍ   وَمَنْ ذَا فِی الرِّجَالِ اُعْطِیْ مِثَالِیْ

كَسَانِیْ خِلْعَةً بِطِرَازِ عَزْمٍ   وَتَوَّجَنِیْ بِتِیْجَانِ الْكَمَالِ

وَاَطْلَعَنِیْ عَلٰى سِرٍّ قَدِیْمٍ   وَقَلَّدَنِیْ وَاَعْطَانِیْ سُؤَالِیْ

وَوَلَّانِیْ عَلَى الْاَقْطَابِ جَمْعًا   فَحُكْمِیْ نَافِذٌ فِیْ كُلِّ حَالِ

فَلَوْ اَلْقَیْتُ سِرِّیْ فِیْ بِحَارٍ   لَصَارَ الْكُلُّ غَوْرًا فِی الزَّوَالِ

وَلَوْ اَلْقَیْتُ سِرِّیْ فِیْ جِبَالٍ   لَدُكَّتْ وَاخْتَفَتْ بَیْنَ الرِّمَالِ

وَلَوْ اَلْقَیْتُ سِرِّیْ فَوْقَ نَارٍ   لَخَمِدَتْ وَانْطَفَتْ مِنْ سِرِّ حَالِیْ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआ़ला उस के लिये एक क़ीरात अज्र लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है।

وَلَوْ اَلْقَيْتُ سِرِّیْ فَوْقَ مَيْتٍ   لَقَامَ بِقُدْرَةِ الْمَوْلٰى تَعَالٰى

وَمَا مِنْهَا شُهُوْرٌ اَوْ دُهُوْرٌ   تَمُرُّ وَتَنْقَضِیْ اِلَّا اَتَالِیْ

وَتُخْبِرُنِیْ بِمَا يَاْتِیْ وَيَجْرِیْ   وَتُعْلِمُنِیْ فَاَقْصِرْ عَنْ جِدَالِیْ

مُرِيْدِیْ هِمْ وَطِبْ وَاشْطَحْ وَغَنِّیْ   وَافْعَلْ مَا تَشَاءُ فَالْاِسْمُ عَالٍ

مُرِيْدِیْ لَا تَخَفْ اَللّٰهُ رَبِّیْ   عَطَانِیْ رِفْعَةً نِلْتُ الْمَنَالِیْ

طُبُوْلِیْ فِی السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ دُقَّتْ   وَشَاءُوْسُ السَّعَادَةِ قَدْ بَدَالِیْ

بِلَادُ اللّٰهِ مُلْكِیْ تَحْتَ حُكْمِیْ   وَوَقْتِیْ قَبْلَ قَلْبِیْ قَدْ صَفَالِیْ

نَظَرْتُ اِلٰى بِلَادِ اللّٰهِ جَمْعًا   كَخَرْدَلَةٍ عَلٰى حُكْمِ اتِّصَالِ

دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰى صِرْتُ قُطْبًا   وَنِلْتُ السَّعْدَ مِنْ مَّوْلَى الْمَوَالِیْ

فَمَنْ فِیْ اَوْلِيَاءِ اللّٰهِ مِثْلِیْ   وَمَنْ فِی الْعِلْمِ وَالتَّصْرِيْفِ حَالِیْ

رِجَالِیْ فِیْ هَوَاجِرِهِمْ صِيَامٌ   وَفِیْ ظُلَمِ اللَّيَالِیْ كَاللَّاٰلِیْ

وَكُلُّ وَلِیٍّ لَّهٗ قَدَمٌ وَّاِنِّیْ   عَلٰى قَدَمِ النَّبِیِّ بَدْرِ الْكَمَالِ

نَبِیٌّ هَاشِمِیٌّ مَكِّیٌّ حِجَازِیٌّ   هُوَ جَدِّیْ بِهٖ نِلْتُ الْمَوَالِیْ

مُرِيْدِیْ لَا تَخَفْ وَاشٍ فَاِنِّیْ   عَزُوْمٌ قَاتِلٌ عِنْدَ الْقِتَالِ

اَنَا الْجِيْلِیُّ مُحْیِ الدِّيْنِ لَقَبِیْ   وَاَعْلَامِیْ عَلٰى رَاْسِ الْجِبَالِ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह्मतें भेजता है।

اَنَا الْحَسَنِيُّ وَالْمُخْدَعُ مَقَامِيْ   وَاَقْدَامِيْ عَلٰى عُنُقِ الرِّجَالِ

وَعَبْدُ الْقَادِرِ الْمَشْهُوْرُ اِسْمِيْ   وَجَدِّيْ صَاحِبُ الْعَيْنِ الْكَمَالِ

تَقَبَّلْنِيْ وَلَا تَرْدُدْ سُؤَالِيْ   اَغِثْنِيْ سَيِّدِيْ اُنْظُرْ بِحَالِيْ

फ़ज़ाइले क़सीदए ग़ौसिया मु-तबर्रका

येह क़सीदए मुबा-रका हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म, मह्बूबे सुब्हानी, कुत्बे रब्बानी, **शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** قدس سره النورانی की ज़बाने फ़ैज़ तरजुमान से अदा हुवा है और हमारे सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या में इस का विर्द दौलते ज़ाहिरी व बातिनी के हुसूल का सबब है इस के **अठ्ठाईस अश्आ़र** हैं। इस क़सीदए मुबा-रका का रोज़ाना विर्द बहुत मुफ़ीद है। नीज़

﴾1﴿ तस्ख़ीरे ख़लाइक़ के लिये अज़ ह़द कार आमद है और कुर्बे ख़ुदा वन्दी के हुसूल का ज़रीआ़ है।

﴾2﴿ इस क़सीदए मुबा-रका का विर्द कुव्वते ह़ाफ़िज़ा को बढ़ाता है।

﴾3﴿ इस क़सीदए मुबा-रका के पढ़ने वाले को **अ़-रबी** पढ़ने में बसीरत ह़ासिल होती है।

﴾4﴿ हर मुश्किल व सख़्त काम के लिये **चालीस रोज़** पढ़िये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ काम्याब होंगे।

﴾5﴿ जो शख़्स इस क़सीदए मुबा-रका को अपने सामने रखे और **तीन मर्तबा** पढ़े मक्बूले बारगाहे ग़ौसियत होगा और हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ियारत फ़ैज़ बिशारत से मुशर्रफ़ होगा। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब तुम मुर्सलीन عَلَیْهِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

《6》 हर मरज़ व तक्लीफ़ के लिये **तीन बार या पांच बार** पढ़ना मुफ़ीद है।

《7》 बांझ औ़रत इस क़सीदए मुबा-रका को सह़ीह़ ख़्वां से 41 या 21 बार पढ़वा कर पानी पर दम कर के **चालीस रोज़** पिये तो ह़ामिला हो जाए और **हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ब-र-कत से बेटा अ़ता होगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

《8》 आसेब ज़दा जिन्न वाले मरीज़ के लिये रोग़न (या'नी तेल) पर दम कर के उस के जिस्म पर मलें दफ़्अ़ होगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

《9,10》 ज़ालिम से नजात पाने के लिये हर रोज़ पढ़िये ख़लासी नसीब होगी यूं ही दुश्मन दफ़्अ़ हो जाएंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

ख़त्मे ख़्वाजगान

《1》	7 बार	सू-रतुल फ़ातिह़ा
《2》	100 बार	दुरूद शरीफ़
《3》	79 बार	सूरए अलम नशरह़
《4》	100 बार	सू-रतुल इख़्लास
《5》	7 बार	सू-रतुल फ़ातिह़ा
《6》	100 बार	दुरूदे ख़िज़्री

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा।

दुरूदे ख़िज़्री : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى حَبِيْبِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

इस के बा'द सब मिल कर नीचे दिये हुए हर हर कलिमे को 111 बार पढ़ें

اَللّٰهُمَّ يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ　　اَللّٰهُمَّ يَا كَافِيَ الْمُهِمَّاتِ

اَللّٰهُمَّ يَا حَلَّ الْمُشْكِلَاتِ　　اَللّٰهُمَّ يَا دَافِعَ الْبَلِيَّاتِ

اَللّٰهُمَّ يَا رَافِعَ الدَّرَجَاتِ　　اَللّٰهُمَّ يَا مُنَزِّلَ الْبَرَكَاتِ

اَللّٰهُمَّ يَا شَافِيَ الْاَمْرَاضِ　　اَللّٰهُمَّ يَا رَازِقَ الْعِبَادِ

اَللّٰهُمَّ يَا مُعْطِيَ الْخَيْرَاتِ وَالْحَسَنَاتِ　　اَللّٰهُمَّ يَا مُجِيْبَ الدَّعْوَاتِ

اَللّٰهُمَّ يَا مُسَبِّبَ الْاَسْبَابِ　　اَللّٰهُمَّ يَا مُفَتِّحَ الْاَبْوَابِ

اَللّٰهُمَّ يَا خَيْرَ النَّاصِرِيْنَ　　اَللّٰهُمَّ يَا خَيْرَ الْحَافِظِيْنَ

اَللّٰهُمَّ يَا خَيْرَ الرَّازِقِيْنَ　　اَللّٰهُمَّ يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ

اَغِثْنِيْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّمَ

اَلْمَدَدْ خَواهَمْ زِتو اے شاهِ نَقْشبَنْد

اَلْمَدَدْ خَواهَمْ زِتو اے غَرِيْب نَوَاز

اَلْمَدَدْ خَواهَمْ زِتو يَا شِهَابَ الدِّيْن سُهْرَوَرْدِى

بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ैज़ाने नवाफ़िल

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास **चांदी** के काग़ज़ और **सोने** के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं, कौन **यौमे जुमा'रात** और **शबे जुमुआ़** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है। (كَنْزُ الْعُمّال، ج۱،ص ۲۵۰ ،حديث۲۱۷٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह का प्यारा बनने का नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : "जो मेरे किसी **वली** से दुश्मनी करे, उसे मैं ने लड़ाई का ए'लान दे दिया और मेरा बन्दा जिन चीज़ों के ज़रीए मेरा क़ुर्ब चाहता है उन में मुझे सब से ज़ियादा फ़राइज़ मह़बूब

मदीनतुल मुनव्वरह मक्कतुल मुकर्रमह जन्नतुल बक़ीअ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

हैं और **नवाफ़िल** के ज़रीए कुर्ब हासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उसे अपना महबूब बना लेता हूं अगर वोह मुझ से सुवाल करे तो उसे ज़रूर दूंगा और पनाह मांगे तो उसे ज़रूर पनाह दूंगा।"

(صَحِیْحُ الْبُخارِی ج٤،ص٢٤٨ حدیث٦٥٠٢)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सलातुल्लैल

रात में बा'द नमाज़े इशा जो नवाफ़िल पढ़े जाएं उन को सलातुल्लैल कहते हैं और रात के नवाफ़िल दिन के नवाफ़िल से **अफ़्ज़ल** हैं कि सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है : सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फ़र्ज़ों के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।"

(صَحِیْح مُسلِم،ص٥٩١ حدیث١١٦٣)

तहज्जुद और रात में नमाज़ पढ़ने का सवाब

अल्लाह तबा-र-क व तआला पारह 21 सू-रतुस्सज्दा आयत नम्बर 16 और 17 में इर्शाद फ़रमाता है :

تَتَجَافٰی جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّ طَمَعًا٘ وَّ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ٘ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۷﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : इन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते और हमारे दिये हुए से कुछ ख़ैरात करते हैं तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक इन के लिये छुपा रखी है सिला इन के कामों का।

सलातुल्लैल की एक क़िस्म **तहज्जुद** है कि इशा के बा'द रात में सो कर उठें और नवाफ़िल पढ़ें, सोने से क़ब्ल जो कुछ पढ़ें वोह **तहज्जुद** नहीं। कम से कम **तहज्जुद** की दो[2] **रक्अ़तें** हैं और **हुज़ूरे अक़्दस** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **आठ** तक साबित। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, स. 26,27) इस में क़िराअत का इख़्तियार है कि जो चाहें पढ़ें, बेहतर येह है कि जितना क़ुरआन याद है वोह तमाम पढ़ लीजिये वरना येह भी हो सकता है कि हर रक्अ़त में **सूरए फ़ातिहा** के बा'द तीन[3] तीन[3] बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ लीजिये कि इस त़रह़ हर रक्अ़त में क़ुरआने करीम ख़त्म करने का सवाब मिलेगा, ऐसा करना बेहतर है, बहर हाल सूरए फ़ातिहा के बा'द कोई सी भी सूरत पढ़ सकते हैं।

(मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 447)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तहज्जुद गुज़ार के लिये जन्नत के आलीशान बालाख़ाने

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिन का बाहर अन्दर से और अन्दर बाहर से देखा जाता है। एक आ'राबी ने उठ कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह किस के लिये हैं ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : येह उस के लिये हैं जो नर्म गुफ़्त-गू करे, खाना खिलाए, मु-तवातिर रोज़े रखे, और रात को उठ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये नमाज़ पढ़े जब लोग सोए हुए हों।

(سُنَنُ التِّرمِذِیِّ ج٤ ص٢٣٧ حدیث٢٥٣٥، شُعَبُ الْاِیْمَان ج٣ ص٤٠٤، حدیث٣٨٩٢)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़ जिल्द 2 सफ़ह़ा 260 पर इस ह़िस्सए ह़दीस ''وَتَابَعَ الصِّيَام'' या'नी ''मु-तवातिर रोज़े रखे'' की शर्ह़ करते हुए फ़रमाते हैं : या'नी हमेशा रोज़े रखें सिवा उन पांच दिनों के जिन में रोज़ा ह़राम है या'नी शव्वाल की यकुम और ज़िल ह़िज्जह की दसवीं ता तेरहवीं, येह ह़दीस उन लोगों की दलील है जो हमेशा रोज़े रखते हैं बा'ज़ ने फ़रमाया कि इस के मा'ना हैं हर महीने में मुसल्सल तीन रोज़े रखे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !　　　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

''तहज्जुद गुज़ार'' के आठ ह़ुरूफ़ की निस्बत से नेक बन्दों और बन्दियों की 8 ह़िकायात

(1) सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रवाद عليه رحمة الله الجواد रात को सोने के लिये अपने बिस्तर पर आते और उस पर हाथ फैर कर कहते : ''तू नर्म है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जन्नत में तुझ से ज़ियादा नर्म बिस्तर मिलेगा फिर सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते।'' (اِحْیَاءُ الْعُلُوم، ج١ص٤٦٧) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रह़मतें भेजता है ।

रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

اٰمین بجاہِ النَّبیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم

बिल यक़ीं ऐसे मुसल्मान हैं बेह़द नादान

जो कि रंगीनिये दुन्या पे मरा करते हैं

(2) शहद की मक्खी की भिनभिनाहट की सी आवाज़ !

मशहूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब लोगों के सो जाने के बा'द उठ कर क़ियाम (या'नी इ़बादत) फ़रमाया करते तो उन से सुब्ह़ तक शहद की मक्खी की सी भिनभिनाहट सुनाई देती । (اِحْیَاءُ الْعُلُوم، ج۱ص۴٦۷) **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بجاہِ النَّبیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही

न पाऊं मैं अपना पता या इलाही

(3) मैं जन्नत कैसे मांगूं !

ह़ज़रते सय्यिदुना सिलह बिन अश्यम علیہ رحمۃ اللہ الاکرم सारी रात नमाज़ पढ़ते । जब स-ह़री का वक़्त होता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करते : "इलाही ! मेरे जैसा आदमी जन्नत नहीं मांग सकता लेकिन तू अपनी रह़मत से मुझे जहन्नम से पनाह अ़ता फ़रमा ।" (اِحْیَاءُ الْعُلُوم، ج۱ص۴٦۸) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत**

हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा

मैं थर थर रहूं कांपता या इलाही

(4) तुम्हारा बाप ना गहानी अ़ज़ाब से डरता है!

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन **ख़ुसैम** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बेटी ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की : "अब्बाजान ! क्या वजह है कि लोग सो जाते हैं और आप नहीं सोते ?" तो इर्शाद फ़रमाया : "बेटी ! **तुम्हारा बाप ना गहानी अ़ज़ाब से डरता है जो अचानक रात को आ जाए।"** (شُعَبُ الْاِیْمَان ج۱ ص ۵۴۳، رقم ۹۸٤) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी

हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !

(5) इ़बादत के लिये जागने का अ़जीब अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पिंडलियां नमाज़ में ज़ियादा देर खड़े रहने की वजह से सूज गई थीं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस क़दर कसरत से इ़बादत किया करते थे कि बिलफ़र्ज़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कह दिया जाता कि कल क़ियामत है तो भी अपनी इ़बादत में कुछ इज़ाफ़ा न कर सकते (या'नी उन के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

पास इबादत में इज़ाफ़ा करने के लिये वक़्त की गुन्जाइश ही न थी)। जब **सर्दी का मौसिम** आता तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मकान की छत पर सोया करते ताकि सर्दी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जगाए रखे और जब **गर्मियों का मौसिम** आता तो कमरे के अन्दर आराम फ़रमाते ताकि गर्मी और तक्लीफ़ के सबब सो न सकें (क्यूं कि A.C. कुजा उन दिनों बिजली का पंखा भी न होता था !)। सज्दे की हालत में ही आप का इन्तिक़ाल हुवा। आप दुआ किया करते थे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी मुलाक़ात को पसन्द करता हूं तू भी मेरी मुलाक़ात को पसन्द फ़रमा।" (اِتْحَافُ السَّادَةِ الْمُتَّقِيْن بِشَرْحِ اِحْيَاءِ عُلُوْمِ الدِّيْن ج۱۳ ص۲٤۷،۲٤۸) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

(6) रोते रोते नाबीना हो जाने वाली ख़ातून

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़व्वास رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम रिह़ला आ़बिदा के पास गए। येह ब कसरत रोज़े रखती थीं और **इतना रोतीं कि इन की बीनाई जाती रही** और इतनी कसरत से नमाज़ें पढ़ती कि खड़ी न हो सकती थीं, लिहाज़ा बैठ कर ही नमाज़ पढ़ती थीं। हम ने उन्हें सलाम किया फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़फ़्वो करम का तज़्किरा किया ता कि उन पर मुआ़-मला आसान हो जाए।

उन्हों ने येह बात सुन कर एक चीख़ मारी और फ़रमाया : "मेरे नफ़्स का हाल मुझे मा'लूम है और इस ने मेरे दिल को ज़ख़्मी कर दिया है और जिगर टुकड़े टुकड़े हो गया है, खुदा की क़सम ! मैं चाहती हूं कि **काश ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **मुझे पैदा ही न किया होता** और मैं कोई क़ाबिले ज़िक्र शै न होती ।" येह फ़रमा कर दोबारा नमाज़ में मश्ग़ूल हो गई । (احیاء العلوم، ج۵ ص۱۵۲ملخصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

امین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

आह सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है

काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

(7) मौत की याद में भूकी रहने वाली ख़ातून

ह़ज़रते सय्यि-दतुना मुआ़ज़ह अ़-दविय्या رحمۃ اللہ علیہا रोज़ाना सुब्ह़ के वक़्त फ़रमातीं : "(शायद) येह वोह दिन है जिस में मुझे मरना है ।" फिर शाम तक कुछ न खातीं फिर जब रात होती तो कहतीं : "(शायद) येह वोह रात है जिस में मुझे मरना है ।" फिर सुब्ह़ तक नमाज़ पढ़ती रहतीं. (ऐज़न, स. 151) **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

امین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

मेरा दिल कांप उठता है कलेजा मुंह को आता है

करम या रब अंधेरा क़ब्र का जब याद आता है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे ।

(8) गिर्या व ज़ारी करने वाला ख़ानदान

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन राशिद शैबानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی कहते हैं कि हज़रते सय्यिदुना ज़म्अ़ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुहस्सब में ठहरे हुए थे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ौजा और बेटियां भी हमराह थीं। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه रात को उठे और देर तक नमाज़ पढ़ते रहे। जब स-हरी का वक़्त हुवा तो बुलन्द आवाज़ से पुकारने लगे : "ऐ रात में पड़ाव करने वाले क़ाफ़िले के मुसाफ़िरो ! क्या सारी रात सोते रहोगे ? क्या उठ कर सफ़र नहीं करोगे ?" तो वोह लोग जल्दी से उठ गए और कहीं से रोने की आवाज़ आने लगी और कहीं से दुआ़ मांगने की, एक जानिब से कुरआने पाक पढ़ने की आवाज़ सुनाई दी तो दूसरी जानिब कोई वुज़ू कर रहा होता। फिर जब सुब्ह़ हुई तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा : "लोग सुब्ह़ के वक़्त चलने को अच्छा समझते हैं।" (كتاب التهجد وقيام الليل مع موسوعة لإمام ابن ابي الدنيا، ج ١،ص ٢٦١ رقم ٧٢)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

मेरे ग़ौस का वसीला रहे शाद सब क़बीला
इन्हें ख़ुल्द में बसाना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर कस्रत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है ।

नमाज़े इश्राक़

दो फ़रामैने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** 《1》 जो नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त अदा कर के ज़िक्रुल्लाह करता रहे यहां तक कि आफ़्ताब बुलन्द हो गया फिर दो[2] रक्अ़तें पढ़ीं तो उसे पूरे ह़ज व उ़म्रा का सवाब मिलेगा । (سُنَنُ التِّرمِذی، ج۲،ص۱۰۰ حدیث۵۸۶) 《2》 जो शख़्स नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग होने के बा'द अपने मुसल्ले में (या'नी जहां नमाज़ पढ़ी वहीं) बैठा रहा ह़त्ता कि इश्राक़ के नफ़्ल पढ़ ले सिर्फ़ ख़ैर ही बोले तो उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग से भी ज़ियादा हों । (سُنَنُ اَبی دَاوٗد ج۲ص۴۱حدیث ۱۲۸۷)

ह़दीसे पाक के इस हिस्से "**अपने मुसल्ले में बैठा रहे**" की वज़ाह़त करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं **:** या'नी मस्जिद या घर में इस ह़ाल में रहे कि ज़िक्र या ग़ौरो फ़िक्र करने या इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने या "बैतुल्लाह के त़वाफ़ में मश्ग़ूल रहे" नीज़ "**सिर्फ़ ख़ैर ही बोले**" के बारे में फ़रमाते हैं **:** या'नी फ़ज्र और इश्राक़ के दरमियान ख़ैर या'नी भलाई के सिवा कोई गुफ़्त-गू न करे क्यूं कि येह वोह बात है जिस पर सवाब मुरत्तब होता है ।

(مِرقاۃ ج۳ ص۳۹۶ تَحتَ الْحَدِیث۱۳۱۷)

नमाज़े इश्राक़ का वक़्त : सूरज तुलूअ़ होने के कम अज़ कम बीस या पच्चीस मिनट बा'द से ले कर ज़ह़्वए कुब्रा तक नमाज़े इश्राक़ का वक़्त रहता है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो चाश्त की दो रक्अतें पाबन्दी से अदा करता रहे उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।"

(سُنَن اِبنِ مَاجَہ، ج۲ص۱۵۳،۱۵٤حدیث۱۳۸۲)

नमाज़े चाश्त का वक़्त : इस का वक़्त आफ़्ताब बुलन्द होने से ज़वाल या'नी निस्फ़ुन्नहारे शर-ई तक है और बेहतर येह है कि चौथाई दिन चढ़े पढ़े। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 25) नमाज़े इश्राक़ के फ़ौरन बा'द भी चाहें तो नमाज़े चाश्त पढ़ सकते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सलातुत्तस्बीह़

इस नमाज़ का बे इन्तिहा सवाब है, शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने चचाजान हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया कि ऐ मेरे चचा ! अगर हो सके तो **सलातुत्तस्बीह़** हर रोज़ एक बार पढ़िये और अगर रोज़ाना न हो सके तो हर जुमुआ को एक बार पढ़ लीजिये और येह भी न हो सके तो हर महीने में एक बार और येह भी न हो सके तो साल में एक बार और येह भी न हो सके तो उम्र में एक बार।

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج۲ص٤٤،٤٥حدیث ۱۲۹۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

सलातुत्तस्बीह़ पढ़ने का त़रीक़ा

इस नमाज़ की तरकीब येह है कि तक्बीरे तह़रीमा के बा'द सना पढ़े फिर पन्दरह[15] मर्तबा येह तस्बीह़ पढ़े : "سُبۡحٰنَ اللّٰہِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ وَلَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ" फिर اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ सूरए फ़ातिह़ा और कोई सूरत पढ़ कर **रुकूअ़ से पहले दस[10] बार** येही तस्बीह़ पढ़े फिर रुकूअ़ करे और **रुकूअ़ में** سُبۡحٰنَ رَبِّیَ الۡعَظِیۡمِ तीन[3] मर्तबा पढ कर फिर **दस[10] मर्तबा** येही तस्बीह़ पढ़े फिर रुकूअ़ से सर उठाए और سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنۡ حَمِدَہٗ और اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَلَکَ الۡحَمۡدُ पढ़ कर फिर खड़े खड़े **दस[10] मर्तबा** येही तस्बीह़ पढ़े फिर **सज्दे** में जाए और तीन[3] मर्तबा سُبۡحٰنَ رَبِّیَ الۡاَعۡلٰی पढ़ कर फिर **दस[10] मर्तबा** येही तस्बीह़ पढ़े फिर सज्दे से सर उठाए और **दोनों[2] सज्दों के दरमियान बैठ कर दस[10] मर्तबा** येही तस्बीह़ पढ़े फिर **दूसरे[2] सज्दे** में जाए और سُبۡحٰنَ رَبِّیَ الۡاَعۡلٰی तीन[3] मर्तबा पढ़े फिर इस के बा'द येही तस्बीह़ दस[10] मर्तबा पढ़े इसी त़रह़ **चार[4] रक्अ़त** पढ़े और ख़याल रहे कि खड़े होने की ह़ालत में **सूरए फ़ातिह़ा से पहले पन्दरह[15] मर्तबा और बाक़ी सब जगह येह तस्बीह़ दस[10] दस[10] बार पढ़े** यूं हर रक्अ़त में 75 मर्तबा तस्बीह़ पढ़ी जाएगी और चार[4] रक्अ़तों में तस्बीह़ की गिनती **तीन[3] सो मर्तबा** होगी। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 32)

तस्बीह उंग्लियों पर न गिने बल्कि हो सके तो दिल में शुमार करे वरना उंग्लियां दबा कर। (ऐज़न, स. 33)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

इस्तिख़ारा

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम को तमाम उमूर में **इस्तिख़ारा** ता'लीम फ़रमाते जैसे कुरआन की सूरत ता'लीम फ़रमाते थे, फ़रमाते हैं : "जब कोई किसी अम्र का क़स्द करे तो दो[2] रक्अ़त नफ़्ल पढ़े फिर कहे :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ
بِقُدْرَتِكَ وَاَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِیْمِ فَاِنَّكَ
تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ
اَللّٰھُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ ھٰذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ
دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ اَوْ قَالَ عَاجِلِ اَمْرِیْ
وَاٰجِلِہٖ فَاقْدِرْہُ لِیْ وَیَسِّرْہُ لِیْ ثُمَّ بَارِكْ لِیْ فِیْہِ وَاِنْ
كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ ھٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ
وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ اَوْ قَالَ فِیْ عَاجِلِ اَمْرِیْ وَاٰجِلِہٖ
فَاصْرِفْہُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْہُ وَاقْدِرْ لِیَ الْخَیْرَ حَیْثُ
كَانَ ثُمَّ رَضِّنِیْ بِہٖ

ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) मैं तेरे इ़ल्म के साथ तुझ से ख़ैर त़लब करता (करती) हूं और तेरी क़ुदरत के ज़रीए़ से त़-लबे क़ुदरत करता (करती) हूं और तुझ से तेरा फ़ज़्ले अ़ज़ीम मांगता (मांगती) हूं क्यूं कि तू क़ुदरत रखता है और मैं क़ुदरत नहीं रखता (रखती) तू सब कुछ जानता है और मैं नहीं जानता (जानती) और तू तमाम पोशीदा बातों को ख़ूब जानता है ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) अगर तेरे इ़ल्म में येह अम्र (जिस का मैं क़स्द व इरादा रखता (रखती) हूं) मेरे दीन व ईमान और मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार में दुन्या व आख़िरत में मेरे लिये बेहतर है तो इस को मेरे लिये मुक़द्दर कर दे और मेरे लिये आसान कर दे फिर इस में मेरे वासित़े ब-र-कत कर दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तेरे इ़ल्म में येह काम मेरे लिये बुरा है मेरे दीन व ईमान मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार दुन्या व आख़िरत में तो इस को मुझ से और मुझ को इस से फैर दे और जहां कहीं बेहतरी हो मेरे लिये मुक़द्दर कर फिर उस से मुझे राज़ी कर दे। (صَحِیحُ الْبُخَارِی، ج۱ ص۳۹۳حدیث۱۱۶۲، رَدُّالْمُحْتَار، ج۲ص۵۶۹)

"اَوْ" में اَوْ قَالَ عَاجِلِ اَمْرِیْ शके रावी है, फ़ु-क़हा फ़रमाते हैं कि जम्अ़ करे या'नी यूं कहे : وَعَاقِبَۃِ اَمْرِیْ وَعَاجِلِ اَمْرِیْ وَاٰجِلِہٖ। (غُنْیَہ، ص۴۳۱)

मस्अला : ह़ज और जिहाद और दीगर नेक कामों में नफ़्से फे़'ल के लिये **इस्तिख़ारा** नहीं हो सकता, हां ता'यीने वक़्त (या'नी वक़्त मुक़र्रर करने) के लिये कर सकते हैं। (ऐज़न)

नमाज़े इस्तिख़ारा में कौन सी सूरतें पढ़ें

मुस्तह़ब येह है कि इस दुआ़ के अव्वल आख़िर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और दुरूद शरीफ़ पढ़े और पहली रक्अ़त में قُلْ یٰۤاَیُّھَا الْکٰفِرُوْنَ और दूसरी[2] में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ पढ़े और बा'ज़ मशाइख़ फ़रमाते हैं कि पहली में

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۶۹﴾ (پ ۲۰، القصص: ۶۸، ۶۹)

और दूसरी[2] में

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿۳۶﴾ (پ ۲۲، الاحزاب: ۳۶)

पढ़े। (رَدُّالْمُحْتَار، ج۲ص ۵۷۰)

बेहतर येह है कि सात बार **इस्तिख़ारा** करे कि एक ह़दीस में है : "ऐ अनस ! जब तू किसी काम का क़स्द करे तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ से उस में सात बार **इस्तिख़ारा** कर फिर नज़र कर तेरे दिल में क्या गुज़रा कि बेशक उसी में ख़ैर है।" (ऐज़न)

और बा'ज़ मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से मन्क़ूल है कि दुआए मज़्कूर पढ़ कर बा त़हारत क़िब्ला रू सो रहे अगर ख़्वाब में सफ़ेदी या सब्ज़ी देखे तो वोह काम बेहतर है और सियाही या सुर्ख़ी देखे तो बुरा है उस से बचे। (ऐज़न)

इस्तिख़ारा का वक़्त उस वक़्त तक है कि एक त़रफ़ राय पूरी जम न चुकी हो। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 32)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे ।

सलातुल अव्वाबीन की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़्-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मग़रिब के बा'द **छ[6] रक्अ़तें** इस त़रह़ अदा करे कि इन के दरमियान कोई बुरी बात न कहे तो येह छ[6] रक्अ़तें बारह[12] साल की **इ़बादत** के बराबर होंगी ।"

(سُنَنِ اِبنِ مَاجَه، ج ۲ ص ٤٥ حديث١١٦٧)

नमाज़े अव्वाबीन का त़रीक़ा

मग़रिब की तीन[3] रक्अ़त फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द छ[6] रक्अ़त एक ही निय्यत से पढ़िये, हर दो[2] रक्अ़त पर क़ा'दह कीजिये और इस में अत्तहिय्यात, दुरूदे इब्राहीम और दुआ़ पढ़िये, पहली, तीसरी[3] और पांचवीं[5] रक्अ़त की इब्तिदा में सना, तअ़व्वुज व तस्मिया (या'नी अऊ़ज़ु और बिस्मिल्लाह) भी पढ़िये । छटी[6] रक्अ़त के क़ा'दे के बा'द सलाम फैर दीजिये । पहली दो[2] रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा हुई और बाक़ी चार[4] नवाफ़िल । येह है अव्वाबीन (या'नी तौबा करने वालों) की नमाज़ । (अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 24, मुलख़्ख़सन) चाहें तो दो[2] दो[2] रक्अ़त कर के भी पढ़ सकते हैं । **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 4 सफ़्ह़ा 15 और 16 पर है : बा'दे मग़्रिब छ रक्अ़तें मुस्तह़ब हैं इन को सलातुल अव्वाबीन कहते हैं, ख़्वाह एक सलाम से सब पढ़े या दो[2] से या तीन[3] से और तीन[3] सलाम से या'नी हर दो[2] रक्अ़त पर सलाम फैरना अफ़्ज़ल है । (دُرِّمُختَار، رَدُّالْمُحتَار ج۲، ص٥٤٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तहिय्यतुल वुज़ू

वुज़ू के बा'द आ'ज़ा ख़ुश्क होने से पहले दो[2] रक्अ़त नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है। (دُرِّمُختار،ج٢،ص٥٦٣) **ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स वुज़ू करे और अच्छा वुज़ू करे और ज़ाहिर व बातिन के साथ मु-तवज्जेह हो कर दो[2] रक्अ़त पढ़े, उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।"

(صَحِیح مُسلِم،ص١٤٤ حدیث ٢٣٤)

ग़ुस्ल के बा'द भी दो[2] रक्अ़त नमाज़ मुस्तह़ब है। वुज़ू के बा'द फ़र्ज़ वग़ैरा पढ़े तो क़ाइम मक़ाम तहिय्यतुल वुज़ू के हो जाएंगे। (رَدُّالْمُحتَار،ج٢ص٥٦٣) मक्रूह वक़्त में तहिय्यतुल वुज़ू और ग़ुस्ल के बा'द वाली दो[2] रक्अ़तें नहीं पढ़ सकते।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सलातुल असरार

दुआ़ओं की मक़्बूबिय्यत और ह़ाजतों के पूरा होने के लिये एक मुजर्रब (या'नी आज़मूदा) नमाज़ **सलातुल असरार** भी है जिस को इमाम अबुल ह़सन नूरुद्दीन अ़ली बिन जरीर लख़्मी शत़नोफ़ी ने बह्जतुल असरार में और ह़ज़रते मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی और शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुहद्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हुए तह़रीर फ़रमाया है। इस की तरकीब येह है कि बा'द नमाज़े मग़्रिब सुन्नतें पढ़ कर दो[2] रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़े और बेहतर येह है कि اَلْحَمْدُ के बा'द हर रक्अ़त में

ग्यारह ग्यारह मर्तबा **قُلْ هُوَاللّٰه** पढ़े सलाम के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करे (म-सलन ह़म्दो सना की निय्यत से सू-रतुल फ़ातिह़ा पढ़ ले) फिर नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ग्यारह बार दुरूदो सलाम अ़र्ज़ करे और ग्यारह बार येह कहे :

يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ يَانَبِيَّ اللّٰهِ اَغِثْنِيْ وَامْدُدْنِيْ فِيْ قَضَاءِ حَاجَتِيْ يَا قَاضِيَ الْحَاجَات

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल ! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! मेरी फ़रियाद को पहुंचिये और मेरी मदद कीजिये, मेरी ह़ाजत पूरी होने में, ऐ तमाम ह़ाजतों के पूरा करने वाले।

फिर इ़राक़ की जानिब ग्यारह क़दम चले और हर क़दम पर येह कहे :

يَاغَوْثَ الثَّقَلَيْنِ يَا كَرِيْمَ الطَّرَفَيْنِ اَغِثْنِيْ وَامْدُدْنِيْ فِيْ قَضَاءِ حَاجَتِيْ يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ

(तरजमा : ऐ जिन्न व इन्स के फ़रियाद रस और ऐ दोनों[2] त़रफ़ (या'नी मां बाप दोनों[2] ही की जानिब) से बुज़ुर्ग ! मेरी फ़रियाद को पहुंचिये और मेरी मदद कीजिये मेरी ह़ाजत पूरी होने में, ऐ ह़ाजतों के पूरा करने वाले।) फिर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वसीला बना कर **अल्लाह** तआला से अपनी ह़ाजत के लिये दुआ़ मांगे। (अ़-रबी दुआ़ओं के साथ तरजमा पढ़ना ज़रूरी नहीं) (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 35, बह्जतुल असरार, स. 197)

हुस्ने निय्यत हो, ख़त़ा फिर कभी करता ही नहीं
आज़माया है यगाना है दोगाना तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सलातुल ह़ाजात

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि "जब हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कोई अम्रे अहम पेश आता तो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

नमाज़ पढ़ते।" (سُنَنِ اَبُو دَاوٗد، حدیث١٣١٩ ج٢ص٥٢)

इस के लिये दो या चार रक्अ़त पढ़े। ह़दीसे पाक में है : "पहली रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और तीन बार आ-यतुल कुरसी पढ़े और बाक़ी तीन रक्अ़तों में सूरए फ़ातिह़ा और قُلْ هُوَ اللّٰهُ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ एक एक बार पढ़े, तो येह ऐसी हैं जैसे शबे क़द्र में चार रक्अ़तें पढ़ीं।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 34) मशाइख़े किराम رحمہم اللّٰہ السّلام फ़रमाते हैं : कि हम ने येह नमाज़ पढ़ी और हमारी ह़ाजतें पूरी हुईं। (ऐज़न) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन औफ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जिस की कोई ह़ाजत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ हो या किसी बनी आदम (या'नी इन्सान) की त़रफ़ तो अच्छी त़रह़ वुज़ू करे फिर दो[2] रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सना करे और नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजे फिर येह पढ़े :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ اَسْأَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ لَا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، حدیث٤٧٨ ج٢ص٢١)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो ह़लीम व करीम है, पाक है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मालिक है अ़र्शे अ़ज़ीम का, ह़म्द है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जो रब है तमाम जहां का, मैं तुझ से तेरी रह़मत के अस्बाब मांगता (मांगती) हूं और त़लब करता (करती) हूं तेरी बख़्शिश के ज़राएअ़ और हर नेकी से ग़नीमत और हर गुनाह से सलामती को, मेरे लिये कोई गुनाह बिग़ैर मग़्फ़िरत न छोड़ और हर ग़म को दूर कर दे और जो ह़ाजत तेरी रिज़ा के मुवाफ़िक़ है उसे पूरा कर दे ऐ सब मेहरबानों से ज़ियादा मेहरबान।

नाबीना को आंखें मिल गईं

हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक नाबीना सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कीजिये कि मुझे आ़फ़िय्यत दे। इर्शाद फ़रमाया : "अगर तू चाहे तो दुआ़ करूं और चाहे तो सब्र कर और येह तेरे लिये बेहतर है।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! दुआ़ फ़रमा दीजिये। उन्हें हुक्म फ़रमाया : कि वुज़ू करो और अच्छा वुज़ू करो और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़ो :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُکَ وَاَتَوَسَّلُ وَاَتَوَجَّہُ اِلَیۡکَ بِنَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ نَّبِیِّ الرَّحۡمَۃِ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہِ[1] اِنِّیۡ تَوَجَّھۡتُ بِکَ اِلٰی رَبِّیۡ فِیۡ حَاجَتِیۡ ھٰذِہٖ لِتُقۡضٰی لِیۡ اَللّٰھُمَّ فَشَفِّعۡہُ فِیَّ

1: ह़दीसे पाक में इस जगह "या मुह़म्मद" (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلّم) है। मगर मुजद्दिदे आ'ज़म, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने "या मुह़म्मद" (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلّم) कहने के बजाए, या रसूलल्लाह (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلّم) कहने की ता'लीम दी है।)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रह़मतें भेजता है।

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तवस्सुल करता हूं और तेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह होता हूं तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए से जो नबिय्ये रह़मत हैं। या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मैं हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़रीए से अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ इस ह़ाजत के बारे में मु-तवज्जेह होता हूं, ताकि मेरी ह़ाजत पूरी हो। "इलाही ! इन की शफ़ाअ़त मेरे ह़क़ में क़बूल फ़रमा।"

सय्यिदुना उ़स्मान बिन हु़नैफ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "खु़दा की क़सम ! हम उठने भी न पाए थे, बातें ही कर रहे थे कि वोह हमारे पास आए, गोया कभी अन्धे थे ही नहीं।"

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَه، ج۲ ص۱۵۶ حديث ۱۳۸۵، سُنَنِ التِّرمِذِي، ص۳۳۶ ج۵ حديث ۳۵۸۹،
اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير، ج۹ ص۳۰ حديث ۸۳۱۱، بہارِ شریعت، حصہ ۴ ص ۳۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान जो येह वस्वसा डालता है कि सिर्फ़ "या **अल्लाह**" कहना चाहिये "या रसूलल्लाह" नहीं कहना चाहिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस ह़दीसे मुबारक ने शैत़ान के इस इन्तिहाई ख़त़रनाक वस्वसे को भी जड़ से उखाड़ दिया कि अगर "या रसूलल्लाह" कहना जाइज़ न होता तो खु़द हमारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस की क्यूं ता'लीम देते ? बस झूम झूम कर "या रसूलल्लाह" के ना'रे लगाते जाइये।

या रसूलल्लाह के ना'रे से हम को प्यार है
जिस ने येह ना'रा लगाया उस का बेड़ा पार है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

गहन की नमाज़

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे करीम (या'नी मुबारक ज़माने) में एक मर्तबा आफ़्ताब में गहन लगा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए और बहुत त़वील क़ियाम व रुकूअ़ व सुजूद के साथ नमाज़ पढ़ी कि मैं ने कभी ऐसा करते न देखा और येह फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी की मौत व ह़यात के सबब अपनी येह निशानियां ज़ाहिर नहीं फ़रमाता, बल्कि इन से अपने बन्दों को डराता है, लिहाज़ा जब इन में से कुछ देखो तो ज़िक्र व दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार की त़रफ़ घबरा कर उठो। (صَحِیۡحُ الۡبُخارِی،ج۱ ص۳۶۳حدیث ۱۰۵۹) **सूरज** गहन की नमाज़ **सुन्नते मुअक्कदा** और चांद गहन की नमाज़ **मुस्तह़ब** है।

(دُرِّمُخۡتار،ج۳ص ۸۰)

गहन की नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा

येह नमाज़ और नवाफ़िल की त़रह़ दो रक्अ़त पढ़ें या'नी हर रक्अ़त में एक रुकूअ़ और दो सज्दे करें न इस में अज़ान है, न इक़ामत, न बुलन्द आवाज़ से क़िराअत, और नमाज़ के बा'द दुआ़ करें यहां तक कि आफ़्ताब खुल जाए और दो रक्अ़त से ज़ियादा भी पढ़ सकते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह् और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

हैं ख़्वाह दो, दो रक्अ़त पर सलाम फैरें या चार पर।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 136)

ऐसे वक़्त गहन लगा कि उस वक़्त नमाज़ पढ़ना मम्नूअ़ है तो नमाज़ न पढ़ें, बल्कि दुआ़ में मश्ग़ूल रहें और इसी ह़ालत में डूब जाए तो दुआ़ ख़त्म कर दें और मग़्रिब की नमाज़ पढ़ें।

(اَلْجَوْهَرَةُ النَّيِّرَة، ص١٢٤، رَدُّالْمُحتَار، ج٣ ص٧٨)

तेज़ आंधी आए या दिन में सख़्त तारीकी छा जाए या रात में ख़ौफ़नाक रोशनी हो या लगातार कसरत से मींह बरसे या ब कसरत ओले पड़ें या आस्मान सुर्ख़ हो जाए या बिज्लियां गिरें या ब कसरत तारे टूटें या त़ाऊ़न वग़ैरा वबा फैले या ज़ल्ज़ले आएं या दुश्मन का ख़ौफ़ हो या और कोई दहशत नाक अम्र पाया जाए इन सब के लिये दो रक्अ़त नमाज़ मुस्तह़ब है। (عَالَمْگِیری، ج١ ص١٥٣، دُرِّمُختَار، ج٣ص٨٠، وغَیرُهُما)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नमाज़े तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जब कोई बन्दा गुनाह करे फिर वुज़ू कर के नमाज़ पढ़े फिर इस्तिग़्फ़ार करे, **अल्लाह** तआ़ला उस के गुनाह बख़्श देगा।" फिर येह आयत पढ़ी :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है।

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۠ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾

(پ۴، اٰلِ عمرٰن: ۱۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब कोई बे हयाई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को याद कर के अपने गुनाहों की मुआफ़ी चाहें और गुनाह कौन बख़्शे सिवा **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के ? और अपने किये पर जान बूझ कर अड़ न जाएं।

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، ج۱ص۴۱۵حدیث۴۰۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इशा के बा'द दो नफ़्ल का सवाब

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है, उन्हों ने फ़रमाया : जो इशा के बा'द दो रक्अ़त पढ़ेगा और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा के बा'द पन्दरह बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد पढ़ेगा **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में दो ऐसे महल ता'मीर करेगा जिसे अहले जन्नत देखेंगे। (تفسیر دُرِّ مَنْثُور ج۸ ص ۶۸۱)

सुन्नते अ़स्र के बारे में दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

《1》 "जो अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें पढ़े, **अल्लाह** तआ़ला उस के बदन को आग पर ह़राम फ़रमा देगा।" (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر لِلطَّبَرَانِی، ج۲۳ ص ۲۸۱ حدیث ۶۱۱)

《2》 "जो अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें पढ़े, उसे आग न छूएगी।"

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرَانِی، ج ۲ ص ۷۷ حدیث ۲۵۸۰)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे।

ज़ोहर के आख़िरी दो नफ़्ल के भी क्या कहने

ज़ोहर के बा'द चार रक्अ़त पढ़ना **मुस्तहब** है कि ह़दीसे पाक में फ़रमाया : जिस ने ज़ोहर से पहले चार और बा'द में चार पर मुहा-फ़ज़त की **अल्लाह** तआ़ला उस पर आग ह़राम फ़रमा देगा। (سُنَنُ النَّسائی ص ۳۱۰ حدیث ۱۸۱۳) **अ़ल्लामा सय्यिद त़ह़त़ावी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सिरे से आग में दाख़िल ही न होगा और उस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे और उस पर (हुक़ूक़ुल इ़बाद या'नी बन्दों की ह़क़ त-लफ़ियों के) जो मुत़ा-लबात हैं **अल्लाह** तआ़ला उस के फ़रीक़ को राज़ी कर देगा या येह मत्लब है कि ऐसे कामों की तौफ़ीक़ देगा जिन पर सज़ा न हो। (حَاشِيَةُ الطَّحْطَاوِی عَلَی الدُّر ج ۱ ص ۲۸٤) और **अ़ल्लामा शामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامی फ़रमाते हैं : उस के लिये बिशारत येह है कि सआ़दत पर उस का ख़ातिमा होगा और दोज़ख़ में न जाएगा। (رَدُّالْمُحْتَار ج ۲ ص ٥٤٧)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जहां ज़ोहर की दस रक्अ़त नमाज़ पढ़ लेते हैं वहां आख़िर में मज़ीद दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ कर बारहवीं शरीफ़ की निस्बत से 12 रक्अ़त करने में देर ही कितनी लगती है ! इस्तिक़ामत के साथ दो नफ़्ल पढ़ने की निय्यत फ़रमा लीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ैज़ाने रोज़ा

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, रह़मते आ़लम, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में होंगे । अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी को दूर करे (2) मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला ।

(اَلْبُدُوْرُ السَّافِرَۃ فِیْ اُمُوْرِ الْاٰخِرَۃ للسیوطی رحمہ اللہ ص۱۳۱ حدیث ۳۶۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नफ़्ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़र्ज़ रोज़ों के इ़लावा नफ़्ल रोज़ों की भी आ़दत बनानी चाहिये कि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं । और सवाब तो इतना है कि जी चाहता है बस रोज़े रखते ही चले जाएं । मज़ीद **दीनी फ़वाइद** में ईमान की ह़िफ़ाज़त, जहन्नम से नजात और जन्नत का ह़ुसूल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी

फ़वाइद का तअ़ल्लुक़ है तो दिन के अन्दर खाने पीने में सर्फ़ होने वाले वक़्त और अख़्राजात की बचत, पेट की इस्लाह़ और बहुत सारे अमराज़ से ह़िफ़ाज़त का सामान है। और तमाम फ़वाइद की अस्ल येह है कि इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है।

"मेरे ग़ौसे आ'ज़म" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 11 रिवायात

(1) जन्नत का अनोखा दरख़्त

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन ज़ैद जुहन्नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ऊ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने एक नफ़्ली रोज़ा रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक दरख़्त लगाएगा जिस का फल **अनार** से छोटा और सेब से बड़ा होगा। वोह (मोम से अलग न किये हुए) शहद जैसा मीठा और (मोम से अलग किये हुए ख़ालिस शहद की त़रह़) खुश ज़ाएक़ा होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत रोज़ादार को उस दरख़्त का फल खिलाएगा।" (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج١٨ ص٣٦٦ حديث٩٣٥)

(2) 40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी

ताजदारे रिसालत, शफ़ीए रोज़े क़ियामत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ढारस निशान है : "जिस ने सवाब की उम्मीद रखते हुए एक नफ़्ल रोज़ा रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दोज़ख़ से **चालीस साल** (का फ़ासिला) दूर फ़रमा देगा।" (كَنْزُالْعُمَّال ج٨ ص٢٥٥ حديث٢٤١٤٨)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है ।

(3) दोज़ख़ से 50 साल की मसाफ़त दूरी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी, मक्की म-दनी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आफ़िय्यत निशान है : "जिस ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दिन का **नफ़्ल रोज़ा** रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और दोज़ख़ के दरमियान एक तेज़ रफ़्तार सुवार की पचास साला मसाफ़त का फ़ासिला फ़रमा देगा ।" (كنزالعُمّال ج٨ص٢٥٥حديث٢٤١٤٩)

(4) ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहों के मरीज़ों के त़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रग़बत निशान है : "अगर किसी ने **एक दिन नफ़्ल रोज़ा** रखा और **ज़मीन भर सोना** उसे दिया जाए जब भी उस का सवाब पूरा न होगा उस का सवाब तो क़ियामत के ही दिन मिलेगा ।"

(اَلْمُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج٥ص٣٥٣حديث٦١٠٤)

(5) जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन अ़ब्दे सु-लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदा आमिना के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में एक दिन का फ़र्ज़ रोज़ा रखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

जितना सातों ज़मीनों और आस्मानों के माबैन (या'नी दरमियानी) फ़ासिला है। और जिस ने एक दिन का नफ़्ल रोज़ा रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना ज़मीनो आस्मान का दरमियानी फ़ासिला है।" (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج۱۷ ص ۱۲۰ حدیث۲۹۵)

(6) एक रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दिन का रोज़ा रखता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देता है जितना फ़ासिला एक कव्वा बचपन से बूढ़ा हो कर मरने तक मुसल्सल उड़ते हुए तै कर सकता है।

(مُسْنَد اِمَام اَحْمَد بن حَنْبَل ج ۳ ص ۶۱۹ حدیث ۱۰۸۱۰)

(7) बेह्तरीन अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई अ़मल बताइये।" इर्शाद फ़रमाया : " रोज़े रखा करो क्यूं कि इस जैसा अ़मल कोई नहीं।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की, "मुझे कोई अ़मल बताइये।" फ़रमाया : "रोज़े रखा करो क्यूं कि इस जैसा कोई अ़मल नहीं।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की, "मुझे कोई अ़मल बताइये।" फ़रमाया : "रोज़े रखा करो क्यूं कि" इस का कोई मिस्ल नहीं।" (سُنَنُ النَّسَائی ج٤ ص ١٦٦)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब तुम मुर्सलीन عَلَیْہِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

(8) रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिहाद किया करो ख़ुद कफ़ील हो जाओगे, रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे और सफ़र किया करो ग़नी (या'नी मालदार) हो जाओगे।"

(اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط ج٦ ص ١٤٦ حدیث ٨٣١٢)

(9) सोने के दस्तर ख़्वान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : रोज़ादार का हर बाल उस के लिये तस्बीह़ करता है, बरोज़े क़ियामत अ़र्श के नीचे रोज़ेदारों के लिये मोतियों और जवाहिर से जड़ा हुवा **सोने का ऐसा दस्तर ख़्वान** बिछाया जाएगा जो इह़ात़ए दुन्या के बराबर होगा, इस पर क़िस्म क़िस्म के जन्नती खाने, मश्रूब और फल फ्रूट होंगे वोह खाएं पियेंगे और ऐशो इ़श्रत में होंगे ह़ालां कि लोग सख़्त ह़िसाब में होंगे। (اَلْفِرْدَوْس بِمَاْثُوْرِ الْخِطَاب ج٥ص ٤٩٠ حدیث٨٨٥٣)

(10) हड्डियां तस्बीह करती हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके जन्नत, मह़बूबे **रब्बुल इ़ज़्ज़त** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (ह़ज़रते सय्यिदुना) बिलाल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से

फ़रमाया, "**ऐ बिलाल** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! आओ नाश्ता करें।" तो (ह़ज़रते सय्यिदुना) **बिलाल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की, "मैं रोज़े से हूं। तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हम अपना रिज़्क़ खा रहे हैं और बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) का रिज़्क़ जन्नत में बढ़ रहा है।" फिर फ़रमाया, ऐ बिलाल ! क्या तुम्हें मा'लूम है कि जितनी देर तक रोज़ादार के सामने खाना खाया जाता है तो **उस की हड्डियां तस्बीह़** करती हैं और मलाएका उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं।" (سُنَن ابن ماجه ج۲ ص ۳۴۸ حديث۱۷۴۹)

(11) रोज़े की ह़ालत में मरने की फ़ज़ीलत

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो रोज़े की ह़ालत में मरा, **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत तक के लिये उस के ह़िसाब में रोज़े लिख देगा। (اَلْفِردَوْس بِمَاْثُورِ الْخِطَاب ج۳ ص٥٠٤ حديث ٥٥٥٧)

नेक काम के दौरान मरने की सआ़दत

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! खुश नसीब है वोह मुसलमान जिसे रोज़े की ह़ालत में मौत आए। बल्कि किसी भी नेक काम के दौरान मौत आना निहायत ही अच्छी अ़लामत है। म-सलन बा वुज़ू या दौराने **नमाज़** मरना, **सफ़रे मदीना** के दौरान बल्कि मदीनए मुनव्वरह में रूह़ क़ब्ज़ होना, दौराने ह़ज मक्कए मुकर्रमा, मिना, मुज़्दलिफ़ा या अ़-रफ़ात शरीफ़ में फ़ौतगी, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत

के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र के दौरान दुन्या से रुख़्सत होना, येह सब ऐसी अ़ज़ीम सआ़दतें हैं कि सिर्फ़ ख़ुश नसीबों ही को ह़ासिल होती हैं। इस सिल्सिले में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की नेक तमन्नाएं बयान करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना **ख़ै-समा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस बात को पसन्द करते थे कि इन्तिक़ाल किसी अच्छे काम म-सलन ह़ज, उ़म्रह, ग़ज़्वह (जिहाद), र-मज़ान के रोज़े वग़ैरा के बा'द हो।

कालू चाचा की ईमान अफ़रोज़ वफ़ात

अच्छे काम के दौरान मौत से हम आग़ोश होने की सआ़दत मुक़द्दर वालों ही का ह़िस्सा है। इस ज़िम्न में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की एक **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और ज़िन्दगी भर के लिये दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता रहने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लीजिये। चुनान्चे मदी-नतुल औलिया **अह़मदआबाद** शरीफ़ (गुजरात, अल हिन्द) के **कालू चाचा** (उ़म्र तक़रीबन 60 बरस) र-मज़ानुल मुबारक (सि. 1425 हि., 2004) के आख़िरी अ़शरे में शाही मस्जिद (शाहे आ़लम, अह़मदआबाद शरीफ़) में होने वाले तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी के इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में मो'तकिफ़ हो गए। यूं तो येह पहले ही से **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल

से वाबस्ता थे मगर **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ इज्तिमाई़ ए'तिकाफ़ में शुमूलिय्यत पहली ही बार नसीब हुई थी। **ए'तिकाफ़** में बहुत कुछ सीखने का मौक़अ़ मिला और साथ ही साथ **दा'वते इस्लामी** के 72 **म-दनी इन्आ़मात** में से **पहली सफ़ में नमाज़** पढ़ने की तरग़ीब वाले दूसरे म-दनी इन्आ़म का ख़ूब जज़्बा मिला। चुनान्चे उन्हों ने **पहली सफ़ में नमाज़** पढ़ने की आ़दत बना ली। 2 शव्वालुल मुकर्रम या'नी **ई़दुल फ़ित्र** के दूसरे रोज़ तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र किया। **म-दनी क़ाफ़िले** से वापसी के पांच या छ दिन के बा'द या'नी 11 शव्वालुल मुकर्रम सि. 1425 हि. (2004) को किसी काम से बाज़ार जाना हुवा, मस्रूफ़िय्यत भी थी मगर ताख़ीर की सूरत में **पहली सफ़** फ़ौत हो जाने का ख़दशा था। लिहाज़ा सारा काम छोड़ कर मस्जिद का रुख़ किया और अज़ान से क़ब्ल ही **मस्जिद** में पहुंच गए, वुज़ू कर के जूं ही खड़े हुए कि गिर पड़े, **कलिमा शरीफ़** और **दुरूदे पाक** पढ़ते हुए उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْن

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **इज्तिमाई़ ए'तिकाफ़** की ब-र-कत से **म-दनी इन्आ़मात** के दूसरे म-दनी इन्आ़म **पहली सफ़ में नमाज़** पढ़ने के मिले हुए जज़्बे ने **कालू चाचा** को इन्तिक़ाल के वक़्त बाज़ार की ग़फ़्लत भरी फ़ज़ाओं से उठा कर मस्जिद की रह़मत भरी फ़ज़ाओं में पहुंचा दिया और कैसी ख़ुश नसीबी कि आख़िरी वक़्त **कलिमा व दुरूद** नसीब हो गया। سُبْحٰنَ الله ! और जिस को मरते वक़्त कलिमा

शरीफ़ नसीब हो जाए اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उस का **क़ब्रो हश्र** में बेड़ा पार है। चुनान्चे नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله हो, वोह दाख़िले जन्नत होगा। (سُنَنُ اَبِی دَاوُد ج۳ ص ۲۵۵ حدیث ۳۱۱۶) मज़ीद दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की ब-र-कत सुनिये : चुनान्चे इन्तिक़ाल के चन्द रोज़ बा'द उन के फ़रज़न्द ने ख़्वाब में देखा कि **मर्हूम कालू चाचा** सफ़ेद लिबास में मल्बूस सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए मुस्कराते हुए फ़रमा रहे हैं : **बेटा ! दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में लगे रहो कि इसी म-दनी माहोल की ब-र-कत से मुझ पर करम हुवा है।**

मौत फ़ज़्ले ख़ुदा عزوجل से हो ईमान पर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रब عزوجل की रहमत से पाओगे जन्नत में घर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हर माह तीन रोज़े रखने का सवाब

हर म-दनी माह (या'नी सिने हिजरी के महीने) में कम अज़ कम तीन[3] रोज़े हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को रख ही लेने चाहियें। इस के बे शुमार दुन्यवी और उख़रवी फ़वाइद व फ़ज़ाइल हैं। बेहतर येह है कि येह रोज़े "अय्यामे बीज़" या'नी चांद की 13, 14 और 15 तारीख़ को रखे जाएं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

“या रब्बे मुहम्मद” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से अय्यामे बीज़ के रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 8 रिवायात

(1) **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चार चीज़ों को नहीं छोड़ते थे ﴾1﴿ आ़शूरा और ﴾2﴿ अ़-श-रए **ज़ुल ह़िज्जा** और ﴾3﴿ हर महीने में **तीन**[3] **दिन के रोज़े** और ﴾4﴿ फ़ज्र (के फ़र्ज़) से पहले दो रक्अ़तें (या'नी दो सुन्नतें)। (سُنَنُ النَّسَائی ج٤ص٢٢٠)

(2) **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अय्यामे बीज़ में बिग़ैर रोज़े के न होते न सफ़र में न ह़ज़र (या'नी क़ियाम) में। (سُنَنُ النَّسَائی ج٤ص١٩٨)

(3) **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : “मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक महीने में **हफ़्ता, इतवार** और **पीर** का जब कि दूसरे माह **मंगल, बुध** और **जुमा'रात** का रोज़ा रखा करते।” (سُنَنُ التِّرْمِذِی ج٢ص١٨٦حدیث٧٤٦)

(4) **ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबू आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं ने सरकारे दो आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

आदम, **रसूले मुह्तशम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना, "जिस त़रह़ तुम में से किसी के पास लड़ाई में बचाव के लिये ढाल होती है उसी त़रह़ रोज़ा जहन्नम से तुम्हारी ढाल है और **हर माह तीन दिन रोज़े** रखना बेहतरीन रोज़े हैं।"

(صَحِيحُ ابْنُ خُزَيْمَة ج٣ ص ٣٠١ حديث٢١٢٥)

(5) **हर** महीने में तीन दिन के रोज़े ऐसे हैं जैसे दह्र या'नी (हमेशा) के रोज़े। (صَحِيحُ الْبُخارِىّ ج١ص٦٤٩حديث١٩٧٥)

(6) **र-मज़ान** के रोज़े और हर महीने में तीन दिन के रोज़े **सीने की ख़राबी** को दूर करते हैं। (مُسنَدِامام اَحْمَد ج٩ص٣٦حديث٢٣١٣٢)

(7) **जिस** से हो सके हर महीने में **तीन रोज़े** रखे कि हर रोज़ा दस गुनाह मिटाता और गुनाह से ऐसा पाक कर देता है जैसा पानी कपड़े को। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج٢٥ص٣٥حديث٦٠)

(8) **जब** महीने में **तीन रोज़े** रखने हों तो 13, 14 और 15 को रखो। (سُنَنُ النَّسائی ج٤ص٢٢١)

"मुस्तफ़ा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से पीर शरीफ़ और जुमा'रात के रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 5 रिवायात

(1) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **पीर** और **जुमा'रात** को आ'माल पेश होते हैं तो मैं पसन्द करता हूं कि मेरा अ़मल उस वक़्त पेश हो कि मैं रोज़ादार हूं। (سُنَنُ التِّرمِذی ج٢ص١٨٧حديث٧٤٧)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह् और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

(2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पीर शरीफ़ और **जुमा'रात** को रोज़े रखा करते थे इस के बारे में अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाया, इन दोनों दिनों में **अल्लाह** तआ़ला हर मुसल्मान की मग़्फ़िरत फ़रमाता है मगर वोह दो शख़्स जिन्हों ने बाहम जुदाई कर ली है उन की निस्बत मलाएका से फ़रमाता है इन्हें छोड़ दो यहां तक कि सुल्ह़ कर लें।

(سُنَن ابنِ ماجه ج۲ص۳٤٤حديث ۱۷٤۰)

(3) **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुमा'रात** के रोज़े का खास ख़याल रखते थे। (سُنَنُ التِّرْمِذِی ج۲ص۱۸٦حديث۷٤٥)

(4) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **पीर शरीफ़** के रोज़े का सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया, इसी में मेरी विलादत हुई, इसी में मुझ पर वह़्य नाज़िल हुई। (صَحِيح مُسلِم ص ۵۹۱ حديث ۱۱٦۲)

(5) **ह़ज़रते** सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के गुलाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ सफ़र में भी **पीर** और **जुमा'रात** का रोज़ा तर्क नहीं फ़रमाते थे। मैं ने उन की बारगाह में अ़र्ज़ की, कि क्या वजह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है।

है कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इस बड़ी उ़म्र में भी **पीर** और **जुमा'रात** का रोज़ा रखते हैं ? फ़रमाया, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुमा'रात** का रोज़ा रखा करते थे। मैं ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या वजह है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुमा'रात** का रोज़ा रखते हैं ? तो इर्शाद फ़रमाया : लोगों के आ'माल **पीर** और **जुमा'रात** को पेश किये जाते हैं।

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۹۲حدیث۳۸۵۹)

कीने की ता'रीफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन अह़ादीसे मुबा-रका से मा'लूम हुवा कि **पीर शरीफ़** और **जुमा'रात** को बारगाहे खुदान्दी عَزَّوَجَلَّ में बन्दों के आ'माल पेश किये जाते हैं और इन दोनों[2] अय्याम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से मुसल्मानों की **मग़्फ़िरत** फ़रमा देता है। मगर आपस में किसी दुन्यवी सबब से जुदाई करने वालों को नहीं बख़्शा जाता। वाक़ेई येह बेह़द तश्वीश की बात है। आज के दौर में शायद ही कोई **कीने** से मह़फ़ूज़ हो। **दिल की छुपी हुई दुश्मनी को कीना कहते हैं** लिहाज़ा हमें ग़ौर कर के जिस जिस मुसल्मान का दिल में कीना बैठ गया हो उस को दूर करना चाहिये। खुसूसन **ख़ानदानी झगड़े** हों तो खुद आगे बढ़ कर सुल्ह़ की तरकीब बनानी चाहिये, **इख़्लास** के साथ कामिल कोशिश के बा वुजूद भी अगर जुदाई **ख़त्म** करने में नाकामी हुई तो पहल करने वाला اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बरी हो जाएगा। बहर ह़ाल **पीर शरीफ़** और **जुमा'रात** को हमारे **मीठे**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग्फ़ार करते रहेंगे ।

मीठे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रोज़ा रखा करते थे । **पीर शरीफ़** के रोज़े का एक सबब अपनी विलादत भी बताया, गोया **ताजदारे** रिसालत, माहे नुबुव्वत, मालिके कौसर व जन्नत महबुबे रब्बुल इज्जत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाया करते थे ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"जन्नत" के तीन3 हुरूफ़ की निस्बत से बुध और जुमा'रात के रोज़ों के 3 फ़ज़ाइल

(1) **हज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है **अल्लाह** के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है, जो **बुध** और **जुमा'रात** को रोज़े रखे उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाती है । (مُسْنَدُ اَبِی یَعْلٰی ج٥ص١١٥حدیث٥٦١٠)

(2) **हज़रते** सय्यिदुना मुस्लिम बिन **उ़बैदुल्लाह** क़-रशी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिदे मुकर्रम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में या तो खुद अ़र्ज़ की या किसी और ने दरयाफ़्त किया, या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم! मैं **हमेशा रोज़ा** रखूं ? सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे । फिर दूसरी मरतबा अ़र्ज़ की, फिर ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई । तीसरी बार

पूछने पर इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि **रोज़े** के मु-तअ़ल्लिक़ किस ने सुवाल किया ? अ़र्ज़ की, मैं ने या नबिय्यल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! तो जवाबन इर्शाद फ़रमाया, बेशक तुझ पर तेरे घर वालों का ह़क़ है तू **र-मज़ान** और उस से मुत्तसिल महीने (शव्वाल) और हर **बुध** और **जुमा'रात** को रोज़ा रख कि अगर तू ऐसा करेगा **तो गोया तूने हमेशा के रोज़े रखे।** (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۹۵حدیث۳۸۶۸)

(3) "जिस ने **र-मज़ान, शव्वाल, बुध** और **जुमा'रात** का रोज़ा रखा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा।"

(السُّنَنُ الْکُبْرٰی لِلنَّسَائی ج۲ص۱۴۷حدیث۲۷۷۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"करम" के तीन 3 हुरूफ़ की निस्बत से बुध, जुमा'रात और जुमुआ़ के रोज़ों के 3 फ़ज़ाइल

(1) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, जिस ने **बुध, जुमा'रात व जुमुआ़** का रोज़ा रखा **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में एक मकान बनाएगा जिस का बाहर का ह़िस्सा अन्दर से दिखाई देगा और अन्दर का बाहर से।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج۳ ص۴۵۲حدیث۵۲۰۴)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज्र लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है।

(2) **हज़रते** सय्यिदुना अनस رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عزوجل उस के लिये (या'नी **बुध, जुमा'रात व जुमुआ** के रोज़े रखने वाले के लिये जन्नत में) मोती और याकू़त व ज़बर्जद का **महल** बनाएगा। और उस के लिये दोज़ख़ से बराअत (या'नी आज़ादी) लिख दी जाएगी। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۹۷حدیث۳۸۷۳)

(3) **हज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رضی اللہ تعالیٰ عنہما की रिवायत में है, जो इन तीन दिनों के रोज़े रखे फिर **जुमुआ** को थोड़ा या ज़ियादा तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) करे तो जो गुनाह किये हैं बख़्श दिये जाएंगे और ऐसा हो जाएगा जैसे उस दिन कि अपनी मां के पेट से पैदा हुवा था। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج۱۲ص۲۶۶حدیث۱۳۳۰۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"या नूर" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से जुमुआ के रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 5 फ़ज़ाइल

(1) **सरकारे** मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم का फ़रमाने बा क़रीना है: "जिस ने **जुमुआ** का रोज़ा रखा तो **अल्लाह** عزوجل उसे आख़िरत के दस दिनों के बराबर अज्र अ़ता फ़रमाएगा और उन की ता'दाद अय्यामे दुन्या की त़रह नहीं है।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۹۳حدیث۳۸۶۲)

मगर तन्हा जुमुआ का रोज़ा न रखा जाए इस के साथ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

जुमा'रात या हफ़्ता मिला लेना चाहिये। (तन्हा जुमुआ का रोज़ा रखने की मुमा-न-अ़त की रिवायत आगे आ रही है)

(2) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि मदीने के ताजवर, शफ़ीए रोज़े मह़शर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है, "जिस ने **जुमुआ** अदा किया (या'नी नमाज़े जुमुआ अदा की) और इस दिन का **रोज़ा** रखा और मरीज़ की इ़यादत की, और जनाज़े के साथ गया और निकाह़ की गवाही दी तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई।"

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ٨ص٩٧حديث٧٤٨٤)

(3) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने रोज़े की ह़ालत में यौमे जुमुआ की सुब्ह़ की और मरीज़ की **इ़यादत** की और **जनाज़े** के साथ गया और **स-दक़ा** किया तो उस ने अपने लिये **जन्नत** वाजिब कर ली।" (شُعَبُ الْاِيمان ج٣ص٣٩٤حديث٣٨٦٤)

(4) **ह़ज़रते** सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने बरोज़े **जुमुआ** रोज़ा रखा और मरीज़ की **इ़यादत** की और **मिस्कीन** को खाना खिलाया और जनाज़े के हमराह चला तो उसे चालीस साल के गुनाह लाह़िक़ न होंगे। (شُعَبُ الْاِيمان ج٣ص٣٩٤حديث٣٨٦٥)

(5) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत कम **जुमुआ** का

रोज़ा तर्क फ़रमाते थे। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۹۴حدیث۳۸۶۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस तरह आशूरा के रोज़े के पहले या बा'द में एक रोज़ा रखना है इसी तरह **जुमुआ** में भी करना है क्यूं कि खुसूसिय्यत के साथ तन्हा **जुमुआ** या सिर्फ़ **हफ़्ता** का रोज़ा रखना **मक्रूहे तन्ज़ीही** (या'नी ना पसन्दीदा) है। हां अगर किसी मख़्सूस तारीख़ को **जुमुआ** या हफ़्ता आ गया तो तन्हा **जुमुआ** या हफ़्ता का रोज़ा रखने में कराहत नहीं। म-सलन 15 शा'बानुल मुअज़्ज़म, 27 र-जबुल मुरज्जब वग़ैरा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"फ़ज़्ल" के तीन[3] हुरूफ़ की निस्बत से तन्हा जुमुआ का रोज़ा रखने की मुमा-न-अत की 3 रिवायात

(1) **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं, मैं ने ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "तुम में से कोई हरगिज़ **जुमुआ** का रोज़ा न रखे मगर येह कि इस के पहले या बा'द में एक दिन मिला ले।" (صَحِيحُ الْبُخارِىّ ج۱ص۶۵۳حديث ۱۹۸۵)

(2) **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيم से रिवायत करते हुए फ़रमाते हैं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : रातों में से शबे **जुमुआ** को क़ियाम के लिये ख़ास न करो और न ही दिनों के दौरान **यौमे**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

जुमुआ़ को रोजे़ के साथ ख़ास करो मगर येह कि तुम ऐसे रोजे़ में हो जो तुम्हें रखना हो। (صَحِیح مُسلِم ص٥٧٦حدیث١١٤٤)

(3) **ह़ज़रते** सय्यिदुना आमिर बिन लुदैन अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''**जुमुआ़** का दिन तुम्हारे लिये ई़द है इस दिन रोज़ा मत रखो मगर येह कि इस से पहले या बा'द में भी रोज़ा रखो।''

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب ج٢ص٨١حدیث١٥٩٢)

इन तीनों अह़ादीस से मा'लूम हुवा कि तन्हा **जुमुआ़** का रोज़ा न रखना चाहिये। हां अगर कोई ख़ास वजह हो म-सलन 27 र-जबुल मुरज्जब **जुमुआ़** को हो गई तो अब रखने में ह़रज नहीं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़फ़्ता और इतवार के रोजे़ के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल दो रिवायात

ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **हफ़्ता और इतवार** का रोज़ा रखा करते और फ़रमाते, ''येह दोनों (हफ़्ता और इतवार) मुश्रिकीन की ई़द के दिन हैं और मैं चाहता हूं कि इन की मुख़ा-लफ़त करूं।''

(اِبنِ خُزَیمہ ج٣ص٣١٨حدیث٢١٦٧)

तन्हा **हफ़्ता** का रोज़ा रखना मन्अ़ है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना

अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपनी बहन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हफ़्ते के दिन का रोज़ा फ़र्ज़ रोज़ों के इ़लावा मत रखो।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू **ईसा तिरमिज़ी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि येह ह़दीस ह़सन है और यहां मुमा-न-अ़त से मुराद किसी शख़्स का हफ़्ते के रोज़े को ख़ास कर लेना है कि यहूदी उस दिन की ता'ज़ीम करते हैं। (سُنَنُ التِّرۡمِذِی ج۲ص۱۸٦ حدیث ٧٤٤)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"या सुल्ताने मदीना" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से रोज़ए नफ़्ल के 12 म-दनी फूल

(1) **मां** बाप अगर बेटे को नफ़्ल रोज़े से इस लिये मन्अ़ करें कि बीमारी का अन्देशा है तो वालिदैन की इत़ाअ़त करे।

(رَدُّالۡمُحتار ج۳ص٤٧٨)

(2) **शोहर** की इजाज़त के बिग़ैर बीवी **नफ़्ल रोज़ा** नहीं रख सकती। (دُرِّمُختار، رَدُّالۡمُحتار ج۳ص٤٧٧)

(3) **नफ़्ल रोज़ा** क़स्दन शुरूअ़ करने से पूरा करना **वाजिब** हो जाता है अगर तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी। (دُرِّمُختار ج۳ص٤٧٣)

(4) **नफ़्ल रोज़ा** जान बूझ कर नहीं तोड़ा बल्कि बिला इख़्तियार टूट गया म-सलन औ़रत को रोज़े के दौरान हैज़ आ गया तो रोज़ा टूट गया मगर **क़ज़ा वाजिब** है। (ऐज़न, स. 374)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे।

(5) **नफ़्ल रोज़ा** बिला उ़ज़्र तोड़ना ना जाइज़ है। **मेहमान** के साथ अगर मेज़बान न खाएगा तो उसे या'नी **मेहमान** को ना गवार गुज़रेगा। या मेहमान अगर खाना न खाए तो **मेज़बान** को अज़िय्यत होगी तो **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ने के लिये येह उ़ज़्र है बशर्ते कि येह भरोसा हो कि इस की क़ज़ा रख लेगा और येह भी शर्त़ है कि ज़ह्वए कुब्रा से पहले तोड़े बा'द को नहीं। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ۳ ص۴۷۵)

(6) **वालिदैन** की ना राज़गी के सबब अ़स्र से पहले तक **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ सकता है। बा'दे अ़स्र नहीं।

(دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج۳ ص۴۷۷)

(7) **अगर** किसी इस्लामी भाई ने दा'वत की तो ज़ह्वए कुब्रा से क़ब्ल **रोज़ए नफ़्ल** तोड़ सकता है मगर क़ज़ा वाजिब है।

(دُرِّمُختار ج۳ ص۴۷۷)

(8) **इस** त़रह़ निय्यत की, कि ''कहीं दा'वत हुई तो रोज़ा नहीं और न हुई तो है।'' येह निय्यत सह़ीह़ नहीं, बहर ह़ाल रोज़ादार नहीं।

(आ़लम गीरी, जि. 1 स. 195)

(9) **मुलाज़िम** या मज़्दूर अगर **नफ़्ली रोज़ा** रखें तो काम पूरा नहीं कर सकते तो ''मुस्ताजिर'' (या'नी जिस ने मुला-ज़मत या मज़्दूरी पर रखा है) की इजाज़त ज़रूरी है। और अगर काम पूरा कर सकते हैं तो इजाज़त की ज़रूरत नहीं। (دُرِّمُختار ج ۳ ص ۴۷۸)

(10) **ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखते थे। इस त़रह़ रोज़े रखना ''सौमे

दावूदी'' कहलाता है और हमारे लिये येह अफ़्ज़ल है। जैसा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अफ़्ज़ल** रोज़ा मेरे भाई **दावूद** (عَلَيْهِ السَّلَام) का रोज़ा है कि वोह एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन न रखते और दुश्मन के मुक़ाबले से फ़िरार न होते थे।''

(سُنَنُ التِّرْمِذِی ج۲ص۱۹۷حدیث۷۷۰)

(11) **ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तीन3 दिन महीने के शुरूअ़ में, तीन3 दिन वस्त़ में और तीन3 दिन आख़िर में रोज़ा रखा करते थे और इस त़रह़ महीने के अवाइल, अवासित़ और अवाख़िर में रोज़ादार रहते थे।

(کَنْزُالْعُمَّال ج۸ص۳۰۴حدیث۲۴۶۲۴)

(12) **सारा** साल रोज़े रखना **मक्रूहे तन्ज़ीही** है।

(دُرِّمُختار ج۳ص۳۳۷)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ हमें ज़िन्दगी, सिह़्ह़त और फ़ुरसत को ग़नीमत जानते हुए ख़ूब ख़ूब **नफ़्ली रोज़े** रखने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा, उन्हें क़बूल भी कर और हमारी और हमारे **मीठे मीठे** मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

मुबारक महीने

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे दिल नशीन है :

مَنْ صَلّٰی عَلَیَّ حِیْنَ یُصْبِحُ عَشْرًا وَّحِیْنَ یُمْسِیْ عَشْرًا اَدْرَکَتْهُ شَفَاعَتِیْ یَوْمَ الْقِیَامَةِ

तरजमा : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस[10] दस[10] मर्तबा **दुरूदे पाक** पढ़ा वोह क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त को पाएगा । (مَجمَعُ الزَّوَائِد ج ۱۰ ص۱۶۳ حدیث۱۷۰۲۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुह़र्रमुल ह़राम

इस्लामी साल माहे मुह़र्रमुल ह़राम से शुरूअ़ होता है । येह बहुत ही अ़-ज़मत व ब-र-कत वाला महीना है, जो हमें सब्रो ईसार का दर्स देता है । इस माहे मुबारक में इ़बादत करने और रोज़ा रखने के बारे में मु-तअ़द्दद फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं, नीज़ इसी माह में **यौमे आ़शूरा** जो अपनी खुसूसिय्यात में मुम्ताज़ है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

२-मज़ान के बा'द अफ़्ज़ल रोज़े

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम**, शाफ़ेए उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''र-मज़ान के बा'द मुह़र्रम का रोज़ा अफ़्ज़ल है और फ़र्ज़ के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ **सलातुल्लैल** (या'नी रात के नवाफ़िल) है।

(صَحِیح مُسلِم ص۵۹۱حدیث۱۱۶۳)

एक महीने के रोज़ों के बराबर

त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : मुह़र्रम के हर दिन का रोज़ा एक महीने के रोज़ों के बराबर है। (اَلْمُعْجَمُ الصَّغِیْرللطَّبَرانی ج۲ ص۷۱)

"उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम" के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से आ़शूरा को वाक़ेअ़ होने वाले 25 अहम वाक़िआ़त

(1) 10 मुह़र्रमुल ह़राम **आ़शूरा** के रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तौबा क़बूल की गई (2) इसी दिन उन्हें पैदा किया गया (3) इसी दिन उन्हें जन्नत में दाख़िल किया गया (4) इसी दिन अ़र्श (5) कुर्सी (6) आस्मान (7) ज़मीन (8) सूरज (9) चांद (10) सितारे और (11) जन्नत पैदा किये गए (12) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

पैदा हुए (13) इसी दिन उन्हें आग से नजात मिली (14) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और आप की उम्मत को नजात मिली और फ़िरऔन अपनी क़ौम समेत ग़र्क़ हुवा (15) ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पैदा किये गए (16) इसी दिन उन्हें आस्मानों की त़रफ़ उठाया गया (17) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी (18) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मुल्के अ़ज़ीम अ़त़ा किया गया (19) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मछली के पेट से निकाले गए (20) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बीनाई का ज़ो'फ़ दूर हुवा (21) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام गहरे कूंएं से निकाले गए (22) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तक्लीफ़ रफ़्अ़ की गई (23) आस्मान से ज़मीन पर सब से पहली बारिश इसी दिन नाज़िल हुई और (24) इसी दिन का रोज़ा उम्मतों में मश्हूर था यहां तक कि येह भी कहा गया कि इस दिन का रोज़ा माहे र-मज़ानुल मुबारक से पहले फ़र्ज़ था फिर मन्सूख़ कर दिया गया (مُکاشَفَةُ الْقُلُوب ص ٦٥٠) (25) इमामुल हुमाम, इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे तिश्ना काम सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मअ़ शहज़ादगान व रु-फ़क़ा तीन दिन भूका रखने के बा'द इसी **आ़शूरा** के रोज़ दश्ते करबला में इन्तिहाई सफ़्फ़ाकी के साथ शहीद किया गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

आशूरा के दिन अहलो इयाल पर ख़र्च करने की ब-रकात

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स **आशूरा** के दिन अपने बाल बच्चों के खाने पीने में ख़ूब ज़ियादा फ़राख़ी और कुशा-दगी करेगा या'नी ज़ियादा खाना तय्यार करा कर ख़ूब पेट भर के खिलाएगा **अल्लाह** तआला साल भर तक उस के रिज़्क़ में वुस्अत और ख़ैरो ब-र-कत अ़ता फ़रमाएगा। (مَاثَبَتَ مِنَ السُّنَّۃِ،شَھْرُالْمُحَرَّم ص١٧)

सारा साल अमराज़ से हिफ़ाज़त

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, मुहर्रम की **नवीं** 9 और **दस्वीं** 10 को रोज़ा रखे तो बहुत सवाब पाएगा। बाल बच्चों के लिये **दस्वीं** 10 मुहर्रम को ख़ूब अच्छे अच्छे खाने पकाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ साल भर तक घर में ब-र-कत रहेगी। बेहतर है कि खिचड़ा पका कर हज़रते शहीदे करबला सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फ़ातिहा करे बहुत मुजर्रब (या'नी मुअस्सर व आज़्मूदा) है। इसी तारीख़ या'नी 10 **मुहर्रमुल हराम को ग़ुस्ल करे तो तमाम साल** اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **बीमारियों से अम्न में रहेगा क्यूं कि इस दिन आबे ज़मज़म तमाम पानियों में पहुंचता है** (روح البیان، ج٤، ص١٤٢ کوئٹہ) सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यौमे **आशूरा**

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

इस्मद सुरमा आंखों में लगाए तो उस की आंखें कभी भी न दुखेंगी।

(شُعَبُ الْاِیْمَان ج۳ ص۳٦۷حدیث۳۷۹۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ़शूरा की ख़ैरात की ब-रकात

आ़शूरा के रोज़ मुल्के "रै" में क़ाज़ी साहि़ब के पास एक साइल आ कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : मैं एक बहुत नादार व इ़याल दार आदमी हूं आप को **यौमे आ़शूरा** का वासित़ा ! मेरे लिये दो सैर रोटी, पांच सैर गोश्त, और दस दिरहम का इन्तिज़ाम फ़रमा दीजिये, **अल्लाह** तआ़ला आप की इ़ज़्ज़त में ब-र-कत दे। क़ाज़ी साहि़ब ने कहा : ज़ोहर के बा'द आना। फ़क़ीर ज़ोहर के बा'द आया तो कहा : अ़स्र के बा'द आना। वोह अ़स्र के बा'द पहुंचा तब भी कुछ नहीं दिया **ख़ाली हाथ** ही टरख़ा दिया। फ़क़ीर का दिल टूट गया। वोह रन्जीदा रन्जीदा एक नस्रानी (क्रिस्चेन) के पास पहुंचा और उस से कहा : आज के मुक़द्दस दिन के सदक़े मुझे कुछ दे दो। उस ने पूछा : आज कौन सा दिन है ? जवाब दिया : आज **यौमे आ़शूरा** है। येह कहने के बा'द **आ़शूरा** के कुछ फ़ज़ाइल बयान किये। उस ने सुन कर कहा आप ने बहुत ही अ़-ज़मत वाले दिन का वासित़ा दिया, अपनी ज़रूरत बयान कीजिये। साइल ने उस से भी वोही ज़रूरत बयान कर दी। उस आदमी ने दस बोरी गेहूं, सो सैर गोश्त और बीस दिरहम पेश करते हुए कहा : येह आप के

अहलो इ़याल के लिये ज़िन्दगी भर हर माह इस दिन की फ़ज़ीलत व हुरमत के सदक़े मुक़र्रर है। रात को क़ाज़ी साहिब ने ख़्वाब में देखा कोई कह रहा है नज़र उठा कर देख ! जब नज़र उठाई तो **दो आ़लीशान मह़ल** नज़र आए, एक चांदी और सोने की ईंटों का और दूसरा सुर्ख़ याक़ूत का था। क़ाज़ी ने पूछा : येह दोनों मह़ल किस के हैं ? जवाब मिला, अगर तुम साइल की ज़रूरत पूरी कर देते तो येह तुम्हें मिलते मगर चूंकि तुम ने उसे धक्के खिलाने के बा वुजूद भी कुछ न दिया इस लिये अब येह दोनों मह़ल फुलां नस्रानी (क्रिस्चेन) के लिये हैं। क़ाज़ी साहि़ब बेदार हुए तो बहुत परेशान थे। सुब्ह़ हुई तो नस्रानी (क्रिस्चेन) के पास गए और उस से दर्याफ़्त किया कि कल तुम ने कौन सी "नेकी" की है ? उस ने पूछा, आप को कैसे इ़ल्म हुवा ? क़ाज़ी साहि़ब ने अपना ख़्वाब सुनाया, और पेशकश की, कि मुझ से एक लाख दिरहम ले लो और कल की "नेकी" मुझे बेच दो ! **नस्रानी ने कहा : मैं रूए ज़मीन की सारी दौलत ले कर भी इसे फ़रोख़्त नहीं करूंगा, रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ की रह़मत व इ़नायत बहुत ख़ूब है। लीजिये मैं मुसल्मान होता हूं** येह कह कर उस ने पढ़ा, **اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ** **या'नी** मैं गवाही देता हूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और गवाही देता हूं मुह़म्मद उस के बन्दए ख़ास और उस के रसूल हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। (رَوْضُ الرِّیَاحِین ص ۱۵۲)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

शबे आ़शूरा की नफ़्ल नमाज़

आ़शूरा की रात में **चार रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल** इस तरकीब से पढ़े कि हर रक्अ़त में **अल ह़म्द** के बा'द **आ-यतुल कुरसी** एक बार और **सूरए इख़्लास** तीन तीन बार पढ़े और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर एक सो मर्तबा सूरए इख़्लास पढ़े। गुनाहों से पाक होगा और बिहिश्त में बे इन्तिहा ने'मतें मिलेंगी। (जन्नती ज़ेवर, स. 157)

"हुसैन" के चार हुरूफ़ की निस्बत से आ़शूरा के रोज़े के 4 फ़ज़ाइल"

(1) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का इर्शादे गिरामी है, "**रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मदी-नतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में तशरीफ़ लाए, यहूद को **आ़शूरा** के दिन रोज़ादार पाया तो इर्शाद फ़रमाया : येह क्या दिन है कि तुम रोज़ा रखते हो ? अ़र्ज़ की : येह अ़-ज़मत वाला दिन है कि इस में **मूसा** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَام और उन की क़ौम को **अल्लाह** तआ़ला ने नजात दी और फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को डबो दिया। लिहाज़ा **मूसा** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَام ने बतौ़रे शुक्राना इस दिन का **रोज़ा** रखा, तो हम भी **रोज़ा** रखते हैं। इर्शाद फ़रमाया : **मूसा** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَام की मुवा-फ़क़त करने में ब निस्बत तुम्हारे हम ज़ियादा ह़क़दार और ज़ियादा क़रीब हैं। तो **सरकार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी रोज़ा रखा और इस का हुक्म भी फ़रमाया।" (صَحِيحُ الْبُخَارِیّ ج١ص٦٥٦حديث٢٠٠٤)

(2) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا

फ़रमाते हैं, "मैं ने सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रहमते आ-लमियान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को किसी दिन के **रोजे** को और दिन पर फ़ज़ीलत दे कर जुस्त-जू फ़रमाते न देखा मगर येह कि **आशूरा** का दिन और येह कि र-मज़ान का महीना।"

(صَحِیحُ البُخارِیّ ج۱ص۶۵۷حدیث۲۰۰۶)

(3) नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **यौमे आशूरा का रोज़ा** रखो और इस में यहूदियों की मुख़ा-लफ़त करो, इस से पहले या बा'द में भी एक दिन का रोज़ा रखो।

(مُسْنَد اِمَام اَحْمَد ج۱ص۵۱۸ حدیث۲۱۵۴)

या'नी आशूरा का रोज़ा जब भी रखें तो साथ ही नवीं[9] या ग्यारहवीं[11] **मुहर्रमुल हराम** का रोज़ा भी रख लेना बेहतर है।

(4) हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर गुमान है कि **आशूरा का रोज़ा** एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है। (صَحِیح مُسلِم ص۵۹۰حدیث۱۱۶۲)

दुआए आशूरा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

یَا قَابِلَ تَوْبَةِ اٰدَمَ یَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

يَا فَارِجَ كَرْبِ ذِى النُّوْنِ يَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

يَا جَامِعَ شَمْلِ يَعْقُوْبَ يَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

يَا سَامِعَ دَعْوَةِ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ يَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

يَا مُغِيْثَ اِبْرَاهِيْمَ مِنَ النَّارِ يَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

يَا رَافِعَ اِدْرِيْسَ اِلَى السَّمَآءِ يَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

يَا مُجِيْبَ دَعْوَةِ صَالِحٍ فِى النَّاقَةِ يَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

يَا نَاصِرَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

يَوْمَ عَاشُوْرَآءَ يَا رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَرَحِيْمَهُمَا

صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

وَّصَلِّ عَلٰى جَمِيْعِ الْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَاقْضِ

حَاجَاتِنَا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَطِلْ عُمْرَنَا فِىْ

طَاعَتِكَ وَمَحَبَّتِكَ وَرِضَاكَ وَاَحْيِنَا حَيٰوةً طَيِّبَةً

وَّتَوَفَّنَا عَلَى الْاِيْمَانِ وَالْاِسْلَامِ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ

الرّٰحِمِيْنَ ط اَللّٰهُمَّ بِعِزِّ الْحَسَنِ وَاَخِيْهِ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ

وَجَدِّهٖ وَبَنِيْهِ فَرِّجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيْهِ ط

फिर सात बार पढ़े

سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْءَ الْمِيْزَانِ وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضٰى وَزِنَةَ الْعَرْشِ لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنْجَا مِنَ اللّٰهِ اِلَّا اِلَيْهِ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَدَدَ الشَّفْعِ وَالْوَتْرِ وَعَدَدَ كَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ كُلِّهَا نَسْئَلُكَ السَّلَامَةَ بِرَحْمَتِكَ يَاۤ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ؕ وَهُوَ حَسْبُنَا وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ؕ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ؕ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ عَدَدَ ذَرَّاتِ الْوُجُوْدِ وَعَدَدَ مَعْلُوْمَاتِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ

रबीउन्नूर शरीफ़

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

जिस ने मुझ पर दस मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआला उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (التّرغیب و التّرھیب ج۲ ص۳۲۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज्र लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड जितना है।

माहे रबीउ़न्नूर शरीफ़ तो क्या आता है हर त़रफ़ मौसिमे बहार आ जाता है। **मीठे मीठे** मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीवानों में ख़ुशी की लहर दौड़ जाती है। बूढ़ा हो या जवान हर ह़क़ीक़ी मुसल्मान गोया दिल की ज़बान से बोल उठता है :

निसार तेरी चहल पहल पर हज़ार ईदें रबीउ़ल अव्वल
सिवाए इब्लीस के जहां में सभी तो ख़ुशियां मना रहे हैं

जब काएनात में कुफ़्रो शिर्क और वह़्शतो बर-बरिय्यत का घुप अंधेरा छाया हुवा था। बारह रबीउ़न्नूर शरीफ़ को मक्कए मुकर्रमा में ह़ज़रते सय्यि-दतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا के मकाने रह़मत निशान से एक ऐसा नूर चमका जिस ने सारे आ़लम को जगमग जगमग कर दिया। सिसक्ती हुई इन्सानियत की आंख जिन की त़रफ़ लगी हुई थी वोह ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम आ़-लमीन के लिये रह़मत बन कर मादरे गेती पर जल्वा गर हुए।

मुबारक हो कि ख़त्मुल मुर-सलीं صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم *तशरीफ़ ले आए*
जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीं صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم *तशरीफ़ ले आए*

सुब्ह़े बहारां

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

क़रारे हर क़ल्बे मह़ज़ूनो ग़मगीन बन कर 12 रबीउ़न्नूर शरीफ़ को सुब्हे़ सादिक़ के वक़्त जहां में तशरीफ़ लाए और आ कर बे सहारों, ग़म के मारों, दुख्यारों, दिल फ़िगारों और दर दर की ठोकरें खाने वाले बेचारों की शामे ग़रीबां को "सुब्हे़ बहारां" बना दिया।

मुसल्मानो ! सुब्हे़ बहारां मुबारक

वोह बरसाते अन्वार सरकार صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم *आए*

मो'जिज़ात

12 रबीउ़न्नूर शरीफ़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुन्या में जल्वा गरी होते ही कुफ़्रो ज़ुल्मत के बादल छट गए, शाहे ईरान किस्रा के मह़ल पर ज़ल्ज़ला आया, चौदह कुंगुरे गिर गए। ईरान का जो आतश कदा एक हज़ार साल से शो'ला ज़न था वोह बुझ गया, दरियाए सावह ख़ुश्क हो गया, का'बे को वज्द आ गया और बुत सर के बल गिर पड़े।

तेरी आमद थी कि बैतुल्लाह मुजरे को झुका

तेरी हैबत थी कि हर बुत थरथरा कर गिर गया

ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जहां में फ़ज़्लो रह़मत बन कर तशरीफ़ लाए और यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के नुज़ूल का दिन ख़ुशी व मुसर्रत का दिन होता है। चुनान्चे **अल्लाह**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जब तुम मुर्सलीन علیہم السلام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

तबा-र-क व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾ (پ ۱۱ یونس: ۵۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ही के फ़ज़्ल और इसी की रह़मत और उसी पर चाहिये कि खुशी करें। वोह उन के सब धन दौलत से बेहतर है।

अल्लाहु अक्बर ! रह़मते खुदा वन्दी पर खुशी मनाने का कुरआने करीम हुक्म दे रहा है। और क्या हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बढ़ कर भी कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत है ? देखिये मुक़द्दस कुरआन में साफ़ साफ़ ए'लान है :

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷ الانبیاء: ۱۰۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रह़मत सारे जहान के लिये।

शबे क़द्र से भी अफ़्ज़ल रात

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عليه رَحْمَةُ اللهِ القوى फ़रमाते हैं, "बेशक सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शबे विलादत शबे क़द्र से भी अफ़्ज़ल है क्यूं कि **शबे विलादत सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस दुन्या में जल्वा गर होने की रात है जब कि लै-लतुल क़द्र सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़ता कर्दा शब है। और जो रात ज़ुहूरे ज़ाते सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वजह से मुशर्रफ़ हो वोह उस रात से ज़ियादा शरफ़ व इ़ज़्ज़त वाली

है जो मलाएका के नुज़ूल की बिना पर मुशर्रफ़ है।

(مَا ثَبَتَ مِنَ السُّنَّة ص۷۳ باب المدینه کراچی)

जश्ने विलादत मनाने का सवाब

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मोह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की रात ख़ुशी मनाने वालों की जज़ा येह है कि **अल्लाह** तआला उन्हें फ़ज़्लो करम से **जन्नातुन्नईम** में दाख़िल फ़रमाएगा। मुसल्मान हमेशा से **मह़फ़िले मीलाद** मुन्अ़क़िद करते आए हैं और विलादत की ख़ुशी में दा'वतें देते, खाने पकवाते और ख़ूब स-दक़ा व ख़ैरात देते आए हैं। ख़ूब ख़ुशी का इज़्हार करते और दिल खोल कर ख़र्च करते हैं नीज़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत के ज़िक्र का एहतिमाम करते हैं और अपने मकानों को सजाते हैं और इन तमाम अफ़आ़ले ह़-सना की ब-र-कत से उन लोगों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतों का नुज़ूल होता है।

(مَا ثَبَتَ مِنَ السُّنَّة ص۷۳ باب المدینه کراچی)

आज अम्बिया के सरवर तशरीफ़ ला रहे हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
मह़बूबे रब्बे अक्बर तशरीफ़ ला रहे हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

क्यूं है फ़ज़ा मुअ़त्तर ! क्यूं रोशनी है घर घर
अच्छा ! ह़बीबे दावर तशरीफ़ ला रहे हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ई़दों की ई़द आई रह़मत ख़ुदा की लाई
जूदो सख़ा के पैकर तशरीफ़ ला रहे हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हूरें लगीं तराने ना'तों के गुन-गुनाने
हूरो मलक के अफ़्सर तशरीफ़ ला रहे हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

वोह आमिना तेरे घर तशरीफ़ ला रहे हैं
जो शाहे बह़्रो बर हैं नबियों के ताजवर हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अ़त्तार अब ख़ुशी से फूले नहीं समाते
दुन्या में इन के दिलबर तशरीफ़ ला रहे हैं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे रबीउन्नूर शरीफ़ में ख़ूब **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** कीजिये। इस माह में **दुरूदे पाक** की ख़ूब कसरत फ़रमाइये। ख़ूब ख़ूब **नवाफ़िल** पढ़ कर और दीगर नेक काम कर के **आक़ाए मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में **ईसाले सवाब** कीजिये।

र-जबुल मुरज्जब

जन्नत की नहर

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहूरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जन्नत में एक नहर है जिसे "**रजब**" कहा जाता है जो दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शहद से ज़ियादा मीठी है तो जो कोई रजब का एक रोज़ा रखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इस नहर से सैराब करेगा।"

(شُعَبُ الْاِیْمَان ج۳ص۳۶۷حدیث۳۸۰۰)

जन्नत का महल

हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं **रजब** के **रोज़ादारों** के लिये जन्नत में एक **महल** है।"

(شُعَبُ الْاِیْمَان ج۳ص۳۶۸حدیث۳۸۰۲)

सत्ताईसवीं शब की फ़ज़ीलत

रजब में एक रात है कि इस में नेक अ़मल करने वाले को सो बरस की नेकियों का सवाब है और वोह रजब की **सत्ताईस्वीं**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

शब है। जो इस में बारह रक्अ़त इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और कोई सी एक सूरत और हर दो रक्अ़त पर अत्तह़िय्यात पढ़े और बारह पूरी होने पर सलाम फैरे, इस के बा'द 100 बार येह पढ़े : سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر इस्तिग़फ़ार सो बार, दुरूद शरीफ़ सो बार पढ़े और अपनी दुन्या व आख़िरत से जिस चीज़ की चाहे दुआ़ मांगे और सुब्ह़ को रोज़ा रखे तो **अल्लाह** तआ़ला उस की सब दुआ़एं क़बूल फ़रमाए सिवाए उस दुआ़ के जो गुनाह के लिये हो। (شُعَبُ الْاِیْمَان ج۳ص۳۷٤حدیث۳۸۱۲)

सत्ताईसवीं रजब के रोज़े की फ़ज़ीलत

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि फ़वाइदे हनाद में ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : "सत्ताईस **रजब** को मुझे नुबुव्वत अ़त़ा हुई जो इस दिन का रोज़ा रखे और इफ़्त़ार के वक़्त दुआ़ करे दस बरस के गुनाहों का **कफ़्फ़ारा** हो।"

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10 स. 648)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

सो साल के रोज़े का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "**रजब** में एक दिन और रात है जो उस दिन रोज़ा रखे और रात को क़ियाम (इ़बादत) करे तो गोया उस ने सो साल के रोज़े रखे और येह **रजब** की सताईस तारीख़ है। इसी दिन **मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मबऊ़स फ़रमाया।" (شُعَبُ الْاِیْمَان ج٣ص٣٧٤حدیث ٣٨١١)

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म

आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का महीना

रसूले अकरम, नूरे **मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **शाफ़ेए उमम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के बारे में फ़रमाने मुकर्रम है, **शा'बान मेरा महीना है और र-मज़ानुल मुबारक, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का महीना है।**

(الجامعُ الصَّغیر الحدیث٤٨٨٩ ص٣٠١)

र-मज़ान के बा'द कौन सा महीना अफ़्ज़ल है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार, मह़बूबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में अ़र्ज़ की गई कि र-मज़ान के बा'द कौन सा रोज़ा अफ़्ज़ल है ? इर्शाद फ़रमाया :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

"ता'ज़ीमे **र-मज़ान** के लिये **शा'बान** का।" फिर अ़र्ज़ की गई, कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : **र-मज़ान** के माह में **स-दक़ा** करना। (سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج۲ص۱٤٦حدیث٦٦٣)

पन्द्रहवीं शब में तजल्ली

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **शा'बान की पन्दरहवीं**[15] **शब** में तजल्ली फ़रमाता है। इस्तिग़्फ़ार (या'नी तौबा) करने वालों को बख़्श देता और त़ालिबे रह़मत पर रह़्म फ़रमाता और अ़दावत वालों को जिस ह़ाल पर हैं उसी पर छोड़ देता है।"

(شُعَبُ الْاِیْمَان ج۳ص۳۸۳حدیث۳۸۳۵)

भलाइयों वाली रातें

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم को फ़रमाते हुए सुना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (ख़ास तौर पर) चार[4] रातों में भलाइयों के दरवाज़े खोल देता है《1》बक़र ईद की रात《2》ईदुल फ़ित्र की रात《3》शा'बान की पन्दरहवीं[15] रात कि इस रात में मरने वालों के नाम और लोगों का रिज़्क़ और (इस साल) ह़ज करने वालों के नाम लिखे जाते हैं《4》अ़-रफ़ा (नव ज़ुल ह़िज्जा) की रात, अज़ाने (फ़ज्र) तक। (اَلدُّرُّالْمَنْثُوْر ج۷ص۴۰۲)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

मग़रिब के बा'द छ नवाफ़िल

मग़रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत वग़ैरा के बा'द **छ रक्अ़त ख़ुसूसी नवाफ़िल** अदा करना मा'मूलाते औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تعالیٰ से है। मग़रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत वग़ैरा अदा कर के छ रक्अ़त **नफ़्ल** दो दो रक्अ़त कर के अदा कीजिये। **पहली** दो रक्अ़तें शुरूअ़ करने से क़ब्ल येह अ़र्ज़ कीजिये : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो रक्अ़तों की ब-र-कत से मुझे दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर अ़ता फ़रमा। **दूसरी** दो रक्अ़तें शरूअ़ करने से क़ब्ल अ़र्ज़ कीजिये : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो रक्अ़तों की ब-र-कत से बलाओं से मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमा। **तीसरी** दो रक्अ़तें शुरूअ़ करने से क़ब्ल इस त़रह़ अ़र्ज़ कीजिये : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो रक्अ़तों की ब-र-कत से मुझे सिर्फ़अपना मोह़ताज रख और ग़ैरों की मोह़ताजी से बचा। हर दो रक्अ़त के बा'द इक्कीस बार قُلْ هُوَ اللهُ या एक बार सूरए यासीन पढ़िये बल्कि हो सके तो दोनों ही पढ़ लीजिये, येह भी हो सकता है कि एक इस्लामी भाई **यासीन शरीफ़** बुलन्द आवाज़ से पढ़ें और दूसरे ख़ामोशी से सुनें, इस में येह ख़याल रखिये कि दूसरा इस दौरान ज़बान से यासीन शरीफ़ न पढ़े। اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ रात शुरूअ़ होते ही सवाब का अम्बार लग जाएगा। हर बार **यासीन शरीफ़** के बा'द **दुआ़ए निस्फ़े शा'बान** भी पढ़िये :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

दुआए निस्फ़े शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيْهِ ط يَا ذَا الْجَلَالِ
وَالْاِكْرَامِ يَا ذَا الطَّوْلِ وَالْاِنْعَامِ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ ظَهْرُ
اللَّاجِيْنَ ط وَجَارُ الْمُسْتَجِيْرِيْنَ ط وَاَمَانُ الْخَآئِفِيْنَ ط
اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِيْ عِنْدَكَ فِيْ اُمِّ الْكِتٰبِ شَقِيًّا
اَوْ مَحْرُوْمًا اَوْ مَطْرُوْدًا اَوْ مُقَتَّرًا عَلَيَّ فِي الرِّزْقِ فَامْحُ
اَللّٰهُمَّ بِفَضْلِكَ شَقَاوَتِيْ وَحِرْمَانِيْ وَطَرْدِيْ وَاقْتِتَارَ
رِزْقِيْ ط وَاَثْبِتْنِيْ عِنْدَكَ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ سَعِيْدًا مَّرْزُوْقًا
مُّوَفَّقًا لِّلْخَيْرَاتِ ط فَاِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ فِيْ
كِتَابِكَ الْمُنَزَّلِ ط عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ ط يَمْحُوا
اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ اِلٰهِيْ
بِالتَّجَلِّي الْاَعْظَمِ ط فِيْ لَيْلَةِ النِّصْفِ مِنْ شَهْرِ
شَعْبَانَ الْمُكَرَّمِ ط الَّتِيْ يُفْرَقُ فِيْهَا كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ
وَّيُبْرَمُ ط اَنْ تَكْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَآءِ وَالْبَلْوَآءِ مَا نَعْلَمُ
وَمَا لَا نَعْلَمُ ط وَاَنْتَ بِهٖ اَعْلَمُ ط اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ
الْاَكْرَمُ ط وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى
اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ ط وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ एह़सान करने वाले कि जिस पर एह़सान नहीं किया जाता! ऐ बड़ी शानो शौकत वाले! ऐ फ़ज़्लो इन्आ़म वाले! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तू परेशान ह़ालों का मददगार, पनाह मांगने वालों को पनाह और ख़ौफ़ज़दों को अमान देने वाला है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू अपने यहां **उम्मुल किताब** (लौह़े मह़फ़ूज़) में मुझे शक़ी (बद बख़्त), मह़रूम, धुत्कारा हुवा और रिज़्क़ में तंगी दिया हुवा लिख चुका हो तो ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने फ़ज़्ल से मेरी बद बख़्ती, मह़रूमी, ज़िल्लत और रिज़्क़ की तंगी को मिटा दे और अपने पास उम्मुल किताब में मुझे ख़ुश बख़्त रिज़्क़ दिया हुवा और भलाइयों की तौफ़ीक़ दिया हुवा सब्त (तह़रीर) फ़रमा दे। कि तूने ही तेरी नाज़िल की हुई किताब में तेरे ही भेजे हुए नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बान पर फ़रमाया और तेरा (येह) फ़रमाना ह़क़ है कि, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो चाहे मिटाता है और साबित करता (लिखता) है और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है।" (كنزالايمان پ ١٣،الرعد:٣٩)

ख़ुदाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तजल्लिये आ'ज़म के वसीले से जो निस्फ़े शा'बानुल मुकर्रम की रात में है कि जिस में बांट दिया जाता है जो ह़िक्मत वाला काम और अटल कर दिया जाता है। (या **अल्लाह** !) मुसीबतों और रन्जिशों को हम से दूर फ़रमा कि जिन्हें हम जानते और नहीं भी जानते जब कि तू इन्हें सब से ज़ियादा जानने वाला है। बेशक तू सब से बढ़ कर अ़ज़ीज़ और इ़ज़्ज़त वाला है। **अल्लाह** तआ़ला हमारे सरदार **मुह़म्मद** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आलो अस्ह़ाब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم पर दुरूदो सलाम भेजे। सब ख़ूबियां सब जहानों के पालने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं।

क़ब्र पर मोम बत्तियां जलाना

शबे बराअत में इस्लामी भाइयों का क़ब्रिस्तान जाना सुन्नत है (इस्लामी बहनों को शरअ़न इजाज़त नहीं) क़ब्रों पर मोम बत्तियां नहीं जला सकते हां अगर **तिलावत** वग़ैरा करना हो तो ज़रूरतन उजाला ह़ासिल करने के लिये क़ब्र से हट कर **मोमबत्ती** जला सकते हैं । इसी त़रह़ ह़ाज़िरीन को ख़ुश्बू पहुंचाने की निय्यत से क़ब्र से हट कर अगरबत्तियां जलाने में ह़रज नहीं । **मज़ाराते औलिया** رحمهم الله تعالى पर चादर चढ़ाना और इस के पास **चराग़** जलाना जाइज़ है कि इस त़रह़ लोग मु-तवज्जेह होते और उन के दिलों में अ़-ज़मत पैदा होती और वोह ह़ाज़िर हो कर इक्तिसाबे फ़ैज़ करते हैं । अगर औलिया और अ़वाम की **क़ब्रें** यक्सां रखी जाएं तो बहुत सारे दीनी फ़वाइद **ख़त्म** हो कर रह जाएं ।

आतश बाज़ी ह़राम है

अफ़्सोस ! आतश बाज़ी की नापाक रस्म अब मुसल्मानों में ज़ोर पकड़ती जा रही है, मुसल्मानों का करोड़ हा करोड़ रूपिया हर साल **आतश बाज़ी** की नज़्र हो जाता है । और आए दिन येह ख़बरें आती हैं कि फ़ुलां जगह **आतश बाज़ी** से इतने घर जल गए और इतने आदमी झुलस कर मर गए वग़ैरा वग़ैरा । इस में जान का ख़त़रा, माल की बरबादी और मकान में आग लगने का अन्देशा है, फिर येह काम **अल्लाह** عزوجل की ना फ़रमानी भी है । ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عليه رحمة الرحمن फ़रमाते हैं, "**आतश बाज़ी बनाना, बेचना, ख़रीदना**

और ख़रीदवाना, चलाना और चलवाना सब ह़राम है।"

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 78)

तुझ को शा'बाने मुअ़ज़्ज़म का ख़ुदाया वासित़ा

बख़्श दे रब्बे मुह़म्मद तू मेरी हर इक ख़त़ा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

र-मज़ानुल मुबारक

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने त़क़र्रुब निशान है, "बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे।" (سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج۲ص۲۷حدیث ۴۸۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदाए **रह़मान** عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें **माहे र-मज़ान** जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत से सर-फ़राज़ फ़रमाया। माहे र-मज़ान के फ़ैज़ान के क्या कहने! इस की तो हर घड़ी रह़मत भरी है। इस महीने में अज्रो सवाब बहुत ही बढ़ जाता है। नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब सत्तर70 गुना कर दिया जाता है। बल्कि इस महीने में तो रोज़ादार का सोना भी इ़बादत में शुमार किया जाता है। अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते रोज़ादारों की दुआ़ पर आमीन कहते हैं और एक ह़दीसे पाक के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज्र लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है।

मुताबिक़ **"र-मज़ान के रोज़ादार के लिये दरिया की मछलियां इफ़्तार तक दुआए मग़्फ़िरत करती रहती हैं।"**

(اَلتَّرْغِیب وَالتَّرْهِیب ج۲ص۵۵حدیث٦)

सोने के दरवाज़े वाला महल

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, मक्की म-दनी सुल्तान, रह़मते आ-लमियान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जब माहे र-मज़ान की पहली रात आती है तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और आख़िर रात तक बन्द नहीं होते। जो कोई बन्दा इस माहे मुबारक की किसी भी रात में नमाज़ पढ़ता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के हर सज्दे के इ़वज़ (या'नी बदले में) उस के लिये पन्दरह सो नेकियां लिखता है और उस के लिये जन्नत में **सुर्ख़ याक़ूत का घर** बनाता है। जिस में साठ हज़ार दरवाज़े होंगे। और हर दरवाज़े के पट सोने के बने होंगे जिन में याक़ूते सुर्ख़ जड़े होंगे। पस जो कोई माहे र-मज़ान का पहला **रोज़ा** रखता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ महीने के आख़िर दिन तक उस के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देता है, और उस के लिये सुब्ह़ से शाम तक **सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते** दुआए मग़्फ़िरत करते रहते हैं। रात और दिन में जब भी वोह सज्दा करता है उस के हर **सज्दे** के इ़वज़ (या'नी बदले) उसे (जन्नत में) एक एक ऐसा दरख़्त अ़ता किया जाता है कि उस के साए में घुड़ सुवार **पांच सो बरस** तक चलता रहे।"

(شُعَبُ الْاِیْمَان ج۳ ص۳۱٤حدیث۳٦۳۵)

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ख़ुदाए ह़न्नानो मन्नान عَزَّوَجَلَّ का किस क़दर अ़ज़ीम एह़सान है कि उस ने हमें अपने ह़बीबे ज़ीशान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल ऐसा माहे र-मज़ान अ़ता फ़रमाया कि इस माहे मुकर्रम में जन्नत के तमाम दरवाज़े खुल जाते हैं। और नेकियों का अज्र ख़ूब ख़ूब बढ़ जाता है। बयान कर्दा ह़दीस के मुताबिक़ र-मज़ानुल मुबारक की रातों में नमाज़ अदा करने वाले को हर एक सज्दे के बदले में **पन्दरह सो नेकियां** अ़ता की जाती हैं नीज़ जन्नत का **अ़ज़ीमुश्शान मह़ल** मज़ीद बर आं। इस ह़दीसे मुबारक में रोज़ादारों के लिये येह बिशारते उ़ज़्मा भी मौजूद है कि सुब्ह़ ता शाम **सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते** उन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !   صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ह़ासिल होने की सूरत में माहे र-मज़ानुल मुबारक की ब-र-कतें लूटने का बहुत ज़ेह्न बनता है वरना बुरी **सोह़बतों** में रह कर इस मुबारक महीने में भी अक्सर लोग गुनाहों में पड़े रहते हैं। आइये ! गुनाहों के दलदल में धंसे हुए एक **फ़नकार** का वाक़िआ़ पढ़िये जिसे दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** ने म-दनी रंग चढ़ा दिया। चुनान्चे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रहमतें भेजता है ।

मैं फ़नकार था

ओरंगी टाऊन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है **:** अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! मैं एक **फ़नकार** था, म्यूज़ीकल प्रोग्राम्ज़ और फ़ंक्शन्ज़ करते हुए ज़िन्दगी के अनमोल अवक़ात बरबाद हुए जा रहे थे, क़ल्बो दिमाग़ पर ग़फ़्लत के कुछ ऐसे पर्दे पड़े हुए थे कि न नमाज़ की तौफ़ीक़ थी न ही गुनाहों का एह़सास । सह़राए मदीना टोल प्लाज़ा सुपर हाइवे बाबुल मदीना कराची में बाबुल इस्लाम सत़्ह़ पर होने वाले **तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** (सि. 1424 हि., सि. 2003 ई.) में हाज़िरी के लिये एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के तरग़ीब दिलाई । ज़हे नसीब ! उस में शिर्कत की सआ़दत मिल गई । तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** में मुझे अपने गुनाहों पर बहुत ज़ियादा नदामत हुई, मैं अपने जज़्बात पर क़ाबू न पा सका, फूट फूट कर रोया, बस रोने ने काम दिखा दिया ! اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल मिल गया । और मैं ने रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलों से **तौबा** कर ली और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लिया । 25 दिसम्बर 2004 को मैं जब म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना हो रहा था कि छोटी हमशीरा का फ़ोन आया, भर्राई हुई आवाज़ में उन्हों ने अपने यहां होने वाली **नाबीना बच्ची** की विलादत

की ख़बर सुनाई और साथ ही कहा, डॉक्टरों ने कह दिया है कि इस की आंखें रोशन नहीं हो सकतीं। इतना कहने के बा'द बन्द टूटा और छोटी बहन सदमे से बिलक बिलक कर रोने लगी। मैं ने येह कह कर ढारस बंधाई कि اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में दुआ़ करूंगा। मैं ने म-दनी क़ाफ़िले में ख़ुद भी बहुत दुआ़एं कीं और म-दनी क़ाफ़िले वाले **आ़शिक़ाने रसूल** से भी दुआ़एं करवाईं। जब म-दनी क़ाफ़िले से पलटा तो दूसरे ही दिन छोटी बहन का मुस्कराता हुवा फ़ोन आया और उन्हों ने ख़ुशी ख़ुशी येह ख़बरे फ़रह़त असर सुनाई कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मेरी नाबीना बेटी महक की आंखें रोशन हो गई हैं और डॉक्टर्ज़ तअ़ज्जुब कर रहे हैं कि येह कैसे हो गया ! क्यूं कि हमारी डॉक्टरी में इस का कोई इलाज ही नहीं था।** येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे बाबुल मदीना कराची में अ़लाक़ाई मुशा-वरत के एक रुक्न की हैसिय्यत से दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये कोशिशें करने की सआ़दतें ह़ासिल हैं।

आफ़तों से न डर, रख करम पर नज़र	*रोशन आंखें मिलें, क़ाफ़िले में चलो*
आप को डॉक्टर, ने गो मायूस कर	*भी दिया मत डरें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल कितना प्यारा प्यारा है। इस के दामन में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

आ कर मुआ़शरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद बा किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इ़ज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने लगे नीज़ म-दनी क़ाफ़िलों की बहारें भी आप के सामने हैं। जिस त़रह़ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से बा'ज़ों की दुन्यवी मुसीबत रुख़्सत हो जाती है। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इसी त़रह़ ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, सरापा रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से आख़िरत की आफ़त भी राह़त में ढल जाएगी।

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द
ह़श्र को खुल जाएगी त़ाक़त रसूलुल्लाह की صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

पांच ख़ुसूसी करम

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रह़मते आ़-लमियान, सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, ह़बीबे रह़मान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी शान है : "मेरी उम्मत को माहे र-मज़ान में **पांच चीज़ें** ऐसी अ़त़ा की गईं जो मुझ से पहले किसी नबी عَلَیْہِ السَّلَام को न मिलीं : ﴾1﴿ जब र-मज़ानुल मुबारक की पहली रात होती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाता है और जिस की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नज़रे रह़मत फ़रमाए उसे कभी भी अ़ज़ाब न देगा ﴾2﴿ शाम के वक़्त उन के मुंह की बू (जो भूक की वजह से होती है) **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक मुश्क की ख़ुश्बू से भी बेहतर है ﴾3﴿ फ़िरिश्ते

हर रात और दिन उन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़एं करते रहते हैं ﴾4﴿ **अल्लाह** तआ़ला जन्नत को हुक्म फ़रमाता है, "मेरे (नेक) बन्दों के लिये मुज़य्यन (या'नी आरास्ता) हो जा अ़न्क़रीब वोह दुन्या की मशक़्क़त से मेरे घर और करम में राह़त पाएंगे ﴾5﴿ जब माहे र-मज़ान की आख़िरी रात आती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है। क़ौम में से एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या येह **लै-लतुल क़द्र** है ? इर्शाद फ़रमाया : "नहीं क्या तुम नहीं देखते कि मज़्दूर जब अपने कामों से फ़ारिग़ हो जाते हैं तो उन्हें उजरत दी जाती है।"

(التَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج ٢ ص٥٦ حديث٧)

सग़ीरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है, "पांचों नमाज़ें, और जुमुआ़ अगले जुमुआ़ तक और माहे र-मज़ान अगले माहे र-मज़ान तक गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब तक कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए।" (صَحِيح مُسلِم ص ١٤٤ حديث ٢٣٣)

तौबा का त़रीक़ा

سُبحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ र-मज़ानुल मुबारक में रह़मतों की छमाछम बारिशें और **गुनाहे सग़ीरा** के कफ़्फ़ारे का सामान हो जाता है। **गुनाहे कबीरा** तौबा से मुआ़फ़ होते हैं। **तौबा करने का त़रीक़ा**

येह है कि जो गुनाह हुवा ख़ास उस गुनाह का ज़िक्र कर के दिल की बेज़ारी और आइन्दा उस से बचने का अ़ह्द कर के **तौबा** करे। म-सलन झूट बोला, तो बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ करे, या **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ मैं ने जो येह झूट बोला इस से **तौबा** करता हूं और आइन्दा नहीं बोलूंगा। **तौबा** के दौरान दिल में झूट से नफ़रत हो और "आइन्दा नहीं बोलूंगा" कहते वक़्त दिल में येह इरादा भी हो कि जो कुछ कह रहा हूं ऐसा ही करूंगा जभी **तौबा** है। अगर बन्दे की ह़क़ त-लफ़ी की है तो **तौबा** के साथ साथ उस बन्दे से मुआ़फ़ करवाना भी ज़रूरी है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हर शब साठ हज़ार की बख़्शिश

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ज़ीशान, मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है, "**र-मज़ान शरीफ़** की हर शब आस्मानों में सुब्ह़े सादिक़ तक एक मुनादी येह निदा करता है, "**ऐ अच्छाई मांगने वाले !** मुकम्मल कर (या'नी अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त की त़रफ़ आगे बढ़) और ख़ुश हो जा। और **ऐ शरीर** ! शर से बाज़ आ जा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

और इब्रत ह़ासिल कर। है **कोई मग़्फ़िरत का त़ालिब !** कि उस की त़लब पूरी की जाए। है **कोई तौबा करने वाला !** कि उस की तौबा क़बूल की जाए। है **कोई दुआ़ मांगने वाला !** कि उस की दुआ़ क़बूल की जाए। **है कोई साइल !** कि उस का सुवाल पूरा किया जाए। **अल्लाह** तआ़ला **र-मज़ानुल मुबारक की हर शब में इफ़्त़ार के वक़्त साठ हज़ार गुनाहगारों को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देता है। और ईद के दिन सारे महीने के बराबर गुनाहगारों की बख़्शिश की जाती है।''** (اَلدُّرُّالْمَنْثُور ج١ ص٤٤٦)

मदीने के दीवानो ! र-मज़ानुल मुबारक की जल्वा गरी तो क्या होती है, हम ग़रीबों के वारे न्यारे हो जाते हैं। **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से **रह़मत** के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और ख़ूब **मग़्फ़िरत** के परवाने तक़्सीम होते हैं। काश ! हम गुनहगारों को ब तुफ़ैले **माहे र-मज़ान,** सरवरे कौनो मकान, मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रह़मत भरे हाथों जहन्नम से रिहाई का परवाना मिल जाए। इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ करते हैं :

तमन्ना है फ़रमाइये रोज़े मह़शर
येह तेरी रिहाई की चिट्ठी मिली है

रोज़ाना दस लाख गुनहगारों की दोज़ख़ से रिहाई

अल्लाह तआ़ला की इनायतों, रह़मतों और बख़्शिशों का तज़्किरा करते हुए एक मौक़अ़ पर सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब र-मज़ान की पहली रात होती है तो **अल्लाह** तआ़ला अपनी मख़्लूक़ की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे की त़रफ़ नज़र फ़रमाए तो उसे कभी अ़ज़ाब न देगा। और **हर रोज़ दस लाख** (गुनहगारों) **को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब उन्तीसवीं रात होती है तो महीने भर में जितने आज़ाद किये उन के मज्मूए़ के बराबर उस एक रात में आज़ाद फ़रमाता है।** फिर जब ई़दुल फ़ित्र की रात आती है। मलाएका ख़ुशी करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने नूर की ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और फ़िरिश्तों से फ़रमाता है, "**ऐ गुरौहे मलाएका !** उस मज़्दूर का क्या बदला है जिस ने काम पूरा कर लिया ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, "उस को पूरा पूरा अज्र दिया जाए।" **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है, "मैं तुम्हें गवाह करता हूं कि मैं ने उन सब को बख़्श दिया।"

(كَنْزُ الْعُمّال ج ٨ ص ٢١٩ حديث ٢٣٧٠٢)

जुमुआ़ की हर घड़ी में दस लाख की मग़्फ़िरत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

रिवायत है कि महबूबे रब्बुल आ-लमीन, सय्यिदुल अम्बियाए वल **मुर-सलीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, जनाबे रहमतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ माहे र-मज़ान में रोज़ाना इफ़्तार के वक़्त दस लाख ऐसे गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है जिन पर गुनाहों की वजह से जहन्नम वाजिब हो चुका था, नीज़ **शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ** (या'नी जुमा'रात को गुरूबे आफ़्ताब से ले कर जुमुआ के गुरुबे आफ़्ताब तक) **की हर हर घड़ी में ऐसे दस दस लाख गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता है जो अज़ाब के हक़दार क़रार दिये जा चुके होते हैं।"** (كَنْزُ الْعُمّال ج ٨ص٢٢٣حديث٢٣٧١٦)

इस्यां से कभी हम ने कनारा न किया पर तूने दिल आज़ुर्दा हमारा न किया
हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़ लेकिन तेरी रहमत ने गवारा न किया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा अहादीसे मुबा-रका में **रब्बुल अनाम** عَزَّوَجَلَّ के किस क़दर अज़ीमुश्शान इन्आम व इकराम का ज़िक्र है। سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! **र-मज़ानुल मुबारक** में रोज़ाना दस लाख ऐसे गुनहगारों की बख़्शिश हो जाया करती है जो अपने गुनाहों के सबब जहन्नम के हक़दार क़रार पा चुके होते हैं। नीज़ शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ की तो हर हर घड़ी में दस दस लाख गुनहगार अज़ाबे नार से आज़ाद क़रार दिये जाते हैं। और फिर

र-मज़ानुल मुबारक की आख़िरी शब की तो क्या ख़ूब बहार है कि सारे माहे र-मज़ान में जितने बख़्शे गए थे उस के शुमार के बराबर गुनहगार उस एक रात में अ़ज़ाबे नार से नजात पाते हैं। ऐ काश ! **अल्लाह** तआ़ला हम गुनहगारों और बदकारों को भी इन मग़्फ़िरत याफ़्तगान में शामिल कर ले।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلم

जब कहा इ़स्यां से मैं ने सख़्त लाचारों में हूं
जिन के पल्ले कुछ नहीं है उन ख़रीदारों में हूं
तेरी रहमत के लिये शामिल गुनहगारों में हूं
बोल उठी रहमत न घबरा मैं मददगारों में हूं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़र्च में कुशा-दगी करो

हज़रते सय्यिदुना ज़मुरह رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि नबियों के सुल्तान, सरवरे ज़ीशान, रहमते आ-लमियान, सरदारे दो जहान, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है: "माहे र-मज़ान में घर वालों के ख़र्च में कुशा-दगी करो क्यूं कि माहे **र-मज़ान** में ख़र्च करना **अल्लाह** तआ़ला की राह में ख़र्च करने की त़रह़ है।" (اَلْجامِعُ الصَّغِير ص١٦٢ حديث ٢٧١٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे र-मज़ान के फ़ज़ाइल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

से कुतुबे अह़ादीस मालामाल हैं। **र-मज़ानुल मुबारक** में इस क़दर ब-र-कतें और रह़मतें हैं कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहां तक इर्शाद फ़रमाया, "अगर बन्दों को मा'लूम होता कि र-मज़ान क्या है तो मेरी उम्मत तमन्ना करती कि काश ! पूरा साल र-मज़ान ही हो।"

(صَحِیحُ ابْنُ خُزَیْمَۃ ج۳ص ۱۹۰ حدیث۱۸۸٦)

मदीना : तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **फ़ैज़ाने सुन्नत** के बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

शव्वालुल मुकर्रम

"ईद" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से शश ईद के रोज़ों के तीन फ़ज़ाइल

नौ मौलूद की त़रह़ गुनाहों से पाक

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने **र-मज़ान** के रोज़े रखे **फिर छ[6] दिन शव्वाल** में रखे तो गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है।"

(مَجمَعُ الزَّوَائِد ج۳ ص۴۲۵ حدیث۵۱۰۲)

गोया उ़म्र भर का रोज़ा रखा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत

है, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : "जिस ने **र-मज़ान** के रोज़े रखे फिर इन के बा'द **छ**[6] **शव्वाल** में रखे। तो ऐसा है जैसे दह्र का (या'नी उ़म्र भर के लिये) रोज़ा रखा।" (صَحِيح مُسلِم ص٥٩٢ حديث١١٦٤)

साल भर रोज़े रखे

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने ई़दुल फ़ित्र के बा'द (शव्वाल में) **छ रोज़े** रख लिये तो उस ने पूरे साल के रोज़े रखे कि जो एक नेकी लाएगा उसे दस मिलेंगी।

(سُنَن ابن ماجه ج٢ص٣٣٣حديث١٧١٥)

ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम

इब्तिदाई दस दिन की फ़ज़ीलत

बा'ज़ अह़ादीसे मुबा-रका के मुत़ाबिक़ **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** का पहला अ़-शरह (या'नी इब्तिदाई दस दिन) र-मज़ानुल मुबारक के बा'द सब दिनों से अफ़्ज़ल है।

"अल्लाह" के चार हुरूफ़ की निस्बत से अ़-श-रए ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के मु-तअ़ल्लिक़ 4 रिवायात

नेकियां करने के पसन्दीदा तरीन अय्याम

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नूर बार है : "इन **दस दिनों** से ज़ियादा किसी दिन का नेक अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मह़बूब नहीं।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और न राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद ? फ़रमाया, "और न राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद, मगर वोह कि अपने जानो माल ले कर निकले फिर उन में से कुछ वापस न लाए (या'नी सिर्फ़ वोह मुजाहिद अफ़्ज़ल होगा जो जानो माल क़ुरबान करने में काम्याब हो गया) (صَحِيحُ البُخارِيّ ج١ص٣٣٣حديث٩٦٩)

शबे क़द्र के बराबर फ़ज़ीलत

ह़दीसे पाक में है, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अ़-श-रए ज़ुल हि़ज्जा से ज़ियादा किसी दिन में अपनी इ़बादत किया जाना पसन्दीदा नहीं इस के हर दिन का रोज़ा एक साल के रोज़ों और हर शब का क़ियाम शबे क़द्र के बराबर है।" (سُنَنُ التِّرمِذِيّ ج٢ص١٩٢حديث٧٥٨)

अ़-रफ़ा का रोज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, सुल्ताने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर गुमान है कि अ़-रफ़ा (या'नी 9 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम) का रोज़ा** एक साल क़ब्ल और एक साल बा'द के गुनाह मिटा देता है।" (صَحِيح مُسلِم ص٥٩٠حديث١٩٦)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे।

एक रोज़ा हज़ार रोज़ों के बराबर

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अ़-रफ़ा** (या'नी 9 जुल ह़िज्जतिल ह़राम) **का रोज़ा** हज़ार रोज़ों के बराबर है।" (شُعَبُ الْاِیْمَان ج۳ ص۳۵۷ حدیث۳۷٦٤) मगर ह़ज करने वाले पर जो **अ़-रफ़ात** में है उसे **अ़-रफ़ा** (या'नी 9 जुल ह़िज्जतिल ह़राम) के दिन रोज़ा मक्रूह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने खुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी कि हुज़ूर पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अ़-रफ़ा** के दिन (या'नी 9 जुल ह़िज्जतिल ह़राम के रोज़ ह़ाजी को) **अ़-रफ़ात** में रोज़ा रखने से मन्अ़ फ़रमाया।

(صَحِیْحُ ابْنُ خُزَیْمَة ج۳ ص۲۹۲ حدیث۲۱۰۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

मुख़्तलिफ़ म-दनी फूल

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है :

"مَنْ صَلّٰی
عَلَیَّ وَاحِدَةً صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ عَشْرَ صَلَوٰتٍ وَحُطَّتْ عَنْهُ عَشْرُ خَطِیَّاتٍ
وَرُفِعَتْ لَهٗ عَشْرُ دَرَجَاتٍ

या'नी जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** तआला उस पर **दस रह़मतें** भेजता है और उस के **दस गुनाह मुआफ़** किये जाएंगे और उस के **दस द-रजे** बुलन्द किये जाएंगे ।"

(مِشْکٰوۃُ الْمَصَابِیح ج۱ ص۱۸۹ حدیث۹۲۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"मुजद्दिदे आ'ज़म मौलाना इमाम अह़मद रज़ा" के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से खजूर के 25 म-दनी फूल

《1》 त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है, "आलिया" (या'नी मदीनए मुनव्वरह में मस्जिदे क़ुबा शरीफ़ की जानिब एक जगह का नाम)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है।

की अ़ज्वा (मदीनए मुनव्वरह की सब से अ़ज़ीम खजूर का नाम) में हर बीमारी से शिफ़ा है। अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ह़-नफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की रिवायत के मुताबिक़ "सात रोज़ तक रोज़ाना सात अ़दद अ़ज्वा खजूर खाना जुज़ाम (या'नी कोढ़) को रोकता है।"
(عُمْدَةُ الْقَارِی ج١٤ ص٤٤٦)

﴾2﴿ **मीठे मीठे आक़ा** मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, अ़ज्वा खजूर जन्नत से है, इस में ज़हर से शिफ़ा है। (سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج٤ ص١٧ حدیث٢٠٧٣)

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत के मुताबिक़ जिस ने नहार मुंह अ़ज्वा खजूर के सात दाने खा लिये उस दिन उसे जादू और ज़हर भी नुक़्सान न दे सकेंगे। (صَحِیحُ الْبُخارِیّ ج٣،ص٥٤٠ حدیث٥٤٤٥)

क्या ह़दीस में बताया हुवा इ़लाज हर एक कर सकता है?

अह़ादीसे मुबा-रका में बयान कर्दा इ़लाज भी अपनी मरज़ी से नहीं करने चाहिएं। बेशक सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीने वाला शान ह़क़, ह़क़ और ह़क़ ही हैं। मगर जो **इ़लाज** नबियों के सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तजवीज़ फ़रमाए हैं हो सकता है वोह ख़ास ख़ास मौक़ओ़ं मौसिमों की मुनासि-बतों और मख़्सूस लोगों के मिज़ाजों और त़बीअ़तों के मुवाफ़िक़ हों जैसा कि ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक "فِی الْحَبَّةِ السَّوْدَاءِ شِفَاءٌ مِّنْ كُلِّ دَاءٍ اِلَّا السَّامَ" या'नी काला दाना (कलोंजी) में मौत के सिवा हर बीमारी से **शिफ़ा** है" के तह़त फ़रमाते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है।

हैं : हर मरज़् (में शिफ़ा) से मुराद हर **बल्ग़मी** और रुतूबत के अमराज़् में (शिफ़ा है), क्यूं कि कलोंजी गर्म और ख़ुश्क होती है लिहाज़ा मरतूब (या'नी तरी वाली) और सर्दी की बीमारियों में मुफ़ीद होगी। आगे चल कर मजीद फ़रमाते हैं : यहां मुराद **अ़रब की आ़म बीमारियां** हैं **(مرقات)** या'नी कलोंजी अ़रब की आ़म बीमारियों में मुफ़ीद है। ख़याल रहे कि अहादीसे शरीफ़ा की दवाएं किसी हाज़िक़ तबीब (या'नी माहिर तबीब) की राय से इस्ति'माल करनी चाहिएं (अहले अ़रब को तजवीज़् कर्दा दवाएं) सिर्फ़ (अपनी) राय से इस्ति'माल न करें कि हमारे (तबई) मिज़ाज अहले अ़रब के (तबई) मिज़ाज से जुदागाना हैं। (मिरआत, जि. 6 स. 216, 217 ज़ियाउल कुरआन पब्लीकेशन्ज़् मर्कज़ुल औलिया लाहोर) साथों साथ येह भी ख़ास ताकीद है कि **इस किताब में दिया हुवा कोई भी नुस्ख़ा अपने तबीब से मश्वरा किये बिग़ैर इस्ति'माल न किया जाए अगर्चे येह नुस्ख़ा उसी बीमारी के लिये हो जिस से आप दो चार हों**। इस की बुन्यादी वजह येह है कि लोगों की तबई कैफ़िय्यात जुदा जुदा होती हैं, एक ही **दवा** किसी के लिये **आबे हयात** का काम दिखाती है तो किसी के लिये **मौत का पयाम** लाती है। लिहाज़ा आप की जिस्मानी कैफ़िय्यात से वाक़िफ़ आप का मख़्सूस तबीब ही बेहतर तै कर सकता है कि आप को कौन सा नुस्ख़ा मुवाफ़िक़ हो सकता है और कौन सा नहीं। क्यूं कि किताब में इ़लाज के तरीक़े बयान करना और है जब कि किसी ख़ास मरीज़् का इ़लाज करना और।

《3》 **सय्यिदुना** अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है, खजूर खाने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

से कूलन्ज (या'नी बड़ी अंतड़ी का दर्द) नहीं होता।

(كَنْزُ الْعُمَّال ج١٠، ص١٢ حديث٢٨١٩١)

《4》 **तबीबों** के तबीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शिफ़ा निशान है, नहार मुंह खजूर खाओ इस से पेट के कीड़े मर जाते हैं। (اَلْجَامِعُ الصَّغِير ص٣٩٨ حديث ٦٣٩٤)

《5》 **हज़रते** सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़सीम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "मेरे नज़्दीक हामिला के लिये खजूर से और मरीज़ के लिये शहद से बेहतर किसी चीज़ में शिफ़ा नहीं।" (اَلدُّرُّالْمَنْثُور، ج٥، ص٥٠٥)

《6》 **सय्यिदी** मुहम्मद अहमद ज़हबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, हामिला को खजूरें खिलाने से اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ लड़का पैदा होगा जो कि ख़ूब सूरत बुर्द बार और नर्म मिज़ाज होगा।

《7》 **जो** फ़ाक़े की वजह से कमज़ोर हो गया हो उस के लिये खजूर बहुत मुफ़ीद है क्यूं कि येह ग़िज़ाइय्यत से भरपूर है। इस के खाने से जल्द तवानाई बहाल हो जाती है। लिहाज़ा खजूर से इफ़्तार करने में येह हिक्मत भी है।

《8》 **रोजे** में फ़ौरन बर्फ़ का ठन्डा पानी पी लेने से गेस, तब्ख़ीरे मे'दा और जिगर के वरम का सख़्त ख़तरा है। खजूर खा कर ठन्डा पानी पीने से नुक़्सान का ख़तरा टल जाता है, मगर सख़्त ठन्डा पानी पीना हर वक़्त नुक़्सान देह है।

《9》 **खजूर** और खीरा या ककड़ी, नीज़ खजूर और तरबूज़ एक साथ

खाना सुन्नत है। इस में भी हिक्मतों के म-दनी फूल हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे अ़मल के लिये तो इस का सुन्नत होना ही काफ़ी है। अतिब्बा का कहना है कि इस से जिन्सी व जिस्मानी कमज़ोरी और **दुबला पन** दूर होता है। ह़दीसे पाक में है सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त बुन्याद है : कि मख्खन को खजूर के साथ मिला कर खाओ और पुरानी के साथ नई खजूरें मिला कर खाओ क्यूं कि शैत़ान किसी को ऐसा करता देखता है तो अफ़्सोस करता है और कहता है कि पुरानी के साथ नई खजूर खा कर आदमी तनू मन्द (या'नी मज़्बूत जिस्म वाला) हो गया। (سُنَنُ ابن ماجه ج٤ ص ٣٩ حديث ٣٣٣٠)

《10》 **खजूर** खाने से पुरानी क़ब्ज़ दूर होती है।

《11》 **दमा, दिल, गुर्दा, मसाना, पित्ता और आंतों** के अमराज़ में खजूर मुफ़ीद है। येह बलग़म ख़ारिज करती, मुंह की खुश्की को दूर करती, कुव्वते बाह बढ़ाती और पेशाब आवर है।

《12》 **दिल** की बीमारी और काला मोतिया के लिये खजूर को गुठली समेत कूट कर खाना मुफ़ीद है।

《13》 **खजूर** को भिगो कर इस का पानी पी लेने से जिगर की बीमारियां दूर होती हैं। दस्त की बीमारी में भी येह पानी मुफ़ीद है। (रात को भिगो कर सुब्ह़ नहार मुंह इस का पानी पियें मगर भिगोने के लिये फ़्रीज़र में न रखें।)

《14》 **खजूर** को दूध में उबाल कर खाना बेहतरीन मुक़व्वी (या'नी त़ाक़त देने वाली) ग़िज़ा है। येह ग़िज़ा बीमारी के बा'द की कमज़ोरी दूर करने के लिये बेह़द मुफ़ीद है।

《15》 **खजूर** खाने से ज़ख़्म जल्दी भरता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा।

《16》 **यरक़ान** (या'नी पीलिया) के लिये खजूर बेहतरीन दवा है।

《17》 ताज़ा पकी हुई खजूरें सफ़रा (या'नी "**पित**" जिस में क़ै के ज़रीए कड़वा पानी निकलता है) और तेज़ाबिय्यत को ख़त्म करती हैं।

《18》 खजूर की गुठलियों को आग में जला कर इस का मन्जन बना लीजिये। येह दांतों को चमकदार और मुंह की बदबू को दूर करता है।

《19》 खजूर की जली हुई गुठलियों की राख लगाने से ज़ख़्म का ख़ून बन्द होता और ज़ख़्म भर जाता है।

《20》 खजूर की गुठलियों को आग में डाल कर धूनी लेना बवासीर के मस्सों को ख़ुश्क करता है।

《21》 खजूर के दरख़्त की जड़ों या पत्तों की राख से मन्जन करना दांतों के दर्द के लिये मुफ़ीद है। जड़ों या पत्तों को पानी में उबाल कर इस से कुल्लियां करना भी **दांतों** के दर्द में फ़ाएदा मन्द है।

《22》 जिस को खजूर खाने से किसी क़िस्म का नुक़्सान (side effect) होता हो तो अनार का रस, या ख़श्ख़ाश या काली मिर्च के साथ इस्ति'माल करे اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

《23》 अध पकी और पुरानी खजूरें बयक वक़्त खाना नुक़्सान देह है। इसी त़रह़ खजूर के साथ अंगूर या किशमिश या मुनक़्क़ा मिला कर खाना, खजूर और अन्जीर बयक वक़्त खाना, बीमारी से उठते ही कमज़ोरी में ज़ियादा खजूरें खाना और आंखों की बीमारी में खजूरें

खाना मुज़िर या'नी नुक़्सान देह है।

﴾24﴿ एक वक़्त में 5 तोला (या'नी तक़रीबन 60 ग्राम) से ज़ियादा खजूरें न खाएं। पुरानी खजूर खाते वक़्त खोल कर अन्दर से देख लीजिये क्यूं कि इस में बा'ज़ अवक़ात सुरसुरियां (या'नी छोटे छोटे लाल कीड़े) होती हैं लिहाज़ा साफ़ कर के खाइये। जिस खजूर में कीड़े होने का गुमान हो उस को साफ़ किये बिग़ैर खाना मकरूह है। (عون المعبود ج١٠ ص٢٤٦) बेचने वाले चमकाने के लिये अक्सर सरसों का तेल लगा देते हैं। लिहाज़ा बेहतर येह है कि खजूरों को चन्द मिनट के लिये पानी में भिगो दें। ताकि मख्खियों की बीट, और मैल कुचैल छूट जाए। फिर धो कर इस्ति'माल फ़रमाएं। दरख़्त की पकी हुई खजूरें **ज़ियादा मुफ़ीद** होती हैं।

﴾25﴿ मदीनए मुनव्वरह زادھا اللہ شرفاً و تعظیماً की खजूरों की गुठलियां मत फेंकिये। किसी अदब की जगह डाल दीजिये या दरिया बुर्द फ़रमा दीजिये, बल्कि हो सके तो सरौते से बारीक टुकड़ियां कर के डिबिया में डाल कर जेब में रख लीजिये और छालिया की जगह इस्ति'माल कर के इस की ब-र-कतें लूटिये। कोई चीज़ ख़्वाह दुन्या के किसी भी ख़ित्ते की हो जब मदीनए मुनव्वरह زادھا اللہ شرفاً و تعظیماً की फ़ज़ाओं में दाख़िल हुई तो मदीने की हो गई लिहाज़ा उ़श्शाक़ उस का अदब करते हैं।

(फ़ैज़ाने सुन्नत बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि. 1, स. 1018)

"शरीअ़त व सुन्नत की पाबन्दी करने में नजात है" के तीस हुरूफ़ की निस्बत से 30 ग़-लतियों की निशान देही

﴾1﴿ इस ख़याल में हमेशा मगन रहना कि जवानी और तन्दुरुस्ती हमेशा रहेगी।

﴾2﴿ मुसीबतों में बे सब्र बन कर चीख़ व पुकार करना।

﴾3﴿ अपनी अ़क्ल को सब से बढ़ कर समझना।

﴾4﴿ दुश्मन को ह़क़ीर (कमज़ोर) समझना।

﴾5﴿ बीमारी को मा'मूली समझ कर शुरूअ़ में इ़लाज न करना।

﴾6﴿ अपनी राय पर अ़मल करना और दूसरों के मश्वरों को ठुकरा देना।

﴾7﴿ किसी बदकार को बार बार आज़मा कर भी उस की चापलूसी में आ जाना।

﴾8﴿ बेकारी में ख़ुश रहना और रोज़ी की तलाश न करना।

﴾9﴿ अपना राज़ किसी दूसरे को बता कर उसे पोशीदा रखने की ताकीद करना।

﴾10﴿ आमदनी से ज़ियादा ख़र्च करना।

﴾11﴿ लोगों की तक्लीफ़ में शरीक न होना और उन से इमदाद की उम्मीद रखना।

﴾12﴿ एक दो ही मुलाक़ात में किसी शख़्स की निस्बत कोई अच्छी या बुरी राय क़ाइम कर लेना।

﴾13﴿ वालिदैन की ख़िदमत न करना और औलाद से ख़िदमत की उम्मीद रखना।

﴾14﴿ किसी काम को इस ख़याल से अधूरा छोड़ देना कि फिर किसी वक़्त मुकम्मल कर लिया जाएगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

《15》 हर शख़्स से बदी करना और लोगों से अपने लिये नेकी की तवक़्क़ोअ़ रखना।

《16》 गुमराहों की सोह़बत में उठना बैठना।

《17》 कोई अ़मले सालेह़ की तल्क़ीन करे तो उस पर ध्यान न देना।

《18》 ख़ुद ह़राम व ह़लाल का ख़याल न करना और दूसरों को भी इस राह पर लगाना।

《19》 झूटी क़सम खा कर झूट बोल कर धोका दे कर अपनी तिजारत को फ़रोग देना।

《20》 इ़ल्मे दीन और दीनदारी को इ़ज़्ज़त न समझना।

《21》 ख़ुद को दूसरों से बेहतर समझना।

《22》 फ़क़ीरों और साइलों को अपने दरवाज़े से धक्का दे कर भगा देना।

《23》 ज़रूरत से ज़ियादा बात चीत करना।

《24》 अपने पड़ोसियों से बिगाड़ रखना।

《25》 बादशाहों और अमीरों की दोस्ती पर ए'तिबार करना।

《26》 ख़्वाह म ख़्वाह किसी के घरेलू मुआ़-मलात में दख़्ल देना।

《27》 बिग़ैर सोचे समझे बात करना।

《28》 तीन दिन से ज़ियादा किसी का मेहमान बनना।

《29》 अपने घर का भेद दूसरों पर ज़ाहिर करना।

《30》 हर शख़्स के सामने अपने दुख दर्द बयान करना।

(जन्नती ज़ेवर, स. 557)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रह़मतें भेजता है।

49 इन्तिहाई कार आमद म-दनी फूल

﴾1﴿ रात को दरवाज़ा बन्द करते वक़्त घर के अन्दर अच्छी त़रह़ देखभाल कर लीजिये कि कोई अजनबी या कुत्ता, बिल्ली अन्दर तो नहीं रह गया येह आ़दत डाल लेने से اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर में कोई नुक़्सान नहीं होगा।

﴾2﴿ घर और घर के तमाम सामानों को साफ़ सुथरा रखिये और हर चीज़ को उस की जगह पर रखिये।

﴾3﴿ सब घर वाले आपस में तै़ कर लें कि फ़ुलां चीज़ फ़ुलां जगह पर रहेगी फिर सब घर वाले इस के पाबन्द हो जाएं कि जब उस चीज़ को वहां से उठाएं तो इस्ति'माल कर के फिर उसी जगह रख दें ताकि हर आदमी को बिग़ैर पूछे और बिला ढूंडे वोह मिल जाया करे और ज़रूरत के वक़्त तलाश करने की ह़ाजत न पड़े।

﴾4﴿ घर के तमाम बरतनों को धो, मांझ कर किसी अलमारी या त़ाक़ पर उलटा कर के रख दीजिये और फिर दोबारा उस बरतन को इस्ति'माल करना हो तो फिर उस बरतन को बिग़ैर धोए इस्ति'माल मत कीजिये।

﴾5﴿ कोई जूठा बरतन या ग़िज़ा या दवा लगा हुवा बरतन हरगिज़ हरगिज़ न रख दिया करें, जूठे या ग़िज़ाओं और दवाओं से आलूदा बरतनों में जरासीम पैदा होते हैं और त़रह़ त़रह़ की बीमारियों के पैदा होने का ख़त़रा रहता है।

﴾6﴿ अंधेरे में बिला देखे हरगिज़ हरगिज़ पानी न पियें न खाना खाएं।

﴾7﴿ घर या आंगन के रास्ते में चारपाई या कुरसी या कोई बरतन या

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

कोई सामान मत डाल दिया करें ऐसा करने से बा'ज़ दफ़्आ़ रोज़ की आ़दत के मुताबिक़ बे खटके चले आने वाले को ठोकर ज़रूर लगती है और बा'ज़ मर्तबा तो सख़्त चोटें भी लग जाती हैं।

﴿8﴾ **सुराही** के मुंह या लोटे की टूंटी से मुंह लगा कर हरगिज़ कभी पानी न पियें क्यूं कि अव्वलन तो येह ख़िलाफ़े तहज़ीब है दूसरा येह ख़त़रा है कि सुराही या टूंटी में कोई कीड़ा मकोड़ा छुपा हो और वोह पानी के साथ पेट में चला जाए।

﴿9﴾ हफ़्ता या दस दिनों में एक दिन घर की मुकम्मल सफ़ाई के लिये मुक़र्रर कर लीजिये उस दिन पूरे मकान की सफ़ाई कर लीजिये।

﴿10﴾ दिन रात बैठे रहना या पलंग पर सोए या लैटे रहना तन्दुरुस्ती के लिये बेह़द नुक़्सान देह है। इस्लामी भाइयों को साफ़ और खुली हवा में कुछ चल फिर लेना और इस्लामी बहनों को कुछ मेह़नत का काम हाथ से कर लेना तन्दुरुस्ती के लिये बहुत ज़रूरी है।

﴿11﴾ जिस जगह चन्द आदमी बैठे हों उस जगह बैठ कर न थूकें न खन्कार निकालें न नाक साफ़ करें कि ख़िलाफ़े तहज़ीब भी है और दूसरों के लिये घिन पैदा करने वाली चीज़ है।

﴿12﴾ दामन या आंचल या आस्तीन से नाक साफ़ न करें न हाथ मुंह इन चीज़ों से पोंछें क्यूं कि येह गन्दगी है और तहज़ीब के ख़िलाफ़ भी।

﴿13﴾ जूती और कपड़ा या बिस्तर इस्ति'माल से पहले झाड़ लिया करें मुम्किन है कोई मूज़ी जानवर बैठा हो जो बे ख़बरी में आप को डस ले।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह् और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

﴾14﴿ छोटे बच्चों को खिलाते बहलाते कभी हरगिज़ हरगिज़ उछाल उछाल कर न खिलाएं ख़ुदा न ख़्वास्ता हाथ से छूट गया तो बच्चे की जान ख़त़रे में पड़ जाएगी।

﴾15﴿ बीच दरवाज़े में न बैठा करें सब आने जाने वालों को तक्लीफ़ होगी और ख़ुद आप भी तक्लीफ़ उठाएंगे।

﴾16﴿ अगर पोशीदा जगहों में किसी के फोड़ा फुन्सी या दर्द व वरम हो तो उस से येह मत पूछिये कि कहां है ? इस से ख़्वाह म ख़्वाह उस को शरमिन्दगी होगी।

﴾17﴿ बैतुल ख़ला या ग़ुस्लख़ाने से कमर बन्द या तहबन्द या साढ़ी बांधते हुए बाहर न निकलें बल्कि अन्दर ही से बांध कर बाहर निकलें।

﴾18﴿ जब आप से कोई शख़्स कोई बात पूछे तो पहले उस का जवाब दीजिये इस के बा'द ही दूसरा काम कीजिये।

﴾19﴿ जो बात किसी से कहें या किसी का जवाब दें तो साफ़ साफ़ बोलें और इतनी आवाज़ से बोलें कि सामने वाला अच्छी त़रह़ सुन और समझ ले।

﴾20﴿ अगर किसी के बारे में कोई पोशीदा बात किसी से कहनी हो और वोह शख़्स उस मजलिस में मौजूद हो तो आंख या हाथ से बार बार उस की त़रफ़ इशारा मत कीजिये कि नाह़क़ उस शख़्स को त़रह़ त़रह़ के शुबुहात होंगे।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم मुझ पर दुरूदे पाक की कस्रत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है।

《21》 किसी को कोई चीज़ देनी हो तो अपने हाथ से उस के हाथ में दीजिये या बरतन में रख कर उस के सामने पेश कीजिये, दूर से फेंक कर कोई चीज़ किसी को मत दीजिये कि शायद उस के हाथ में न पहुंच सके और ज़मीन पर गिर कर टूट फूट जाए या ख़राब हो जाए।

《22》 अगर किसी को पंखा करें तो इस का ख़याल रखें कि उस के सर या चेहरा या बदन के किसी हि़स्से में पंखा लगने न पाए और पंखे को इतने ज़ोर से भी न झला करें कि ख़ुद आप या दूसरे परेशान हो जाएं।

《23》 मैले कपड़े जो **धोबी** के यहां जाने वाले हों उन को घर में इधर उधर पड़े या बिखरे हुए ज़मीन पर न रहने दें बल्कि मकान के किसी कोने में लकड़ी का एक मा'मूली बोक्स रख लीजिये और सब मैले कपड़ों को उसी में जम्अ़ करते रहिये।

《24》 अपने ऊनी कपड़ों को कभी कभी धूप में सुखा लिया करें और किताबों को भी ताकि कीड़े मकोड़े कपड़ों और किताबों को काट कर ख़राब न कर सकें।

《25》 जहां कोई आदमी बैठा हो वहां गर्दो गु़बार वाली चीज़ों को न झाड़ें।

《26》 किसी दुख या परेशानी या ग़म और बीमारी वग़ैरा की ख़बरों को हरगिज़ उस वक़्त तक नहीं कहना चाहिये जब तक कि उस की ख़ूब अच्छी त़रह़ तह़क़ीक़ न हो जाए।

《27》 खाने पीने की कोई चीज़ खुली मत रखिये हमेशा ढांक कर रखा कीजिये और मक्खियों के बैठने से बचाइये।

﴾28﴿ दौड़ कर, मुंह ऊपर उठा कर नहीं चलना चाहिये इस में ठोकर लगने, किसी से टकरा जाने वग़ैरा के बहुत से ख़त़रात हैं।

﴾29﴿ चलने में पाउं पूरा उठाया करें और पूरा पाउं ज़मीन पर रखा करें पन्जों या एड़ी के बल चलना या पाउं घसीटते हुए चलना येह तहज़ीब के ख़िलाफ़ है।

﴾30﴿ कपड़ा पहने पहने नहीं सीना चाहिये।

﴾31﴿ हर किसी पर अन्धा भरोसा मत कर लिया करें जब तक किसी को हर त़रह़ से बार बार आज़मा न लें उस का ए'तिबार मत कर लिया करें ख़ास़ कर अक्सर शहरों में बहुत सी औ़रतें कोई ह़ज्जन साहिबा बनी हुई का'बे का ग़िलाफ़ लिये हुए, कोई ता'वीज़ गन्डे झाड़ फूंक करती हुई घरों में घुसती फिरती हैं और औ़रतों के मज्मअ़ में बैठ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व **रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बातें करती हैं, **ख़बरदार ! ख़बरदार !** इन औ़रतों को हरगिज़ हरगिज़ घरों में आने ही मत दीजिये दरवाज़े ही से वापस कर दीजिये। ऐसी औ़रतों ने बहुत से घरों का सफ़ाया कर डाला है इन औ़रतों में बा'ज़ चोरों और डाकूओं की मुख़्बिर भी हुवा करती हैं जो घर के अन्दर घुस कर सारा माहोल देख लेती हैं फिर चोरों और डाकूओं को उन के घरों का ह़ाल बता देती हैं।

﴾32﴿ जहां तक हो सके कोई सौदा सामान उधार मत मंगाया करें और अगर मजबूरी से मंगाना ही पड़ जाए तो दाम पूछ कर तारीख़ के साथ लिख लीजिये और जब रुपिया आप के पास आ जाए तो फ़ौरन अदा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم मुझ पर कस्रत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है।

कर दीजिये ज़बानी याद पर भरोसा मत कीजिये।

《33》 जहां तक हो सके ख़र्च चलाने में बहुत ज़ियादा किफ़ायत से काम लीजिये और रुपिया पैसा बहुत ही इन्तिज़ाम से उठाइये बल्कि जितना ख़र्च के लिये आप को मिले उस में से कुछ न कुछ बचा लिया कीजिये।

《34》 जो औरतें बहुत से घरों में आया जाया करती हैं जैसे धोबन, काम वालियां वग़ैरा उन के सामने हरगिज़ हरगिज़ अपने घर के इख़्तिलाफ़ और झगड़ों को मत बयान करें क्यूं कि अक्सर ऐसी औरतें घरों की बातें दस घरों में कहती फिरती हैं।

《35》 कोई शख़्स तुम्हारे दरवाज़े पर आ कर आप के घर के किसी फ़र्द का दोस्त या रिश्तेदार होना ज़ाहिर करे तो हरगिज़ उस को अपने मकान के अन्दर मत बुलाइये न उस का कोई सामान अपने घर में रखिये न अपना कोई क़ीमती सामान उस के सिपुर्द कीजिये।

《36》 मह़ब्बत में अपने बच्चों को बिला भूक के खाना मत खिलाइये न इस्रार कर के ज़ियादा खिलाओ कि इन दोनों सूरतों में बच्चे बीमार हो जाते हैं जिस की तक्लीफ़ आप को और बच्चों दोनों को भुगतनी पड़ सकती है।

《37》 बच्चों के सर्दी गरमी के कपड़ों का ख़ास तौर पर ध्यान लाज़िमी है बच्चे सर्दी गरमी लगने से बीमार हो जाया करते हैं।

《38》 बच्चों को मां बाप बल्कि दादा का नाम भी (बल्कि घर का एड्रेस भी) याद करा दीजिये और कभी कभी पूछा कीजिये ताकि याद

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है।

रहे, इस में येह फ़ाएदा है कि अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता बच्चा खो जाए और कोई उस से पूछे कि तेरे बाप का क्या नाम है ? तेरे मां बाप कौन हैं ? (तुम्हारा घर कहां है) तो अगर बच्चे को नाम व पता वग़ैरा याद होंगे तो बता देगा फिर कोई न कोई उस को आप के पास पहुंचा देगा या आप को बुला कर बच्चा आप के सिपुर्द कर देगा और अगर बच्चे को मां बाप का नाम (व पता) याद न रहा तो बच्चा येही कहेगा कि मैं अब्बा या अम्मां का बच्चा हूं कुछ ख़बर नहीं कि कौन अब्बा ? कौन अम्मां ?

﴾39﴿ इस्लामी बहनें छोटे बच्चों को अकेला छोड़ कर घर से बाहर न चली जाया करें कि ऐसा भी हुवा है कि एक औरत बच्चे के आगे खाना रख कर बाहर चली गई। बहुत से कव्वों ने बच्चे के आगे का खाना छीन कर खा लिया और चोंच मार मार कर बच्चे की आंख भी फोड़ डाली। इसी त़रह़ एक बच्चे को बिल्ली ने अकेला पा कर इस क़दर नोच डाला कि बच्चा मर गया।

﴾40﴿ किसी को ठहराने या खाना खिलाने पर बहुत ज़ियादा इस्रार मत कीजिये बा'ज़ मर्तबा इस में मेहमान को उलझन या तक्लीफ़ हो जाती है फिर सोचिये कि भला ऐसी मह़ब्बत से क्या फ़ाएदा जिस का अन्जाम नफ़रत और बदनामी हो।

﴾41﴿ वज़्न या ख़त़रे वाली कोई चीज़ किसी आदमी के ऊपर से उठा कर मत दिया करें ख़ुदा न ख़्वास्ता वोह चीज़ हाथ से छूट कर आदमी के ऊपर गिर पड़ी तो इस का अन्जाम कितना ख़त़रनाक होगा ?

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

《42》 किसी बच्चे या शागिर्द को सज़ा देनी हो तो मिट्टी, लकड़ी या लात घूंसा से मत मारें ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर किसी नाज़ुक जगह चोट लग जाए तो कितनी बड़ी मुसीबत सर पर आ पड़ेगी !

《43》 अगर आप किसी के घर मेहमान बन कर जाएं और खाना खा चुके हों तो ह़स्बे ह़ाल जाते ही घर वालों से कह दें कि हम खाना खा कर आए हैं क्यूं कि घर वाले लिह़ाज़ की वजह से बिग़ैर पूछे और चुपके चुपके खाना तय्यार कर लेंगे और जब खाना सामने आ गया तो आप ने कह दिया कि हम तो खाना खा कर आए हैं सोचिये कि उस वक़्त घर वालों को कितना अफ़्सोस होगा ?

《44》 मकान में अगर रक़म या ज़ेवर वग़ैरा दफ़्न कर रखा है तो अपने घर वालों में से जिस पर भरोसा हो उस को बता दीजिये वरना शायद तुम्हारा अचानक इन्तिक़ाल हो जाए तो वोह ज़ेवर या रक़म हमेशा ज़मीन ही में रह जाएगी। (इसी त़रह़ दीगर ख़ुफ़्या अम्वाल व अमानात व दस्तावेज़ात के बारे में किसी को ए'तिमाद में ले लेना मुफ़ीद है)

《45》 मकान में जलता **चराग़** या आग छोड़ कर बाहर मत चले जाइये चराग़ और आग को मकान से निकलते वक़्त बुझा देना चाहिये।

《46》 इतना ज़ियादा मत खाइये कि चूरन की जगह भी पेट में बाक़ी न रह जाए।

《47》 जहां तक मुम्किन हो रात को मकान में तन्हा मत रहें ख़ुदा जाने रात में क्या **इत्तिफ़ाक़** पड़ जाए ? लाचारी और मजबूरी की तो और बात है मगर जब तक हो सके मकान में रात को अकेले नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रह्मतें भेजता है।

सोना चाहिये।

﴾48﴿ अपने हुनर पर नाज़ मत कीजिये।

﴾49﴿ बुरे वक़्त का कोई साथी नहीं होता इस लिये सिर्फ़ ख़ुदा पर भरोसा रखिये। (जन्नती ज़ेवर, स. 558 मुलख़्ख़सन)

"मोह्तात आदमी सदा सुख्खी" के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से 16 घरेलू इलाज और कार आमद म-दनी फूल

﴾1﴿ **पलंग** की पाइंती की जानिब अजवाइन (एक देसी दवा) की पोटलियां बांधने से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस पलंग के खटमल भाग जाएंगे।

﴾2﴿ अगर मच्छर दानी **मुयस्सर** न हो और गर्मियों के मौसिम में **मच्छर** ज़ियादा तंग करें तो बिस्तर पर जा ब जा **तुलसी** (नामी पौदे) के पत्ते फैला दीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **मच्छर** भाग जाएंगे।

﴾3﴿ लकड़ी में कील ठोकते हुए लकड़ी के फटने का ख़तरा हो तो उस कील को पहले साबून में ठोकने के बा'द लकड़ी में ठोकना चाहिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस तरह लकड़ी नहीं फटेगी।

﴾4﴿ काग़ज़ी लीमूं (पतले छिलके वाला लीमूं) का रस अगर दिन में चन्द बार पी लें اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मलेरिया का ह्म्ला नहीं होगा।

《5》 लू से बचने के लिये तेज़ धूप में सफ़र करते वक़्त जेब में एक पियाज़ रख लेना चाहिये ।

《6》 हैज़ा (नामी ख़तरनाक बीमारी) के ह़म्ले से बचने के लिये सिरका, लीमूं और पियाज़ का ब कसरत इस्ति'माल करना चाहिये ।

《7》 सब्ज़ियों को जल्द गलाने और आटे में ख़मीर जल्द आने के लिये ख़रबूज़े के छिलकों को ख़ूब सुखाएं और उस को बारीक पीस कर सफ़ूफ़ (या'नी पावडर) तय्यार कर लें फिर इसी सफ़ूफ़ को सब्ज़ियों में जल्द गलाने के लिये डालें और आटे में ख़मीर जल्द आने के लिये थोड़ा सफ़ूफ़ आटे में डाल दिया करें ।

《8》 रोग़ने ज़ैतून (OLIVE OIL) दांतों पर मलने से मसूढ़े और हिलते हुए दांत मज़्बूत़ हो जाते हैं ।

《9》 हिचकी आ रही हो तो लौंग खा लेने से बन्द हो जाती है ।

《10》 सर में जूएं पड़ जाएं तो सते पोदीना (या'नी पोदीना का अ़रक़) साबून के पानी में ह़ल कर के सर में डालें और सर को ख़ूब धोएं दो तीन मर्तबा ऐसा करने से إن شاء الله عزوجل सब जूएं मर जाएंगी ।

《11》 लीमूं की फांक (टुकड़ा) चेहरे पर कुछ दिनों मलने और फिर साबून से धो लेने से चेहरे के कील महासे दूर हो जाते हैं ।

﴾12﴿ पैदल चलने की वजह से अगर पाउं में थकन ज़ियादा मा'लूम हो तो नमक मिले हुए गर्म पानी में कुछ देर पाउं रख देने से थकावट दूर हो जाती है।

﴾13﴿ लीमूं को अगर भोबल (या'नी गर्म रैत) में गर्म कर के या गरमा गर्म पतीले के अन्दर चावलों के ऊपर कुछ देर रखने के बा'द निचोड़ें तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़रक़ आसानी के साथ ज़ियादा निकलेगा।

﴾14﴿ आग से जल जाएं तो बदन के जले हुए मक़ाम पर फ़ौरन रोशनाई लगाएं या चूना का पानी डालें या बरोध (बरगद के दरख़्त) का तेल लगाएं या शकर सफ़ेद पानी में घोल कर लगाएं।

﴾15﴿ सांप या कोई ज़हरीला जानवर काट ले तो काटने की जगह से ज़रा ऊपर फ़ौरन किसी मज़्बूत़ धागे से कस कर बांध दीजिये और मरीज़ को सोने मत दीजिये। येह फ़ोरी तरकीब कर के फिर डॉक्टर से रुजूअ़ कीजिये।

﴾16﴿ अगर कोई संखिया (नामी ख़त़रनाक ज़ह्र) या अफ़्यून या धतूरा (एक पौदा जिस का बीज नशा आवर होता है) खा ले तो फ़ौरन सोया (एक ख़ुश्बूदार साग का नाम) का बीज दो तोला आध सैर पानी में पका कर उस में पाव भर घी एक तोला नमक मिला कर नीम गर्म पिलाएं और क़ै कराएं जब ख़ूब क़ै हो जाए तो दूध पिलाएं और अगर दूध से भी क़ै हो जाए तो बहुत अच्छा है और मरीज़ को सोने न दें اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मरीज़ सिह़्ह़त याब हो जाएगा।

(जन्नती ज़ेवर, स. 565)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे ।

सांप, बिच्छू, कनखजूरा और च्यूंटियों से नजात के त़रीक़े

सांप : एक पाव नोशादर को पांच सैर पानी में घोल कर घर के तमाम बिलों सूराख़ों और कोनों में छिड़क दें अगर घर में सांप होगा तो भाग जाएगा और कभी कभी येह पानी छिड़कते रहें तो उस मकान में सांप नहीं आएगा । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

दूसरी तरकीब येह है कि घर के बिलों और दूसरे सब सूराख़ों में राई डाल दें اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सांप फ़ौरन मर जाएगा और अगर अपने आस पास राई डाल कर सोएं तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सांप क़रीब नहीं आ सकता ।

बिच्छू : मूली का अ़रक़ अगर बिच्छू के ऊपर डाल दिया जाए तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बिच्छू मर जाएगा और अगर बिच्छू के सूराख़ में मूली के चन्द टुकड़े डाल दिये जाएं तो बिच्छू सूराख़ से बाहर नहीं निकल सकेगा बल्कि सूराख़ के अन्दर ही اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हलाक हो जाएगा ।

दूसरी तरकीब येह है कि चिरचिट्टा घास की जड़ अगर **बिछोने** पर रख दी जाए तो बिच्छू बिस्तर पर नहीं चढ़ सकेगा । अगर बिच्छू डंक मार दे तो बहरोज़ा का तेल लगाएं या चिरचिट्टा की जड़ घिस कर लगाएं اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़ह्र उतर जाएगा ।

कनखजूरा : अगर किसी के बदन में चिमट जाए या कान में घुस जाए तो शकर उस के ऊपर डालें फ़ौरन ही उस के पाउं खाल में से **बाहर निकल** जाएंगे और अगर पियाज़ का अ़रक़ **कनखजूरा** के

ऊपर डाल दें तो वोह जगह भी छोड़ देगा और फिर फ़ौरन ही मर जाएगा और अगर उस के पाउं चुभने से ज़ख़्म हो गया है तो पियाज़ तवे पर भुलभुला कर उस के ज़ख़्म पर बांधना इक्सीर है।

पिस्सू (एक परदार ज़हरीला कीड़ा जिस के काटने से खुजली होती है) **:** इन्द्राइन के फल या इस की जड़ पानी में भिगो कर तमाम घर में पानी छिड़क दीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस मकान से पिस्सू भाग जाएंगे।

च्यूंटियां : हींग (एक दरख़्त का बदबूदार गूंद जो पन्सारी से मिल सकता है) से भाग जाती हैं।

कपड़ों और किताबों का कीड़ा : अफ़्सन्तीन (नामी दवा) या पोदीना या लीमूं के छिलके या नीम के पत्ते या काफ़ूर कपड़ों और किताबों में रख दें तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कपड़े और किताबें कीड़ों के खाने से महफ़ूज़ रहेंगी। (जन्नती ज़ेवर, स. 567)

"अल्लाह की रह़मत" के दस हुरूफ़ की निस्बत से ज़मानए ह़म्ल की 10 एह़तियातें और तदबीरें

﴾1﴿ ह़म्ल के ज़माने में औ़रत को इस का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है कि ऐसी सक़ील (या'नी वज़्नी) ग़िज़ाएं न खाए जिस से क़ब्ज़ पैदा हो जाए और अगर ज़रा भी पेट में गिरानी (बोझ) मा'लूम हो तो एक दो वक़्त रोटी चावल न खाए बल्कि सिर्फ़ शोरबा में घी डाल कर पी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है ।

ले या दो तीन तोला मुनक़्क़ा या एक हड़ का मुरब्बा खा ले ।

《2》 **ह़ामिला** औ़रत इस बात का ख़याल रखे कि चलने में पाउं ज़ोर से ज़मीन पर न पड़े और न दौड़ कर चले, इसी त़रह़ ऊंची जगह से नीचे को एक दम झटके के साथ न उतरे, इसी त़रह़ सीढ़ी पर दौड़ कर न चढ़े बल्कि आहिस्ता आहिस्ता चढ़े ग़रज़ इस बात का ख़याल रखे कि पेट न ज़ियादा हिले और न पेट को झटका लगने दे न भारी बोझ उठाए न कोई सख़्त मेह़नत का काम करे न ग़म और ग़ुस्सा करे न दस्त लाने वाली दवाएं खाए न ज़ियादा ख़ुश्बू सूंघे ।

《3》 **ह़ामिला** औ़रत को चलने फिरने की आ़दत रखनी चाहिये क्यूं कि हर वक़्त बैठे और लैटे रहने से बादी और सुस्ती बढ़ती है, मे'दा ख़राब हो जाता है और क़ब्ज़ की शिकायत पैदा हो जाती है ।

《4》 **ह़ामिला** औ़रत को शोहर के पास नहीं सोना चाहिये ख़ुसूसन चौथे महीने से पहले और सातवें महीने के बा'द बहुत ज़ियादा एह़तियात़ की ज़रूरत है ।

《5》 अगर ह़ामिला औ़रत को क़ै आने लगे तो पोदीना की चटनी या काग़ज़ी लीमूं इस्ति'माल करें ।

《6》 अगर **ह़म्ल** की ह़ालत में ख़ून आने लगे तो "कुर्स कुहरबा" खाएं और फ़ौरन लेडी डोक्टर से इ़लाज कराएं ।

﴾7﴿ अगर **ह़म्ल** गिर जाने की आ़दत हो तो उस औ़रत को चार महीने तक फिर सातवें महीने के बा'द बहुत ज़ियादा एह़तियात़ रखने की ज़रूरत है, गर्म ग़िज़ाओं से बिल्कुल परहेज़ रखे और बेहतर है कि लंगोट बांधे रहे और बिल्कुल कोई बोझ न उठाए और न मेह़नत का कोई काम करे और अगर ह़म्ल गिरने के कुछ आसार ज़ाहिर हों म-सलन पानी जारी हो जाए या ख़ून गिरने लगे तो फ़ौरन ही लेडी डॉक्टर से रुजूअ़ करना चाहिये।

﴾8﴿ अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ह़ामिला को मिट्टी (मुल्तानी मिट्टी औ़रतें शौक़ से खाती हैं और येह नुक़्सान देह है) खाने की आ़दत हो तो इस आ़दत को छुड़ाना ज़रूरी है और अगर मिट्टी की बहुत ही ह़िर्स हो तो निशास्ता की टिक्यां या त़बाशीर (एक सफ़ेद रंग की दवाई जो बांस की गांठों से निकलती है) खाया करे इस से मिट्टी की आ़दत छूट जाती है।

﴾9﴿ अगर ह़ामिला की भूक बन्द हो जाए तो मिठाई और मुरग़्ग़न (या'नी तेल घी वाली) ग़िज़ाएं छुड़ा दीजिये और सादा ग़िज़ाएं खिलाइये और अगर पेट में दर्द और रियाह़ (गेस) मा'लूम हो तो "नमक सुलैमानी" या "जवारिश कमोनी" खिलाइये बहर ह़ाल तेज़ दवाओं के इस्ति'माल और इन्जेक्शन से बचना बेहतर है ऐसी ह़ालत में इ़लाज से बेहतर परहेज़ और एह़तियात़ है।

﴾10﴿ बा'ज़ ह़ामिला औ़रतों के **पैरों** पर वरम आ जाता है येह कोई ख़त़रनाक चीज़ नहीं है विलादत के बा'द ख़ुद ब ख़ुद येह वरम जाता रहता है। (जन्नती ज़ेवर, स. 568)

﴾11﴿ ह़ामिला को जब नवां महीना शुरूअ़ हो जाए तो बहुत ज़ियादा

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

एह्‌तियात् करने कराने की ज़रूरत है उस वक़्त में ह़ामिला को त़ाक़त पहुंचाने की ज़रूरत है लिहाज़ा मुन्दरिजए ज़ैल तदबीरों का ख़ास त़ौर पर ख़याल रखना चाहिये। रोज़ाना ग्यारह अ़दद बादाम ह़स्बे ज़रूरत मिस्री में पीस कर चटाइये और दो अ़दद नारियल और शकर दोनों को हावन दस्ता में कूट कर सफ़ूफ़ (पावडर) बना लीजिये और दो तोला रोज़ाना खिलाइये, गाय का दूध जिस **क़दर हज़्म** हो सके पिलाइये, मक्खन वग़ैरा भी खिलाएं इन सब दवाओं की वजह से बच्चा आसानी से पैदा होता है।

﴾12﴿ जब विलादत का वक़्त आ जाए और दर्दे ज़ेह शुरूअ़ हो जाए तो बाएं हाथ में मिक़्नात़ीस (MAGNET) लेने से और बाईं रान में मूंगे की जड़ (सुर्ख़ रंग की बारीक बारीक शाखों की मानिन्द एक पथ्थर जो समुन्दर से निकाला जाता है, पन्सारी की दुकान से शाख़े मरजान के नाम से मिलता है) बांधने से बच्चा पैदा होने में आसानी होती है।

﴾13﴿ पैदाइश के वक़्त किसी होशियार दाई या लेडी डॉक्टर को ज़रूर बुला लेना चाहिये अनाड़ी दाइयों की ग़लत् तदबीरों से अक्सर ज़च्चा व बच्चा को नुक़्सान पहुंच जाता है।

﴾14﴿ पैदाइश के बा'द ज़च्चा के बदन में तेल की मालिश बहुत मुफ़ीद है जैसा कि पुराना त़रीक़ा है कि विलादत के बा'द चन्द दिनों तक मालिश कराई जाती है येह बहुत ही मुफ़ीद है।

﴾15﴿ जिस औ़रत के दूध बहुत कम होता हो अगर वोह दूध आसानी के साथ हज़्म कर सकती हो तो उस को रोज़ाना दूध पीना चाहिये और मुर्ग़ वग़ैरा का मुरग़्ग़न शोरबा और गाजर का ह़ल्वा वग़ैरा उ़म्दा ग़िज़ाएं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रह्मतें भेजता है।

हैं और पांच माशा कलोंजी और पांच माशा तोदरी (एक क़िस्म का बीज जो पन्सार की दुकान से मिल जाता है) सुर्ख़ दूध में पीस कर पिलाएं। (जन्नती ज़ेवर, स. 570)

“शहीदे करबला अली असग़र” के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से दूध पीते बच्चों के लिये 16 म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बच्चों को अमराज़ से बचाने के लिये शुरूअ़ में की जाने वाली एह़तियाती तदाबीर काफ़ी सूद मन्द हो सकती हैं इस ज़िम्न में 16 **म-दनी फूल** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ बच्चा या बच्ची पैदा होने के फ़ौरन बा'द يَا بَرُّ सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर अगर बच्चे को दम कर दिया जाए तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ बालिग़ होने तक आफ़तों से ह़िफ़ाज़त में रहेगा ﴾2﴿ पैदाइश के बा'द बच्चे को पहले नमक मिले हुए नीम गर्म पानी से नहलाइये फिर सादा पानी से ग़ुस्ल दीजिये तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ बच्चा फोड़े फुन्सी की बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा ﴾3﴿ नमक मिले हुए पानी से बच्चों को कुछ दिनों तक नहलाते रहिये कि येह बच्चों की तन्दुरुस्ती के लिये बेह़द मुफ़ीद है। और नीज़ ﴾4﴿ नहलाने के बा'द बदन पर सरसों के तेल की मालिश बच्चों की सिह़्ह़त के लिये इक्सीर है ﴾5﴿ बच्चों को दूध पिलाने से पहले रोज़ाना दो तीन मर्तबा एक उंगली शहद चटा देना काफ़ी फ़ाएदा मन्द है ﴾6﴿ ख़्वाह झूले में

झुलाएं या बिछोने पर सुलाएं या गोद में खिलाएं हर ह़ाल में बच्चों का सर ऊंचा रखिये सर नीचा और पाउं ऊंचे न होने दीजिये कि नुक़्सान देह है ﴾7﴿ विलादत के बा'द बहुत तेज़ रोशनी वाली जगह में रखने से बच्चे की निगाह कमज़ोर हो जाती है ﴾8﴿ जब बच्चे के मसूढ़े सख़्त हो जाएं और दांत निकलते मा'लूम हों तो मसूढ़ों पर मुर्ग़ की चरबी मला करें और ﴾9﴿ रोज़ाना एक दो मर्तबा मसूढ़ों पर शहद मला करें और बच्चे के सर और गरदन पर तेल की मालिश करना मुफ़ीद है ﴾10﴿ जब दूध छुड़ाने का वक़्त आए और बच्चा खाने लगे तो ख़बरदार ! ख़बरदार ! उस को कोई सख़्त चीज़ न चबाने दीजिये, बहुत ही नर्म और जल्द हज़्म होने वाली ग़िज़ाएं खिलाइये ﴾11﴿ गाय या बकरी का दूध भी पिलाते रहिये ﴾12﴿ ह़स्बे हैसिय्यत बच्चों को इस उ़म्र में अच्छी ख़ूराक दीजिये कि इस उ़म्र में जो कुछ ताक़त बदन में आ जाएगी वोह अगर बच्चा ज़िन्दा रहा तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ तमाम उ़म्र काम आएगी ﴾13﴿ बच्चों को बार बार ग़िज़ा नहीं देनी चाहिये। जब तक एक ग़िज़ा हज़्म न हो जाए दूसरी ग़िज़ा हरगिज़ मत दीजिये ﴾14﴿ टॉफ़ियां, मिठाई और खटाई की आ़दत से बचाना बहुत बहुत बहुत ज़रूरी है कि येह चीज़ें बच्चों की सिह़्ह़त के लिये बहुत ही नुक़्सान देह हैं ﴾15﴿ बच्चों को सूखे मेवे और ताज़ा फल खिलाना बहुत ही अच्छा है ﴾16﴿ ख़तना जितनी छोटी उ़म्र में हो जाए बेहतर है तक्लीफ़ भी कम होती और ज़ख़्म भी जल्दी भर जाता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

"मदीना" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से बुख़ार के 5 म-दनी इलाज

لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ○ (پ ۲۹، الدَّھر: ۱۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : न उस में धूप देखेंगे न ठिठर (या'नी सख़्त सर्दी)

(1) येह आयते करीमा सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ **बुख़ार** की शिद्दत में नुमायां कमी मह़सूस होगी और मरीज़ सुकून मह़सूस करेगा।

(2) **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, ''सू-रतुल फ़ातिह़ा 40 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के बुख़ार वाले के चेहरे पर छींटे मारिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ बुख़ार चला जाएगा।''

(3) **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुख़ार था तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह दुआ़ पढ़ कर दम किया था :

بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُّؤْذِيْكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ اَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ ط اَللّٰهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللهِ اَرْقِيْكَ (तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से आप पर दम करता हूं हर उस बीमारी के लिये जो आप को ईज़ा देती है और दूसरों के शर और ह़सद करने वालों की **बुरी नज़र** से। **अल्लाह**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है।

عَزَّوَجَلَّ आप को शिफ़ा अ़ता फ़रमाए। मैं आप पर **अल्लाह** के नाम से दम करता हूं ।") (صَحِیح مُسلِم ص۱۲۰۲ رقم الحدیث ۲۱۸۶)

बुख़ार के मरीज़ को बिला तरजमा सिर्फ़ अ़-रबी में दुआ़ (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कर दीजिये।

(4) बुख़ार वाला ब कसरत بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ पढ़ता रहे।

(5) ह़दीसे पाक में है, जब तुम में से किसी को बुख़ार आ जाए तो उस पर तीन दिन तक सुब्ह़ के वक़्त ठन्डे पानी के छींटे मारे जाएं। (اَلْمُستَدرَك لِلحاكِم ج ٥ ص ٢٨٢ رقم حديث ٧٥١٥)

"अजमेरी" के छ हुरूफ़ की निस्बत से आधे सर के दर्द के 6 इलाज

(1) **अगर** किसी को **आधे सर** का दर्द हो तो एक बार सू-रतुल इख़्लास (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये। ह़स्बे ज़रूरत तीन बार, सात बार या **ग्यारह बार** इसी त़रह़ दम कीजिये। ग्यारह का अ़दद पूरा होने से क़ब्ल ही اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **आधे सर** का दर्द ठीक हो जाएगा।

(2) **जब** दर्द हो रहा हो उस वक़्त सूंठ (या'नी सूखी हुई अदरक जो के पन्सारी या'नी देसी दवा वालों से मिल सकती है) को थोड़े से पानी में घिस कर सूंठ का घिसा हुवा ह़िस्सा पेशानी पर मलने से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आधे सर का दर्द जाता रहेगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे ।

(3) **ख़ुश्क** धनिया के थोड़े दाने और थोड़ी सी किशमिश मटके के ठन्डे या सादा पानी में चन्द घन्टे भिगो कर पीने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा ।

(4) **गर्म** दूध में देसी घी मिला कर पीने से भी फ़ाएदा होता है ।

(5) **नारियल** का पानी पीने से आधा सीसी (या'नी आधे सर का दर्द) और पूरे सर के दर्द में कमी आती है ।

(6) नीम गर्म पानी के बड़े बरतन में नमक डाल कर दोनों पाउं 12 मिनट के लिये उस में डाले रहें اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा । (ज़रूरतन वक़्त में कमी बेशी कर लीजिये ।)

"मक्का शरीफ़" के सात हुरूफ़ की निस्बत से दर्दे सर के 7 म-दनी इलाज

(1) لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ۝ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** न उन्हें दर्दे सर हो न होश में फ़र्क़ आए । (پ ٢٧ الواقعہ ١٩) येह आयते करीमा तीन बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर **दर्दे सर वाले** पर दम कर दीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा ।

(2) सू-रतुन्नास सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर सर पर दम कीजिये, और पूछिये, अगर अभी दर्द बाक़ी हो तो दूसरी बार भी इसी त़रह़ दम कीजिये। अगर अब भी दर्द हो तो तीसरी बार भी इसी त़रह़ दम कीजिये। **पूरे सर** का दर्द हो या **आधे** सर का कैसा ही शदीद दर्द हो तीन बार में إن شاء الله عزوجل जाता रहेगा।

(3) पूरे सर का दर्द हो या शक़ीक़ा (या'नी आधे सर का दर्द) बा'द नमाज़े अ़स्र सू-रतुत्तकासुर एक बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये। إن شاء الله عزوجل दर्द में इफ़ाक़ा होगा।

(4) ज़बान पर एक चुटकी **नमक** रख कर 12 मिनट के बा'द एक गिलास पानी पी लें। सर में कैसा ही दर्द हो إن شاء الله عزوجل इफ़ाक़ा हो जाएगा। (हाई ब्लड प्रेशर के मरीज़ येह इलाज न करें कि उन के लिये नमक का इस्ति'माल नुक़्सान देह होता है)

(5) **एक** कप पानी में एक **चम्मच हल्दी** डाल कर जोश दे कर पीने या भाप लेने से إن شاء الله عزوجل **सर का दर्द** दूर हो जाएगा। (सालन वग़ैरा में हल्दी ज़रूर इस्ति'माल कीजिये, रोज़ाना चुटकी भर (या'नी तक़रीबन एक ग्राम) हल्दी खाने वाला إن شاء الله عزوجل केन्सर से मह़फ़ूज़ रहेगा)

(6) देसी घी में तली हुई, गर्मा गर्म ताज़ा **जलेबियां** तुलूए़ आफ़्ताब से क़ब्ल खाने से إن شاء الله عزوجل दर्दे सर में आराम आ जाएगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज्र लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है।

(7) **कभी** इत्तिफ़ाक़िया **दर्दे सर** हो जाए तो खाना खाने के बा'द डिस्प्रीन (DISPRIN) की दो टिक्या पानी में घोल कर पी लीजिये। اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ ठीक हो जाएगा। (हर त़रह़ के दर्द की टिक्या खाना खाने के बा'द ही इस्ति'माल की जाए कि खाली पेट नुक़्सान देह है)

म-दनी मश्वरह : अगर दवाओं से दर्दे सर ठीक न होता हो तो आंखें टेस्ट करवा लीजिये। अगर नज़र कमज़ोर हो तो ऐनक पहनने से اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर ठीक हो जाएगा। फिर भी ठीक न हो तो दिमाग़ के खुसूसी डॉक्टर (NEUROLOGIST) से रुजूअ़ करना ज़रूरी है। इस में कोताही बा'ज़ अवक़ात **सख़्त नुक़्सान देह साबित** होती है।

बद हज़्मी के दो म-दनी इलाज

《1》 **जिस** शख़्स को बद हज़्मी की शिकायत हो और वोह इस आयते करीमा को पढ़ कर अपने हाथ पर दम कर के उसे अपने पेट पर फैरे और खाने वग़ैरा पर दम कर के खाना खाया करे اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ बद हज़्मी की शिकायत दूर हो जाएगी। **अल्लाह** तबा-र-क व तआला पारह 29 सू-रतुल मुर-सलात की 43 और 44वीं आयते मुबा-रका में इर्शाद फ़रमाता है :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔۢا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۴۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा अपने आ'माल का सिला बेशक नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

《2》 इमाम कमालुद्दीन दमैरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ बा'ज़ उ-लमाए किराम

से नक़्ल फ़रमाते हैं, जिस ने खाना ज़ियादा खा लिया और बद हज़्मी का ख़ौफ़ हो वोह अपने पेट पर हाथ फैरता हुवा तीन मर्तबा येह कहे :

اَللَّيْلَةُ لَيْلَةُ عِيْدِىْ يَا كَرْشِىْ وَرَضِىَ اللهُ عَنْ سَيِّدِىْ اَبِىْ عَبْدِ اللهِ الْقَرْشِىْ

तरजमा : ऐ मेरे मे'दे आज की रात मेरी ईद की रात है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) राज़ी हो हमारे सरदार ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह क़-रशी से।

और अगर दिन का वक़्त हो तो اَللَّيْلَةُ لَيْلَةُ عِيْدِىْ की जगह اَلْيَوْمُ يَوْمُ عِيْدِىْ कहे। (حَيَاةُ الْحَيوَان الْكُبْرىٰ ج١ ص٤٦٠)

क़ब्ज़ के तिब्बी इ़लाज

बद हज़्मी के कई इ़लाज हैं मिन जुम्ला येह कि (1) क़ब्ज़ हो तो दो एक वक़्त का फ़ाक़ा कर ले اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ पेट का बोझ कम हो जाएगा और मे'दे को आराम भी मिलेगा (2) मुनासिब मिक़्दार में पपीता खा ले (3) इसपग़ोल का छिलका एक या तीन चम्मच पानी से फांक ले अगर इस से काम न चले तो ह़स्बे ज़रूरत उस की मिक़्दार बढ़ा ले। अगर अक्सर क़ब्ज़ रहती हो तो हफ़्ते में दो एक बार इसी त़रह़ करे (4) पिसी हुई हड़ चाय का आधा चम्मच सोते वक़्त पानी से लीजिये हो सके तो कम अज़ कम चार माह तक रोज़ाना इस्ति'माल कीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ क़ब्ज़ के साथ साथ बहुत सारी बीमारियों बल्कि ह़ाफ़िज़े के लिये भी मुफ़ीद पाएंगे।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब तुम मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

क़ब्ज़ के चार इलाज

"**क़ूतुल क़ुलूब**" जिल्द 2, सफ़्ह़ा 365, पर नक़्ल है कि 6 घन्टे से क़ब्ल अगर खाना निकल जाए तब भी मे'दा बीमार और अगर 24 घन्टे से ज़ियादा वक़्त तक ख़ारिज न हो तब भी समझ लीजिये कि मे'दा बीमार है। जोड़ों का दर्द पेट की हवा रोकने का नतीजा है। जिस त़रह़ नहर का चलता पानी अगर रोक दिया जाए तो नहर के कनारों को नुक़्सान होता और कनारे टूट कर पानी बहने लगता है। इसी त़रह़ पेशाब रोकने से जिस्म को नुक़्सान होता है। (قُوتُ الْقُلُوب ج۲ ص۳۶۵)

अपना हाज़िमा दुरुस्त रखिये, वरना मोटापे का इ़लाज मुश्किल है, सब्ज़ियों और फलों का इस्ति'माल कीजिये। अगर क़ब्ज़ रहती हो तो 《1》चार, पांच अ़दद बीज समेत पक्के अमरूद या 《2》 मुनासिब मिक़्दार में पपीता खा लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ पेट साफ़ हो जाएगा। 《3》 हर चौथे दिन तीन चार चम्मच इसपग़ोल की भूसी या एक चम्मच कोई सा भी हाज़िम चूरन पानी के साथ निगल लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ पेट की सफ़ाई होती रहेगी। रोज़ रोज़ अगर इसपग़ोल या हाज़िम चूरन इस्ति'माल किया जाए तो अक्सर बे असर हो जाता है नीज़ 《4》 अगर आप का डॉक्टर इजाज़त दे तो हर दो या तीन माह बा'द पांच दिन तक सुब्ह़ व शाम एक एक टिक्या ग्रामेक्स 400 मिली ग्राम GRAMEX400mg (Metronidazole) इस्ति'माल कीजिये। इसे क़ब्ज़, बद हज़्मी वग़ैरा अमराज़ और पेट की इस्लाह़ के लिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बेहतरीन दवा पाएंगे। मगर जब भी येह टिक्या लेना

शुरूअ़ करें तो मुसलसल पांच दिन पूरे करना ज़रूरी है। ख़ाली पेट में भी ले सकते हैं।

बे वक़्त नींद चढ़ने का इलाज

एक गिलास पानी (नीम गर्म हो तो ज़ियादा बेहतर) में एक चम्मच शहद मिला कर नहार मुंह (या'नी कुछ खाने से क़ब्ल) और रोज़ा हो तो इफ़्तार के वक़्त बिला नाग़ा मुस्तक़िल इस्ति'माल कीजिये मोटापा और बहुत सी बीमारियों बिल ख़ुसूस पेट के अमराज़ से اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हिफ़ाज़त होगी, बेहतर येह है कि इस में एक वरना आधा लीमूं भी निचोड़ लिया करें तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़वाइद ज़ाइद हो जाएंगे। अगर मुत़ा-लआ़ करते करते या इज्तिमाअ़ वग़ैरा में बैठे बैठे बे वक़्त नींद चढ़ती होगी तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस से भी नजात मिलेगी।

मोटापे का सब से बेहतरीन इलाज

सब से बेहतरीन इलाज **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तज्वीज़ फ़रमूदा है : "भूक के तीन ह़िस्से कर लिये जाएं एक ह़िस्सा ग़िज़ा एक ह़िस्सा पानी और एक ह़िस्सा हवा।" अगर खाने में येह त़रीक़ा अपना लिया जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ न कभी बदन मोटा होगा न कभी गेस, बादी, पेट में गड़बड़, क़ब्ज़ वग़ैरा आ़रिज़ा।

खांसी का इलाज

रोज़ाना किशमिश के 40 दाने (अगर मुवाफ़िक़ आते हों तो दुगने करने में भी ह़रज नहीं) और तीन अ़दद बादाम ले कर उस पर 11

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दम कर के खा लीजिये इस के ऊपर दो घन्टे तक पानी न पियें। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ खांसी में बहुत फ़ाएदा होगा। बल्ग़म निकलेगा और मज़ीद नहीं बनेगा। (ज़रूरतन किशमिश की ता'दाद बढ़ा दीजिये) बहुत छोटे बच्चों के लिये ह़स्बे ज़रूरत मिक़्दार कुछ कम कर दीजिये। ता हुसूले शिफ़ा इलाज जारी रखिये।

हि़फ़ाज़ते ह़म्ल के 2 रूहा़नी इ़लाज

《1》 لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ 11 बार किसी रिकाबी (या काग़ज़) पर लिख कर धो कर औ़रत को पिला दीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ह़म्ल** की हि़फ़ाज़त होगी। जिस औ़रत को दूध न आता हो या कम आता हो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है। चाहें तो एक ही दिन पिलाएं या कई रोज़ तक रोज़ाना ही लिख कर पिलाएं हर त़रह़ से इख़्तियार है।

《2》 یَا حَیُّ یَا قَیُّوْمُ 111 बार किसी काग़ज़ पर लिख कर ह़ामिला के पेट पर बांध दीजिये और विलादत के वक़्त तक बांधे रहिये। (ज़रूरतन कुछ देर के लिये खोलने में ह़रज नहीं) اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ह़म्ल** भी मह़फ़ूज़ रहेगा और बच्चा भी सिह़्ह़त मन्द पैदा होगा।

इ़र्कुन्निसा के 2 रूहा़नी इ़लाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इ़र्कुन्निसा की पहचान येह है कि इस में चड्ढे (या'नी रान के जोड़) से ले कर पाउं के टख़्ने तक शदीद दर्द होता है येह मरज़ बरसों तक पीछा नहीं छोड़ता।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

《1》 दर्द के मक़ाम पर हाथ रख कर अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़, सू-रतुल फ़ातिहा एक बार और सात मर्तबा येह दुआ पढ़ कर दम कर दीजिये : اَللّٰھُمَّ اذْھِبْ عَنِّیْ سُوْءَ مَا اَجِدُ (ऐ **अल्लाह** عزوجل मुझ से मरज़ दूर फ़रमा दे) अगर दूसरा दम करे तो **عَنِّیْ** की जगह **عَنْهُ** (या'नी इस से) कहे। (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा) 《2》 **یَامُحْیِیُ** सात बार पढ़ कर गेस हो या पीठ या पेट में तक्लीफ़ या इर्कुन्निसा या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उ़ज़्व के ज़ाएअ़ हो जाने का ख़ौफ़ हो, अपने ऊपर दम कर दीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عزوجل फ़ाएदा होगा। (मुद्दते इ़लाज : ता हुसूले शिफ़ा)

मुंह की बदबू का इ़लाज

अगर किसी चीज़ के खाने के सबब मुंह में **बदबू** आती हो तो हरा धनिया चबा कर खाइये नीज़ गुलाब के ताज़ा या सूखे हुए फूलों से दांत मांझिये اِنْ شَآءَ اللہ عزوجل फ़ाएदा होगा। हां अगर पेट की ख़राबी की वजह से **बदबू** आती हो तो "कम ख़ोरी" की सआ़दत ह़ासिल कर के भूक की ब-र-कतें लूटने से اِنْ شَآءَ اللہ عزوجل टांगों और बदन के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों के दर्द, क़ब्ज़, सीने की जलन, मुंह के छाले, बार बार होने वाले नज़्ले, खांसी और गले के दर्द, मसूढ़ों में ख़ून आना वग़ैरा बहुत सारे अमराज़ के साथ साथ **मुंह की बदबू** से भी जान छूट जाएगी। भूक बाक़ी रहे इस त़रह़ से कम खाने में 80 **फ़ीसद अमराज़** से बचत हो सकती है। (तफ़्सीली

मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब "पेट का कुफ़्ले मदीना" का मुता-लआ फ़रमाइये) अगर नफ़्स की ह़िर्स़ का इलाज हो जाए तो कई जिस्मानी और रूहानी अमराज़ खुद ही दम तोड़ जाएं।

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना

कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

मुंह की बदबू का म-दनी इलाज

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَی النَّبِیِّ الطَّاھِرِ.

मुन्द-र-जए बाला दुरूद शरीफ़ मौक़अ़ ब मौक़अ़ एक ही सांस में ग्यारह मरतबा पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ मुंह की **बदबू** ज़ाइल हो जाएगी। एक ही सांस में पढ़ने का बेहतर त़रीक़ा येह है कि मुंह बन्द कर के आहिस्ता आहिस्ता नाक से सांस लेना शुरूअ़ कीजिये और मुम्किना ह़द तक हवा **फेफड़ों** में भर लीजिये। अब **दुरूद शरीफ़** पढ़ना शुरूअ़ कीजिये। चन्द बार इस त़रह़ मश्क़ करेंगे तो सांस टूटने से क़ब्ल اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ मुकम्मल ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तरकीब बन जाएगी। मज़्कूरा त़रीक़े पर नाक से गहरा सांस ले कर मुम्किन ह़द तक रोक रखने के बा'द मुंह से ख़ारिज करना सिह़ह़त के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है। दिन भर में जब जब मौक़अ़ मिले बिल ख़ुसूस खुली फ़ज़ा में रोज़ाना चन्द बार तो ऐसा कर ही लेना चाहिये।

मुंह की बदबू मा'लूम करने का त़रीक़ा

अगर मुंह में कोई तग़य्युरे राइहा (या'नी बदबू) हो तो जितनी बार मिस्वाक और कुल्लियों से इस (बदबू) का इज़ाला (या'नी दूर करना मुम्किन) हो (उतनी बार कुल्लियां वग़ैरा करना) लाज़िम है, इस के लिये कोई ह़द मुक़र्रर नहीं। बदबूदार कसीफ़ (गाढ़ा) बे एह़तियाती का **हुक़्क़ा** पीने वालों को इस का ख़याल (रखना) सख़्त ज़रूरी है और उन से ज़ियादा **सिगरेट** वाले को कि इस की बदबू मुरक्कब तम्बाकू से सख़्त तर और ज़ियादा देर पा है और इन सब से ज़ाइद अशद ज़रूरत **तम्बाकू** खाने वालों को है जिन के मुंह में उस का जिर्म (या'नी धूएं के बजाए ख़ुद तम्बाकू ही) दबा रहता है और मुंह अपनी **बदबू** से बसा देता है। येह सब लोग वहां तक मिस्वाक और कुल्लियां करें कि मुंह बिल्कुल साफ़ हो जाए और **बू** का अस्लन निशान न रहे और इस का इम्तिह़ान यूं है कि हाथ अपने मुंह के क़रीब ले जा कर मुंह खोल कर ज़ोर से तीन बार ह़ल्क़ से पूरी सांस हाथ पर लें और मअ़न (फ़ौरन) सूंघें। बिग़ैर इस के अन्दर की **बदबू** ख़ुद कम मह़सूस होती है और जब मुंह में **बदबू** हो तो मस्जिद में जाना **ह़राम**, नमाज़ में दाख़िल होना मन्अ़। واللہ الہادی

(फ़तावा र-ज़विय्या तख़रीज शुदा, जि. अव्वल, स. 623)

मुंह की सफ़ाई का त़रीक़ा

जो मिस्वाक और खाने के बा'द ख़िलाल की सुन्नत अदा नहीं करते और दांतों की सफ़ाई करने में सुस्त होते हैं अक्सर उन के मुंह **बदबूदार** होते हैं। सिर्फ़ रस्मी त़ौर पर मिस्वाक और ख़िलाल का

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

तिन्का दांतों से मस कर देना काफ़ी नहीं होता। मसूढ़े ज़ख़्मी न हों इस एह़तियात् के साथ मुम्किना सूरत में ग़िज़ा का एक एक ज़र्रा दांतों से निकालना होगा वरना दांतों के दरमियान ग़िज़ाई अज्ज़ा पड़े पड़े सड़ते और सख़्त सड़ांद का बाइ़स बनते रहेंगे। दांतों की सफ़ाई का एक त़रीक़ा येह भी है कि कोई चीज़ खाने और चाय वग़ैरा पीने के बा'द और इस के इ़लावा भी जब जब मौक़अ़ मिले म-सलन बैठे बैठे कोई काम कर रहे हैं उस वक़्त पानी का घूंट मुंह में भर लें और **जुम्बिशें** देते रहें या'नी हिलाते रहें, इस त़रह़ मुंह का कचरा और मैल कुचैल साफ़ होता रहेगा। सादा पानी भी चल जाएगा और अगर नमक वाला नीम गर्म पानी हो तो येह إن شاء الله عزوجل बेहतरीन "माउथ वॉश" साबित होगा।

दिल में नूरे ईमान पाने का एक सबब

ह़दीसे पाक में है, "जिस शख़्स ने **ग़ुस्सा** ज़ब्त़ कर लिया बा वुजूद इस के कि वोह ग़ुस्सा नाफ़िज़ करने पर क़ुदरत रखता है **अल्लाह** عزوجل उस के दिल को सुकून व ईमान से भर देगा।"

(الجامع الصغير للسيوطى ص ٥٤١ حديث ٨٩٩٧)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہ وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी ।

इ़लाज बिल ग़िज़ा के मन्ज़ूम म-दनी फूल

जहां तक काम चलता हो ग़िज़ा से
वहां तक चाहिये बचना दवा से
अगर तुझ को लगे जाड़ों में सर्दी
तो इस्ति'माल कर अन्डे की ज़र्दी
जो हो मह़सूस मे'दे में गिरानी
तो चख ले सोंफ़ या अदरक का पानी
अगर ख़ूं कम बने बलग़म ज़ियादा
तो खा गाजर, चने, शलग़म ज़ियादा
जो बद हज़्मी में तू चाहे इफ़ाक़ा
तो कर ले एक या दो वक़्त फ़ाक़ा
जो पेचिश है तो पेच इस त़रह़ कस ले
मिला कर दूध में लीमूं का रस ले
जिगर के बल पे है इन्सान जीता
अगर ज़ो'फ़े जिगर है, खा पपीता
जिगर में हो अगर गरमी, दही खा
अगर आंतों में ख़ुश्की है, तो घी खा
थकन से हों अगर उ़ज़्लात ढीले
तो फ़ौरन दूध गरमा गर्म पी ले
जो त़ाक़त में कमी होती है मह़सूस
तो फिर मुल्तानी मिस्री की डली चूस
ज़ियादा गर दिमाग़ी है तेरा काम
तो खाया कर मिला कर शहद बादाम
अगर हो दिल की कमज़ोरी का एह़सास
मुरब्बा आमला खा, और अनन्नास
जो दुखता है गला, नज़्ले के मारे
तो कर नमकीन पानी से ग़रारे
अगर है दर्द से दांतों के बेकल
तो उंगली से मसूढ़ों पर नमक मल
शिफ़ा चाहे अगर खांसी से जल्दी
तो पी ले दूध में थोड़ी सी हल्दी
जो कानों में अगर तक्लीफ़ होवे
तो सरसों तेल फाहे से निचोड़े
जो टाइफ़ॉइड से चाहे रिहाई
बदल पानी के गन्ना चूस भाई
ज़ियाबेत़िस अगर तुझ को जो मारे
तो जामुन ताज़ा खा, और ले नज़ारे
तू चिश्ती, नक़्शबन्दी, क़ादिरी है
तू ह़-नफ़ी, शाफ़ेई या मालिकी है
तू आ जा सुन्नतों के इज्तिमाअ़ में
हो नफ़्अ़ दीनो दुन्या की मताअ़ में
अगर हो तेरे दिल पे ग़म की यल्ग़ार
तो म-दनी क़ाफ़िलों में कर सफ़र यार
जो है दिल फ़िक्रे दुन्या से परेशां
तो कर यादे ख़ुदा से दिल को शादां
अगर आफ़त कोई आ जाए तुझ पर
तो दिल से या रसूलल्लाह कहा कर
दुरूदे पाक तू हर दम पढ़ा कर
सभी अमराज़ की इस से दवा कर
तू हुब्बे आल व अस्ह़ाबे नबी से
दिल आबाद कर मत डर किसी से

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ैज़ाने ईसाले सवाब

निफ़ाक़ व नार से नजात

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सख़ावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं : **सरकारे दो आ़लम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक भेजा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सो बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह बन्दा निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से बरी है और क़ियामत के दिन उस को शहीदों के साथ रखेगा।"

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص ۲۳۳ مؤسسة الریان بیروت)

है सब दुआ़ओं से बढ़ कर दुआ़ दुरूदो सलाम
कि दफ़्अ़ करता है हर इक बला दुरूदो सलाम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन के वालिदैन या उन में से कोई एक फ़ौत हो गया हो तो उन को चाहिये कि उन की त़रफ़ से ग़फ़्लत न करे, उन की क़ब्रों पर भी ह़ाज़िरी देता रहे और ईसाले सवाब भी करता रहे। इस ज़िम्न में सुल्त़ाने मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 5

फ़रामीने रह़मत निशान मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं :

(1) मक़्बूल ह़ज का सवाब

"**जो** ब निय्यते सवाब अपने वालिदैन दोनों या एक की क़ब्र की ज़ियारत करे, ह़ज्जे मक़्बूल के बराबर सवाब पाए और जो ब कसरत इन की क़ब्र की ज़ियारत करता हो, फ़िरिश्ते उस की क़ब्र की (या'नी जब येह फ़ौत होगा) ज़ियारत को आएं।"

(كَنزُ الْعُمّال ج١٦ ص٢٠٠ حديث٤٥٥٣٦)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) दस ह़ज का सवाब

जो अपनी मां या बाप की त़रफ़ से ह़ज करे उन की (या'नी मां या बाप की) त़रफ़ से ह़ज अदा हो जाए उसे (या'नी ह़ज करने वाले को) मज़ीद दस ह़ज का सवाब मिले। (دارِقُطنی ج٢ ص٣٢٩ حديث٢٥٨٧)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब कभी नफ़्ली ह़ज की सआ़दत ह़ासिल हो तो फ़ौत शुदा मां या बाप की निय्यत कर लें ता कि उन को भी ह़ज का सवाब मिले, आप का भी ह़ज हो जाए बल्कि मज़ीद दस ह़ज का सवाब हाथ आए। अगर मां या वालिद में से कोई इस ह़ाल में फ़ौत हो गया कि उन पर ह़ज फ़र्ज़ हो चुकने के बा वुजूद वोह न कर पाए थे तो अब औलाद को ह़ज्जे बदल का शरफ़ ह़ासिल करना चाहिये। ह़ज्जे बदल के तफ़्सीली अह़काम के लिये "**रफ़ीक़ुल ह़-रमैन**" (मत्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) का मुता-लआ़ फ़रमाएं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे ।

(3) वालिदैन की त़रफ़ से ख़ैरात

"**जब** तुम में से कोई कुछ नफ़्ल ख़ैरात करे तो चाहिये कि उसे अपने मां बाप की त़रफ़ से करे कि इस का सवाब उन्हें मिलेगा और इस के (या'नी ख़ैरात करने वाले के) सवाब में कोई कमी भी नहीं आएगी ।"

(شُعَبُ الْاِیْمَان ج٦ ص٢٠٥ حدیث٧٩١١)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) रोज़ी में बे ब-र-कती की वजह

"बन्दा जब मां बाप के लिये दुआ़ तर्क कर देता है उस का रिज़्क़ क़त्अ़ हो जाता है ।" (کَنْزُ الْعُمَّال ج١٦ ص٢٠١ حدیث٤٥٥٤٨)

(5) जुमुआ़ को ज़ियारते क़ब्र की फ़ज़ीलत

जो शख़्स जुमुआ़ के रोज़ अपने **वालिदैन** या उन में से किसी एक की क़ब्र की ज़ियारत करे और उस के पास सू-रए यासीन पढ़े, बख़्श दिया जाए । (ابن عدی فِی الْکَامِل ج٦ ص٢٦٠)

लाज रख ले गुनाहगारों की नाम रह़मान है तेरा या रब !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है जो मुसल्मान दुन्या से रुख़्सत हो जाते हैं उन के लिये भी उस ने अपने फ़ज़्लो करम के दरवाज़े खुले ही रखे हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मते बे पायां से मु-तअ़ल्लिक़ एक रिवायत पढ़िये और झूमिये !

कफ़न फट गए

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना अरमियाअ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कुछ ऐसी क़ब्रों के पास से गुज़रे जिन में अ़ज़ाब हो रहा था। एक साल बा'द जब फिर वहीं से गुज़र हुवा तो अ़ज़ाब ख़त्म हो चुका था। उन्हों ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! क्या वजह है कि पहले इन को अ़ज़ाब हो रहा था अब ख़त्म हो गया ? आवाज़ आई, "ऐ अरमियाअ ! इन के कफ़न फट गए, बाल बिखर गए और क़ब्रें मिट गईं तो मैंने इन पर रह़्म किया और ऐसे लोगों पर मैं रह़्म किया ही करता हूं।" (شَرحُ الصُّدُور ص ۳۱۳)

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी

ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"करम" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब के 3 ईमान अफ़्रोज़ फ़ज़ाइल

(1) दुआ़ओं की ब-र-कत

मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, मेरी उम्मत गुनाह समेत क़ब्र में दाख़िल होगी और जब निकलेगी तो बे गुनाह होगी क्यूं कि वोह मुअमिनीन की दुआ़ओं से बख़्श दी जाती हैं। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۱ ص۵۰۹ حدیث۱۸۷۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) ईसाले सवाब का इन्तिज़ार !

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है, मुर्दे का हाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़दीक वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मु-त-अ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़ता फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) मुर्दों के लिये "दुआ़ए मग़्फ़िरत करना है"। (شُعَبُ الْاِيْمَان ج٦ص٢٠٣حديث٧٩٠٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) दूसरों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करने की फ़ज़ीलत

"**जो** कोई तमाम मोमिन मर्दों और औ़रतों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर मोमिन मर्द व औ़रत के इ़वज़ एक नेकी लिख देता है।"

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج١٠ ص٣٥٢حديث١٧٥٩٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्ख़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! झूम जाइए ! अरबों, खरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्ख़ा हाथ आ गया ! ज़ाहिर है इस वक़्त रूए ज़मीन पर करोड़ों मुसल्मान मौजूद हैं और करोड़ों बल्कि

अरबों दुन्या से चल बसे हैं। अगर हम सारी उम्मत की मग़िफ़रत के लिये दुआ करेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमें अरबों, खरबों नेकियों का ख़ज़ाना मिल जाएगा। मैं अपने लिये और तमाम मुअमिनीन व मुअमिनात के लिये दुआ तह़रीर कर देता हूं। (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ लें) اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ढेरों नेकियां हाथ आएंगी।

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَلِکُلِّ مُؤْمِنٍ وَّمُؤْمِنَۃٍ. या'नी ऐ **अल्लाह** ! मेरी और हर मोमिन व मोमिना की मग़िफ़रत फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

आप भी ऊपर दी हुई दुआ को अ़-रबी या उर्दू या दोनों ज़बानों में अभी और हो सके तो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द भी पढ़ने की आ़दत बना लीजिये।

बे सबब बख़्श दे, न पूछ अ़मल नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नूरानी लिबास

एक बुज़ुर्ग ने अपने मर्हूम भाई को ख़्वाब में देख कर पूछा, "क्या ज़िन्दा लोगों की दुआ तुम लोगों को पहुंचती है ?" तो उन्हों ने जवाब दिया, "हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम वोह नूरानी लिबास की सूरत में आती है उसे हम पहन लेते हैं।" (شَرحُ الصُّدُور ص ۳۰۵)

जल्वए यार से हो क़ब्र आबाद वह़्शते क़ब्र से बचा या रब !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

नूरानी तबाक़

"**जब** कोई शख़्स मय्यित को ईसाले सवाब करता है तो जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام उसे नूरानी तबाक़ में रख कर क़ब्र के कनारे खड़े हो जाते हैं और कहते हैं "**ऐ क़ब्र वाले !** येह हदिय्या (तोह़फ़ा) तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर।" येह सुन कर वोह ख़ुश होता है और उस के पड़ोसी अपनी मह़रूमी पर ग़मगीन होते हैं। (ऐज़न स. 308)

क़ब्र में आह ! घुप अंधेरा है फ़ज़्ल से कर दे चांदना या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुर्दों की ता'दाद के बराबर अज्र

जो क़ब्रिस्तान में ग्यारह बार सू-रए इख़्लास पढ़ कर मुर्दों को उस का **ईसाले सवाब** करे तो मुर्दों की ता'दाद के बराबर ईसाले सवाब करने वाले को इस का अज्र मिलेगा।

(كَشفُ الْخِفَاء ج٢ص٢٥٢حديث ٢٦٢٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अहले कुबूर सिफ़ारिश करेंगे

शफ़ीए मुजरिमान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है, "जो क़ब्रिस्तान से गुज़रा और उस ने सू-रतुल फ़ातिहा, सू-रतुल इख़्लास और सू-रतुत्तकासुर पढ़ी। फिर येह दुआ मांगी, "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो कुछ कुरआन पढ़ा उस का सवाब मोमिन मर्द व औ़रत दोनों को पहुंचा। तो वोह क़ब्र वाले क़ियामत के रोज़ इस (ईसाले सवाब करने वाले) के सिफ़ारिशी होंगे।" (شَرحُ الصُّدُور ص ٣١١)

हर भले की भलाई का सदक़ा इस बुरे को भी कर भला या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सू-रए इख़्लास का सवाब

हज़रते सय्यिदुना हम्माद मक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, मैं एक रात मक्कए मुकर्रमा के क़ब्रिस्तान में सो गया। क्या देखता हूं कि क़ब्र वाले हल्क़ा दर हल्क़ा खड़े हैं मैंने उन से इस्तिफ़्सार किया, "क्या क़ियामत क़ाइम हो गई ?" उन्हों ने कहा, "नहीं बात दर अस्ल येह है कि एक मुसल्मान भाई ने **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ कर हम को **ईसाले सवाब** किया तो वोह सवाब हम एक साल से तक़्सीम कर रहे हैं"।

(شَرحُ الصُّدُور ص۳۱۲)

तूने जब से सुना दिया या रब عَزَّوَجَلَّ*!* سَبَقَتْ رَحْمَتِيْ عَلٰى غَضَبِيْ
और मज़बूत हो गया या रब عَزَّوَجَلَّ*!* *आसरा हम गुनाह गारों का*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उम्मे सा'द رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के लिये कूंआं

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उबादा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अर्ज़ की, "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी मां इन्तिक़ाल कर गई हैं। (मैं उन की तरफ़ से स-दक़ा करना चाहता हूं) कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल रहेगा ? सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "पानी"। चुनान्चे उन्हों ने एक कूंआं खुदवाया और कहा, "**येह उम्मे सा'द** رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا **के लिये है।**" (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج۲ص۱۸۰حدیث۱۶۸۱دارالفکر بیروت)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना सा'द رضی اللہ تعالٰی عنہ का कहना कि येह कूंआं उम्मे सा'द رضی اللہ تعالٰی عنہما के लिये है। इस के मा'ना येह हैं कि येह कूंआं सा'द رضی اللہ تعالٰی عنہ की मां के ईसाले सवाब के लिये है। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों का गाय या बकरे वगै़रा को बुजु़र्गों की तरफ मन्सूब करना म-सलन : येह कहना कि "येह सय्यिदुना गौ़से पाक رضی اللہ تعالٰی عنہ का बकरा है"। इस में कोई ह़रज नहीं कि इस से मुराद भी येही है कि येह बकरा गौ़से पाक رضی اللہ تعالٰی عنہ के ईसाले सवाब के लिये है। और कुरबानी के जानवर को भी तो लोग एक दूसरे ही की त़रफ़ मन्सूब करते हैं। म-सलन कोई अपनी कुरबानी की गाय लिये चला आ रहा हो और अगर आप उस से पूछें, कि किस की गाय है ? तो उस ने येही जवाब देना है, "मेरी गाय है" जब येह कहने वाले पर ए'तिराज़ नहीं तो "गौ़से पाक का बकरा" कहने वाले पर भी कोई ए'तिराज़ नहीं हो सकता। ह़क़ीक़त में हर शै का मालिक **अल्लाह** عزوجل ही है और कुरबानी की गाय हो या गौ़से पाक का बकरा, हर ज़बीह़ा के ज़ब्ह़ के वक़्त **अल्लाह** عزوجل का नाम लिया जाता है। **अल्लाह** عزوجل वस्वसों से नजात बख़्शे।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे।

“दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है” के अठारह हुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब के 18 म-दनी फूल

मदीना 1 : फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, ह़ज, बयान, दर्स, म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र, म-दनी इन्आ़मात, नेकी की दा'वत, दीनी किताब का मुत़ा-लआ़, म-दनी कामों के लिये इन्फ़िरादी कोशिश वग़ैरा हर नेक काम का ईसाले सवाब कर सकते हैं।

मदीना 2 : मय्यित का तीजा, दसवां, चालीसवां और बरसी करना अच्छा है कि येह ईसाले सवाब के ही ज़राएअ़ हैं। शरीअ़त में तीजे वग़ैरा के अ़-दमे जवाज़ (या'नी ना जाइज़ होने) की दलील न होना ख़ुद दलीले जवाज़ है और मय्यित के लिये ज़िन्दों का दुआ़ करना क़ुरआने करीम से साबित है जो कि ईसाले सवाब की अस्ल है। चुनान्चे

وَالَّذِیْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ

(پ۲۸ حشر:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो उन के बा'द आए अ़र्ज़ करते हैं, ऐ हमारे रब (عَزَّوَجَلَّ) हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए।

मदीना 3 : तीजे वग़ैरा का खाना सिर्फ़ उसी सूरत में मय्यित के छोड़े हुए माल से कर सकते हैं जब कि सारे वु-रसा बालिग़ हों और सब के सब इजाज़त भी दें अगर एक भी वारिस ना बालिग़ है तो सख़्त ह़राम है। हां बालिग़ अपने ह़िस्से से कर सकता है।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 822)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा।

मदीना 4 : **मय्यित** के घर वाले अगर तीजे का खाना पकाएं तो (मालदार न खाएं) सिर्फ़ फु-क़राअ को खिलाएं। (ऐज़न, स. 853)

मदीना 5 : **एक** दिन के बच्चे को भी ईसाले सवाब कर सकते हैं, उस का तीजा, वग़ैरा भी करने में ह़रज नहीं।

मदीना 6 : **जो** ज़िन्दा हैं उन को भी बल्कि जो मुसल्मान अभी पैदा नहीं हुए उन को भी पेशगी (एडवान्स में) ईसाले सवाब किया जा सकता है।

मदीना 7 : मुसल्मान जिन्नात को भी ईसाले सवाब कर सकते हैं।

मदीना 8 : **ग्यारहवीं शरीफ़,** र-जबी शरीफ़ (या'नी 22 र-जबुल मुरज्जब को सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के कूंडे करना) वग़ैरा जाइज़ है। कूंडे ही में खीर खिलाना ज़रूरी नहीं दूसरे बरतन में भी खिला सकते हैं। इस को घर से बाहर भी ले जा सकते हैं।

मदीना 9 : **बुज़ुर्गों की फ़ातिह़ा** के खाने को ता'ज़ीमन "नज़्रो नियाज़" कहते हैं और येह नियाज़ तबर्रुक है इसे अमीर व ग़रीब सब खा सकते हैं।

मदीना 10 : **ईसाले सवाब** के खाने में मेहमान की शिर्कत शर्त़ नहीं घर के अफ़राद अगर ख़ुद ही खा लें जब भी कोई ह़रज नहीं।

मदीना 11 : **रोज़ाना** जितनी बार भी खाना खाएं उस में अगर किसी न किसी बुज़ुर्ग के ईसाले सवाब की निय्यत कर लें तो

मदीना ही मदीना । म-सलन : नाश्ते में निय्यत करें, आज के नाश्ते का सवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के ज़रीए़ तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को पहुंचे । दोपहर को निय्यत करें, अभी जो खाना खाएंगे (या खाया) उस का **सवाब सरकारे ग़ौसे आ'ज़म** और तमाम औलियाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को पहुंचे, रात को निय्यत करें, अभी जो खाएंगे उस का सवाब इमामे अहले सुन्नत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن और हर मुसल्मान मर्द व औ़रत को पहुंचे ।

मदीना 12 : **खाने** से पहले ईसाले सवाब करें या खाने के बा'द, दोनों त़रह़ दुरुस्त है ।

मदीना 13 : **हो** सके तो हर रोज़ (नफ़अ़ पर नहीं बल्कि) अपनी बिकरी का एक फ़ीसद और मुला-ज़मत करने वाले तन-ख़्वाह का माहाना कम अज़ कम तीन फ़ीसद सरकारे **ग़ौसे पाक** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ की नियाज़ के लिये निकाल लिया करें । इस रक़म से दीनी किताबें तक़्सीम करें या किसी भी नेक काम में ख़र्च करें اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें ख़ुद ही देखेंगे ।

मदीना 14 : **मस्जिद** या मद्रसा का क़ियाम स-द-क़ए जारिया और **ईसाले सवाब** का बेहतरीन जरीआ़ है ।

मदीना 15 : **दास्ताने** अ़जीब, शहज़ादे का सर, दस बीबियों की कहानी और जनाबे सय्यिदह की कहानी वग़ैरा सब मन घड़त क़िस्से हैं, इन्हें हरगिज़ न पढ़ा करें । इसी त़रह़ एक पेम्फ़लेट बनाम "वसिय्यत नामा" लोग तक़्सीम करते हैं जिस में किसी "शैख़ अह़मद" का ख़्वाब

दर्ज है येह भी **जा'ली** है इस के नीचे मख़्सूस ता'दाद में छपवा कर बांटने की फ़ज़ीलत और न तक़्सीम करने के नुक़्सानात वग़ैरा लिखे हैं इन का भी ए'तिबार न करें।

मदीना 16 **: जितनों** को भी ईसाले सवाब करें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है कि सब को पूरा मिलेगा। येह नहीं कि सवाब तक़्सीम हो कर टुकड़े टुकड़े मिले।

(رَدُّالْمُحتار ج۳ ص ۱۸۰ دار المعرفۃ، بہارِ شریعت ج۱ حصہ ٤ ص ۸۵۰ ملخصاً)

मदीना 17 **: ईसाले सवाब** करने वाले के सवाब में कोई कमी वाक़ेअ़ नहीं होती बल्कि येह उम्मीद है कि इस ने जितनों को ईसाले सवाब किया उन सब के मज्मूआ़ के बराबर इस को सवाब मिले। म-सलन : कोई नेक काम किया जिस पर इस को दस नेकियां मिलीं अब इस ने दस मुर्दों को ईसाले सवाब किया तो हर एक को दस दस नेकियां पहुंचेंगी जब कि ईसाले सवाब करने वाले को एकसो दस और अगर एक हज़ार को ईसाले सवाब किया तो इस को दस हज़ार दस। وَعَلٰى هٰذَاالْقِيَاس

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 850)

मदीना 18 **: ईसाले सवाब** सिर्फ़ मुसल्मान को कर सकते हैं। काफ़िर या मुर्तद को ईसाले सवाब करना या इस को मर्हूम कहना कुफ़्र है।

ईसाले सवाब का त़रीक़ा

ईसाले सवाब (या'नी सवाब पहुंचाना) के लिये दिल में निय्यत कर लेना काफ़ी है, म-सलन आप ने किसी को एक रुपिया ख़ैरात दिया या एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा या किसी को एक सुन्नत बताई

या नेकी की दा'वत दी या सुन्नतों भरा बयान किया। अल ग़रज़ कोई भी नेकी की आप दिल ही दिल में इस त़रह़ निय्यत कर लें म-सलन : "अभी मैं ने जो सुन्नत बताई इस का सवाब सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहुंचे।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब पहुंच जाएगा। मज़ीद जिन जिन की निय्यत करेंगे उन को भी पहुंचेगा। दिल में निय्यत होने के साथ साथ ज़बान से कह लेना सुन्नते सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم है जैसा कि अभी ह़दीसे सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ में गुज़रा कि उन्हों ने कूंआं खुदवा कर फ़रमाया, **"येह उम्मे सा'द के लिये है।"**

ईसाले सवाब का मुरव्वजा त़रीक़ा

आज कल मुसल्मानों में ख़ुसूसन खाने पर जो फ़ातिह़ा का त़रीक़ा राइज है वोह भी बहुत अच्छा है जिन खानों का ईसाले सवाब करना है वोह सारे या सब में से थोड़ा थोड़ा खाना नीज़ एक गिलास में पानी भर कर सब को सामने रख लें।

अब أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

पढ़ कर एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿۶﴾

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

तीन बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ
وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا
وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿۶﴾

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

एक बार

الٓمّٓ ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۲﴾ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿۴﴾
اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

पढ़ने के बा'द येह पांच आयात पढ़िये :-

(1) وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾

(پ۱ البقرة:۱٦۳)

(2) اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵٦﴾ (پ۸ الاعراف:۵٦)

(3) وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷ الانبيآء:۱۰۷)

(4) مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ
النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۴۰)

(5) اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا
عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵٦﴾

(پ۲۲ الاحزاب:۵٦)

अब दुरूद शरीफ़ पढ़िये :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ
سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ○ وَسَلٰمٌ عَلَى
الْمُرْسَلِيْنَ ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

अब हाथ उठा कर फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला बुलन्द आवाज़ से "अल फ़ातिह़ा" कहे। सब लोग आहिस्ता से सू-रतुल फ़ातिह़ा पढ़ें। अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला इस त़रह़ ए'लान करे, "**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आप ने जो कुछ पढ़ा है उस का सवाब मुझे दे दीजिये"। तमाम ह़ाज़िरीन कह दें, "आप को दिया।" अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला ईसाले सवाब कर दे। ईसाले सवाब के अल्फ़ाज़ लिखने से क़ब्ल इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عليه رحمة الله الرحمٰن फ़ातिह़ा से क़ब्ल जो सू-रतें वग़ैरा पढ़ते थे वोह तह़रीर करता हूं।

आ'ला ह़ज़रत رضى الله تعالى عنه का फ़ातिह़ा का त़रीक़ा

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

एक बार

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ
لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ
اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ۚ وَ لَا یُحِیْطُوْنَ
بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ
وَ الْاَرْضَ ۚ وَ لَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ﴿۲۵۵﴾

तीन बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ﴿۲﴾ لَمْ یَلِدْ ۙ
وَ لَمْ یُوْلَدْ ﴿۳﴾ وَ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

ईसाले सवाब के लिये दुआ़ का त़रीक़ा

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ा गया (अगर खाना वग़ैरा है तो इस त़रह़ से भी कहें) और जो कुछ खाना वग़ैरा पेश किया गया है बल्कि आज तक जो कुछ टूटा फूटा अ़मल हो सका है उस का सवाब हमारे नाक़िस अ़मल के लाइक़ नहीं बल्कि अपने करम के शायाने शान मर्ह़मत फ़रमा। और इसे हमारी जानिब से अपने प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़्र पहुंचा, सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ السَّلَام

तमाम सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان तमाम औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ الله की जनाब में नज़्र पहुंचा । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيۡهِ السَّلَام से ले कर अब तक जितने इन्सान व जिन्नात **मुसल्मान** हुए या क़ियामत तक होंगे सब को पहुंचा इस दौरान जिन जिन बुज़ुर्गों को ख़ुसूसन ईसाले सवाब करना है उन का नाम भी लेते जाएं । अपने मां बाप और दीगर रिश्तेदारों और अपने पीरो मुर्शिद को **ईसाले सवाब** करें । (फ़ौत शुदगान में से जिन जिन का नाम लेते हैं उन को ख़ुशी ह़ासिल होती है ।)

अब ह़स्बे मा'मूल दुआ़ ख़त्म कर दें । (अगर थोड़ा थोड़ा खाना और पानी निकाला था तो वोह दूसरे खानों और पानी में डाल दें ।)

ख़बरदार !

जब भी आप के यहां नियाज़ या किसी क़िस्म की तक़रीब हो, जमाअ़त का वक़्त होते ही कोई मानेए़ शर-ई़ न हो तो इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ तमाम मेहमानों समेत नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मस्जिद का रुख़ करें । बल्कि ऐसे अवक़ात में दा'वत ही न रखें कि बीच में नमाज़ आए और सुस्ती के बाइ़स مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ जमाअ़त फ़ौत हो जाए । दोपहर के खाने के लिये बा'द नमाज़े ज़ोहर और शाम के खाने के लिये बा'द नमाज़े इ़शा मेहमानों को बुलाने में ग़ालिबन बा जमाअ़त नमाज़ों के लिये आसानी है । मेज़बान, बावर्ची, खाना तक़्सीम करने वाले वग़ैरा सभी को चाहिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم मुझ पर कस्रत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है ।

कि वक़्त हो जाए तो सारा काम छोड़ कर बा जमाअ़त नमाज़ का एहतिमाम करें । बुज़ुर्गों की "नियाज़" की मसरूफ़ियत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की "नमाज़े बा जमाअ़त" में कोताही बहुत बड़ी ग़-लती है ।

मज़ार पर ह़ाज़िरी का त़रीक़ा

बुज़ुर्गों के पास क़दमों की त़रफ़ से ह़ाज़िर होना चाहिये, पीछे से आने की सूरत में उन्हें मुड़ कर देखने की ज़ह़मत होती है । लिहाज़ा मज़ारे औलिया पर भी पाइंती (क़दमों) की त़रफ़ से ह़ाज़िर हो कर क़िब्ले को पीठ और साह़िबे मज़ार के चेहरे कि त़रफ़ रुख़ कर के कम अज़ कम चार हाथ (दो गज़) दूर खड़ा हो और इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ करे,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللّٰهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

एक बार **सू-रतुल फ़ातिह़ा** और 11 बार **सू-रतुल इख़्लास** (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर हाथ उठा कर ऊपर दिये हुए तरीक़े के मुत़ाबिक़ (साह़िबे मज़ार का नाम ले कर भी) ईसाले सवाब करे और दुआ़ मांगे, "**अह़सनुल विआ़अ**" में है, **वली के क़ुर्ब में दुआ़ क़बूल होती है** ।

इलाही वासित़ा कुल औलिया का मेरा हर एक पूरा मुद्दआ़ हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज्र लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है।

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُ اللّٰهُ الْمُبِیْن के उ़र्स की तारीखे़ं

नम्बर शुमार	अस्माए गिरामी	रेह़लत
1	ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ	यकुम मुह़र्रमुल ह़राम
2	ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शहाबुद्दीन علیہم رحمۃ اللہ المبین	यकुम मुह़र्रमुल ह़राम
3	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन बहकारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْبَارِی	यकुम मुह़र्रमुल ह़राम
4	ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْقَوِی	2 मुह़र्रमुल ह़राम
5	ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْقَوِی	4 मुह़र्रमुल ह़राम
6	ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर علیہ رحمۃ اللہ البر	5 मुह़र्रमुल ह़राम
7	सय्यिदुश्शु-हदा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	10 मुह़र्रमुल ह़राम
8	ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद आले बरकात رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	10 मुह़र्रमुल ह़राम
9	शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	14 मुह़र्रमुल ह़राम
10	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	18 मुह़र्रमुल ह़राम
11	ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद अह़मद जीलानी قدس سرہ النورانی	19 मुह़र्रमुल ह़राम
12	ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़म्मद बहाउद्दीन ज़-करिय्या मुल्तानी قدس سرہ النورانی	7 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र
13	ह़ज़रते अ़ल्लामा फ़ज़्ले ह़क़ ख़ैर आबादी علیہ رحمۃ اللہ الہادی	12 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

14	ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद अह़मद कालपवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	19 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र
15	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	25 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र
16	ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद ह़सन बग़दादी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	26 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र
17	ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قدس سرہ النورانی	28 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र
18	ह़ज़रते सय्यिदुना पीर महर अ़ली शाह साह़िब علیہ رحمۃ الوھاب	28 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र
19	ह़ज़रते ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	3 रबीउ़ल अव्वल
20	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	5 रबीउ़ल अव्वल
21	ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी علیہ رحمۃ الباقی	14 रबीउ़ल अव्वल
22	ह़ज़रते अ़ल्लामा सुलैमान जज़ूली علیہ رحمۃ الولی	16 रबीउ़ल अव्वल
23	ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद शाह आले अह़मद अच्छे मियां رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه	17 रबीउ़ल अव्वल
24	ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती वक़ारुद्दीन علیهم رحمۃ اللہ المبین	20 रबीउ़ल अव्वल
25	ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़युद्दीन علیہ رحمۃ المبین	22 रबीउ़ल अव्वल
26	ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	22 रबीउ़ल अव्वल
27	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक علیہ رحمۃ الخالق	7 रबीउ़ल आख़िर
28	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه	9 रबीउ़ल आख़िर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब तुम मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

29	सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی	11 रबीउ़ल आख़िर
30	ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम एरजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	15 रबीउ़ल आख़िर
31	ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ब्दुर्रह़मान जामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی	19 रबीउ़ल आख़िर
32	सय्यिदुना शाह औलादे रसूल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه	26 रबीउ़ल आख़िर
33	ह़ज़रते सय्यिदुना शाह रुक्ने आ़लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم	7 जुमादिल ऊला
34	हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان	17 जुमादिल ऊला
35	ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم	26 जुमादिल ऊला
36	सय्यिदुना हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْوَالِی	14 जुमादिल उख़्रा
37	ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	22 जुमादिल उख़्रा
38	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शैख़ अ़ब्दुल वाह़िद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَاجِد	26 जुमादिल उख़्रा
39	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	र-जबुल मुरज्जब
40	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम काज़िम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	5 र-जबुल मुरज्जब
41	ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुई़नुद्दीन अजमेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	6 र-जबुल मुरज्जब
42	ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद मूसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	13 र-जबुल मुरज्जब
43	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	15 र-जबुल मुरज्जब

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर रोजे़ जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

44	ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाना शफ़ीअ़ ओकाड़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	21 र-जबुल मुरज्जब
45	ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन मा'रूफ़ बजिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	22 र-जबुल मुरज्जब
46	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	24 र-जबुल मुरज्जब
47	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	27 र-जबुल मुरज्जब
48	ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	27 र-जबुल मुरज्जब
49	शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाना सरदार अह़मद علیہ رحمۃ الاحد	1 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म
50	ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	2 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म
51	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल फ़रह़ त़रत़ूसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	3 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म
52	ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद मुह़म्मद कालपवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	6 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म
53	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू सईद मख़्ज़ूमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	7 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म
54	ह़ज़रत पीर सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	7 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म
55	ह़ज़रते सय्यिदुना ला'ल शहबाज़ क़लन्दर علیہ رحمۃ الاکبر	18 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म
56	ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا	3 र-मज़ानुल मुबारक
57	मुफ़स्सिरे शहीर मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان	3 र-मज़ानुल मुबारक
58	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सरी सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	13 र-मज़ानुल मुबारक

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे ।

59	ह़ज़रते सय्यिदुना शाह ह़म्ज़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	14 र-मज़ानुल मुबारक
60	ह़ज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्त़ामी قدس سرہ السامی	14 र-मज़ानुल मुबारक
61	ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद आले मुह़म्मद علیہ رحمۃ الاحد	16 र-मज़ानुल मुबारक
62	ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهٗ	21 र-मज़ानुल मुबारक
63	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ	21 र-मज़ानुल मुबारक
64	ह़ज़रते मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان	22 र-मज़ानुल मुबारक
65	ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ जमालुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	1 शव्वालुल मुकर्रम
66	ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद अह़मद सई़द काज़िमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	3 शव्वालुल मुकर्रम
67	ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	5 शव्वालुल मुकर्रम
68	ह़ज़रते सय्यिद अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ عليه رحمة الرزاق	6 शव्वालुल मुकर्रम
69	ह़ज़रते सय्यिदुना अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ	15 शव्वालुल मुकर्रम
70	ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद अबुल बरकात सय्यिद अह़मद क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی	20 शव्वालुल मुकर्रम
71	ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद ह़सनी जीलानी قدس سرہ النورانی	23 शव्वालुल मुकर्रम
72	ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद भिकारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	9 ज़ी क़ा'दह
73	ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद फ़ज़्लुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	14 ज़ी क़ा'दह

74	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	20 ज़ी क़ा'दह
75	ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان	29 ज़ी क़ा'दह
76	ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाउद्दीन म-दनी عليه رحمة الله الغنى	4 ज़िल हि़ज्जा
77	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बाक़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ	7 ज़िल हि़ज्जा
78	ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ बहाउद्दीन عليهم رحمة الله المبين	11 ज़िल हि़ज्जा
79	ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ	18 ज़िल हि़ज्जा
80	ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद शाह आले रसूल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ	18 ज़िल हि़ज्जा
81	ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र शिब्ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ	27 ज़िल हि़ज्जा

एह़तियाती तजदीदे ईमान कब कब करें ?

म-दनी मश्वरा है रोज़ाना कम अज़् कम एक बार म-सलन सोने से क़ब्ल (या जब चाहें) **एह़तियाती तौबा व तजदीदे ईमान** कर लीजिये और अगर **ब आसानी गवाह** दस्त-याब हों तो मियां बीवी तौबा कर के घर के अन्दर ही कभी कभी एह़तियातन **तजदीदे निकाह़** की तरकीब भी कर लिया करें। मां, बाप, बहन, भाई और औलाद वग़ैरा आ़क़िल व बालिग़ मुसल्मान मर्द व औ़रत **निकाह़** के गवाह बन सकते हैं। **एह़तियाती तजदीदे निकाह़ बिल्कुल मुफ़्त है इस के लिये महर की भी ज़रूरत नहीं।**

मआख़ज़ो मराजेअ़

नम्बर शुमार	नाम	किताब मत्बूआ़	नम्बर शुमार	नाम	किताब मत्बूआ़
1	क़ुरआने पाक	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहोर	21	मज्मउ़ज़्ज़वाइद	दारुल फ़िक्र बैरूत
2	तर-जमए कन्ज़ुल ईमान	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहोर	22	कन्ज़ुल उ़म्माल	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
3	तफ़्सीरे अद्दुर्रुल मन्सूर	दारुल फ़िक्र बैरूत	23	अत्तरग़ीब वत्तरहीब	दारुल फ़िक्र बैरूत
4	अत्तफ़्सीरुल कबीर	दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी बैरूत	24	अस्सु-ननुल कुब्रा	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
5	रूहुल मआ़नी	दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी बैरूत	25	अल जामिउ़स्सग़ीर लिस्सुयूती़	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
6	तफ़्सीरे इब्ने कसीर	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत	26	अल मुस्तदरक अ़लस्सह़ीह़ैन	दारुल मा'रिफ़ह बैरूत
7	तफ़्सीरे रूहुल बयान	कोएटा	27	मुस्नुद्दारिमी	बाबुल मदीना कराची
8	ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहोर	28	फ़िरदौसुल अख़्बार	दारुल फ़िक्र बैरूत
9	तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान	ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहोर	29	अल बदूरुस्साफ़िरह	मुअस्सि-सतुल कुतुबिस्सक़ाफ़ियह
10	सह़ीहुल बुख़ारी	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत	30	सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
11	सह़ीह़ मुस्लिम	दारो इब्ने ह़ज़्म बैरूत	31	मुस्नदे इमाम अह़मद	दारुल फ़िक्र बैरूत
12	सु-ननुत्तिरमिज़ी	दारुल फ़िक्र बैरूत	32	मिश्कातुल मसाबीह़	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
13	सु-ननुन्नसाई	दारुल जील बैरूत	33	ह़िल्यतुल औलिया	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
14	सु-ननो अबी दावूद	दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी बैरूत	34	अल मुस्नदो अबी या'ला	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
15	सु-ननो इब्ने माजह	दारुल मा'रिफ़ह बैरूत	35	मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा	दारुल फ़िक्र बैरूत
16	शु-अ़बुल ईमान	दारो मक्कतुल मुकर्रमह	36	सह़ीहु इब्ने ख़ुज़ैमा	अल मक्तबुल इस्लामी बैरूत
17	मुअत्ता इमाम मालिक	दारुल मा'रिफ़ह बैरूत	37	अ़-मलुल यौमि वल्लैलह	दारुल किताबुल अ़-रबी
18	अल मो'जमुल कबीर	दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी बैरूत	38	फ़त्हुल बारी	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
19	अल मो'जमुल औसत़	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत	39	मिरआतुल मनाजीह़	ज़ियाउल क़ुरआन लाहोर
20	अल मो'जमुस्सग़ीर	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत	40	अल मुनब्बिहात लिल अ़स्क़लानी	पिशावर

नम्बर शुमार	नाम	किताब मत्बूआ़	नम्बर शुमार	नाम	किताब मत्बूआ़
41	दुर्रे मुख़्तार	दारुल मा'रिफ़ह बैरूत	60	अल ह़-सनु वल हुसैन	अल मक-त-बतुल अ़स्रिय्या बैरूत
42	रद्दुल मुह़तार	दारुल मा'रिफ़ह बैरूत	61	अह़्सनुल विआ़अ	मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची
43	फ़तावा आ़लमगीरी	कोएटा	62	शम्सुल मआ़रिफ़ मुतरजम	कोएटा
44	अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह	बाबुल मदीना कराची	63	जन्नती ज़ेवर	बाबुल मदीना कराची
45	ग़ुन्यतुल मु-तमल्ली	सुहैल एकेडमी मर्कज़ुल औलिया लाहोर	64	अल कामिलु फ़ी दु-अ़फ़ाअ	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
46	फ़तावा र-ज़विय्या	रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर	65	एह़याउल उ़लूमिद्दीन	दारे सादिर बैरूत
47	बहारे शरीअ़त	मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची	66	अल क़ौलुल बदीअ़	मुअस्सि-सतुर्रय्यान बैरूत
48	मुख़्तसरुल क़ुदूरी	मक-तबए ज़ियाइया रावल पिन्डी	67	तारीख़े बग़दाद	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
49	अख़्बारुल अख़्यार	फ़ारूक़ एकडमी गम्बट ख़ैरपूर	68	मुका-श-फ़तुल क़ुलूब	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
50	अल मक़ासिदुल ह़-सना	दारुल किताबुल अ़-रबी	69	राह़तुल क़ुलूब	शब्बीर बिरादर्ज़ लाहोर
51	मा स-ब-त मिनस्सुन्नह मुतरजम	लाहोर	70	अल वज़ी-फ़तुल करीमा	इदारए तह़क़ीक़ाते इमाम अह़मद रज़ा
52	रौज़ुर्रियाह़ीन	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत	71	किताबुल कबाइर	पिशावर
53	अल ख़ैरातुल ह़िसान	बाबुल मदीना कराची	72	मसाइलुल क़ुरआन	रूमी पब्लीकेशन्ज़ लाहोर
54	किताबुल अ़ज़्मह	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत	73	इस्लामी ज़िन्दगी	मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची
55	कश्फ़ुल ग़ुम्मह	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत	74	श-जरए क़ादिरिय्यह र-ज़विय्यह	मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची
56	जिलाउल अफ़्हाम	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत	75	मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत	फ़रीद बुक स्टॉल लाहोर
57	अफ़्ज़लुस्स-लवात	दारुस्समर अ़-रफ़ा	76	आ'माले रज़ा	मदीनतुल औलिया मुलतान
58	अल मुस्तत़रफ़	दारुल फ़िक्र बैरूत	77	तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन	पिशावर
59	मुत़ालिउ़ल मुसर्रात	मर्कज़ुल औलिया लाहोर	78	फ़ैज़ाने सुन्नत	मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना